॥ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये परमात्मने नमः ॥



श्री

तुलसीदासकृत रामायन ॥

बनारस कालिज के पण्डित रामजसन ने बांचने की
सुगमता के लिये पदों को अलग २ करके भाषा
की चाल पर कई एक पुस्तकों से सोधकर
छपवाया ॥

इस रामायन के अंत में कठिन शब्दों के अर्थ और इतिहास आदि भी लिखे हैं ॥

जिस किसी को लेना हो बनारस कालिज के पण्डित रामजसन के
पास लिख भेजे ॥

बनारस ॥

॥ मेडिकल हाल के छापेखाने में छापी गई ॥

सन् १८६८ ई०

॥ चौपाई ॥

बंदौं गुरुपदपदुमपरागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा
अमियमूरिमय चूरन चारू । समन सकल भवरुजपरिवारू
सुकृतसंभुतन बिमल बिभूती । मंजुल मंगलमोदप्रसूती
जनमनमंजुमुकुरमलहरनी । किये तिलक गुनगनबसकरनी
श्रीगुरुपदनखमनिगनजोती । सुमिरत दिव्यदृष्टि हिय होती
दलन मोहतम सुप्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहिं जासू
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भवरजनी के
सूझहिं रामचरित मनिमानिक । गुप्त प्रगट जहं जो जेहि खानिक

॥ दोहा ॥

यथा सुअंजन आंजि दृग साधक सिद्धु सुजान ।
कौतुक देखहिं सैल बन भूतल भूरि निधान । १ ॥

चौ० गुरुपदरज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिय दृग दोषबिभंजन
तेहि करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनौं रामचरित भवमोचन
बंदौं प्रथम महीसुरचरना । मोहजनितसंसय सब हरना
सुजनसमाज सकल गुनखानी । करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी
साधुचरित सुभ सरिस कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहि जग जस पावा ।
मुद मंगलमय संतसमाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ।
रामभक्ति जहं सुरसरिधारा । सरसति ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥
बिधिनिषेधमय कलिमलहरनी । कर्मकथा रबिनंदिनि बरनी ॥
हरिहरकथा बिराजति बेनी । सुनत सकल मुदमंगलदेनी ॥
बट बिस्वास अचल निजधर्मा । तीरथराज समाज सुकर्मा ॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दो० । सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग । २ ॥

चौ० । मज्जनफल देखिय ततकाला । काक होहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगतिमहिमा नहि गोई ॥
बालमीक नारद घटयोनी । निज निजमुखनि कही निज होनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहि जतन जहां जेहि पाई ॥
सो जानब सतसंगप्रभाऊ । लोकहुं बेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई । रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुदमंगलमूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
बिधिबस सुजन कुसंगति परहीं । फनिमनिसम निज गुन अनुसरहीं ॥
बिधि हरि हर कबिकोबिद बानी । कहत साधुमहिमा सकुचानी ॥
सो मोहिसन कहि जात न कैसे । साकबनिक मनिगनगुन जैसे ॥

दो० । बंदौं संत समानचित हित अनहित नहिं कोउ ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ । ३ ॥
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाव सनेहु ।
बालबिनय सुनि करिकृपा रामचरन रति देहु । ४ ॥

चौ० बहुरि बंदि खलगन सतिभाए । जे बिनु काज दाहिनेहु बाए ॥
परहितहानि लाभ जिन्ह केरे । उजरे हरष बिषाद बसेरे ॥
हरिहरजस राकेसराहु से । परअकाज भट सहसबाहु से ॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी । परहितघृत जिन के मन माखी ॥
तेज कृसानु रोष महिषेसा । अघअवगुनधनधनिक धनेसा ॥
उदय केतुसम हित सब ही के । कुंभकरनसम सोवत नीके ॥
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं । जिमि हिम उपल कृषी दल गरहीं ॥
बंदौं खल जस सेष सरोषा । सहस बदन बरनै पर दोषा ॥
पुनि प्रनवौं पृथुराजसमाना । पर अघ सुनै सहसदस काना ॥
बहुरि सक्रसम बिनवौं तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥
बचन बज्र जेहि सदा पियारा । सहस नयन पर दोष निहारा ॥

दो० । उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खलरीति ।
जानि पानि जुग जोरि करि बिनती करौं सप्रीति । ५ ॥

चौ० मैं आपनि दिसि कीन्ह निहोरा । तिन निज ओर न लाउब भोरा ॥
बायस पालिय अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
बंदौं संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं । मिलत एक दारुन दुख देहीं ॥
उपजहिं एक संग जल माहीं । जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू । जनक एक जग जलधि अगाधू ॥
भल अनभल निज निज करतूती । लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू । गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू ॥
गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

दो० । भलो भलाई पै लहहिं लहहिं निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच । ६ ॥

चौ० खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने । संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ॥
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये । गनि गुन दोष बेद बिलगाये ॥

PRINTED BY E. J. LAZARUS & CO.

AT THE MEDICAL HALL PRESS, BENARES.

श्रीरामचन्द्राय नमः।

रामायन तुलसीकृत ।

बालकाण्ड ।

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि मङ्गलानाञ्च कर्त्तारौ
वन्दे वाणीविनायकौ ।१। भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरं ।२। वन्दे बोधमयं
नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणं यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते
।३। सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ
कवीश्वरकपीश्वरौ ।४। उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभां ।५। यन्मायावशवर्त्तिविश्व-
मखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौयथा-
ऽहेर्भ्रमः यत्पादः प्लवमेव भातिहि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं
तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशंहरिं ।६। नानापुराणनिगमागम-
सम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि स्वान्तः सुखायतुलसी
रघुनाथगाथा भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ।७ ॥

॥ सोरठा ॥

जेहि सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबरबदन ।
करो अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभगुनसदन ॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़ै गिरिबर गहन ।
जासु कृपा सु दयाल द्रवौ सकल कलिमलदहन ॥
नीलसरोरुहस्याम तरुन अरुनबारिजनयन ।
करो सो मम उर धाम सदा छीरसागरसयन ॥
कुंदइंदुसमदेह उमारमन करुनाअयन ।
जाहि दीन पर नेह करो कृपा मर्दनमयन ॥
बंदौं गुरुपदकंज कृपासिंधु नररूप हरि ।
महामोहतमपुंज जासु बचन रबिकरनिकर ॥

कहहिं बेद इतिहास पुराना । बिधिप्रपंच गुनअवगुनसाना
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊंच अरु नीचू । अमिय सजीवनि माहुर मीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा
कासी मगह सुरसरि कर्मनासा । मरु मालव महिदेव गवासा
स्वर्ग नर्क अनुराग बिरागा । निगमागम गुन दोष बिभागा

दो० । जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार । ७ ॥

चौ० अस बिबेक जब देहिं बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मन राता
काल सुभाव कर्म बरिआई । भलेउ प्रकृतिबस चूक भलाई
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । दलि दुख दोष बिमल जस देहीं
खलउ करइ भल पाइ सुसंगू । मिटहि न मलिन सुभाव अभंगू
लखि सुबेष जगबंचक जेऊ । बेषप्रताप पुजियत तेऊ
उघरहिं अंत न होय निबाहू । कालनेमि जिमि रावन राहू ।
किये कुबेष साधुसनमानू । जिमि जग जामवंत हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहु बेद बिदित सब काहू ।
गगन चढ़ै रज पवनप्रसंगा । कीचहि मिलइ नीच जलसंगा ।
साधु असाधु सदन सुक सारी । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ।
धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिय पुरान मंजु मसि सोई ।
सोइ जल अनल अनिल संघाता । होइ जलद जग जीवन दाता ॥

दो० । ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होइ कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग । ८ ॥
सम प्रकास तम पाख दुहुं नाम भेद बिधि कीन्ह
ससिपोषक सोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह । ९ ॥
जड़ चेतन जग जीव जे सकल राम मय जानि ।
बंदौं सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि । १० ॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब ।
बन्दौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब । ११ ॥

चौ० आकर चार लाख चौरासी । जात जीव नभजलथलबासी ॥
सियाराममय सब जग जानी । करौं प्रनाम जोरि जुग पानी ॥
जानि कृपाकरि किंकर मोहू । सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू ॥
निज बलबुद्धिभरोस मोहि नाहीं । तातें बिनय करौं सब पाहीं ॥
करन चहौं रघुपति गुनगाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अति नीच ऊंचि रुचि आछी । चहिये अमिय जग जुरै न छाछी ॥

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई । सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥
जौ बालक कह तोतरि बाता । सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता. ॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी । जे पर दूषन भूषन धारी ॥
निज कबित्त केहि लागु न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ॥
जे पर भनित सुनत हरषाहीं । ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
जग बहु नर सरितासम भाई । जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृतसिंधुसम कोई । देखि पूर बिधु बाढ़हिं जोई ॥

दो० । भाग छोट अभिलाष बड़ करउं एक बिस्वास ।
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन खल करिहैं उपहास । १२ ॥

चौ० खलपरिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा . ॥
हंसहिं बक दादुर चातकही । हंसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥
कबितरसिक न रामपद नेहू । तिन्ह कहं सुखद हासरस एहू ॥
भाषाभनित मोरि मति भोरी । हंसिबे योग हंसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपदप्रीति न सामुझि नीकी । तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
हरि हरपदरति मति न कुतरकी । तिन्ह कहं मधुर कथा रघुबर की ॥
रामभक्तिभूषित जिय जानी । सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
कबि न होउं नहिं चतुर प्रबीना । सकल कला सब बिद्याहीना ॥
आखर अर्थ अलंकृत नाना । छंदप्रबंध अनेक बिधाना ॥
भावभेद रसभेद अपारा । कबितदोष गुन बिबिध प्रकारा ॥
कबितबिबेक एक नहिं मोरे । सत्य कहौं लिखि कागद कोरे ॥

दो० । भनित मोरि सबगुन रहित बिस्व बिदित गुन एक ।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह के प्रबल बिबेक ।१३॥

चौ० एहिं महं रघुपतिनाम उदारा । अति पावन पुरान स्रुतिसारा ॥
मंगलभवन अमंगलहारी । उमासहित जेहि जपु त्रिपुरारी ॥
भनित बिचित्र सुकबिकृत जोऊ । रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधुबदनी सब भांति सवांरी । सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सब गुनरहित कुकबिकृत बानी । रामनामजसअंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही । मधुकरसरिस संत गुनग्राही ॥
जदपि कबितगुन एकउ नाहीं । रामप्रताप प्रगट एहिं माहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा । केहि न सुसंग बड़प्पन पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुआई । अगरप्रसंग सुगंध बसाई ॥
भनित भदेस बस्तु भलि बरनी । रामकथा जगमंगलकरनी ॥

॥ छंद ॥

मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।
गति कूर कबितासरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥

प्रभुसुजससंगति भनिति भलि होइहि सुजनमनभावनी ।
भवअंगभूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी । २ ॥

दो० । प्रिय लागिहि अति सबहिं मम भनिति रामजससंग ।
दारु बिचार कि करइ कोउ बंदिय मलयप्रसंग । १४ ॥
श्यामसुरभिपय बिसद अति गुनद करहिं तेहिं पान ।
गिराग्राम सियरामजस गावहिं सुनहिं सुजान । १५ ॥

चौ० मनि मानिक मुकुताछबि जैसी । अहि गिरि गजसिर सोह न तैसी
नृपकिरीट तरुनीतनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई
तैसहिं सुकबिकबित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं
भक्तिहेतु बिधिभवन बिहाई । सुमिरत सारद आवति धाई
रामचरितसर बिनु अन्हवायें । सो स्रम जाइ न कोटि उपायें
कबि कोबिद अस हृदय बिचारी । गावहिं हरिगुन कलिमलहारी
कीन्हे प्राकृतजनगुनगाना । सिर धुनि गिरा लागि पछिताना
हृदयसिंधु मति सीपसमाना । स्वाती सारद कहहिं सुजाना
जो बरषै बर बारि बिचारू । होहिं कबित मुकुतामनि चारू

दो० । जुक्ति बेधि पुनि पोहिये रामचरित बर ताग ।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग । १६ ॥

चौ० । जे जनमे कलिकाल कराला । करतब बायस बेष मराला
चलत कुपंथ बेदमग छाड़े । कपटकलेवर कलिमल भांड़े
बंचक भक्त कहाइ राम के । किंकर कंचन कोह काम के
तिन महं प्रथम रेख जग मोरी । धृग धरमध्वज धंधक धोरी
जो अपने अवगुन सब कहऊं । बाढै कथा पार नहि लहऊं
तातें मैं अति अलप बखाने । थोरे महं जानिहहिं सयाने
समुझि बिबिध बिधि बिनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी
एतेहु पर करिहहिं जे संका । मोहि ते अधिक ते जड़ मतिरंक
कबि न होउं नहि चतुर कहाऊं । मतिअनुरूप रामगुन गाऊं
कहं रघुपति के चरित अपारा । कहं मति मोरि निरत संसारा
जेहि मारुत गिरिमेरु उडाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं
समुझत अमित रामप्रभुताई । करत कथा मन अति कदराई

दो० । सारद सेष महेस बिधि आगम निगम पुरान ।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान । १७ ॥

चौ० । सब जानत प्रभुप्रभुता सोई । तदपि कहे बिनु रहा न कोई
तहां बेद अस कारन राखा । भजनप्रभाव भांति बहु भाषा
एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानन्द परधामा
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना । तेइ धरि देह चरित कृत नाना

सो केवल भक्तनहित लागी । परम कृपालु प्रनतअनुरागी ॥
जेहि जन पर ममता अरु छोहू । तेहि करुना करि कीन्ह न कोहू ॥
गएबहोरि गरीबनेवाजू । सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
बुध बरनहिं हरिजस अस जानी । करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥
तेहि बल मैं रघुपतिगुनगाथा । कहिहौं नाइ रामपद माथा ॥
मुनिन्ह प्रथम हरिकीरति गाई । तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई ॥

दो० । अति अपार जे सरित बर जो नृप सेतु कराहिं ।
चढ़ि पिपीलिका परम लघु बिनु स्रम पारहि जाहिं । १८ ॥

चौ० एहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई । करिहौं रघुपतिकथा सुहाई ॥
व्यास आदि कबिपुंगव नाना । जिन्ह सादर हरिचरित बखाना ॥
चरनकमल बंदौं सब केरे । पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलि के कबिन करौं परनामा । जिन बरने रघुपतिगुनग्रामा ॥
जे प्राकृत कबि परम सयाने । भाषा जिन्ह हरिचरित बखाने ॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे । प्रनवौं सबहिं कपट छल त्यागे ॥
होउ प्रसन्न देहु बरदानू । साधुसमाज भनितसनमानू ॥
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । सो स्रम बादि बालकबि करहीं ॥
कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरिसम सब कहँ हित होई ॥
रामसुकीरति भनित भदेसा । असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे । सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जिय जानी । बिमल जसहिं अनुहरइ सुबानी ॥

दो० । सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर ।
करहु कृपा हरिजस कहौं पुनि पुनि करउं निहोर ॥
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होउ कृपाल । १९ ॥

सो० । बन्दौं मुनिपदकंज रामायन जिन निरमयौ ।
सखर सकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित ॥
बन्दौं चारिउ वेद भववारिधि बोहित सरिस ।
जिनहि न सपनेहु खेद बरनत रघुपति बिसद जस ॥
बन्दौं बिधिपद रेनु भवसागर जिन कीन्ह यह ॥
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी । २ ।

दो० । बिबुध बिप्र बुध गुरु चरन बंदि कहौं कर जोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि । २० ॥

चौ० । पुनि बन्दौं सारद सुरसरिता । जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥

मज्जन पान पाप हर एका । कहत सुनत इक हर अविवेका
गुरु पितु मातु महेस भवानी । प्रनवौं दीनबंधु दिनदानी
सेवक स्वामिसखा सियपी के । हित निरुपधि सब बिधि तुलसी
कलि बिलोकि जगहित हरगिरिजा । साबरमंत्र जाल जिन सिरजा
अनमिल आखर अरथ न जापू । प्रगट प्रभाव महेसप्रतापू
सो महेस मो पर अनुकूला । करौं कथा मुदमंगलमूला
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ । बरनौं रामचरित चितचाऊ
भनिति मोरि सिवकृपा बिभाती । ससिसमाज मिलि मनहुँ सुराती
जो यह कथा सनेहसमेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं रामचरनअनुरागी । कलिमलरहित सुमंगलभागी

दो॰ । सपनेहुँ साँचेहु मोहि पर जो हरगौरि पसाउ ।
तौ फुर होउ जो कहउँ सब भाषा भनित प्रभाउ । ११ ॥

चौ॰ । बन्दौं अवधपुरी अति पावनि । सरजू सरि कलिकलुषनसावनि
प्रनवौं पुरनरनारि बहोरी । ममता जिन पर प्रभुहि न थोरी
सियनिंदकअघओघ नसाये । लोक बिसोक बनाइ बसाये
बंदौं कौसल्या दिसि प्राची । कीरति जासु सकल जग माची
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू । बिस्वसुखद खलकमलतुसारू
दसरथ राउ सहित सब रानी । सुकृत सुमंगलमूरति खानी
करौं प्रनाम करम मन बानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिनहिं बिरचि बड़ भयउ बिधाता । महिमाअवधि रामपितु माता

सो॰ । बन्दौं अवधभुआल सत्य प्रेम जेहि रामपद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तन तृन.इव परिहरेउ । २ ॥

चौ॰ । प्रनवौं परिजनसहित बिदेहू । जाहि रामपद गूढ़ स[नेहू]
जोग भोग महँ राखेउ गोई । राम बिलोकत प्रगटेउ सोई
प्रनवौं प्रथम भरत के चरना । जासु नेम ब्रत जाइ न बरना
रामचरन पंकज मन जासू । लुब्ध मधुप इव तजै न पासू
बन्दौं लछिमन पद जलजाता । सीतल सुभग भक्त सुखदाता
रघुपतिकीरति बिमल पताका । दंड समान भयौ जस जाका
सेष सहस्रसीस जगकारन । जो अवतरेउ भूमिभयटारन
सदा सो सानकूल रहु मो पर । कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर
रिपुसूदनपद कमल नमामी । सूर सुसील भरतअनुगामी
महाबीर बिनवौं हनुमाना । राम जासु जस आपु बखाना ।

सो॰ । बंदौ पवनकुमार खलबनपावक ज्ञान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सरचापधर । ४ ॥

चौ॰ । कपिपति रीछ निसाचरराजा । अंगदादि जे कीससमाजा ॥

बन्दौं सब के चरन सुहाये । अधम सरीर राम जिन पाये ॥
रघुपतिचरन उपासक जेते । खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
बन्दौं पदसरोज सब केरे । जे बिनु काम राम के चेरे ॥
सुक सनकादि भगत मुनि नारद । जे मुनि बर बिज्ञानबिसारद ॥
प्रनऊं सबहि धरनि धरि सीसा । करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥
जनकसुता जगजननि जानकी । अतिसय प्रिय करुनानिधान की ॥
ताके युग पद कमल मनाऊं । जासु कृपा निरमल मति पाऊं ॥
पुनि मन बचन करम रघुनायक । चरन कमल बन्दौं सब लायक ॥
राजिवनयन धरे धनु सायक । भक्तबिपतिभंजन सुखदायक ॥

दो० । गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ।
बन्दौं सीतारामपद जिनहिं परम प्रिय खिन्न । २२ ॥

चौ० । बन्दौं रामनाम रघुबर के । हेतु कृसानु भानु हिमकर के ॥
बिधिहरिहरमय बेदप्रान से । अगुन अनूपम गुननिधान से ॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू । कासीमुक्तिहेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजियत नामप्रभाऊ ॥
जान आदि कबि नामप्रतापू । भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिवबानी । जपि जे पीय सिवसंग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को । किय भूषन तियभूषन ती को ॥
नामप्रभाउ जान सिव नीके । कालकूटफल दीन्ह अमी के ॥

दो० । बरषारितु रघुपतिभगति तुलसी सालि सुदास ।
रामनाम बर बरन युग सावन भादौं मास । २३ ॥

चौ० । आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके । राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती । ब्रह्म जीव सम सहज संघाती ॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता । जगपालक बिसेष जनत्राता ॥
भक्ति सुतिय कल करन बिभूषन । जगहित हेतु बिमल बिधुपूषन ॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥
जनमन मंजु कंज मधुकर से । जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

दो० । एक छत्र एक मुकुट मनि सब बरननपर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ । २४ ॥

चौ० । समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दोउ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेद समुझिहैं साधू ॥

देखिय रूप नामआधीना । रूपज्ञान नहिं नामविहीना
रूप विशेष नाम विनु जाने । करतलगत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप विनु देखे । आवत हृदय सनेह विशेषे
नामरूपगति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परत बखानी
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी

दो० । रामनाम मनि दीप धरु जीह देहरीद्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरौ जौ चाहसि उजियार । २५ ॥

चौ० । नाम जीह जपि जागहिं योगी । विरति विचार प्रपंचवियोगी
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लय लाये । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाये
जपहिं नाम जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
रामभक्त जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा
चहुं चतुरन कहं नाम अधारा । ज्ञानी प्रभुहि विशेष पियारा
चहुं युग चहुं श्रुति नामप्रभाऊ । कलि विशेष नहिं आन उपाऊ

दो० । सकल कामनाहीन जे रामभक्तिरस लीन ।
नाम सुप्रेमपियूषहृद तिनहुं किये मन मीन । २६ ॥

चौ० । अगुन सगुन दोउ ब्रह्मसरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूं ते । किय जेहि युग निज बस निज बू
प्रौढ़ि सुजन जन जानहिं जन की । कहउं प्रतीति प्रीति रुचि मन की
एक दारुगत देखिय एकू । पावक युग सम ब्रह्मविवेकू
उभय अगम युग सुगम नाम तें । कहउं नाम बड़ ब्रह्म राम तें
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी । सत चेतन घन आनंदराशी
अस प्रभु हृदय अछत अविकारी । सकल जीव जग दीन दुखारी
नामनिरूपन नामजतन तें । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें

दो० । निरगुन तें एहि भांति बड़ नामप्रभाव अपार ।
कहउं नाम बड़ रामतें निज विचार अनुसार । २७ ॥

चौ० । राम भक्तहित नरतनु धारी । सहि संकट किय साधु सुखारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा । भक्त होहिं मुदमंगलवासा
राम एक तापसतिय तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी
ऋषिहित राम सुकेतुसुता की । सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी
सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नाम जिमि रवि निशि न
भंजेउ राम आपु भवचापू । भवभयभंजन नामप्रतापू
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन । जनमन अमित नाम किय पावन
निशिचरनिकर दले रघुनंदन । नाम सकल कलिकलुषनिकंदन

दो० । सेवरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल बेदबिदित गुनगाथ । २८ ॥

चौ० । राम सुकंठ बिभीषन दोऊ । राखे सरन जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक बेद बर बिरद बिराजे ॥
राम भालुकपिकटक बटोरा । सेतुहेतु स्रम कीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं । करहु बिचार सुजन मन माहीं ॥
राम सकुल रन रावन मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥
राजा राम अवध रजधानी । गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती । बिनु स्रम प्रबल मोह दलजीती ॥
फिरत सनेह मगन सुख अपने । नामप्रसाद सोच नहिं सपने ॥

दो० । ब्रह्म राम तें नाम बड़ बरदायक बरदानि ।
रामचरित सत कोटि मह लिय महेस जिय जानि । २९ ॥

चौ० । नामप्रसाद संभु अबिनासी । साज अमंगल मंगलरासी ॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी । नाम प्रसाद ब्रह्मसुखभोगी ॥
नारद जानेउ नामप्रतापू । जग प्रिय हरि हर हरिप्रिय आपू ॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भक्तसिरोमनि भे प्रहलादू ॥
ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनामू । पायेउ अचल अनूपम ठामू ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू । अपने बस करि राखेउ रामू ॥
अपर अजामिल गज गनिकाऊ । भए मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहउं कहां लगि नाम बड़ाई । राम न सकहिं नामगुन गाई ॥

दो० । रामनाम को कल्पतरु कलिकल्याननिवास ।
जो सुमिरत भये भांग तें तुलसी तुलसीदास । ३० ॥

चौ० । चहुं युग तीनि काल तिहुं लोका । भए नाम जपि जीव बिसोका ॥
बेदपुरानसंतमत एहू । सकल सुकृतफल रामसनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मख युग दूजे । द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मलमूल मलीना । पापपयोनिधि जनमन मीना ॥
नाम कामतरु काल कराला । सुमिरत समन सकल जंजाला ॥
रामनाम कलि अभिमतदाता । हित परलोक लोकपितुमाता ॥
नहिं कलि कर्म न भक्ति बिबेकू । रामनाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलिकपटनिधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दो० । रामनाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल । ३१ ॥

चौ० । भाय कुभाय अनख आलसहूं । नाम जपत मंगल दिसि दसहूं ॥
सुमिरि सो नाम रामगुनगाथा । करौं नाइ रघुनाथहिं माथा ॥
मोरि सुधारहिं सो सब भांती । जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥

राम सुस्वामि कुसेवक मो से । निज दिसि देखि दयानिधि पोसे
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती । बिनय सुनत पहिचानत प्रीती
गनी गरीब ग्रामनर नागर । पंडित मूढ़ मलीन उजागर
सुकबि कुकबि निज मतिअनुहारी । नृपहिं सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुसील नृपाला । ईस अंसभव परम कृपाला
सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी । भनित भक्तिनतिगति पहिचानी
यह प्राकृत महिपालसुभाऊ । जानि सिरोमनि कोसलराऊ
रीझत राम सनेहनि सोते । को जग मंद मलिनमति मो ते

दो० । सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु ।
उपल किए जलजान जेहि सचिव सुमति कपि भालु । २२ ॥
हौं हुँ कहावत सब कहत राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ से सेवक तुलसी दास । २३ ॥

चौ० । अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी । सुनि अघ नरकहुँ नाक सिकोरी
समुझि सहमि मोहि अपडर अपने । सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनि अवलोकि सुचित चखु चाही । भक्ति मोरि मति स्वामि सराही
कहत नसाइ होइ अति नीकी । रीझत राम जानि जन जी की
रहत न प्रभु चित चूक किये की । करत सुरति सै बार हिये की
जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली । फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली
सोइ करतूति बिभीषन केरी । सपने हुँ सो न राम हिय हेरी
ते भरतहि भेंटत सनमाने । राजसभा रघुबीर बखाने

दो० । प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किय आपु समान ।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान । २४ ॥
रामनिकाई रावरी है सबही को नीक ।
जो यह साँची है सदा तौ नीको तुलसी क । २५ ॥
एहिं बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिर नाइ ।
बरनौं रघुबर बिसद जस सुनि कलिकलुष नसाइ । २६ ॥

चौ० । याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई । भरद्वाज मुनिबरहिं सुनाई
कहिहौं सोइ संबाद बखानी । सुनहु सकल सज्जन सुख मानी
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा । बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा
सो सिव काकभुसुंडिहि दीन्हा । रामभक्ति अधिकारी चीन्हा
तेहि सन याज्ञवल्क्य पुनि पावा । तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा
ते श्रोता बकता समसीला । समदरसी जानहिं हरिलीला
जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना । करतलगत आमलक समाना
औरो जे हरि भक्त सुजाना । कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना

दो० । मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सु सूकरखेत ।
समुझी नहीं तसु बालपन तब अति रहेउँ अचेत । २७ ॥
स्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम की गूढ़ ।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलिमलग्रसित बिमूढ़ । २८ ॥

चौ० । तदपि कही गुर बारहि बारा । समुझि परी कछु मति अनुसारा ॥
भाषाबंध करब मैं सोई । मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधि बिबेक बल मोरे । तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करौं कथा भवसरिता तरनी ॥
बुध बिस्राम सकलजनरंजनि । रामकथा कलिकलुषबिभंजनि ॥
रामकथा कलिपन्नग भरनी । पुनि बिबेक पावक कहँ अरनी ॥
रामकथा कलिकामद गाई । सुजन सजीवन मूरि सुहाई ॥
सोइ बसुधा तल सुधातरंगिनि । भवभंजनि भ्रमभेकभुअंगिनि ॥
असुरसेनसम नरकनिकंदिनि । साधुबिबुधकुलहित गिरिनंदिनि ॥
संतसमाजपयोधि रमा सी । बिस्वभारधर अचल छमा सी ॥
जमगनमुहँमसि जग जमुना सी । जीवनमुकुति हेतु जनु कासी ॥
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदासहित हिय हुलसी सी ॥
सिवप्रिय मेकल सैलसुता सी । सकल सिद्धिप्रद संपतिरासी ॥
सदगुन सुरगन अंबअदिति सी । रघुबरभगतिप्रेमपरमिति सी ॥

दो० । रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सियरघुबीरबिहारु । २९ ॥

चौ० । रामचरित चिंतामनि चारू । संतसुमति तिय सुभग सिंगारू ॥
जगमंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धर्म धाम के ॥
सदगुर ग्यान बिराग जोग के । बिबुधबैद भव भीम रोग के ॥
जननि जनक सियरामप्रेम के । बीज सकल ब्रत धर्म नेम के ॥
समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥
सचिव सुभट भूपति बिचार के । कुंभज लोभउदधि अपार के ॥
काम कोह कलिमल करिगन के । केहरिसावक जनमनबन के ॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद घन दारिद दवारि के ॥
मंत्र महामनि बिषयब्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
हरन मोहतम दिनकरकर से । सेवक सालिपाल जलधर से ॥
अभिमतदानि देवतरुबर से । सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥
सुकबि सरदनभ मन उडुगन से । रामभगत जनजीवन धन से ॥
सकल सुकृतफल भूरि भोग से । जगहित निरुपधि साधु लोग से ॥
सेवक मनमानस मराल से । पावन गंगतरंगमाल से ॥

दो० । कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।

दवन रामगुनग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड । ३० ॥
रामचरित राकेसकर सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेष बड़ लाहु । ३१ ॥

चौ० । कीन्ह प्रस्न जेहि भाँति भवानी । जेहि बिधि संकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई । कथाप्रबंध बिचित्र बनाई
जिन यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आचरज करै सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । नहिं आचरज करहिं अस जानी
रामकथा की मिति जग नाहीं । अस प्रतीति तिन के मन माहीं
नाना भाँति राम अवतारा । रामायन सतकोटि अपारा
कल्पभेद हरिचरित सुहाये । भाँति अनेक मुनीसन गाये
करिय न संसय अस उर आनी । सुनिय कथा सादर रति मानी

दो० । राम अनंत अनंत गुन अमित कथाबिस्तार ।
सुनि आचरज न मानिहहिं जिन के बिमल बिचार । ३२ ॥

चौ० । एहि बिधि सब संसय करि दूरी । सिर धरि गुरुपदपंकजधूरी
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी । करत कथा जेहि लाग न खोरी
सादर सिवहि नाइ अब माथा । बरनौं बिसद रामगुनगाथा
संबत सोरह सै एकतीसा । करौं कथा हरिपद धरि सीसा
नौमी भौमवार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहि दिन रामजन्म श्रुति गावहिं । तीरथ सकल तहां चलि आवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा । आय करहिं रघुनायकसेवा
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं रामकलकीरति गाना

दो० । मज्जहिं सज्जनबृन्द बहु पावन सरजूनीर ।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर । ३३ ॥

चौ० । दरस परस मज्जन अरु पाना । हरै पाप कह बेद पुराना
नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहि न सकै सारदा बिमलमति
रामधामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त बिदित अति पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजे तनु नहिं संसारा
सब बिधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा । सुनत नसाहिं काम मद दंभा
रामचरितमानस यह नामा । सुनत स्रवन पाइय बिस्रामा
मन करि बिषय अनल बन जरहीं । होइ सुखी जो एहि सर परहीं
रामचरितमानस मुनिभावन । बिरचेउ संभु सुहावन पावन
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन । कलि कुचालि कलिकलुष नसावन
रचि महेस निज मानस राखा । पाइ सुसमय सिवासन भाखा

तातें रामचरितमानस बर । धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई । सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥

दो० । जस मानस जेहि बिधि भयौ जग प्रचार जेहि हेतु ।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु । ४४ ॥

चौ० । संभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी । रामचरितमानस कवि तुलसी ॥
करउं मनोहर मति अनुहारी । सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू । बेद पुरान उदधि घन साधू ॥
बरषहिं रामसुयश बर बारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुन जो कहहिं बखानी । सोइ स्वच्छता करै मलहानी ॥
प्रेम भक्ति जो बरनि न जाई । सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥
सो जल सुकृत सालि हित होई । रामभक्तजनजीवन सोई ॥
मेधा महिगत सो जल पावन । सिमिटि स्रवनमग चलेउ सुहावन ॥
भरेउ सुमानस सुथल थिराना । सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥

दो० । सुठि सुंदर संबाद बर बिरचेउ बुद्धि बिचारि ।
तेइ यहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि । ४५ ॥

चौ० । सप्त प्रबंध सुभग सोपाना । ज्ञाननयन निरखत मन माना ॥
रघुपतिमहिमा अगुन अबाधा । बरनब सोइ बर बारि अगाधा ॥
रामसीयजस सलिल सुधा सम । उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई । युक्ति मंजु मनि सीप सुहाई ॥
छंद सोरठा सुन्दर दोहा । सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा ॥
अरथ अनूप सुभाव सुभाषा । सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥
सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला । ज्ञान बिराग बिचार मराला ॥
धुनि अवरेव कवितगुन जाती । मीन मनोहर ते बहु भांती ॥
अर्थ धर्म कामादिक चारी । कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी ॥
नव रस जप तप योग बिरागा । ते सब जलचर चारु तड़ागा ॥
सुकृती साधु नाम गुनगाना । ते बिचित्र जलबिहंग समाना ॥
संतसभा चहुं दिसि अंबराई । श्रद्धा ऋतु बसंत सम गाई ॥
भक्तिनिरूपन बिबिध बिधाना । छमा दया द्रुम लता बिताना ॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाना । हरिपदरति रस बेद बखाना ॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहु बरन बिहंगा ॥

दो० । पुलकवाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहार ।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चार । ४६ ॥

चौ० । जे गावहिं यह चरित संभारे । ते एहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी । तेइ सुर बर मानसअधिकारी ॥

अति खल जे बिखयी बक कागा । इहिं सर निकट न जाहिं अभागा ॥
संबुक भेक सिवार समाना । इहां न बिखयकथा रस नाना ॥
तेहि कारन आवत हिय हारे । कामी काक बलाक बिचारे ॥
आवत इहि सर अति कठिनाई । रामकृपा बिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला ॥
ग्रहकारज नाना जंजाला । तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला ॥
बन बहु बिखम मोह मद माना । नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो० । जे सद्धासंबल रहित नहिं संतन कर साथ ।
तिन कहं मानस अगम अति जिनहिं न प्रियरघुनाथ । ४७ ॥

चौ० । जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई । जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ बिखम उर लागा । गयहु न मज्जन पाव अभागा ॥
करि न जाय सर मज्जन पाना । फिरि आवै समेत अभिमाना ॥
जो बहोरि कोउ पूछन आवा । सरनिंदा करि ताहि सुनावा ॥
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहि तेही । रामकृपा करि चितवहिं जेही ॥
सोइ सादर सर मज्जन करहीं । महा घोर त्रयताप न जरहीं ॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ । जिनके रामचरित भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह इहि सर भाई । सो सतसंग करौ मन लाई ॥
अस मानस मानसचख चाही । भइ कबिबुद्धि बिमल अवगाही ॥
भयौ हृदय आनंद उछाहू । उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
चली सुभग कविता सरिता सो । राम बिमल जस जल भरिता सो ॥
सरजू नाम सुमंगलमूला । लोक बेद मत मंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानसनंदिनि । कलिमल तृनतरुमूलनिकंदिनि ॥

दो० । स्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुं कूल ।
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगलमूल । ४८ ॥

चौ० । रामभक्ति सुरसरितहि जाई । मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥
सानुज रामसमरजस पावन । मिलेउ महा नद सोन सुहावन ॥
जुग बिच भक्ति देवधुनिधारा । सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी । रामसरूप सिंधु समुहानी ॥
मानसमूल मिली सुरसरिहीं । सुनत सुजनमन पावनकरहीं ॥
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरितीर तीर बन बागा ॥
उमामहेस बिवाह बराती । ते जलचर अगनित बहु भांती ॥
रघुबरजन्मअनंदबधाई । भंवर तरंग मनोहरताई ॥

दो० । बालचरित चहुं बंधु के बनज बिपुल बहु रंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारिबिहंग । ४९ ॥

चौ० । सीयस्वयंबरकथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥

नदी नाव पटु प्रस्न अनेका । केवट कुसल उतर सबिबेका ॥
सुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिकसमाज सोह सरि सोई ॥
घोर धार भृगुनाथरिसानी । घाट सुबंध राम बर बानी ॥
सानुज रामबिबाहउछाहू । सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं । ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥
रामतिलकहित मंगल साजा । परब जोग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति कैकयी केरी । परी जासु फल बिपति घनेरी ॥

दो० । समन अमित उतपात सब भरतचरित जप जाग ।
कलि अघ खल अवगुनकथन ते जलमल बक काग । ५० ॥

चौ० । कीरति सरित छहूँ रितु रूरी । समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिमसैलसुता सिवब्याहू । सिसिर सुखद प्रभुजन्मउछाहू ॥
बरनब रामबिबाह समाजू । सो मुदमंगलमय रितुराजू ॥
ग्रीषम दुसह रामबनगमनू । पंथकथा खर आतप पवनू ॥
बर्षा घोर निसाचररारी । सुरकुलसालि सुमंगलकारी ॥
रामराजसुख बिनय बड़ाई । बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥
सतीसिरोमनि सियगुनगाथा । सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥
भरतसुभाउ सुसीतलताई । सदा एक रस बरनि न जाई ॥

दो० । अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास ।
भायप भलि चहुँ बंधु की जलमाधुरी सुबास । ५१ ॥

चौ० । आरति बिनय दीनता मोरी । लघुता ललित सुबारि न थोरी ॥
अद्भुत सलिल सुनत गुनकारी । आस पियास मनोमलहारी ॥
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी । हरत सकल कलिकलुषगलानी ॥
भवश्रमसोषक तोषक तोषा । समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥
काम कोह मद मोह नसावन । बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन ॥
सादर मज्जन पान किये तें । मिटहिं पाप परिताप हिये तें ॥
जिन यहि बारि न मानस धोये । ते कायर कलिकाल बिगोये ॥
तृषित निरखि रबिकरभववारी । फिरहिं मृगा जिमि जीव दुखारी ॥

दो० । मतिअनुहारि सुबारि बर गुनगन मन अन्हवाइ ।
सुमिरि भवानी संकरहिं कह कबि कथा सुहाइ । ५२ ॥
भरद्वाज जिमि प्रस्न किय याज्ञवल्क्य मुनि पाय ।
प्रथम मुख्य संबाद सोइ कहिहौं हेतु बुझाय । ५३ ॥
अब रघुपतिपद पंकरुह हिय धरि पाय प्रसाद ।
कहौं युगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संबाद । ५४ ॥

चौ० । भरद्वाजमुनि बसहिं प्रयागा । तिनहिं रामपद अति अनुरागा ॥

तापस सम दम दया निधाना । परमारथपथ परम सुजाना
माघ मकरगत रबि जब होई । तीरथपतिहिं आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नरश्रेनी । सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी
पूजहिं माधवपद जलजाता । परसि अछयबट हरषहिं गाता
भरद्वाज आस्रम अति पावन । परम रम्य मुनिवरमनभावन
तहाँ होइ मुनिरिषयसमाजा । जाहिं जे मज्जन तीरथराजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । कहहिं परस्पर हरिगुनगाहा

दो० । ब्रह्मनिरूपन धर्मबिधि बरनहिं तत्त्वबिभाग ।
कहहिं भक्ति भगवंत की संयुत ज्ञान बिराग । ५५ ॥

चौ० । इहि प्रकार भरि मकर नहाहीं । पुनि सब निज निज आस्रम ज
प्रति संबत अस होइ अनन्दा । मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृन्दा
एक बार भरि मकर नहाये । सब मुनीस आस्रम निज धाये
याज्ञवल्क्य मुनि परमबिबेकी । भरद्वाज राखेउ पद टेकी
सादर चरन सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुजस बखानी । बोले अति पुनीत मृदुबानी
नाथ एक संसय बड़ मोरे । करतल बेदतत्त्व सब तोरे
कहत मोहि लागत भय लाजा । जो न कहौं बड़ होइ अकाजा

दो० । संत कहहिं अस नीति प्रभु स्रुति पुरान जो गाव ।
होइ न बिमल बिबेक उर गुरु सन किये दुराव । ५६ ॥

चौ० । अस बिचारि प्रगटौं निज मोहू । हरहु नाथ करि जन पर छोहू
रामनाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद ग[illegible]
संतत जपत संभु अबिनासी । सिव भगवान ज्ञान ग[illegible]रासी
आकर चारि जीव जग अहहीं । कासी मरत परम पद लहहीं
सोपि राममहिमा मुनिराया । सिव उपदेस करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही
एक राम अवधेसकुमारा । तिन कर चरित बिदित संसारा
नारि बिरह दुख लहेउ अपारा । भएउ रोष रन रावन मारा

दो० । प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्बज्ञ तुम कहहु बिबेक बिचारि । ५७ ॥

चौ० । जैसे मिटै मोर भ्रम भारी । कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी
जागबलिक बोले मुसुकाई । तुमहिं बिदित रघुपतिप्रभुताई
रामभक्त तुम मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुनै रामगुन गूढ़ा । कीन्हेउ प्रश्न मनहुँ अति मूढ़ा
तात सुनहु सादर मन लाई । कहउँ राम की कथा सु[illegible]

महा मोह महिसेस बिसाला । रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा ससि किरन समाना । संत चकोर करहिं जेहि पाना ॥
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी । महादेव तब कहा बखानी ॥

दो० । कहौं सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद ।
भयउ समय जेहि हेतु जेहिं सुनि मुनि मिटहिं बिषाद ॥

चौ० । एक बार त्रेता जुग माहीं । संभु गये कुंभज रिषि पाहीं ॥
संग सती जगजननि भवानी । पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी ॥
रामकथा मुनिबर्य बखानी । सुनी महेस परम सुख मानी ॥
रिषि पूछी हरिभक्ति सुहाई । कही संभु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपतिगुनगाथा । कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
मुनि सन बिदा मांगि त्रिपुरारी । चले भवन संग दक्षकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा । हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा ॥
पितावचन तजि राजु उदासी । दंडकबन बिचरत अबिनासी ॥

दो० । हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरसन होइ ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ । ५८ ॥

सो० । संकर उर अति छोभ सती न जानहिं मर्म सोइ ।
तुलसी दरसन लोभ मन डर लोचन लालची । ५ ॥

चौ० । रावनमरन मनुजकर जाचा । प्रभु बिधिबचन कीन चह साँचा ॥
जौं नहिं जाउं रहै पछतावा । करत बिचार न बनत बनावा ॥
इहि बिधि भये सोच बस ईसा । ताही समय जाइ दससीसा ॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भयेउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥
करि छल मूढ़ हरी बैदेही । प्रभुप्रताप उर बिदित न तेही ॥
मृग बधि बंधु सहित हरि आये । आस्रम देखि नयन जल छाये ॥
बिरहबिकल नर इव रघुराई । खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई ॥
कबहूं जोग बियोग न जाके । देखा प्रगट बिरह दुख ताके ॥

दो० । अति बिचित्र रघुपतिचरित जानहिं परम सुजान ।
जे मतिमंद बिमोहबस हृदय धरहिं कछु आन । ६० ॥

चौ० । संभु समय तेहि रामहिं देखा । उपजा हिय अति हर्ष बिसेसा ॥
भरि लोचन छबि सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी ॥
जयसच्चिदानंद जगपावन । अस कहि चलेउ मनोजनसावन ॥
चले जात सिव सतीसमेता । पुनि पुनि पुलकित कृपानिकेता ॥
सती सो दसा संभु की देखी । उर उपजा संदेह बिसेषी ॥
संकर जगतबंद्य जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥

तिन्ह नृपसुतहिं कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधामा
भये मगन छबि तासु बिलोकी । अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी

दो० । ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद । ५१ ॥

चौ० । बिष्णु जो सुरहित नरतनुधारी । सोउ सर्बज्ञ यथा त्रिपुरारी
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी
संभुगिरा पुनि मृषा न होई । सिव सर्बज्ञ जान सब कोई
अस संसय मन भयउ अपारा । होइ न हृदय प्रबोधप्रचारा
यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । हर अंतरजामी सब जानी
सुनहु सती तव नारिसुभाऊ । संसय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुंभज ऋषि गाई । भक्ति जासु मैं मुनिहिं सुनाई
सोइ मम इष्ट देव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

छं० । मुनि धीर योगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवननिकायपति मायाधनी ।
अवतरेउ अपने भक्तहित निजतंत्र नित रघुकुलमनी । २ ॥

सो० । लाग न उर उपदेस यदपि कहेउ सिव बार बहु
बोले बिहसि महेस हरिमायाबल जानि जिय । ६

चौ० । जो तुम्हरे मन अति संदेहू । तौ किन जाइ परीछा लेहू
तब लगि बैठि रहौं बटछाहीं । जब लगि तुम ऐहहु मोहि पाहीं
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी । करहु सो जतन बिबेक बिचारी
चली सती सिव आयसु पाई । करहिं बिचार करौं का भाई
इहाँ संभु अस मन अनुमाना । दच्छसुता कहँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संसय जाहीं । बिधि बिपरीत भलाई नाहीं
होइहि सोइ जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावइ साखा
अस कहि लगे जपन हरिनामा । गई सती जहँ प्रभु सुखधामा

दो० । पुनि पुनि हृदय बिचार करि धरि सीता कर रूप ।
आगे होइ चली पंथ तेहि जेहि आवत सुरभूप । ६२ ॥

चौ० । लछिमन दीख उमा कृतबेषा । चकित हृदय भ्रम भयउ बिसेषा
कहि न सकत कछु अति गंभीरा । प्रभुप्रभाव जानत मतिधीरा
सतीकपट जानेउ सुरस्वामी । समदरसी सब अन्तरजामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना । सोइ सर्बज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहउँ दुराऊ । देखहु नारिसुभावप्रभाऊ

जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू । पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू । बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो० । रामबचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच ।
सती सभीत महेस पहँ चलीं हृदय बड़ सोच । ६३ ॥

चौ० । मैं संकर कर कहा न माना । निज अज्ञान राम पर आना ॥
जाइ उतर अब देहौं काहा । उर उपजा अति दारुन दाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा । निज प्रभाव कछु प्रगटि जनावा ॥
सती दीख कौतुक मग जाता । आगे राम सहित श्रिय भ्राता ॥
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुंदर बेषा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना । सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ॥
देखे सिव बिधि बिष्णु अनेका । अमित प्रभाव एक तें एका ॥
बंदत चरन करत प्रभुसेवा । बिबिधबेष देखे सब देवा ॥

दो० । सती बिधात्री इंदिरा देखी अमित अनूप ।
जेहि जेहि बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप । ६४ ॥

चौ० । देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । सक्तिन सहित सकल सुर तेते ॥
जीव चराचर जे संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु बेषा । रामरूप दूसर नहिं देखा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न बेष घनेरे ॥
सोइ रघुबर सोइ लछिमन सीता । देखि सती अति भयी सभीता ॥
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं । नयन मूँदि बैठी मग माहीं ॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद सीसा । चली तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥

दो० । गयी समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ।
लीन्ह परीक्षा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात । ६५ ॥

चौ० । सती समुझि रघुबीरप्रभाऊ । भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गोसाईं । कीन्ह प्रनाम तुम्हारि हि नाईं ॥
जो तुम कहा सो मृषा न होई । मोरे मन प्रतीति अति सोई ॥
तब संकर देखेउ धरि ध्याना । सती जो कीन्ह चरित सब जाना ॥
बहुरि राममायहिं सिर नावा । प्रेरि सतिहि जेहिं झूठ कहावा ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदय बिचारत संभु सुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कर बेषा । सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा ॥
जो अब करौं सती सन प्रीती । मिटै भक्तिपथ होइ अनीती ॥

दो० । परम प्रेम नहिं जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप ।
प्रगट न कहत महेस कछु हृदय अधिक संताप । ५६ ॥

चौ० । तबहिं संभु प्रभुपद सिर नावा । सुमिरत राम हृदय अस आव
इहि तन सतिहि भेट मोहि नाहीं । सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं
अस बिचारि संकर मतिधीरा । चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन भइ गिरा सुहाई । जय महेस भलि भक्ति दृढाई
अस प्रन तुम बिनु करै को आना । रामभक्त समरथ भगवाना
सुनि नभगिरा सती उर सोच । पूछा सिवहिं समेत सकोचू
कीन्ह कवन प्रन कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
यदपि सती पूछा बहु भांती । तदपि न कहेउ त्रिपुरआराती

दो० । सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्बज्ञ ।
कीन्ह कपट मैं संभु सन नारि सहज जड अज्ञ । ५७ ॥

सो० । जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि ।
बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई परतही । ७ ॥

चौ० । हृदय सोच समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहिं बरनी
कृपासिंधु सिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा
संकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । तपै अवां इव उर अधिकाई
सतिहि ससोच जानि वृषकेतू । कहेउ कथा सुंदर सुख हेतू
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा । बिस्वनाथ पहुंचे कैलासा
तहं पुनि संभु समुझि प्रन आपन । बैठे बट तर करि कमलासन
संकर सहज सरूप संभारा । लागि समाधि अखंड अपारा

दो० । सती बसहिं कैलास तब अधिक सोच मन माहिं ।
मर्म न कोऊ जान कछु युग सम दिवस सिराहिं । ५८ ॥

चौ० । नित नव सोच सती उर भारा । कब जैहौं दुखसागर पारा
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनि पतिबचन मृषा करि जाना
सो फल मोहि बिधाता दीन्हा । जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोहीं । संकर बिमुख जिआवहु मोहीं
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी । मन महं रामहिं सुमिरि सयानी
जो प्रभु दीनदयालु कहावा । आरतिहरन बेद जस गावा
तौ मैं बिनय करौं कर जोरी । छूटौ बेगि देह यह मोरी
जौं मोरे सिवचरन सनेहू । मन क्रम बचन सत्य ब्रत एहू

दो० । तौ समदर्शी सुनिय प्रभु करौ सो बेगि उपाइ ।
होइ मरन जेहि बिनहि स्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ । ५९ ॥

चौ० । एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी । अकथनीय दारुन दुख भारी ॥
बीते संबत सहस सतासी । तजी समाधि संभु अबिनासी ॥
रामनाम सिव सुमिरन लागे । जानेउ सती जगतपति जागे ॥
जाइ संभुपद बंदन कीन्हा । सनमुख संकर आसन दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रसाला । दच्छ प्रजेस भये तेहि काला ॥
देखा बिधि बिचारि सब लायक । दच्छहि कीन्ह प्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । अति अभिमान हृदय तब आवा ॥
नहिं कोउ अस जनमेउ जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो० । दच्छ लिये मुनि बोलि सब करन लगे बड़ याग ।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग । ६० ॥

चौ० । किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा । बधुन समेत चले सुर सर्बा ॥
बिष्णु बिरंचि महेस बिहाई । चले सकल सुर यान बनाई ॥
सती बिलोके गगन बिमाना । जात चले सुंदर बिधि नाना ॥
सुरसुंदरी करहिं कल गाना । सुनत स्रवन छूटहिं मुनिध्याना ॥
पूछेउ कछु सिव कहेउ बखानी । पितायज्ञ सुनि कै हरषानी ॥
जौं महेस मोहि आयसु देही । कछु दिन जाइ रहौं मिस एही ॥
पतिपरित्याग हृदय दुख भारी । कहै न निज अपराध बिचारी ॥
बोली सती मनोहर बानी । भय संकोच प्रेमरस सानी ॥

दो० । पिताभवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु होइ ।
तो मैं जाउं कृपायतन सादर देखन सोइ । ६१ ॥

चौ० । कहेउ नीक मोरे मन भावा । यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥
दच्छ सकल निज सुता बुलाई । हमरे बयर तुमहुं बिसराई ॥
ब्रह्मसभा हम सन दुख माना । तेहि तें अजहुं करहिं अपमाना ॥
जो बिनु बोले जाहु भवानी । रहै न सील सनेह न कानी ॥
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइय बिनु बोलेहु न संदेहा ॥
तदपि बिरोध मान जहं कोई । तहां गये कल्यान न होई ॥
भांति अनेक संभु समुझावा । भावीबस न ज्ञान उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये । नहिं भलि बात हमारे भाये ॥

दो० । कहि देखा हर जतन बहु रहै न दच्छकुमारि ।
दिये मुख्य गन संग तब बिदा किये त्रिपुरारि । ६२ ॥

चौ० । पिताभवन जब गयी भवानी । दच्छत्रास काहु न सनमानी ॥

सादर भलेहि मिली इक माता । भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता । सतिहिं बिलोकि जरे सब गाता
सती जाइ देखेउ तब यागा । कतहुं न दीख संभु कर भागा
तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ । प्रभुअपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा । जस यह भयउ महा परितापा
यद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जातिअपमाना
समुझि सोच तिहि भौ अति क्रोधा । बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा

दो० । सिवअपमान न जाइ सहि हृदय न होत प्रबोध ।
सकल सभहि हठि हटकि तब बोली बचन सक्रोध । ७३ ॥

चौ० । सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी जिन्ह संकर निंदा
सो फल तुरत लहब सब काहू । भली भांति पछिताब पिताहू
संत संभु स्रीपति अपवादा । सुनिय जहां तहं असि मर्यादा
काटिय तासु जीभ जु बसाई । स्रवन मूंदि नहिं चलिय पराई
जगदातमा महेस पुरारी । जगतजनक सब के हितकारी
पिता मंदमति निंदत तेही । दच्छ सुक्रसंभव यह देही
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू । उर धरि चंद्रमौलि वृषकेतू
अस कहि योगअगिनि तनु जारा । भयउ सकल मख हाहाकारा

दो० । सती मरन सुनि संभु गन लगे करन मख खीस ।
यज्ञबिध्वंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्ह मुनीस । ७४ ॥

चौ० ॥ समाचार जब संकर पाये । बीरभद्र करि कोप पठाये
यज्ञबिध्वंस जाइ तिन्ह कीन्हा । सकल सुरन्ह बिधिवत फल दीन्हा
भइ जग बिदित दच्छगति सोई । जस कछु संभुबिमुख की होई
यह इतिहास सकल जग जाना । तातें मैं संछेप बखाना
सती मरत हरि सन बर मागा । जन्म जन्म सिवपद अनुरागा
तेहि कारन हिमगिरिगृह जाई । सोइ जन्मी पार्बती तनु पाई
जबतें उमा सैलगृह आई । सकल सिद्धि संपति तहं छाई
जहं तहं मुनिन सुआस्रम कीन्हे । उचित बास हिमभूधर दीन्हे

दो० । सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ।
प्रगटी सुंदर सैल पर मनिआकर बहु भांति । ७५ ॥

चौ० । सरिता सब पुनीत जल बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं
सहज बयर सब जीवन त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा
सोह सैल गिरिजा गृह आये । जिमि नर रामभक्ति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जस जासू
नारद समाचार सब पाये । कौतुक हिमगिरिगेह सिधाये
सैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारि बर आसन दीन्हा

मारि सहित मुनिपद सिर नावा । चरनसलिल सब भवन सिंचावा ॥
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना । सुता बोलि मेली मुनिचरना ॥

दो० । त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ तुम गति सर्बत्र तुम्हारि ।
कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदय बिचारि । ७६ ॥

चौ० । कह मुनि बिहसि गूढ़ मृदु बानी। सुता तुम्हारि सकल गुनखानी ॥
सुंदरि सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥
सब लच्छन संपन्न कुमारी । होइहि संतत पियहि पियारी ॥
सदा अचल एहि कर अहिवाता । इहि तें जस पैहहिं पितु माता ॥
होइहि पूज्य सकल जग माहीं । इहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
इहि कर नाम सुमिरि संसारा । तिय चढ़िहहिं पतिब्रत असिधारा ॥
सैल सुलच्छनि सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी ॥
अगुन अमान मातुपितुहीना । उदासीन सब संसय छीना ॥

दो० । योगी जटिल अकाम मन नगन अमंगलभेष ।
अस स्वामी इहिं कहं मिलिहि परी हस्त असि रेख । ७७ ॥

चौ० । सुनि मुनिगिरा सत्य जिय जानी। दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥
नारदहु यह भेद न जाना । दसा एक समुझत बिलगाना ॥
सकल सखी गिरिजा गिरि मयना । पुलक सरीर भरे जल नयना ॥
होइ न मृषा देवरिषिभाखा । उमा सो बचन हृदय धरि राखा ॥
उपजेउ सिवपद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन यह संदेहू ॥
जानि कुअवसर प्रीति दुराई । सखीउछंग बैठि पुनि आई ॥
झूठि न होइ देवरिषिबानी । सोचहिं दंपति सखी सयानी ॥
उर धरि धीर कहेउ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिय उपाऊ ॥

दो० । कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार । ७८ ॥

चौ० । तदपि एक मैं कहौं उपाई । होइ करै जौं दैव सहाई ॥
जस बर मैं बरनेउं तुम पाहीं । मिलिहि उमहिं कछु संसय नाहीं ॥
जे जे बर के दोष बखाने । ते सब सिव पहं मैं अनुमाने ॥
जौं बिबाह संकर सन होई । दोषौ गुन सम कह सब कोई ॥
जो अहिसेज सयन हरि करहीं । बुध कछु तिन कहं दोष न धरहीं ॥
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । तिन कहं मंद कहत कोउ नाहीं ॥
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहहीं । सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं ॥
समरथ कहं नहिं दोष गुसाईं । रबि पावक सुरसरि की नाईं ॥

दो० । जो अस हिसिषा करहिं नर जड़ बिबेक अभिमान ।
परहिं कलप भरि नर्क महं जीव कि ईस समान । ७९ ॥

चौ० । सुरसरिजलकृतबारुनि जाना । कबहु न संत करहिं तिहि पाना
सुरसरि मिलें सु पावन जैसे । ईस अनीसहिं अंतर तैसे
संभु सहज समरथ भगवाना । इहिं बिबाह सब बिधि कल्यान
दुराराध्य पै अहहिं महेसू । आसु तोष पुनि किये कलेसू
जौं तप करै कुमारि तुम्हारी । भावित मेटि सकैं त्रिपुरारी
यद्यपि बर अनेक जग माहीं । इहिं कहं सिव तजि दूसर नाहीं
बरदायक प्रनतारतिभंजन । कृपासिंधु सेवक मनरंजन
इच्छित फल बिनु सिव आराधें । लहइ न कोटि योग जप साधें

दो० । अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहिं दीन्ह असीस ।
होइहि यहि कल्यान अब संसय तजहु गिरीस । ७० ॥

चौ० । कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ
पतिहिं एकांत पाय कह मयना । नाथ न मैं समुझे मुनिबयना
जौं घर बर कुल होइ अनूपा । करिय बिबाह सुता अनुरूपा
नतु कन्या बरु रहौ कुमारी । कंत उमा मम प्रान पियारी
जौं न मिलिहि बर गिरिजहिं योगू । गिरि जड़ सहज कहहिं सब लोगू
सो बिचारि पति करहु बिबाहू । जेहि न बहोरि होइ उर दाहू
अस कहि परी चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह गिरीसा
बरु पावक प्रगटै ससि माहीं । नारदबचन अन्यथा नाहीं

दो० । प्रिया सोच परिहरहु सब सुमिरहु श्रीभगवान ।
पारबती जिन निर्मयउ सोइ करिहहिं कल्यान । ७१ ॥

चौ० । अब जौं तुमहिं सुता पर नेहू । तौ अस जाइ सिखावन देहू
करै सो तप जेहि मिलहिं महेसू । आन उपाय न मिटिहि कलेसू
नारद बचन सगर्भ सहेतू । सुंदर सब गुननिधि बृषकेतू
अस बिचारि तुम तजि सब संका । सबहि भांति संकर अकलंका
सुनि पतिबचन हर्ष मन माहीं । गयी तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं बिलोकि नयन भरि बारी । सहित सनेह गोद बैठारी
बारहि बार लेति उर लाई । गद्गद कंठ न कछु कहि जाई
जगतमातु सर्बज्ञ भवानी । मातुसुखद बोली मृदु बानी

दो० । सुनहु मातु मैं दीख अस सपन सुनाऊं तोहि ।
सुंदर गौर सुबिप्र बर अस उपदेसेउ मोहि । ७२ ॥

चौ० । करहु जाइ तप सैलकुमारी । नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातु पितहिं पुनि यह मत भावा । तप सुखप्रद दुख दोष नसावा
तपबल रचै प्रपंच बिधाता । तपबल बिष्नु सकल जगत्राता
तपबल संभु करहिं संहारा । तपबल सेष धरहिं महिभारा

तपअधार सब सृष्टि भवानी । करहु जाइ तप अस जिय जानी ॥
सुनत बचन बिस्मित महतारी । सपन सुनायेउ गिरिहिं हंकारी ॥
मातु पितहिं बहु बिधि समुझाई । चली उमा तप हित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता । भये बिकल मुख आव न बाता ॥

दो० । बेदसिरा मुनि आइ तब सबहिं कहा समुझाइ
पारबतीमहिमा सुनत रहे प्रबोधहिं पाइ । ८३ ॥

चौ० । उरधरि उमा प्रानपतिचरना । जाइ बिपिन लागी तप करना ॥
अति सुकुमारि न तनु तपयोगू । पतिपद सुमिरि तजेउ सब भोगू ॥
नित नव चरन उपज अनुरागा । बिसरी देह तपहि मन लागा ॥
संबत सहस मूल फल खाये । साक खाइ सत बर्ष गंवाये ॥
कछु दिन भोजन बारि बतासा । किये कठिन कछु दिन उपवासा ॥
बेलपात महि परै सुखाई । तीनि सहस संबत सो खाई ॥
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्ना । उमानाम तब भयउ अपर्ना ॥
देखि उमहि तपखीनसरीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गंभीरा ॥

दो० । भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि । ८४ ॥

चौ० । अस तप काहु न कीन्ह भवानी । भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्मबरबानी । सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥
आवै पिता बुलावन जबहीं । हठ परिहरि घर जायहु तबहीं ॥
मिलहिं तुमहिं जब सप्त रिषीसा । जानेहु तब प्रमान बागीसा ॥
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी । पुलक गात गिरिजा हरषानी ॥
उमाचरित मैं सुंदर गावा । सुनहु संभु कर चरित सुहावा ॥
जब तें सती जाइ तनु त्यागा । तब तें सिव मन भयेउ बिरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायकनामा । जहं तहं सुनहिं रामगुनग्रामा ॥

दो० । चिदानंद सुखधाम सिव बिगतमोहमदकाम ।
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकललोकअभिराम ८५ ॥

चौ० । कतहुं मुनिन उपदेसहिं ज्ञाना । कतहुं रामगुन करहिं बखाना ॥
जदपि अकाम तदपि भगवाना । भक्तबिरहदुखदुखित सुजाना ॥
एहि बिधि गयेउ काल बहु बीती । नित नव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम संकर कर देखा । अबिचल हृदय भक्ति की रेखा ॥
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला । रूपसीलनिधि तेज बिसाला ॥
बहु प्रकार संकरहि सराहा । तुम बिनु अस ब्रत को निरबाहा ॥
बहु बिधि राम सिवहि समुझावा । पारबती कर जन्म सुनावा ॥
अति पुनीत गिरिजा की करनी । बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ॥

दो० । अब बिनती मम सुनहु सिव जो मो पर निज नेहु ।
जाइ बिबाहहु सैलजहिं यह मोहि मांगे देहु । ८६ ॥

चौ० । कह सिव यदपि उचित अस नाहीं । नाथबचन पुनि मेटि न जाहीं
सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा । परम धरम यह नाथ हमारा
मातु पिता गुरु प्रभु की बानी । बिनहिं बिचार करिय सुभ जानी
तुम सब भांति परम हितकारी । आज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि संकरबचना । भक्तिबिबेकधर्मजुत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार प्रन रहेऊ । अब उर राखेहु जो हम कहेऊ
अंतर्धान भये अस भाखी । संकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्त ऋषि सिव पहं आये । बोले प्रभु अस बचन सुहाये

दो० । पारबती पहं जाइ तुम प्रेमपरीछा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठयेहु भवन दूरि करेहु संदेहु । ८७ ॥

चौ० । ऋषिन गौरि देखी तहं कैसी । मूरतिवंत तपस्या जैसी
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी । करहु कवन कारन तप भारी
केहि आराधहु का तुम चहहू । हम सन सत्य मर्म सब कहहू
सुनत ऋषिन के बचन भवानी । बोली गूढ मनोहर बानी
कहत मर्म मन अति सकुचाई । हंसिहहु सुनि हमारि जड़ताई
मन हठ परा न सुनै सिखावा । चहत बारि पर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना । बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना
देखिय मुनि अबिबेक हमारा । चाहत पति संकर अविकारा

दो० । सुनत बचन बिहसे ऋषय गिरिसंभव तव देह ।
नारद कर उपदेस सुनि कहहु बसे को गेह । ८८ ॥

चौ० । दक्षसुतन्ह उपदेसि न जाई । तिन फिरि भवन न देखा आई
चित्रकेतु कर घर उन घाला । कनककसिपु कर पुनि अस हाला
नारदसिख जु सुनहिं नर नारी । अवसि भवन तजि होहिं भिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । आप सरिस सबही चह कीन्हा
तेहि के बचन मानि बिस्वासा । तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुन निलज कुबेष कपाली । अकुल अगेह दिगंबर ब्याली
कहहु कवन सुख अस बर पाये । भल भूलिहु ठग के बौराये
पंच कहे सिव सती बिबाही । पुनि अवडेरि मराइनि ताही

दो० । अब सुख सोवत सोच नहिं भीख मांगि भव खांहिं ।
सहज एकाकिन के भवन कबहुं कि नारि खटांहिं । ८९ ॥

चौ० । अजहूं मानहु कहा हमारा । हम तुम कहं बर नीक बिचारा
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला । गांवहिं बेद जासु जस लीला

दूषनरहित सकल गुनरासी । श्रीपति पुर बैकुंठनिवासी ॥
अस बर तुम्हहिं मिलाउब आनी । सुनत बिहसि कह बचन भवानी ॥
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा । हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कनकौ पुनि पषान तें होई । जारेहु सहज न परिहर सोई ॥
नारदबचन न मैं परिहरऊं । बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊं ॥
गुरु के बचन प्रतीति न जेही । सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥

दो० । महादेव अवगुनभवन बिष्नु सकल गुनधाम ।
जेहि कर मन रम जाहि सन ताहि ताहि सन काम । ८० ॥

चौ० । जौं तुम मिलितेउ प्रथम मुनीसा । सुनतिउं सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥
अब मैं जन्म संभु हित हारा । को गुन दोषहिं करै बिचारा ॥
जौं तुम्हरे हठ हृदय बिसेषी । रहि न जाइ बिनु किये बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं । बर कन्या अनेक जग माहीं ॥
जन्म कोटि लगि रगर हमारी । बरौं संभु नतु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेसू । आपु कहहिं सत बार महेसू ॥
मैं पा परौं कहै जगदंबा । तुम गृह गवनहु भयउ बिलंबा ॥
देखि प्रेम बोले मुनिज्ञानी । जय जय जय जगदंब भवानी ॥

दो० । तुम माया भगवान सिव सकल जगतपितु मात ।
नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षितगात । ८१ ॥

चौ० । जाइ मुनिन्ह हिमवंत पठाये । करि बिनती गिरिजहिं गृह ल्याये ॥
बहुरि सप्तरिषि सिव पहं जाई । कथा उमा की सकल सुनाई ॥
भये मगन सिव सुनत सनेहा । हरषि सप्तरिषि गवने गेहा ॥
मन थिर करि तब संभु सुजाना । लगे करन रघुनायकध्याना ॥
तारक असुर भयेउ तेहि काला । भुजप्रताप बल तेज बिसाला ॥
तेइ सब लोक लोकपति जीते । भये देव सुखसंपति रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई । हारे सुर करि बिबिध लराई ॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे । देखे बिधि सब देव दुखारे ॥

दो० । सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुजनिधन तब होइ ।
संभुसुक्रसंभूत सुत इहि जीतै रन सोइ । ८२ ॥

चौ० । मोर कहा सुनि करहु उपाई । होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥
सती जो तजी दच्छमख देहा । जनमी जाइ हिमाचलगेहा ॥
तेइ तप कीन्ह संभुपति लागी । सिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
जदपि अहै असमंजस भारी । तदपि बात इक सुनहु हमारी ॥
पठवहु काम जाइ सिव पाहीं । करै छोभ संकर मन माहीं ॥
तब हम जाइ सिवहिं सिर नाई । करवाउब बिबाहु बरिआई ॥

एहि बिधि भलेहि देवहित होई । मत अति नीक कहै सब कोई
अस्तुति सुरन कीन्ह अति हेतू । प्रगटेउ बिषमबान झषकेतू

दो० । सुरन कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार ।
संभुबिरोध न कुसल मोहिं बिहसि कहेउ अस मार । ८३॥

चौ० । तदपि करब मैं काज तुम्हारा । श्रुति कह परम धर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही । संतत संत प्रसंसहिं तेही
अस कहि चलेउ सबहि सिर नाई । सुमनधनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा । सिवबिरोध ध्रुव मरन हमारा
तब आपन प्रभाव बिस्तारा । निज बस कीन सकल संसारा
कोपेउ जबहिं बारिचरकेतू । छन महं मिटे सकल श्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्यब्रत संयम नाना । धीरज धर्म ज्ञान बिज्ञाना
सदाचार जप योग बिरागा । सभय बिबेककटक सब भागा

छं० । भागे बिबेक सहाइ सहित सो सुभट संयुग महि मुरे ।
सदग्रंथ पर्बतकंदरन महं जाइ तेहि अवसर दुरे ॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा ।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहं कोपि धनु सर कर धरा । ३॥

दो० । जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम ।
ते निज निज मर्याद तजि भये सकल बस काम । ८४ ॥

चौ० । सब के हृदय मदनअभिलाखा । लता निहारि नवहिं तरुशाखा
नदी उमगि अंबुधि कहं धाईं । संगम करहिं तलाव तलाईं
जहं असि दसा जड़न की बरनी । को कहि सकै सचेतन करनी
पसु पच्छी नभजलथलचारी । भये कामबस समय बिसारी
मदनअंध ब्याकुल सब लोका । निसि दिन नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किंनर ब्याला । प्रेत पिसाच भूत बेताला
इन की दसा नहिं कहेउं बखानी । सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध बिरक्त महामुनि योगी । तेपि कामबस भये बियोगी

छं० । भये कामबस योगीस तापस पामरन की को कहै ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहै ॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं ।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं । ४ ॥

सो० । धरा न काहू धीर सब के मन मनसिज हरे ।
जेहि राखेउ रघुबीर ते उबरे तेहि काल महं । ८ ॥

चौ० । उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जब लगि काम संभु पहं गयऊ
सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू । भयउ यथाथित सब संसारू

भये तुरत सबजीव सुखारे । जिमि मद उतरि गये मतवारे ॥
रुद्रहिं देखि मदन भय माना । दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । मरन ठानि मन रचेसि उपाई ॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा । कुसुमित नव तरुराजि बिराजा ॥
बन उपबन बापिका तड़ागा । परम सुभग सब दिसाबिभागा ॥
जहं तहं जनु उमगत अनुरागा । देखि मुयेहु मन मनसिज जागा ॥

छं० । जागेउ मनोभव मुयेहु मन बनसुभगता न परै कही ।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनलसखा सही ॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा । ५ ॥

दो० । सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत ।
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदयनिकेत । ८५ ॥

चौ० । देखि रसाल बिटपबर साखा । तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा ॥
सुमनचाप निज सर संधाने । अति रिस ताकि स्रवन लगि ताने ॥
छाड़े बिषम बिसिख उर लागे । छूटि समाधि संभु तब जागे ॥
भयउ ईसमन छोभ बिसेखी । नयन उघारि सकल दिसि देखी ॥
सौरभपल्लव मदन बिलोका । भयउ कोप कंपेउ त्रयलोका ॥
तब सिव तीसर नयन उघारा । चितवत काम भयउ जरि छारा ॥
हाहाकार भयउ जग भारी । डरपे सुर भये असुर सुखारी ॥
समुझि कामसुख सोचहिं भोगी । भये अकंटक साधक योगी ॥

छं० । योगी अकंटक भयेउ पतिगति सुनति रति मूर्छित भयी ।
रोदति बदति बहु भांति करुना करति संकर पहं गयी ॥
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सन्मुख रही ।
प्रभु आसुतोष कृपालु सिव अबला निरखि बोले सही । ६ ॥

दो० । अब तें रति तव नाथकर होइहि नाम अनंग ।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहिं पुनि सुनु निज मिलन प्रसंग । ८६ ॥

चौ० । जब यदुबंस कृष्ण अवतारा । होइहि हरन महा महिभारा ॥
कृष्णतनय होइहि पति तोरा । बचन अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि संकरबानी । कथा अपर अब कहौं बखानी ॥
देवन समाचार सब पाये । ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये ॥
सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता । गये जहां सिव कृपानिकेता ॥
पृथक पृथक तिन कीन्ह प्रसंसा । भये प्रसन्न चंद्रअवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु बृषकेतू । कहहु अमर आयेहु केहि हेतू ॥
कह बिधि तुम प्रभु अंतरजामी । तदपि भक्तिबस बिनवौं स्वामी ॥

दो० । सकल सुरन के हृदय अस संकर परम उछाह ।
निज नयननि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाह । ९७ ॥

चौ० । यह उत्सव देखिय भरि लोचन । सो कछु करिय मदनमदमोचन
काम जारि रति कहं बर दीन्हा । कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ । नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ
पारबती तप कीन्ह अपारा । करहु तासु अब अंगीकारा
सुनि बिधिबचन समुझि प्रभुबानी । ऐसेइ होउ कहा सुख मानी
तब देवन दुंदुभी बजाई । बरषि सुमन जय जय सुरसाई
अवसर जानि सप्तऋषि आये । तुरतहि बिधि गिरिभवन पठा
प्रथम गये जहं रही भवानी । बोले बचन मधुर छलसानी

दो० । कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेस ।
अब भा झूठ तुम्हार प्रन जारेउ काम महेस । ९८ ॥

चौ० । सुनि बोली मुसुकाइ भवानी । उचित कहेहु मुनिबर बिज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा । अब लगि संभु रहे सबिकारा
हमरे जान सदा सिव जोगी । अज अनवद्य अकाम अभोगी
जौं मैं सिव सेयेउं अस जानी । प्रीति समेत कर्म मन बानी
तौ हमार प्रन सुनहु मुनीसा । करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा । सो अति बड़ अबिबेक तुम्हारा
तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिम तेहि निकट जाइ नहिं का
गये समीप सो अवसि नसाई । जिमि संपाति निज पच्छ गंवाई

दो० । हिय हरषे मुनिबचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास ।
चले भवानिहिं नाइ सिर गये हिमाचल पास । ९९ ॥

चौ० । सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा । मदनदहन सुनि अति दुख पावा
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना । सुनि हिमवंत बहुत सुख माना
हृदय बिचारि संभुप्रभुताई । सादर मुनिबर लिये बुलाई
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई । बेगि बेदबिधि लगन धराई
पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्ही । गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही
जाइ बिधिहिं तिन दीन्ह सो पाती । बांचत प्रीति न हृदय समाती
लगन बांचि अज सबहिं सुनाई । हरषे मुनि सब सुरसमुदाई
सुमनबृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगलकलस दसहुं दिसि साजे

दो० । लगे संवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान ।
होहिं सगुन मंगल सुभद करहिं अपछरा गान । १०० ॥

चौ० । सिवहिं संभुगन करहिं सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौर संवारा
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला । तन बिभूति पट केहरिछाला

ससिललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीनि उपबीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नरसिरमाला । असिव बेष सिवधाम कृपाला ॥
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा । चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा ॥
देखि सिवहिं सुरत्रिय मुसुकाहीं । बरलायक दुलहिनि जग नाहीं ॥
बिष्नु बिरंचि आदि सुरव्राता । चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता ॥
सुरसमाज सब भांति अनूपा । नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥

दो० । बिष्नु कहा अस बिहसि तब बोलि सकल दिसिराज ।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥१०१॥

चौ० । बर अनुहार बरात न भाई । हंसी करैहहु पर पुर जाई ॥
बिष्नुबचन सुनि सुर मुसुकाने । निज निज सेन सहित बिलगाने ॥
मनहीं मन महेस मुसुकाहीं । हरि के बिंग बचन नहिं जाहीं ॥
अति प्रिय बचन सुनत हरि केरे । भृंगी प्रेरि सकल गन टेरे ॥
सिवअनुसासन सुनि सब आये । प्रभुपद जलज सीस तिन नाये ॥
नाना बाहन नाना बेषा । बिहसे सिवसमाज निज देखा ॥
कोउ मुखहीन बिपुलमुख काहू । बिनु पद कर कोउ बहुपदबाहू ॥
बिपुलनयन कोउ नयनबिहीना । रिष्टपुष्ट कोउ अति तनखीना ॥

छं० । तनुखीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तनु धरे ।
भूषन कराल कपालकर सब सद्य सोनित तनु भरे ॥
खर स्वान सुअर सृगाल मुखगन बेष अगनित को गनै ।
बहु जिनिस प्रेत पिसाच जोगिनि भांति बरनत नहिं बनै ।७॥

सो० । नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।
देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि ।८ ॥

चौ० । जस दूलह तसि बनी बराता । कौतुक बिबिध होहिं मग जाता ॥
इहां हिमाचल रचेउ बिताना । अति बिचित्र नहिं जाय बखाना ॥
सैल सकल जहं लगि जग माहीं । लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं ॥
बन सागर नद नदी तलावा । हिम गिरि सब कहं नेवत पठावा ॥
कामरूप सुंदर तनुधारी । सहित समाज सहित बर नारी ॥
आये सकल हिमाचलगेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु ग्टह संवराये । यथाजोग जहं तहं सब छाये ॥
पुरसोभा अवलोकि सुहाई । लागी लघु बिरंचिनिपुनाई ॥

छं० । लघु लागि बिधि की निपुनता अवलोकि पुरसोभा सही ।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभगता सक को कही ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु ग्टह ग्टह सोहहीं ।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनिमन मोहहीं ८ ॥

दो० । जगदंबा जहं अवतरी सो पुर बरनि न जाइ ।
रिद्धि सिद्धि संपति सकल नित नूतन अधिकाइ । १०२ ॥

चौ० । नगर निकट बरात सुनि आई । पुर खरभर सोभा अधिकाई
करि बनाव सजि बाहन नाना । चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुरसेन निहारी । हरिहि देखि अति भये सुखारी
सिवसमाज जब देखन लागे । बिडरि चले बाहन सब भागे
धरि धीरज तहं रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता । कहहिं बचन भयकंपित गाता
कहिय कहा कहि जाइ न बाता । जमकरधार किधौं बरियाता
बर बौराह बसह असवारा । ब्याल कपाल बिभूषन छारा

छं० । तनु छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा ।
संग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनी चरा ॥
जो जियत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तिहिं कर सही ।
देखिहि सो उमा बिबाह घर घर बात असि लरिकन कही ९॥

दो० । समुझि महेससमाज सब जननि जनक मुसुकाहिं ।
बाल बुझाये बिबिध बिधि निडर होउ डर नाहिं । १०३ ॥

चौ० । लै अगवान बरातहिं आये । दिये सबहिं जनवास सुहाये
मैना सुभ आरती संवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचनथार सोह बर पानी । परिछन चली हरहिं हरषानी
बिकट भेष जब रुद्रहिं देखा । अबलनिउर भय भयेउ बिसेषा
भागि भवन पैठी अति त्रासा । गये महेस जहां जनवासा
मयना हृदय भयेउ दुख भारी । लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी । स्याम सरोजनयन भरि बारी
जेह बिधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा । तेह जड बर बाउर कस कीन्हा

छं० । कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेह तुम्हहि सुंदरता दई ।
जो फल चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई ॥
तुम सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महं परौं ।
घर जाउ अपजस होउ जग जीवत बिबाह न हौं करौं १० ॥

दो० । भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि ।
करि बिलाप रोदति बदति सुतासनेह संभारि । १०४ ॥

चौ० । नारद कर मैं कहा बिगारा । भवन मोर जिन बसत उजारा
अस उपदेस उमहिं जिन दीन्हा । बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा
सांचेहु उन के मोह न माया । उदासीन धन धाम न जाया
पर घरघालक लाज न भीरा । बांझ कि जान प्रसव की पीरा
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी । बोली जुतबिबेक मृदु बानी
अस बिचारि सोचहु मति माता । सो न टरै जो रचै बिधाता

करम लिखा जो बाउर नाहू । तो कत दोष लगाइय काहू ॥
तुम सन मिटहिं कि बिधि के अंका । मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥

छं० । जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं ।
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहं पाउब तहीं ॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं ।
बहु भांति बिधिहिं लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं ।११॥

दो० । तेहि अवसर नारद सहित औ रिषिसप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत । १०५ ॥

चौ० । तब नारद सबहीं समुझावा । पूरब कथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि । सदा संभुअरधंगनिवासिनि ॥
जगसंभवपालनलयकारिनि । निज इच्छा लीलाबपुधारिनि ॥
जनमी प्रथम दच्छगृह जाई । नाम सती सुंदर तनु पाई ॥
तहउं सती संकरहि बिबाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥
एक बार आवति सिव संगा । देखेउ रघुकुलकमलपतंगा ॥
भयउ मोह सिवकहा न कीन्हा । भ्रमबस बेष सीय कर लीन्हा ॥

छं० । सियबेष सती जो कीन्ह तेहिं अपराध संकर परिहरी ।
हरबिरह जाइ बहोरि पितु के यज्ञ योगानल जरी ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तप किया ।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकरप्रिया । १२ ॥

दो० । सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद ।
छन महं ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद । १०६ ॥

चौ० । तब मयना हिमवंत अनंदे । पुनि पुनि पारवतीपद बंदे ॥
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने । नगरलोग सब अति हरषाने ॥
लगे होन पुर मंगल गाना । सजे सबहिं हाटकघट नाना ॥
भांति अनेक भई जेंवनारा । सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा ॥
सो जेंवनार कि जाइ बखानी । बसहिं भवन जेहि मातु भवानी ॥
सादर बोले सकल बराती । बिष्नु बिरंचि देव सब जाती ॥
बिबिध पांति बैठी जेंवनारा । लगे परोसन निपुन सुआरा ॥
नारिबृन्द सुर जेंवत जानी । लागीं देन गारि मृदु बानी ॥

छं० । गारी मधुर सुर देहिं सुंदरि ब्यंग बचन सुनावहीं ।
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सचु पावहीं ॥
जेंवत जो बढ्यो अनंद सो मुख कोटिहुं न परै कह्यौ ।
अंचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहं जाको रह्यो । १३ ॥

चौ० । मैं जाना तुम्हार गुन सीला । कहौं सुनहु अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे । कहि न जाइ जस सुख मन मोरे
रामचरित अति अमित मुनीसा । कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा
तदपि जथाश्रुत कहौं बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी
सारद दारुनारि सम स्वामी । राम सूत्रधर अंतरजामी
जेहि पर कृपा करहिं जन जानी । कबिउर अजिर नचावहिं बानी
प्रनवउं सोइ कृपालु रघुनाथा । बरनउं बिसद तासु गुनगाथा
परम रम्य गिरिबर कैलासू । सदा जहां सिवउमानिवासू

दो० । सिद्ध तपोधन जोगि जन सुर किंनर मुनिवृन्द ।
बसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं सिव सुखकन्द । ११३ प्रसंग ॥

चौ० । हरिहरबिमुख धर्म रत नाहीं । ते नर तहां सपनेहुं नहिं जाहीं
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला । नित नूतन सुंदर सब काला
त्रिबिध समीर सुसीतल छाया । सिवबिश्राम बिटप श्रुति गाया
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ
निज कर डासि नाग रिपुछाला । बैठे सहजहिं संभु कृपाला
कुंदइंदु दर गौर सरीरा । भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा
तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नखदुति भगतहृदयतमहरना
भुजगभूतिभूषन त्रिपुरारी । आनन सरदचंद्रछबिहारी

दो० । जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल ।
नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बाल बिधु भाल । ११४ ॥

चौ० । बैठे सोह कामरिपु कैसें । धरे सरीर सांतरस जैसें
पारबती भलि अवसर जानी । गईं संभु पहं मातु भवानी
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा । बाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठी सिव समीप हरषाई । पूरबजन्मकथा चित आई
पतिहिय हेतु अधिक अनुमानी । बिहसि उमा बोलीं प्रिय बानी
कथा जो सकल लोकहितकारी । सोइ पूछन चह सैलकुमारी
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पदपंकजसेवा

दो० । प्रभु समर्थ सर्बग्य सिव सकल कला गुनधाम ।
जोगग्यानबैराग्यनिधि प्रनतकल्पतरुनाम । ११५ ॥

चौ० । जो मो पर प्रसन्न सुखरासी । जानिय सत्य मोहि निज दासी
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना । कहि रघुनाथकथा बिधि नाना
जासु भवन सुरतरु तर होई । सह कि दरिद्रजनितदुख सोई

ससिभूषन अस हृदय बिचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथबादी । कहहिं राम कहं ब्रह्म अनादी ॥
सेष सारदा बेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुनगाना ॥
तुम पुनि राम राम दिनराती । सादर जपहु अनंगआराती ॥
राम सो अवधनृपति सुत सोई । की अज अगुन अलखगति कोई ॥

दो० । जौं नृपतनय तो ब्रह्म किमि नारिबिरह मति भोरि ।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ११६ ॥

चौ० । जौं अनीह ब्यापक बिभु कोऊ । कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ॥
अज्ञ जानि रिस उर जनि धरहू । जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू ॥
मैं बन दीख राम प्रभुताई । अति भय बिकल न तुमहिं सुनाई ॥
तदपि मलिन मन बोध न आवा । सो फल भली भांति मैं पावा ॥
अजहूं कछु संसय मन मोरे । करहु कृपा बिनवौं कर जोरे ॥
प्रभु तब मोहि बहु भांति प्रबोधा । नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥
तब कर अस बिमोह अब नाहीं । रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥
कहहु पुनीत रामगुनगाथा । भुजगराजभूषन सुरनाथा ॥

दो० । बंदौं पद धरि धरनि सिर बिनय करौं कर जोरि ।
बरनहु रघुबर बिसदजस श्रुति सिद्धांत निचोरि । ११७ ॥

चौ० । जदपि जोषिता अनअधिकारी । दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ॥
गूढौ तत्त्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहं पावहिं ॥
अति आरति पूछौं सुरराया । रघुपतिकथा कहहु करि दाया ॥
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी । निर्गुन ब्रह्म सगुन बपुधारी ॥
पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा । बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥
कहहु यथा जानकीबिबाहा । राज तजा सो दूषन काहा ॥
बन बसि कीन्हेउ चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥
राज बैठि कीन्ही बहु लीला । सकल कहहु संकर सुखसीला ॥

दो० । बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम ।
प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम । ११८ ॥

चौ० । पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी । जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा । पुनि सब बरनहु सहित बिभागा ॥
औरौ रामरहस्य अनेका । कहहु नाथ अति बिमल बिबेका ॥
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई । सोउ दयालु राखहु जनि गोई ॥
तुम त्रिभुवन गुरु बेद बखाना । आन जीव पामर का जाना ॥
प्रश्न उमा की सहज सुहाई । छलबिहीन सुनि सिवमन भाई ॥
हर हिय रामचरित सब आये । प्रेमपुलक लोचन जल छाये ॥

श्रीरघुनाथरूप उर आवा । परमानंद अमित सुख पावा

दो० । मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहिर कीन्ह ।
रघुपतिचरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह । ११९ ॥

चौ० । झूठौ सत्य जाहि बिनु जाने । जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई । जागे जथा सपन भ्रम जाई
बंदौ बालरूप सोइ रामू । सब सिधि सुलभ जपत जस ना
मंगलभवन अमंगलहारी । द्रवौ सो दसरथअजिरबिहारी
करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी । हरषि सुधा सम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी । तुम समान नहिं कोउ उपकारी
पूछेउ रघुपतिकथाप्रसंगा । सकल लोक जग पावनि गंगा
तुम रघुबीर चरन अनुरागी । कीन्हेउ प्रश्न जगतहित लागी

दो० । रामकृपा तें पारवती सपनेउ तव मन माहिं ।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं । १२० ॥

चौ० । तदपि असंका कीन्हेउ सोई । कहत सुनत सब कर हित होई
जिन हरिकथा सुनी नहिं काना । स्रवनरंध्र अहिभवन समाना
नयनन संतदरस नहिं देखा । लोचन मोरपंख कर लेखा
ते सिर कटु तुमरि सम तूला । जे न नमत हरिगुरुपदमूला
जिन हरिभक्ति हृदै नहिं आनी । जीवत सव समान ते प्रानी
जो नहिं करहि रामगुन गाना । जीह सु दादुरजीह समाना
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु राम कर लीला । सुरहित दनुजबिमोहनसीला

दो० । रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुखदानि ।
संतसभा सुरलोक सब को न सुने अस जानि । १२१ ॥

चौ० । रामकथा सुंदर करतारी । संसय बिहंग उडावनिहारी
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी
रामनामगुनचरित सुहाये । जन्म कर्म अगनित स्रुति गाये
यथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना
तदपि यथास्रुत जस मति मोरी । कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई । सुखद संत संमत मुहि भाई
एक बात नहिं मोहिं सोहानी । यदपि मोह बस कहेउ भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना । जेहि स्रुति गाव धरहिं मुनिध्या

दो० । कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच ।
पाखंडी हरिपदबिमुख जानहिं झूठ न साच । १२२ ॥

चौ० । अग्य अकोबिद अंध अभागी । काई बिषय मुकुर मन लागी ॥
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी । सपनेहुं संतसभा नहिं देषी ॥
कहहिं ते बेदअसंमत बानी । जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी ॥
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना । रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
जिन के अगुन न सगुन बिबेका । जल्पहिं कल्पित बचन अनेका ॥
हरिमायाबस जगत भ्रमाहीं । तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं ॥
बातुल भूतबिबस मतवारे । ते नहिं बोलहिं बचन संभारे ॥
जिन कृत महा मोह मदपाना । तिन कर कहा करिय नहिं काना ॥

सो० । अस निज हृदय बिचारि तजि संसय भजु रामपद ।
सुनु गिरिराजकुमारि भ्रम तम रबिकर बचन मम । १० ॥

चौ० । सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥
अगुन अरूप अलख अज जोई । भक्त प्रेमबस सगुन सो होई ॥
जो गुनरहित सगुन सो कैसें । जल हिमउपल बिलग नहिं जैसें ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तिहि किमि कहिय बिमोहप्रसंगा ॥
राम सच्चिदानंद दिनेसा । नहिं तहं मोहनिसालवलेसा ॥
सहज प्रकास रूप भगवाना । नहिं तहं पुनि बिज्ञानबिहाना ॥
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना । जीवधर्म अहमिति अभिमाना ॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना । परमानंद परेस पुराना ॥

दो० । पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि प्रगट परावरनाथ ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिव नायउ माथ ।१२३॥

चौ० । निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड प्रानी ॥
यथा गगन घनपटल निहारी । झांपेउ भानु कहहिं कुबिचारी ॥
चितव जो लोचन अंगुलि लायें । प्रगट जुगल ससि तेहि के भायें ॥
उमा रामबिषयक अस मोहा । नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
बिषय करन सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ॥
सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू । मायाधीस ज्ञानगुनधामू ॥
जासु सत्यता तें जड माया । भास सत्य इव मोहसहाया ॥

दो० । रजत सीप महं भास जिमि जथा भानुकरबारि ।
जदपि मृषा तिहुं काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि ।१२४॥

चौ० । एहिबिधि जग हरिआस्रित रहई । जदपि असत्य देत दुख अहई ॥
ज्यों सपने सिर काटै कोई । बिनु जागें दुख दूरि न होई ॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई । गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा । मतिअनुमान निगम अस गावा ॥
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना । कर बिनु कर्म करै बिधि नाना ॥

आननरहित सकल रसभोगी । बिनु बानी बक्ता बड़ योगी
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा । ग्रहै घ्रान बिनु बास असेषा
असि सब भांति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहिं बरनी

दो० । जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दसरथसुत भक्तहित कोसलपति भगवान । १२५ ॥

चौ० । कासी मरत जन्तु अवलोकी । जासु नाम बल करौं बिसोकी
सोइ प्रभु मोर चराचरस्वामी । रघुबर सब उरअंतरजामी
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं । जन्म अनेक संचित अघ दहहीं ।
सादर सुमिरन जो नर करहीं । भव बारिधि गोपद इव तरहीं ।
राम सो परमातमा भवानी । तहं भ्रम अति अबिहित तव बानी ।
अस संसय आनत उर माहीं । ज्ञान बिराग सकल गुन जाहीं ।
सुनि सिव के भ्रमभंजन बचना । मिटि गइ सब कुतर्क की रचना ।
भइ रघुपतिपद प्रीति प्रतीती । दारुन असंभावना बीती ॥

दो० । पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि ।
बोली गिरिजा बचन बर मनहु प्रेमरस सानि । १२६ ॥

चौ० । ससिकर सम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ॥
तुम कृपालु सब संसय हरेऊ । रामस्वरूप जानि मोहि परेऊ ॥
नाथकृपा अब गयेउ बिषादा । सुखी भइउं प्रभुचरनप्रसादा ॥
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । यदपि सहज जड़ नारि अयानी ॥
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू । जो मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी । सर्बरहित सबउरपुरबासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू । मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ॥
उमाबचन सुनि परम बिनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

दो० । हिय हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान ।
बहु बिधि उमहिं प्रसंसि पुनि बोले कृपा निधान । १२७ ॥

सो० । सुनु सुभ कथा भवानि रामचरित मानस बिमल ।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहगनायक गरुड़ । ११ ॥
सोइ संबाद उदार जिहिं बिधि भा आगे कहब ।
सुनहु रामअवतार चरित परम सुंदर अनघ । १२ ॥
हरिगुननाम अपार कथा रूप अगनित अमित ।
मैं निज मति अनुसार कहौं उमा सादर सुनहु । १३ ॥

चौ० । सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये । बिपुल बिसद निगमागम गाये ॥
हरिअवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । मत हमार अस सुनहु भवानी ॥

तदपि संत मुनि वेद पुराना । जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना ॥
तस मैं सुमुखि सुनावउं तोही । समुझि परै जस कारन मोही ॥
जब जब होइ धर्म की हानी । बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी ॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा ॥

दो० । असुर मारि थापहिं सुरन्हि राखहिं निज स्रुतिसेतु ।
जग बिस्तारहिं बिसद जस रामजन्म कर हेतु । १२८ ॥

चौ० । सोइ जस गाइ भक्त भव तरहीं । कृपासिंधु जनहित तनु धरहीं ॥
राम जन्म के हेतु अनेका । परम बिचित्र एक तें एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी । सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । जय अरु बिजय जान सब कोऊ ॥
बिप्रस्राप ते दूनौं भाई । तामस असुरदेह तिन पाई ॥
कनककसिपु अरु हाटकलोचन । जगत बिदित सुरपतिमदमोचन ॥
बिजयी समर बीर बिख्याता । धरि बराहबपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि पुनि दूसर मारा । जन प्रहलादसुजस बिस्तारा ॥

दो० । भये निसाचर जाइ ते महाबीर बलवान ।
कुंभकर्न रावन सुभट सुरबिजयी जग जान । १२९ ॥

चौ० । मुक्त न भयेउ हते भगवाना । तीनि जन्म द्विजबचनप्रमाना ॥
एक बार तिन के हित लागी । धरेउ सरीर भक्तअनुरागी ॥
कस्यप अदिति तहां पितु माता । दसरथ कौसल्या बिख्याता ॥
एक कल्प एहि बिधि अवतारा । चरित पवित्र किये संसारा ॥
एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे ॥
संभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परम सती असुराधिपनारी । तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥

दो० । छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुरकारज कीन्ह ।
जब तेइ जानेउ मरम तब स्राप कोप करि दीन्ह । १३० ॥

चौ० । तासु स्राप हरि कीन्ह प्रमाना । कौतुक निधि कृपालु भगवाना ॥
तहां जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद दयऊ ॥
एक जन्म कर कारन एहा । जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनि सुनि बरनी कबिन घनेरी ॥
नारदस्राप दीन्ह इक बारा । कल्प एक तेहि लगि अवतारा ॥
गिरिजा चकित भई सुनि बानी । नारद बिष्णुभक्त मुनि ग्यानी ॥
कारन कवन स्राप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । मुनिमन मोह आचरज भारी ॥

दो० । बोले बिहसि महेस तब ज्ञानी मूढ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ ।१२१॥

सो० । कहौं रामगुनगाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।
भवभंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद । १४ ॥

चौ० । हिमगिरिगुहा एक अति पावनि । बह समीप सुरसरित सुहावनि ॥
आस्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवरिषि मन अति भावा ॥
निरखि सैल सरि बिपिनबिभागा । भयेउ रमापतिपद अनुरागा ॥
सुमिरत हरिहिं स्रापगति बाधी । सहज बिमल मन लागि समाधी ॥
मुनिगति देखि सुरेस डेराना । कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना ॥
सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू ॥
सुनासीर मन महं अति त्रासा । चहत देवरिषि मम पुरबासा ॥
जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं ॥

दो० । सूख हाड़ ले भाग सठ स्वान निरखि मृगराज ।
छीनि लेइ जनि जानि जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज । १२२ ॥

चौ० । तेहि आस्रमहिं मदन जब गयेऊ । निज माया बसंत निर्मयऊ ॥
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा । कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी । कामकृसानु बढ़ावनिहारी ॥
रंभादिक सुरनारि नबीना । सकल असमसरकलाप्रबीना ॥
करहिं गान बहु तान तरंगा । बहु बिधि क्रीडहिं पानिपतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ॥
कामकला कछु मुनिहि न ब्यापी । निज भय डरेउ मनोभव पापी ॥
सीम कि चापि सकै कोउ तासु । बड़ रखवार रमापति जासु ॥

दो० । सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन ।
गहेसि जाइ मुनिबरचरन कहि सुठि आरत बैन । १२३ ॥

चौ० । भयेउ न नारदमन कछु रोषा । कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥
नाइ चरन सिर आयसु पाई । गयेउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुसीलता आपनि करनी । सुरपतिसभा जाइ सब बरनी ॥
सुनि सब के मन अचरज आवा । मुनिहिं प्रसंसि हरिहिं सिर नावा ॥
तब नारद गवने सिव पाहीं । जीति काम अहमिति मन माहीं ॥
मारचरित संकरहिं सुनावा । अति प्रिय जानि महेस सिखावा ॥
बार बार बिनवउं मुनि तोही । जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥
तिमि जनि हरिहि सुनायहु कबहूं । चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूं ॥

दो० । संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सुहान ।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान । १२४ ॥

चौ० । राम कीन्ह चाहैं सोइ होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
संभुबचन मुनिमनहिं न भाये । तब बिरंचि के लोक सिधाये ॥
एक बार करतल बर बीना । गावत हरिगुन गानप्रबीना ॥
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा । जहं बस स्रीनिवास स्रुतिमाथा ॥
हरषि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन रिषिहि समेता ॥
बोले बिहसि चराचरराया । बहुत दिननि कीन्ही मुनि दाया ॥
कामचरित नारद सब भाखे । जद्यपि प्रथम बरजि सिव राखे ॥
अति प्रचंड रघुपति कै माया । जेहि न मोह अस को जग जाया ॥

दो० । रूख बदन करि बचन मृदु बोले स्रीभगवान ।
तुम्हरे सुमिरन ते मिटहिं मोह मार मद मान । १२५ ॥

चौ० । सुनु मुनि मोह होइ मन ताके । ग्यान बिराग हृदय नहिं जाके ॥
ब्रह्मचर्य्यब्रतरत मतिधीरा । तुमहिं कि करै मनोभव पीरा ॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना । कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥
करुनानिधि मन दीख बिचारी । उर अंकुरेउ गर्बतरु भारी ॥
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी । प्रन हमार सेवकहितकारी ॥
मुनि कर हित मम कौतुक होई । अवसि उपाय करब मैं सोई ॥
तब नारद हरिपद सिर नाई । चले हृदय अहमिति अधिकाई ॥
स्रीपति निज माया तब प्रेरी । सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥

दो० । बिरचेउ मग महं नगर तेहि सत योजन बिस्तार ।
स्रीनिवासपुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार । १२६ ॥

चौ० । बसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥
तेहि पुर बसै सीलनिधि राजा । अगनित हय गज सेन समाजा ॥
सत सुरेस सम बिभवबिलासा । रूपतेजबलनीतिनिवासा ॥
बिस्वमोहनी तासु कुमारी । स्री बिमोह जेहि रूप निहारी ॥
सो हरिमाया सब गुनखानी । सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करै स्वयंवर सो॰नृपबाला । आये तहं अगनित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ । पुरबासिन सब पूछत भयऊ ॥
सुनि सब चरित भूपगृह आये । करि पूजा नृप मुनि बैठाये ॥

दो० । आनि देखाई नारदहिं भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुन दोष सब एहि कर हृदय बिचारि । १२७ ॥

चौ० । देखि रूप मुनि बिरति बिसारी । बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने । हृदय हरष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो एहि बरै अमर सो होई । समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥

सेवहिं सकल चराचर ताही । बरै सीलनिधि कन्या जाही ॥
लच्छन सब बिचारि उर राखे । कछुक बनाइ भूप सन भाखे ॥
सुता सुलच्छनि कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी । जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ॥
जप तप कछु न होइ तेहि काला । हे बिधि मिलै कवन बिधि बाला ॥

दो० । एहि अवसर चाहिय परम सोभा रूप बिसाल ।
जो बिलोकि रीझै कुंवरि तब मेलै जयमाल । १३८ ॥

चौ० । हरि सन मांगौं सुंदरताई । होइहि जात गहरु अति भाई ॥
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ । एहि अवसर सहाय सो होऊ ॥
बहु बिधि बिनय कीन्ह तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभु बिलोकि मुनिनयन जुड़ाने । होइहि काज हिये हरषाने ॥
अति आरत कहि कथा सुनाई । करहु कृपा प्रभु होहु सहाई ॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भांति नहिं पावउं ओही ॥
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा । करो सो बेगि दास मैं तोरा ॥
निज मायाबल देखि बिसाला । हिय हंसि बोले दीनदयाला ॥

दो० । जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार । १३९ ॥

चौ० । कुपथ मांग रुजब्याकुल रोगी । बैद न देइ सुनहु मुनियोगी ॥
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊं । कहि अस अंतर्हित प्रभु भयऊ ॥
मायाबिबस भये मुनि मूढ़ा । समुझी नहिं हरिगिरा निगूढ़ा ॥
गवने तुरत तहां रिषिराई । जहां स्वयंबरभूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा । बहु बनाव करि सहित समाजा ॥
मुनिमन हर्ष रूप अति मोरे । मोहि तजि आन बरिहि न भोरे ॥
मुनिहितकारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा । नारद जानि सबहि सिर नावा ॥

दो० । रहे तहां दुइ रुद्रगन ते जानहिं सब भेउ ।
बिप्रभेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ । १४० ॥

चौ० । जेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदय रूप अहमिति अधिकाई ॥
तहं बैठे महेसगन दोऊ । बिप्रभेषगति लखै न कोऊ ॥
करहिं कूट नारदहिं सुनाई । नीकि दीन्ह हरि सुंदरताई ॥
रीझिहि राजकुंवरि छबि देखी । इनहिं बरिहि हरि जानि बिसेखी ॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराये । हंसहिं संभुगन अति सचु पाये ॥
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी । समुझि न परै बुद्धि भ्रमसानी ॥
काहु न लखा सो चरित बिसेखी । सो सरूप नृपकन्या देखी ॥

मर्कटबदन भयंकर देही । देखत हृदय क्रोध भा तेही ॥

दो० । सखी संग लै कुंवरि तब चलि जनु राजमराल ।
देखति फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल । १४१ ॥

चौ० । जेहि दिसि बैठे नारद फूली । सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली ॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं । देखि दसा हरगन मुसुकाहीं ॥
धरि नृपतनु तहं गयउ कृपाला । कुंवरि हरषि मेलेउ जयमाला ॥
दुलहिनि लै गौ लच्छिनिवासा । नृपसमाज सब भयेउ निरासा ॥
मुनि अति बिकल मोह मति गाठी । मनि गिरि गई छूटि जनु गांठी ॥
तब हरगन बोले मुसुकाई । निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई ॥
अस कहि दोउ भागे भय भारी । बदन दीख मुनि बारि निहारी ॥
भेष बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । तिनहिं साप दीन्हा अति गाढ़ा ॥

दो० । होहु निसाचर जाइ तुम कपटी पापी दोउ ।
हंसेहु हमहिं सो लेहु फल बहुरि हंसेउ मुनि कोउ ।१४२॥

चौ० । पुनि जल दीख रूप निज पावा । तदपि हृदय संतोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मन माहीं । सपदि चले कमलापति पाहीं ॥
देहौं साप कि मरिहौं जाई । जगत मोरि उपहास कराई ॥
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाईं । मुनि कहं चले बिकल की नाईं ॥
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा । माया बस न रहा मन बोधा ॥
पर संपदा सकहु नहिं देखी । तुमरे ईर्षा कपट बिसेषी ॥
मथत सिंधु रुद्रहिं बौरायेहु । सुरन प्रेरि बिष पान करायेहु ॥

दो० । असुर सुरा बिष संकरहिं आपु रमा मनि चारु ।
स्वारथसाधक कुटिल तुम सदा कपट ब्यवहारु । १४३ ॥

चौ० । परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥
भलेहि मंद मंदहि भल करहू । बिस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू ॥
डहंकि डहंकि परिचेहु सब काहू । अति असंक मन सदा उछाहू ॥
कर्म सुभासुभ तुमहिं न बाधा । अब लगि तुमहि न काहू साधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
बंचेहु मोहि जवन धरि देहा । सोइ तनु धरहु साप मम येहा ॥
कपिआकृति तुम कीन्ह हमारी । करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम भारी । नारिबिरह तुम होब दुखारी ॥

दो० । साप सीस धरि हरषि हिय प्रभु सुरकारज कीन्ह ।
निज माया की प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्ह । १४४ ॥

चौ० । जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तहं रमा न राजकुमारी ॥

तब मुनि अति सभीत हरिचरना । गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥
म्रषा होउ मम स्राप क्रपाला । मम इच्छा कह दीन दयाला ॥
मैं दुर्बचन कहेउं बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे ॥
जपहु जाइ संकर सतनामा । होइहि हृदय तुरत बिस्रामा ॥
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरे । अस प्रतीति त्यागेहु जनि भोरे ॥
जेहि पर क्रपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भक्ति हमारी ॥
अस उर धरि महि बिचरहु जाई । अब न तुमहिं माया नियराई ॥

दो० । बहु बिधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु तब भये अंतर्धान ।
सत्यलोक नारद चले करत रामगुन गान । १४५ ॥

चौ० । हरगन मुनिहिं जात पथ देखी । बिगतमोह मन हर्ष बिसेषी ॥
अति सभीत नारद पहं आये । गहि पद आरत बचन सुनाये ॥
हरगन हम न बिप्र मुनिराया । बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥
स्राप अनुग्रह करहु क्रपाला । बोले नारद दीनदयाला ॥
निसिचर जाय होहु तुम दोऊ । बैभव बिपुल तेज बल होऊ ॥
भुजबल बिस्व जितब तुम जहिआ । धरिहहिं बिस्नु मनुजतनु तहिआ ॥
समर मरन हरिहाथ तुम्हारा । होइहहु मुक्त न पुनि संसारा ॥
चले जुगल मुनिपद सिर नाई । भये निसाचर कालहिं पाई ॥

दो० । एक कल्प इहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुजअवतार ।
सुररंजन सज्जनसुखद हरि भंजन भुभार । १४६ ॥

चौ० । इहि बिधि जन्म कर्म हरि केरे । सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं । चारु चरित नाना बिध करहीं ॥
तब तब कथा मुनीसन गाई । परम पुनीत बिचित्र सुहाई ॥
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने । करहिं न सुनि आचरज सयाने ॥
हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहु बिधि स्रुति संता ॥
रामचन्द्र के चरित सुहाये । कल्प कोटि लगि जाहिं न गाये ॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी । हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभु कौतुकी प्रनतहितकारी । सेवत सुलभ सकल दुखहारी ॥

सो० । सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।
अस बिचारि मन माहिं भजिय महामायापतिहिं । १५ ॥

चौ० । अपर हेतु सुनु सैलकुमारी । कहौं बिचित्र कथा बिस्तारी ॥
जेहि कारन अज अगुन अनूपा । ब्रह्म भये कोसल पुरभूपा ॥
जो प्रभु बिपिनि फिरत तुम देखा । बंधु समेत किये मुनिभेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी । सतीसरीर रहिउ बौरानी ॥

कबहुँ न छाया मिटति तुम्हारी । तासु चरित सुनु भ्रमरुजहारी ॥
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा । सो सब कहिहौं मति अनुसारा ॥
भरद्वाज सुनि संकरबानी । सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥
लगे बहुरि बरनै बृषकेतू । सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

दो० । सो मैं तुम सन कहौं सब सुनु मुनीस मन लाइ ।
रामकथा कलिमलहरनि मंगलकरनि सुहाइ । १४० ॥

चौ० । स्वायंभू मनु अरु सतरूपा । जिन ते भइ नरसृष्टि अनूपा ॥
दंपतिधर्म आचरन नीका । अजहुँ गाव स्रुति जिन की लीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू । ध्रुव हरिभक्त भये सुत जासू ॥
लघुसुतनाम प्रियब्रत ताही । बेद पुरान प्रसंसत जाही ॥
देवहूति पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी ॥
आदि देव प्रभु दीनदयाला । जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला ॥
सांख्यसास्त्र जिन प्रगट बखाना । तत्वबिचारनिपुन भगवाना ॥
तेइ मनु राज कीन्ह बहु काला । प्रभुआयसु बहु बिधि प्रतिपाला ॥

सो० । होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन ।
हृदय बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभक्ति बिन । १४१ ॥

चौ० । बरबस राज सुतहिं तब दीन्हा । नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥
तीरथ बर नैमिष बिख्याता । अति पुनीत साधकसिधिदाता ॥
बसहिं जहाँ मुनि सिद्धसमाजा । तहँ हिय हरषि चले मनु राजा ॥
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा । ज्ञान भक्ति जनु धरे सरीरा ॥
पहुँचे जाइ धेनुमतितीरा । हरषि नहाने निर्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी । धर्मधुरंधर नृप ऋषि जानी ॥
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये । मुनिन सकल सादर करवाये ॥
कृससरीर मुनिपटपरिधाना । संतसभा नित सुनहिं पुराना ॥

दो० । द्वादस अच्छर मंत्र बर जपहिं सहित अनुराग ।
बासुदेवपद पंकरुह दंपतिमन अति लाग । १४८ ॥

चौ० । करहिं अहार साक फल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । बारिअधार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई । देखिय नयन परम प्रभु सोई ॥
अगुन अखंड अनंत अनादी । जेहि चिंतहिं परमारथबादी ॥
नेति नेति जेहि बेद निरूपा । चिदानंद निरुपाधि अनूपा ॥
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना । उपजहिं जासु अंस ते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवकबस अहहीं । भक्त हेतु लीला तनु गहहीं ॥
जौं यह बचन सत्य स्रुति भाषा । तौ हमार पूजिहि अभिलाषा ॥

दो० । इहि बिधि बीते बर्ष षट सहस बारि आहार ।
सम्वत सप्त सहस्र पुनि रहे समीरअधार । १४९ ॥

चौ० । बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पग दोऊ ॥
बिधि हरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आये बहु बारा ॥
मांगहु बर बहु भांति लुभाये । परम धीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अस्थिमात्र होइ रहा सरीरा । तदपि मनागपि नहिं मन पीरा ॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी । गतिअनन्य तापस नृप रानी ॥
मांगु मांगु बर भइ नभ बानी । परम गंभीर कृपामृतसानी ॥
मृतकजिआवनि गिरा सुहाई । स्रवनरंध्र होइ उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तन भयेउ सुहाये । मानहुं अबहिं भवन ते आये ॥

दो० । स्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात ।
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात । १५० ॥

चौ० । सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू । बिधि हरि हर बंदित पदरेनू ॥
सेवत सुलभ सकलसुखदायक । प्रनतपाल सचराचरनायक ॥
जौं अनाथहित हम पर नेहू । तौ प्रसन्न होय यह बर देहू ॥
जो सरूप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
जो भुसुंडिमनमानसहंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन । कृपा करहु प्रनतारतिमोचन ॥
दंपतिबचन परमप्रिय लागे । मृदुल बिनीत प्रेमरसपागे ॥
भक्तबछल प्रभु कृपानिधाना । बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥

दो० । नीलसरोरुह नीलमनि नील नीरधर स्याम ।
लाजहिं तनु सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम । १५१ ॥

चौ० । सरदमयंकबदन छबिसींवां । चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवां ॥
अधर अरुन रद सुंदर नासा । बिधुकर निकरबिनिंदक हासा ॥
नव अंबुज अंबकछबि नीकी । चितवनि ललित भावती जी की ॥
भ्रुकुटि मनोजचापछबिहारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुपसमाजा ॥
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला । पदिकहार भूषन मनिजाला ॥
केहरिकंधर चारु जनेऊ । बाहुबिभूषन सुंदर तेऊ ॥
करिकर सरिस सुभग भुजदंडा । कटि निषंग कर सर कोदंडा ॥

दो० । तड़ितबिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि ।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुनभंवरछबि छीनि । १५२ ॥

चौ० । पदराजीव बरनि नहिं जाहीं । मुनिमन मधुप बसहिं जेहि माहीं ॥
बामभाग सोभति अनुकूला । आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला ॥

जासु अंस उपजहिं गुनखानी । अगनित उमा रमा ब्रह्मानी ॥
भृकुटिबिलास जासु जग होई । रामबामदिसि सीता सोई ॥
छबिसमुद्र हरिरूप बिलोकी । एकटकरहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा ॥
हर्षबिबस तनदसा भुलानी । परे दंड इव गहि पद पानी ॥
सिर परसे प्रभु निज करकंजा । तुरत उठाये करुनापुंजा ॥

दो० । बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।
मांगहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि । १५३ ॥

चौ० । सुनि प्रभु बचन जोरि युग पानी। धरि धीरज बोले मृदुबानी ॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूजे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बड़ि मन माहीं । सुगम अगम कहि जात सो नाहीं ॥
तुमहिं देत अति सुगम गुसाईं । अगम लागु मोहि निज कृपिनाई ॥
यथा दरिद्र बिबुधतरु पाई । बहु संपति मांगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जानै सोई । तथा हृदय मम संसय होई ॥
सो तुम जानहु अन्तरजामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाइ मांगु नृप मोहीं । मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं ॥

दो० । दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं सतभाव ।
चाहौं तुमहिं समान सुत प्रभु सन कवन दुराव । १५४ ॥

चौ० । देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहं जाई । नृप तव तनय होब मैं आई ॥
सतरूपहिं बिलोकि कर जोरे । देबि मांगु बर जो रुचि तोरे ॥
जो बर नाथ चतुर नृप मांगा । सोइ कृपालु मोहि अति प्रिय लागा ॥
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई । यदपि भक्तहित तुमहि सुहाई ॥
तुम ब्रह्मादिजनक जगस्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतर जामी ॥
अस समुझत मन संसय होई । कहा जो प्रभु प्रमान पुनि सोई ॥
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं । जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ॥

दो० । सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेउ ।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु मोहि कृपा करि देउ । १५५ ॥

चौ० । सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना । कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं ॥
मातु बिबेक अलौकिक तोरे । कबहुं न मिटिहि अनुग्रह मोरे ॥
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । अवर एक बिनती प्रभु मोरी ॥
सुतबिषयक तव पद रति होऊ । मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ ॥

मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना । मम जीवन तिमि तुमहिं अधीना ॥
अस बर मांगि चरन गहि रहेऊ । एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥
अब तुम मम अनुसासन मानी । बसहु जाइ सुरपतिरजधानी ॥

सो० । तहं करि भोग बिसाल तात गये कछु काल पुनि ।
होइहहु अवधभुआल तब मैं होब तुम्हार सुत । १८ ॥

चौ० । इच्छामय नरबेष संवारे । होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे ॥
अंसन सहित देह धरि ताता । करिहौं चरित भगत सुखदाता ॥
जे सुनि सादर नर बड़भागी । भव तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥
आदिसक्ति जेहि जग उपजाया । सोउ अवतरहि मोरि यह माया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य प्रन सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । अन्तर्धान भये भगवाना ॥
दंपति उर धरि भक्ति कृपाला । तेहि आस्रम निवसे कछु काला ॥
समय पाइ तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥

दो० । यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कहेउ बृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि रामजन्म कर हेतु । १५६ ॥

चौ० । सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥
बिस्व बिदित इक कैकय देसू । सत्यकेतु तहं बसै नरेसू ॥
धर्मधुरंधर नीतिनिधाना । तेज प्रताप सील बलवाना ॥
तेहि के भये जुगल सुत बीरा । सब गुनधाम महारनधीरा ॥
रजधानी जेठे सुत आही । नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर सुतहिं अरिमर्दन नामा । भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥
भाइहि भाइ परस्पर प्रीती । सकल दोष छल बर्जित रीती ॥
जेठे सुतहिं राज नृप दीन्हा । हरिहित आपु गवन बन कीन्हा ॥

दो० । जब प्रतापरबि भयउ नृप फिरी दोहाई देस ।
प्रजापाल अति बेदबिधि कतहुं नहीं अघलेस । १५७ ॥

चौ० । नृपहित कारक सचिव सुजाना । नाम धर्मरुचि सुक्रसमाना ॥
सचिव सयान बंधुबल बीरा । आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा । अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
सेन बिलोकि राउ हरखाना । अरु बाजे गहगहे निसाना ॥
बिजय हेतु कटकाइ बनाई । सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई ॥
जहं तहं परी अनेक लराई । जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हा । लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हा ॥
सकल अवनिमंडल तेहि काला । एक प्रतापभानु महिपाला ॥

दो० । स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेस ।

धर्मअर्थकामादि सुख सेवहिं समै नरेस । १५८ ॥

चौ० । भूप प्रतापभानु बल पाई । कामधेनु भइ भूमि सुहाई ॥
सब दुखवर्जित प्रजा सुखारी । धर्मशील सुंदर नर नारी ॥
सचिव धर्मरुचि हरिपद प्रीती । नृपहित हेतु सिखावत नीती ॥
गुरु सुर संत पितर महिदेवा । करै सदा नृप सब की सेवा ॥
भूपधर्म जे वेद बखाने । सकल करै सादर सुखमाने ॥
दिन प्रति देइ विविध विधि दाना । सुनै शास्त्र वर वेद पुराना ॥
नाना बापी कूप तड़ागा । सुमन बाटिका सुंदर बागा ॥
विप्रभवन सुरभवन सुहाये । सब तीरथन विचित्र बनाये ॥

दो० । जहं लगि कहे पुराण श्रुति एक एक सब याग ।
बार सहस्र सहस्र नृप किये सहित अनुराग । १५९ ॥

चौ० । हृदय न कछु फल अनुसंधाना । भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करै जो धर्म कर्म मन बानी । बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥
चढि बर बाजि बार इक राजा । मृगया कर सब साजि समाजा ॥
विंध्याचल गंभीर बन गयऊ । मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥
फिरत विपिनि नृप दीख बराहू । जनु बन दुरेउ शशिहिं ग्रसि राहू ॥
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं । मनहुं क्रोध बस उगिलत नाहीं ॥
कोल कराल दसन छबि गाई । तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पायें । चकित बिलोकत कान उठायें ॥

दो० । नील महीधरशिखर सम देखि बिशाल बराह ।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हांकि न होइ निबाह । १६० ॥

चौ० । आवत देखि अधिकरव बाजी । चला बराह मरुतगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप शरसंधाना । महि मिलि गयेउ बिलोकत बाना ॥
तकि तकि तीर महीश चलावा । करि छल सुअर शरीर बचावा ॥
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । रिसबस भूप चलेउ संग लागा ॥
गयेउ दूरि घन गहन बराहू । जहं नाहीं गजबाजि निबाहू ॥
अति अकेल बन विपुल कलेसू । तदपि न मृगमग तजै नरेसू ॥
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठ गिरिगुहा गंभीरा ॥
अगम देखि नृप अति पछिताई । फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥

दो० । खेदखिन्न क्षुधित तृषित राजा बाजि समेत ।
खोजत व्याकुल सरित सर जल बिनु भयेउ अचेत । १६१ ॥

चौ० । फिरत बिपिनि आश्रम इक देखा । तहं बस नृपति कपटमुनिवेषा ॥
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई । समर सेन तजि गयेउ पराई ॥
समय प्रतापभानु कर जानी । आपन अति असमय अनुमानी ॥

गयेउ न रह मन बहुत गलानी । मिला न राजहिं नृप अभिमानी ॥
रिस उर मारि रंक जिमि राजा । बिपिनि बसै तापस के साजा ॥
तासु समीप गवन नृप कीन्हा । यह प्रतापरबि तेइ तब चीन्हा ॥
राउ तृषित नहिं सो पहिचाना । देखि सुबेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा । परम चतुर न कहेउ निज नामा ॥

दो० । भूपति तृषित बिलोकि तेइ सर बर दीन्ह देखाइ ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ । १६१ ॥

चौ० । गै स्रम सकल सुखी नृप भयऊ । निज आस्रम तापस लै गयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी । पुनि तापस बोला मृदु बानी ॥
को तुम कस बन फिरहु अकेले । सुंदर जुबा जीव परहेले ॥
चक्रबर्ति के लच्छन तोरे । देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रतापभानु अवनीसा । तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥
फिरत अहेरहिं परेउं भुलाई । बड़े भाग्य देखेउं पद आई ॥
हम कहं दुर्लभ दरस तुम्हारा । जानत हौं कछु भल होनिहारा ॥
कह मुनि तात भयेउ अंधियारा । योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥

दो० । निसा घोर गंभीर बन पंथ न सुनहु सुजान ।
बसहु आजु अस जानि तुम जायेहु होत बिहान । १६३ ॥
तुलसी जसि भवितब्यता तैसे मिलै सहाय ।
आपु न आवै ताहि पै किं ताहि तहां लेजाय । १६४ ॥

चौ० । भलेहि नाथ आयसु धरि सीसा । बांधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥
नृप बहु भांति प्रसंसेउ ताही । चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई ॥
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी । नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
तेहि न जान नृप नृपहिं सो जाना । भूप सुहृदय सो कपट सयाना ॥
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा । छलबल कीन्ह चहै निज काजा ॥
समुझि राजसुख दुखित अराती । अवा अनल इव सुलगै छाती ॥
सरल बचन नृप के सुनि काना । बयर संभारि हृदय हरषाना ॥

दो० । कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ युक्ति समेत ।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत । १६५ ॥

चौ० । कह नृप जे बिज्ञाननिधाना । तुम सारिखे गलित अभिमाना ॥
सदा रहहिं अपनपौ दुरायें । सब बिधि कुसल कुबेष बनायें ॥
तेहिं ते कहहिं संत स्रुति टेरे । परम अकिंचन प्रिय हरि केरे ॥
तुम सम अधन भिखारि अगेहा । होत बिरंचि सिवहिं संदेहा ॥
जोसि सोसि तव चरन नमामी । मो पर कृपा करिय अब स्वामी ॥

सहज प्रीति भूपति की देखी । आप बिषै बिस्वास बिसेषी ॥
सब प्रकार राजहिं अपनाई । बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुनु सति भाव कहौं महिपाला । इहां बसत बीते बहु काला ॥

दो० । अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावेउं काहु ।
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु । १६६ ॥

सो० । तुलसी देखि सुबेष भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ।
सुंदर केकिहि पेखि बचन सुधा सम असन अहि । १८ ॥

चौ० । तात गुप्त रहौं जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
प्रभु जानत सब बिनहिं जनायें । कहहु कवन सिधि लोक रिझायें ॥
तुम सुचि सुमति परम प्रिय मोरे । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे ॥
अब जो तात दुरावौं तोही । दारुन दोष घटै अति मोही ॥
जिमि जिमि तापस कथै उदासा । तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ॥
देखा स्वबस कर्म मन बानी । तब बोला तापस बगध्यानी ॥
नाम हमार एकतनु भाई । सुनि नृप बोलेउ पुनि सिर नाई ॥
कहहु नाम कर अर्थ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी ॥

दो० । आदि सृष्टि उपजी जबै तब उतपति भइ मोरि ।
नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि । १६७ ॥

चौ० । जनि आचरज करहु मन माहीं । सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तपबल तें जग सृजै बिधाता । तपबल बिष्नु भये परित्राता ॥
तपबल संभु करहिं संघारा । तप तें अगम न कछु संसारा ॥
भयउ नृपहिं सुनि अति अनुरागा । कथा पुरातन कहै सो लागा ॥
कर्म धर्म इतिहास अनेका । करै निरूपन बिरति बिबेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी । कहेसि अमित आचरज बखानी ॥
सुनि महीप तापसबस भयऊ । आपन नाम कहन तब लयऊ ॥
कह तापस नृप जानौं तोही । कीन्हेउ कपट लागु भल मोही ॥

सो० । सुनु महीप असि नीति जहं तहं नाम न कहहिं नृप ।
मोहि तोहि पर अति प्रीति परम चतुरता निरखि तव । १९ ॥

चौ० । नाम तुम्हार प्रतापदिनेसा । सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥
गुरुप्रसाद सब जानिय राजा । कहिय न आपनि जानि अकाजा ॥
देखि तात तव सहज सुधाई । प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई ॥
उपजि परी ममता मन मोरे । कहेउं कथा निज पूछे तोरे ॥
अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं । मांगु जो भूप भाव मन माहीं ॥
सुनि सुबचन भूपति हरषाना । गहि पद बिनय कीन्ह बिधि नाना ॥
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरे । चारि पदारथ करतल मोरे ॥

प्रभुहिं तथापि प्रसन्न बिलोकी । मांगि अगम बर होउं असोकी ॥

दो० । जरामरनदुखरहित तनु समर न जीतै कोउ ।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कल्पसत होउ । १६८ ॥

चौ० । कह तापस नृप ऐसइ होऊ । कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥
कालौ तव पद नाइहि सीसा । एक बिप्रकुल छाड़ि महीसा ॥
तपबल बिप्र सदा बरिआरा । तिन के कोप न कोउ रखवारा ॥
जौ बिप्रन बस करहु नरेसा । तौ तव बस बिधि बिष्नु महेसा ॥
चल न ब्रह्मकुल सें बरिआई । सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई ॥
बिप्रस्राप बिनु सुनु महिपाला । तोर नास नहिं कवनेहु काला ॥
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू । नाथ न होइ मोर अब नासू ॥
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मो कहं सर्बकाल कल्याना ॥

दो० । एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि ।
मिलब हमार भुलाब निज कहहु तो मोहि न खोरि । ॥

चौ० । तातें मैं तोहि बरजौं राजा । कहे कथा तव परम अकाजा ॥
छठे स्रवन यह परत कहानी । नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥
यह प्रगटे अथवा द्विजस्रापा । नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥
आन उपाय निधन तव नाहीं । जौ हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा । द्विजगुरुकोप कहहु को राखा ॥
राखै गुरु जो कोप बिधाता । गुरु बिरोध नहिं कोउ जग त्राता ॥
जौं न चलब हम कहे तुम्हारे । होइ नास नहिं सोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा । प्रभु महिदेवस्राप अति घोरा ॥

दो० । होहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ ।
तुम तजि दीनदयाल निज हितू न देखौं कोउ । १७० ॥

चौ० । सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं । कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥
अहै एक अति सुगम उपाई । तहां परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन जुक्ति नृप सोई । मोर जाब तव नगर न होई ॥
आजु लगे अरु जब तें भयऊं । काहू के गृह ग्राम न गयऊं ॥
जो न जाव तव होइ अकाजू । बना आइ असमंजस आजू ॥
सुनि महीप बोले मृदु बानी । नाथ निगम असि नीति बखानी ॥
बड़े सनेह लघुन पर करहीं । गिरि निज सिरन सदा तृन धरहीं ॥
जलधि अगाध मौलि बह फेनू । संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥

दो० । अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपालु ।
मोहि लागि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीनदयालु । १७१ ॥

चौ० । जानि नृपहिं आपन आधीना । बोला तापस कपटप्रबीना ॥
सत्य कहौं भूपति सुनु तोही । जग महं नहिं दुर्लभ कछु मोही ॥
अवसि काज मैं करिहौं तोरा । मन तन बचन भगत तैं मोरा ॥
जोग जुगुति तप मंत्रप्रभाऊ । फलै तबहिं जब करिय दुराऊ ॥
जौ नरेस मैं करउं रसोई । तुम परुसहु मोहि जान न कोई ॥
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई । सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिन के ग्रह जेवँ जोई । तव बस होइ भूप सुनु सोई ॥
जाइ उपाय रचहु नृप एहू । संबत भरि संकलप करेहू ॥

दो० । नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकलप लगि दिनहिं करब जेवनार । १७२ ॥

चौ० । एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरे । होइहहिं सकल बिप्र बस तोरे ॥
करिहहिं बिप्र होममख सेवा । तेहि प्रसंग सहजहि बस देवा ॥
और एक तोहि कहौं लखाऊ । मैं एहि बेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहं राया । हरि आनब मैं करि निज माया ॥
तपबल तेहि करि आपु समाना । रखिहौं इहां बरष परमाना ॥
मैं धरि तासु बेष सुनु राजा । सब बिधि तोर संवारब काजा ॥
गै निसि बहुत सयन अब कीजे । मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
मैं तपबल तोहि तुरग समेता । पहुंचैहौं सोवतहि निकेता ॥

दो० । मैं आउब सोइ बेष धरि पहिचानेहु तब मोहि ।
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनाऊं तोहि । १७३ ॥

चौ० । सयन कीन्ह नृप आयसु मानी । आसन जाइ बैठ छलज्ञानी ॥
स्रमित भूप निद्रा अति आई । सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥
कालकेतु निसिचर तहं आवा । जेहि सूकर होइ नृपहिं भुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा । जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के सत सुत अरु दस भाई । खल अति अजय देवदुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे । बिप्र संत सुर देखि दुखारे ॥
तेहि खल पाछिल बयर संभारा । तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ॥
जेहि रिपुछय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भावीबस न जान कछु राऊ ॥

दो० । रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिय न ताहु ।
अजहूं देत दुख रबि ससिहि सिरअवसेषित राहु । १७४ ॥

चौ० । तापस नृप निज सखहि निहारी । हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । जातुधान बोला सुख पाई ॥
अब साधउं रिपु सुनहु नरेसा । जौ तुम कीन्ह मोर उपदेसा ॥
परिहरि सोच रहहु तुम सोई । बिनु औषधहिं ब्याधि बिधि खोई ॥

कुल समेत रिपुमूल बहाई । चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापस नृपहिं बहुत परितोषी । चला महाकपटी अति रोषी ॥
भानुप्रतापहिं बाजि समेता । पहुंचायेसि छनमहिं निकेता ॥
नृपहिं नारि पहं सयन कराई । हयगृह बांधेसि बाजि बनाई ॥

दो० । राजा के उपरोहितहिं हरि लेगयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरिखोह महं माया करि मति भोरि । १७५ ॥

चौ० । आपु बिरचि उपरोहित रूपा । परा आइ तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनभयउ बिहाना । देखि भवन अति अचरज माना ॥
मुनिमहिमा मन महं अनुमानी । उठे गवहिं जेहि जान न रानी ॥
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही । पुरनरनारि न जानेउ केही ॥
गये याम युग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाज बधावा ॥
उपरोहितहिं देख जब राजा । चकित बिलोकि सुमिरि सोइ काजा ॥
युग सम नृपहि गए दिन तीनी । कपटीमुनिपद रह मति लीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मतो सब कहि समुझावा ॥

दो० । नृप हर्षे पहिचानि गुरु भ्रमबस रहा न चेत ।
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत । १७६ ॥

चौ० । उपरोहित जेवनार बनाई । छ रस चारि बिधि जस श्रुति गाई ॥
मायामय तेहि कीन्ह रसोई । बिंजन बहु गनि सकै न कोई ॥
बिबिध मृगन कर आमिष रांधा । तेहि महं बिप्रमांसु खल सांधा ॥
भोजन कहं सब बिप्र बुलाये । पद पखारि सादर बैठाये ॥
परसन लागु जबहिं महिपाला । भइ अकासबानी तेहि काला ॥
बिप्रबृन्द उठि उठि गृह जाहु । है बड़ि हानि अन्न जनि खाहु ॥
भयउ रसोई भूसुरमांसू । सब द्विज उठे मानि बिस्वासू ॥
भूप बिकल मति मोह भुलानी । भावीबस न आव मुख बानी ॥

दो० । बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार ।
जाइ निसाचर होउ नृप मूढ़ सहित परिवार । १७७ ॥

चौ० । छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई । घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईस्वर राखा धर्म हमारा । जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
संबत मध्य नाश तव होऊ । जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥
नृप सुनि स्राप बिकल अति त्रासा । भइ बहोरि बर गिरा अकासा ॥
बिप्रन्ह स्राप बिचारि न दीन्हा । नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी । भूप गये जहं भोजनखानी ॥
तहं न असन नहिं बिप्र सुआरा । फिरेउ राउ मन सोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई । त्रसित परेउ अवनी अकुलाई ॥

दो० । भूपति भावी मिटै नहिं यद्यपि न दूषन तोर ।
किये अन्यथा होइ नहिं बिप्रशाप अति घोर । १७८ ॥

चौ० । अस कहि सब महिदेव सिधाये । समाचार पुरलोगन पाये ॥
सोचहिं दूषन दैवहिं देहीं । बिरचत हंस काक किय जेहीं ॥
उपरोहितहिं भवन पहुंचाई । असुर तापसहिं खबरि जनाई ॥
तेहि खल जहं तहं पत्र पठाये । सजि सजि सेन भूप सब धाये ॥
घेरिन्हि नगर निसान बजाई । बिबिध भांति नित होति लराई ॥
जूझे सकल सुभट के करनी । बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥
सत्यकेतुकुल कोइ न बांचा । बिप्रशाप किमि होइ असांचा ॥
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई । निज निज पुर गये जयजस पाई ॥

दो० । भरद्वाज सुनु जाहि जब होत बिधाता बाम ।
धूरि मेरु सम जनक यम ताहि ब्याल सम दाम । १७९ ॥

चौ० । काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । भयउ निशाचर सहित समाजा ॥
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा । रावन नाम बीर बरिबंडा ॥
भूपअनुज अरिमर्दन नामा । भयेउ सो कुंभकरन बलधामा ॥
सचिव जो रहा धर्मरुचि जासू । भयेउ बिमात्र बंधु लघु तासू ॥
नाम बिभीषन जेहि जग जाना । बिष्नुभक्त बिज्ञाननिधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनिस अनेका । कुटिल भयंकर बिगत बिबेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी । बरनि न जाइ बिश्वपरितापी ॥

दो० । उपजे यद्यपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुरशापबस भये सकल अघरूप । १८० ॥

चौ० । कीन्ह बिबिध तप तीनिउ भाई । परम उग्र सो बरनि न जाई ॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता । मांगहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि बिनती पद गहि दससीसा । बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥
हम काहू कर मरहिं न मारे । बानर मनुज जाति दुइ बारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा । मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुंभकरन पहं गयऊ । तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ ॥
जौ यह खल नित करब अहारा । होइहि सब उजारि संसारा ॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मांगेसि नींद मास षट केरी ॥

दो० । गयेउ बिभीषन पास तब कहा पुत्र बर मांगु ।
तेहि मांगेउ भगवंतपद कमल अमल अनुरागु । १८१ ॥

चौ० । तिन्हहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये । हर्षित ते अपने गृह आये ॥
मयतनुजा मंदोदरि नामा । परम सुंदरी नारि ललामा ॥

सोइ मय दीन्ह रावनहि आनी । होइ जो जातुधानपतिरानी ॥
हरषित भयउ नारि भलि पाई । पुनि दोउ बंधु बियाहेसि जाई ॥
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी । बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी ॥
सोइ मयदानव बहुरि संवारा । कनकरचित मनिभवन अपारा ॥
भोगवती जस अहिकुलबासा । अमरावति जस सक्रनिवासा ॥
तिन तें अधिक रम्य अति बंका । जगबिख्यात नाम तेहि लंका ॥

दो० । खाईं सिंधु गंभीर अति चारिउ दिसि फिरि आव ।
कनककोट मनिखचित दृढ़ बरनि न जाइ बनाव ॥ १८२ ॥
हरिप्रेरित जेहि कल्प जोइ जातुधानपति होइ ।
सूर प्रतापी अतुलबल दल समेत बस सोइ ॥ १८३ ॥

चौ० । रहे तहां निसिचर भट भारे । ते सब सुरन समर संघारे ॥
अब तहं रहहिं सक्र के प्रेरे । रच्छक कोटि यच्छपति केरे ॥
दसमुख कतहुं खबरि असि पाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई । यच्छ जीव लै भये पराई ॥
फिरि सब नगर दसानन देखा । गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा ॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी । कीन्ह तहां रावन रजधानी ॥
जेहि जस जोग बांटि गृह दीन्हे । सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
एक बार कुबेर पहं धावा । पुष्पक यान जीति लै आवा ॥

दो० । कौतुकही कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।
मनहुं तौलि निज बाहुबल चला अधिक सुख पाइ ॥ १८४ ॥

चौ० । सुख संपति सुत सेन सहाई । जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता । जेहि कहं नहिं प्रति भट जग जाता ॥
करि मद पान सोव षट मासा । जागत होइ तिहूं पुर त्रासा ॥
जौं दिन प्रति अहार कर सोई । बिस्व बेगि सब चौपट होई ॥
समरधीर नहिं जाइ बखाना । तेहि सम अधिक न कोउ बलवाना ॥
बारिदनाद जेठ सुत तासू । भट महं प्रथम लीक जग जासू ॥
जेहि न होइ रन सनमुख कोई । सुरपुर नितहि परावन होई ॥

दो० । कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय ।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभटनिकाय ॥ १८५ ॥

चौ० । कामरूप जानहिं सब माया । सपनेहु जिन के धर्म न दाया ॥
दसमुख बैठ सभा एक बारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥
सुतसमूह जन परिजन नाती । गनै को पार निसाचरजाती ॥
सेन बिलोकि सहज अभिमानी । बोला बचन क्रोधमदसानी ॥

सुनहु सकल रजनीचरजूथा । हमरे बैरी बिबुधबरूथा ॥
तेसनमुख नहिं करहिं लराई । देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥
तिन कर मरन एक बिधि होई । कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विजभोजन मख होम सराधा । सब कहं जाइ करहु तुम बाधा ॥

दो० । छुधाछीन बलहीन सुर सहजहिं मिलिहहिं आइ ।
तब मारिहौं कि छाड़िहौं भली भांति अपनाइ । १७९ ॥

चौ० । मेघनाद कहं पुनि हंकरावा । दीन्ह सीख बल बयर बढ़ावा ॥
जे सुर समरधीर बलवाना । जिन के लरिबे को अभिमाना ॥
तिनहिं जीति रन आनसि बांधी । उठि सुत पितुअनुसासन कांधी ॥
इहि बिधि सबही अज्ञा दीन्हा । आपुन चलेउ गदा कर लीन्हा ॥
चलत दसानन डोलत अवनी । गर्जत गर्भ स्रवत सुररवनी ॥
रावन आवत सुनेउ सकोहा । देवन तकेउ मेरुगिरिखोहा ॥
दिगपालन के लोक सुहाये । सूने सकल दसानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी । देइ देवतन्हि गारि पचारी ॥
रनमदमत्त फिरै जग धावा । प्रति भट खोजत कतहुं न पावा ॥

॥ • । यहां से छेपक । • ॥

नारद मिले कहेसि मुसुकाई । देव कहां मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अनख नारदहिं मन भावा । सेतद्वीप तिन्हिं तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयऊ । नारिवृन्द तहं देखत भयऊ ॥
तिन्ह सन कहा पतिन्ह पहं जाहू । कहेउ कि आव निसाचरनाहू ॥
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा । लै जैहौं तुम कहं निज धामा ॥
सुनत बचन एक अरठ रिसानी । धाइ चरन गहि गगन उड़ानी ॥
गई दूरि धरि धरि झकझोरा । डारिसि सिंधु मध्य अति घोरा ॥

दो० । गयो पताल अचेत ह्वै मरै न बिधिप्रसाद ।
सावधान उठि गर्ज पुनि हिये न हरष बिषाद । १८० ॥

चौ० । जीतेसि नाग नगर सब झारी । गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
बावन रावन आवत जाना । किये देवऋषि कर अपमाना ॥
खेलत रहे नगर सिसु नाना । निज बल तिनहिं दीन्ह भगवाना ॥
धाइ धरा तिन पर लै आये । नगर बाहिर देखन धाये ॥
घोड़बाउ दसकन्धर भाई । बिधि बस गड़नि कहां की आई ॥
राखिनि बांधि खिआवहिं भारी । नाम न कहै मरै बड़ मारी ॥
बावन दीख बहुत दुखपाना । तब छुड़ाय दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरन्त निसाचरनाहां । लाज संक कछु नहिं मन माहां ॥

दो० । अति निर्लज्ज दसानन हिंसा पर अति प्रीति ।

रामबिमुख दसकन्ध सठ ता पर चाहत जीति । १८८ ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम ।
मनिहुं कांच होइ जाइ तब कहै न कौड़ी दाम । १८९ ॥

चौ० । अहं कहुं फिरत देव द्विज पावै । दंड लेइ बहु त्रास दिखावै ॥
इहि आचरन फिरै दिन राती । कहा मलिन मन खलउतपाती ॥
बहुरि तुरत पंपापुर आवा । बालि नाम कपिपति जिहि ठांवा ॥
अवलोकेसि इक सरवर सोभा । जिहिं मन महा मुनिन्ह कर लोभा ॥
तहां कपीस करै निज न्हाना । दसकंधरहिं देखि मुसुकाना ॥
तब रावन बोला करि क्रोधा । बकध्यानी कपि सठ बिन बोधा ॥
नाम तोर सुनि आयउं धाई । दे कपि युद्ध छाड़ि कदराई ॥

दो० । मोहि जीते बिनु समर सुनु वृथा ध्यान तव कीस ।
कटकटाइ कह रजनिचर रदन तोरि मैं बीस । १९० ॥

चौ० । बालि कहा उठि करिय न रारी । दसकंधर घर जाहु बिचारी ॥
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई । अजय चारि दिसि मैं सुनि पाई ॥
इहि बिधि बालि बहुत समझावा । कवनिहुं भांति बोध नहिं आवा ॥
तब सकोप उठि झपटि कपीसा । दृढ़ गहि कांख चापि दससीसा ॥
बालिहि बिसरि गई सुधि तासु । इहि बिधि बिगत भए षट मासु ॥
एक दिवस रबिअंजुलि साजा । कांख ते निसरि दसानन भाजा ॥
निलज असंक आव पुनि तहवां । कर जलकेलि सहसभुज जहवां ॥

दो० । छोभेउ जल भुजबीसबल बूड़न लगी समाज ।
सहसबाहु अति क्रोध मन मोहिं सम आन को आज । १९१ ॥

चौ० । जाइ दीख तहं रावन ठाढ़ा । जासु बिपुल भुजबल जस बाढ़ा ॥
मायाप्रबल महाबल भारी । लंकेस्वर कहं धरेसि प्रचारी ॥
निरखि तिहुन आचरज बिसाला । बांधि राख कछु दिन चयसाला ॥
लज्जित दुष्ट नष्ट करि रहई । सिर उर मारि कष्ट बहु सहई ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी । मारहिं लात हसैं दै तारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना । बहु बिधि पूंछहिं नृपति सुजाना ॥
नृत्य करैं रंभादिक नारी । दसहु माथ दस दीपक बारी ॥
सुनि पुलस्ति तब जाइ छुड़ावा । पुनि सठ आप आइ सिर नावा ॥

दो० । मारग जात दीख अति अनुपम सुंदरि नारि ।
चंदन पुष्प धरे कर पूजन चलि त्रिपुरारि । १९२ ॥

चौ० । देखि उर्बसी मन सकुचानी । तब रावन बोला मृदु बानी ॥
को तुम नारि गमन कहं कीन्हा । लज्जाबस तिहिं उतर न दीन्हा ॥
मनमदमत्त बिचार न करेऊ । धनपतिपुत्रबधूकर धरेऊ ॥

चोन्हि ताहि पुनि लंका आई । बाटि कर्म कीन्ह पछिताई ॥
मन पछिताइ सोच उर भयऊ । अलकेश्वर लंका कहं गयेऊ ॥
बिकल उर्बसी अलकहिं आई । मन कुबेर मन बहु अनाई ॥
दीन्ह साप तिन कोध अपारा । रावन बंस होउ छयकारा ॥
चली साप लंका कहं आई । दसकंधर बैठा जिहिं ठाईं ॥
आगे आइ ठाढ़ि भइ सापा । निरखि दसानन अति भय कांपा ॥

दो० । सापहि अंगीकार करि मन महं कीन्ह बिचार ।
दंड ऋषिन्ह से लीन्ह नहिं रोपेउ लंकभुआर । १८३ ॥

चौ० । दूत चार पठए ऋषि आस्रम । निरखि बिचरि गए मुनिअधिआसम ॥
तिन सन तब पूछहिं मुनि राजा । कहहु कुसल लंकेसभुआजा ॥
कुसल तासु यह सुनहु मुनीसा । कर तुम सन आइस दससीसा ॥
मुनि सो बचन महा भय पाई । करइं बिचार बिरति बिसराई ॥
जिहि दरबार नीति नहिं भाई । खलमंडली कुसी लइ आई ॥
कछु बिन दियें नहीं गति आछी । घट भरि रुधिर दियें सब पाछी ॥
दूतन्ह सौंपि कहा मुनि ग्यानी । भूपहिं कहेउ जाइ यह बानी ॥

दो० । घट उघरत छय होइहहु सहित सकल परिवार ।
दूत तुरत घट लेगये लंकापतिदरबार । १८४ ॥

चौ० । रावन घट लखि परम हुलासा । तब दूतन मुनि बचन प्रकासा ॥
सुनि मुनिसाप उपज उर दाहू । बोला घट लइ उत्तर जाहू ॥
यतन समेत धरनि धरि एहू । जानि न पाव बात यह केहू ॥
लेइ घट जनक देस ते गये । गाड़ेउ खेत मध्य तहं भये ॥
जनक यग्यरचना तहं ठयऊ । चामीकरमहल कर पन भयऊ ॥
प्रगटि अवनि तें अयचकुमारी । कन्या करि लीन्ही उरगारी ॥
नाम जानकी परम पुनीता । नारद आइ कहा पुनि सीता ॥
कहि सु कथा ऋषिराउ सिधाये । बहुरि दूत लंकापुर आये ॥
चारि ठावं द्वारा लंकेसा । देवन को बहु देत कलेसा ॥

॥ ० । इहां तक । ० ॥

रबि ससि पवन बरुन धनुधारी । अग्नि काल जम सब अधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नाना । हठि सबही के पंथहि जाना ॥
सबरहि जहं लगि तनु धारी । दसमुखबसवर्ती नर नारी ॥
आयसु करहिं सकल भयभीता । नवहिं आइ नित परम बिनीता ॥

दो० । भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न स्वतंत्र ।
मंडलीक महिरावन राज करै निज मंच । १८५ ॥
देव यक्ष गंधर्व नर किंनरनागकुमारि

जीति बरी निज बाहुबल बहु सुंदरि बर नारि । १८६ ॥

चौ० । इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ । सो सब जनु पहिले करि रहेऊ ॥
प्रथमहिं जिन कहं आयसु दीन्हा । तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥
देखत भीम रूप सब पापी । निसिचर निकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुरनिकाया । नाना रूप धरहिं करि माया ॥
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिं बेद प्रतिकूला ॥
जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं । नगर गाम पुर आगि लगावहिं ॥
सुभ आचरन कतहुं नहिं होई । देव बिप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरिभक्ति यज्ञ तप दाना । सपनेहुं सुनिय न बेद पुराना ॥

छं० । जप जोग बिरागा तप मखभागा स्रवन सुनै दससीसा ।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा ॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना ।
तेहि बहु बिधि त्रासै देस निकासै जो कह बेद पुराना । १८ ॥

सो० । बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं ।
हिंसा पर अति प्रीति तिन के पापहि कवन मिति । २१ ॥

चौ० । बाढ़े बहु खल चोर जुआरी । जे लंपट परधन परनारी ॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन सों करवावहिं सेवा ॥
जिन के यह आचरन भवानी । ते जानहु निसिचर सम प्रानी ॥
अतिसय देखि धर्म की हानी । परम सभीत धरा अकुलानी ॥
गिरिसरिसिंधुभार नहिं मोही । जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥
सकल धर्म देखहिं बिपरीता । कहि न सकै रावनभयभीता ॥
धेनुरूप धरि हृदय बिचारी । गई तहां जहं सुर मुनि झारी ॥
निज संताप सुनायेसि रोई । काहू तें कछु काज न होई ॥

छं० । सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गये बिरंचि के लोका ।
संग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोरो कछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अबिनासी हमरो तोर सहाई । १८ ॥

सो० । धरनि धरहु मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरि ।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति । २२ ॥

चौ० । बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहं पाइय प्रभु करिय पुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई । कोइ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ॥
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती । प्रभु तेहि प्रगट सदा तेहि रीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊं । अवसर पाय बचन एक कहेऊं ॥
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥

देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं । कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं ॥
अगजगमय सबरहित बिरागी । प्रेम ते प्रगट होहिं जिमि आगी ॥
मोर बचन सब के मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दो० । सुनि बिरंचि मन हर्ष तनु पुलक नयन बह नीर ।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर । १८७ ॥

छं० । जय जय सुरनायक जनसुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गोद्विजहितकारी जय असुरारी सिंधुसुताप्रियकंता ॥
पालनसुरधरनी अद्भुतकरनी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई । २० ॥
जय जय अबिनासी सबघटबासी व्यापक परमानन्दा ।
अबिगतगोतीता चरितपुनीता मायारहित मुकुन्दा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृन्दा ।
निसिबासर ध्यावहिं हरिगुन गावहिं जयति सच्चिदानन्दा । २१ ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥
जो भवभयभंजन जनमनरंजन गंजन बिपतिबरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरयूथा । २२ ॥
सारद स्रुति सेषा रिषय असेषा जाकहुं कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवौ सो श्रीभगवाना ॥
भववारिधमंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा । २३ ॥

दो० । जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह । १८८ ॥

चौ० । जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुमहिं लागि धरिहौं नरबेसा ॥
अंसन सहित मनुज अवतारा । लैहौं दिनकरबंस उदारा ॥
कस्यप अदिति महा तप कीन्हा । तिन कहं मैं पूरब बर दीन्हा ॥
ते दसरथकौसल्यारूपा । कोसल पुरी प्रगट नरभूपा ॥
तिन के गृह अवतरिहौं जाई । रघुकुलतिलक सो चारिउ भाई ॥
नारद बचन सत्य सब करिहौं । परम सक्ति समेत अवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमिगरुआई । निर्भय होहु देवसमुदाई ॥
गगनब्रह्मबानी सुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जिय आवा ॥

दो० । निज लोकहिं बिरंचि गये देवन्ह इहै सिखाइ ।
बानरतनु धरि धरनि महं हरिपद सेवहु जाइ । १८९ ॥

चौ० । गये देव सब निज निज धामा । भूमि सहित पायेउ बिश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा । हर्षे देव बिलंब न कीन्हा ॥
बनचरदेह धरी छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन पाहीं ॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा । हरिमारग चितवहिं रनधीरा ॥
गिरि कानन जहं तहं भरिपूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा । अब सो सुनहु जो बीचहि राखा ॥
अवधपुरी रघुकुलमनि राऊ । बेदबिदित तेहि दसरथ नाऊ ॥
धर्मधुरंधर गुननिधि ज्ञानी । हृदय भक्ति मति सारंगपानी ॥

दो० । कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरिपद कमल बिनीत । २०० ॥

चौ० । एक बार भूपति मन माहीं । भइ गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरुगृह गये तुरत महिपाला । चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ । कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझायउ ॥
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवनबिदित भक्तभयहारी ॥
सृंगी ऋषिहि बसिष्ठ बुलावा । पुत्र लागि सुभ यज्ञ करावा ॥
भक्ति सहित मुनि आहुति दीन्हे । प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे ॥
बोले अनल प्रेम युत बानी । अति प्रसन्न नहिं परै बखानी ॥
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा । सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हवि बांटि देहु नृप जाई । यथायोग जेहि भाग बनाई ॥

दो० । तब अदृश्य पावक भये सकल सभहि समुझाइ ।
परमानंद मगन नृप हर्ष न हृदय समाइ । २०१ ॥

चौ० । तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाईं । कौसल्यादि तहां चलि आईं ॥
अर्द्धभाग कौसल्यहिं दीन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥
केकयि कहं नृप सो दयऊ । रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
कौसल्या केकयी हाथ धरि । दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
एहि बिधि गर्भ सहित सब नारी । भईं हृदय हर्षित सुख भारी ॥
जा दिन ते हरि गर्भहि आये । सकल लोक सुख संपति छाये ॥
मंदिर महं सब राजहिं रानी । सोभा सील तेज की खानी ॥
सुखयुत कछुक काल चलि गयऊ । जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥

दो० । जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भये अनुकूल ।
चर अरु अचर हर्षयुत रामजनम सुखमूल । २०२ ॥

चौ० । नवमी तिथि मधुमास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्य दिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोकबिश्रामा ॥
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ । हर्षित सुर संतनमन चाऊ ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा । स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥

सो अवसर बिरंचि जब जाना । चले सकल सुर साजि बिमाना ॥
गगन बिमल संकुल सुरजूथा । गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा ॥
बर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी । गहगह गगन दुंदुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा । बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा ॥

दो० । सुरसमूह बिनती करि पहुंचे निज निज धाम ।
जगनिवास प्रभु परगटे अखिल लोकबिश्राम । १०२ ॥

छं० । भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचनअभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला शोभासिंधु खरारी । २४ ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
मायागुनज्ञानातीत अमाना वेदपुरान भनंता ॥
करुनासुखसागर सब गुनआगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जनअनुरागी प्रगट भये श्रीकंता । २५ ॥
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुतप्रेम लहै । २६ ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा । २७ ॥

दो० । बिप्र धेनु सुर संतहित लीन्ह मनुजअवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु मायागुनगोपार । १०४ ॥

चौ० । सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हर्षित जहं तहं धाईं दासी । आनंदमगन सकल पुरबासी ॥
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुं ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेममन पुलक सरीरा । चाहत उठन करत मतिधीरा ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मन राजा । कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु बसिष्ठ कहं गयउ हंकारा । आये द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखिन जाई । रूपरासि गुन कहि न सिराई ॥

दो० । नंदीमुख श्राद्ध करि जातकर्म सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन कहं दीन्ह । १०५ ॥

चौ० । ध्वज पताक तोरन पुर छावा । कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥
सुमनवृष्टि अकास तें होई । ब्रह्मानंद मगन सब कोई ॥
बृन्द बृन्द मिलि चलीं लुगाई । सहज सिंगार किये उठि धाई ॥
कनक कलस मंगल भरि थारा । गावत पैठहिं भूपदुआरा ॥
करि आरती निछावर करहीं । बार बार सिसुचरनन परहीं ॥
मागध सूत बंदिगन गायक । पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥
सर्बस दान दीन्ह सब काहू । जेहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा । मची सकल बीथिन बिच बीचा ॥

दो० । गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगट भये सुखकन्द ।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगरनारिनरबृन्द । २०६ ॥

चौ० । कैकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जनमत भइँ ओऊ ॥
वह सुख संपति समय समाजा । कहि न सकै सारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहि भाँती । प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥
अगरधूप जनु बहु अँधियारी । उड़ै अबीर मनहु अरुनारी ॥
मंदिर मनिसमूह जनु तारा । नृपगृहकलस सो इंदु उदारा ॥
भवन वेदधुनि अति मृदु बानी । जनु खग मुखर समय सुखसानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेहि जात न जाना ॥

दो० । मासदिवस का दिवस भा मरम न जानै कोइ ।
रथ समेत रवि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ । २०७ ॥

चौ० । यह रहस्य काहू नहिं जाना । दिनमनि चले करत गुनगाना ॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा । चले भवन बरनत निज भागा ॥
औरौ एक कहौं निज चोरी । सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी ॥
काकभुसुंडि संग हम दोऊ । मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥
परमानंद प्रेम सुख फूले । बीथिन फिरहिं मगन मनभूले ॥
यह सब चरित जान पै सोई । कृपा राम की जा पर होई ॥
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा । दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा । दीन्हे नृप नाना बिध चीरा ॥

दो० । मन संतोष सबनि के जहँ तहँ देहिं असीस ।
सकल तनय चिर जीवहु तुलसिदास के ईस । २०८ ॥

चौ० । कछुक दिवस बीते इहि भाँती । जात न जानहिं दिन अरु राती ॥
नामकरन कर अवसर जानी । भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाषा । धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा ॥
इन्ह के नाम अनेक अनूपा । मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥

जो आनंदसिंधु सुखरासी । सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा । अखिल लोक दायक बिस्रामा ॥
बिस्वभरन पोषन कर जोई । ता कर नाम भरत अस होई ॥
जा के सुमिरन तें रिपुनासा । नाम सत्रुहन बेद प्रकासा ॥

दो० । लच्छनधाम रामप्रिय सकल जगत आधार ।
गुरु बसिष्ठ तेहि राखेउ लछिमन नाम उदार । २०९ ॥

चौ० । धरे नाम गुरु हृदय बिचारी । बेदतत्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिजनधन सर्बस सिवप्राना । बालकेलिरस तेहि सुख माना ॥
बारेहि तें निज हित पति जानी । लछिमन राम चरन रति मानी ॥
भरत सत्रुहन दूनौं भाई । प्रभुसेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी । निरखहिं छबि जननी त्रिन तोरी ॥
चारिउ सीलरूपगुनधामा । तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥
हृदयअनुग्रह इंदुप्रकासा । सूचत किरन मनोहर हासा ॥
कबहुं उछंग कबहुं बर पालन । मातु दुलारहिं कहि प्रिय ललन ॥

दो० । ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगतबिनोद ।
सो अज प्रेमभक्तिबस कौसल्या की गोद । २१० ॥

चौ० । कामकोटिछबि स्यामसरीरा । नील कंज बारिद गंभीरा ॥
अरुन चरन पंकज नखजोती । कमलदलन बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहैं । नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहैं ॥
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा । नाभि गंभीर जान जेहि देखा ॥
भुज बिसाल भूषनयुत भूरी । हिय हरिनखसोभा अति रूरी ॥
उर मनिहार पदिक की सोभा । बिप्रचरन देखत मन लोभा ॥
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । आनन अमित मदनछबि छाई ॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । नासा तिलक को बरनै पारे ॥
सुंदर स्रवन सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर सुतोतरि बोला ॥
नील कमल दोउ नयन बिसाला । बिकट भृकुटि लटकनि बर भाला ॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचि मातु संवारे ॥
पीत झिंगुलिया तन पहिराये । जानुपानि बिचरत मोहि भाये ॥
रूप सकहिं नहिं कहि स्रुति सेसा । सो जानै सपनेहु जिन्ह देखा ॥

दो० । सुखसंदोह मोहपर ग्यानगिरागोतीत ।
दंपति परम प्रेमबस कर सिसु चरित पुनीत । २११ ॥

चौ० । एहि बिधि राम जगतपितुमाता । कोसलपुरबासिन्ह सुखदाता ॥
जिन रघुनाथ चरन रति मानी । तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥
रघुपतिबिमुख जतन कर कोरी । कवन सकै भवबंधन छोरी ॥

जीव चराचर बस करि राखे । सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥
भृकुटिबिलास नचावै ताही । अस प्रभु छाड़ि भजिय कहु काही ॥
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई । भजतहिं कृपा करैं रघुराई ॥
इहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा । सकल नगरबासिन सुख दीन्हा ॥
लै उछंग कबहुं हलरावै । कबहुं पालने घालि झुलावै ॥

दो० । प्रेममगन कौसल्या निसिदिन जात न जान ।
सुतसनेहबस माता बालचरित करि गान । २१२ ॥

चौ० । एक बार जननी अन्हवाये । करि सिंगार पलना पौढ़ाये ॥
निज कुलइष्टदेव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा । आपु गई जहं पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहंवां चलि आई । भोजन करत दीख रघुराई ॥
गइ जननी सिसु पहं भयभीता । देखा बाल तहां पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई । हृदय कंप मन धीर न होई ॥
इहां उहां दुइ बालक देखा । मति भ्रम मोरि कि आन बिसेखा ॥
देखि राम जननी अकुलानी । प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥

दो० । दिखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड ।
रोम रोम प्रति राजहिं कोटि कोटि ब्रह्मंड । २१३ ॥

चौ० । अगनित रबि ससि सिव चतुरानन । बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥
काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । सो देखा जो सुना न काऊ ॥
देखी माया सब बिधि गाढ़ी । अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी ॥
देखा जीव नचावै जाही । देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तनु पुलकित मुख बचन न आवा । नयन मूंदि चरनन सिर नावा ॥
बिसमयवन्ति देखि महतारी । भये बहुरि सिसुरूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जाइ भयमाना । जगतपिता मैं सुत करि जाना ॥
हरि जननिहि बहु बिधि समुझाई । यह जनि कतहुं कहसि सुनु माई ॥

दो० । बार बार कौसल्या बिनय करै कर जोरि ।
अब जनि कबहुं ब्यापै प्रभु मोहि माया तोरि । २१४ ॥

चौ० । बालचरित हरि बहु बिधि कीन्हा । अति अनंद दासन कहं दीन्हा ॥
कछुक काल बीते सब भाई । बड़े भये परिजनसुखदाई ॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई । बिप्र दच्छिना पुनि बहु पाई ॥
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन क्रम बचन अगोचर जोई । दसरथअजिर बिचर प्रभु सोई ॥
भोजन करत बुलावत राजा । नहिं आवहिं तजि बालसमाजा ॥
कौसल्या जब बोलन जाई । ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई ॥

निगम नेति शिव अंत न पावा । ताहि धरै जननी हठि धावा ॥
धूसर धूर भरे तन आये । भूपति बिहँसि गोद बैठाये ॥

दो० । भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ ।
भाजि चले किलकात मुख दधि ओदन लपटाइ । २१५ ॥

चौ० । बालचरित अति सरल सुहाये । सारद सेष संभु श्रुति गाये ॥
जिन कर मन इन सन नहिं राता । ते जनवंचित किये बिधाता ॥
भये कुमार जबहिं सब भ्राता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरुगृह गये पढ़न रघुराई । अलप काल बिद्या सब पाई ॥
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी । सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥
बिद्याबिनयनिपुन गुनसीला । खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥
कर तल बान धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥
जिन बीथिन बिहरहिं सब भाई । थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥

दो० । कोसलपुरबासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ।
प्रानहु तें प्रियलागहिं सब कहं राम कृपाल । २१६ ॥

चौ० । बंधु सखा संग लेहिं बुलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥
पावन मृग मारहिं जिय जानी । दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी ॥
जे मृग रामबान के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुज सखा संग भोजन करहीं । मातुपिताआज्ञा अनुसरहीं ॥
जेहि बिधि सुखी होहिं पुरलोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा ॥
वेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजहि समुझाई ॥
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसु मांगि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरषहिं मन राजा ॥

दो० । व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नामन रूप ।
भक्त हेतु नाना बिधिहिं करत चरित्र अनूप । २१७ ॥

चौ० । यह सब चरित कहा मैं गाई । आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥
बिस्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बसहिं बिपिन सुभ आस्रम जानी ॥
तहं जप जज्ञ जोग मुनि करहीं । अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत जज्ञ निसाचर धावहिं । करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
गाधितनयमन चिंता ब्यापी । हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी ॥
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा । प्रभु अवतरेउ हरन महिभारा ॥
इहि मिसु देखौं प्रभुपद जाई । करि बिनती आनौं दौ भाई ॥
ज्ञान बिराग सकल गुनअयना । सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥

दो० । बहु बिधि करत मनोरथ जात न लागी बार ।
करि मज्जन सरयू जलहि गये भूपदरबार । २१८ ॥

चौ० । मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयउ लै बिप्रसमाजा ॥
करि दंडवत मुनिहि सनमानी । निज आसन बैठारेनि आनी ॥
चरन पखारि कीन्ह अति पूजा । मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥
बिबिध भांति भोजन करवावा । मुनिबर हृदय हर्ष अति पावा ॥
पुनि चरनन मेले सुत चारी । राम देखि मुनि बिरति बिसारी ॥
भये मगन देखत मुखसोभा । जनु चकोर पूरन ससि लोभा ॥
तब मन हर्षि बचन कह राऊ । मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ ॥
केहि कारन आगमन तुम्हारा । कहहु सो करत न लावउं बारा ॥
असुरसमूह सतावहिं मोही । मैं याचन आयेउं नृप तोही ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा । निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥

दो० । देहु भूप मनहर्षित तजहु मोह अज्ञान ।
धर्म सुयश नृप तुम कहं इन कहं अति कल्यान । २१८ ॥

चौ० । सुनि राजा अति अप्रिय बानी । हृदयकंप मुखदुति कुंभिलानी ॥
चौथेपन पायेउं सुत चारी । बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा । सर्बस देउं आजु सह रोषा ॥
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं । सोउ मुनि देउं निमिष इक माहीं ॥
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं । राम देत नहिं बनै गोसाईं ॥
कहं निसिचर अति घोर कठोरा । कहं सुंदर सुत परम किसोरा ॥
सुनि नृपगिरा प्रेमरससानी । हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब बसिष्ठ बहु बिधि समुझावा । नृपसंदेह नास कहं पावा ॥
अति आदर दौ तनय बुलाये । हृदय लाइ बहु भांति सिखाये ॥
मेरे प्राननाथ सुत दोऊ । तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दो० । सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस ।
जननीभवन गये प्रभु चले नाइ पद सीस । २२० ॥

सो० । पुरुषसिंह दौ बीर हर्षि चले मुनिभयहरन ।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्वकारनकरन । २२ ॥

चौ० । अरुन नयन उर बाहु बिसाला । नील जलज तन स्याम तमाला ॥
कटि पट पीत कसें बर भाथा । रुचिर चाप सायक दुहुं हाथा ॥
स्याम गौर सुंदर दौ भाई । बिस्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मन्यदेव मैं जाना । मोहि हित पिता तजेउ भगवाना ॥
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई । सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥
तब ऋषि निज नाथहिं जिय चीन्ही । बिद्यानिधि कहं बिद्या दीन्ही ॥
जाते लाग न छुधा पियासा । अतुलितबल तन तेज प्रकासा ॥

दो० । आयुध सकल समर्पि करि प्रभु निज आश्रम आनि ।
कंद मूल फल भोजन दिये भक्ति हित जानि । २११ ॥

चौ० । प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥
होम करन लागे मुनि झारी । आपु रहे मख की रखवारी ॥
सुनि मारीच निसाचर कोही । लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा । सत जोजन गा सागर पारा ॥
पावकसर सुबाहु पुनि मारा । अनुज निसाचर कटक संघारा ॥
मारि असुर द्विजनिर्भयकारी । अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥
तहं पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन्ह बिप्रन पर दाया ॥
भक्ति हेतु बहु कथा पुराना । कहा बिप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक देखिय प्रभु जाई ॥
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा । हर्षि चले मुनि बर के साथा ॥
आस्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जन्तु तहं नाहीं ॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । सकल कथा ऋषि कही बिशेषी ॥

दो० । गौतम नारि स्रापबस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमलरज चाहती कृपा करहु रघुबीर । २१२ ॥

छंद ।

परसत पद पावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।
देखत रघुनायक जनसुखदायक सन्मुख होइ कर जोरि रही ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवै बचन कही ।
अतिसय बड़भागी चरनन लागी युगल नयन जलधार बही ।१८॥

धीरज मन कीन्हा प्रभु कहं चीन्हा रघुपति कृपा भक्ति पाई ।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जनसुखदाई ।
राजिवलोचन भवभयमोचन पाहि पाहि सरनहिं आई । १९ ॥

मुनि स्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखिउं भरि लोचन हरि भवमोचन यहै लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागौं बर आना ।
पदकमलपरागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना । २० ॥

जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।
सोइ पदपंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपालु हरी ॥
इहि भांति सिधारी गौतमनारी बारबार हरिचरन परी ।
जो अति मन भावा सो बर पावा गै पतिलोक अनंदभरी । २१ ॥

दो० । अस प्रभु दीनबंधु हरि कारनरहित कृपाल ।

तुलसिदास सठ ताहि भजु छाड़ि कपट जंजाल । [illegible] ॥

चौ० । चले राम लछिमन मुनि संगा । गये जहां जगपावनि गंगा ॥
अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रनामा । बहु प्रकार सुख पायउ रामा ॥
गाधिसुवन सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥
तब प्रभु ऋषिन समेत अन्हाये । बिबिध दान महिदेवन पाये ॥
हर्षि चले मुनि वृन्दसहाया । बेगि बिदेहनगर नियराया ॥
पुररम्यता राम जब देखी । हरषे अनुज समेत बिसेषी ॥
वापी कूप सरित सर नाना । सलिल सुधा सम मनिसोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्तरस भृंगा । कूजत कल बहु बरन बिहंगा ॥
बरन बरन बिकसे बनजाता । त्रिबिध समीर सदा सुखदाता ॥

दो० । सुमनबाटिका बाग बन बिपुल बिहंगनिवास ।
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुर चहुं पास । २२४ ॥

चौ० । बनै न बरनत नगरनिकाई । जहां जाइ मन तहां लुभाई ॥
चारु बजार बिचित्र अटारी । मनिमय बिधि जनु स्वकर संवारी ॥
धनिक बनिक बर धनद समाना । बैठे सकल बस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गली सुहाई । सन्तत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरे । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे ॥
पुरनरनारि सुभग सुचि सन्ता । धर्मसील ग्यानी गुनवन्ता ॥
अति अनूप जहं जनकनिवासू । बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥
होत चकित चित कोट बिलोकी । सकल भुवनसोभा जनु रोकी ॥

दो० । धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भांति ।
सियनिवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति । २२५ ॥

चौ० । सुभग द्वार सब कुलिसकपाटा । भूपभीर नट मागध भाटा ॥
बनी बिसाल बाजिगजसाला । हय गज रथ संकुल सब काला ॥
सूर सचिव सेनप बहुतेरे । नृपगृह सरिस सदन सब केरे ॥
पुरबाहिर सर सरित समीपा । उतरे जहं तहं बिपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अंवराई । सब सुपास सब भांति सुहाई ॥
कौसिक कहेउ मोर मन माना । इहां रहिय रघुबीर सुजाना ॥
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता । उतरे तहं मुनिवृन्द समेता ॥
बिस्वामित्र महामुनि आये । समाचार मिथिलापति पाये ॥

दो० । संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुरु ग्याति ।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भांति । २२६ ॥

चौ० । कीन्ह प्रनाम धरनि धरि माथा । दीन्ह असीस मुदित मुनि नाथा ॥
बिप्रवृन्द सब सादर बंदे । जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥

कुशल प्रश्न कहि बारहि बारा । विश्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आये दौ भाई । गये रहे देखन फुलवाई ॥
श्याम गौर मृदु वयसकिशोरा । लोचनसुखद विश्वचितचोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये । विश्वामित्र निकट बैठाये ॥
भये सब सुखी देखि दौ भ्राता । वारि विलोचन पुलकित गाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ विदेह विदेह विशेषी ॥

दो० । प्रेम मगन मन जानि नृप करि विवेक धरि धीर ।
बोलेउ मुनिपद नाइ शिर गद्गद गिरा गंभीर । २२७ ॥

चौ० । कहहु नाथ सुंदर दौ बालक । मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक ॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय भेष धरि सोइ कि आवा ॥
सहज विरागरूप मन मोरा । थकित होत जिमि चंद्र चकोरा ॥
तातें प्रभु पूछौं सतिभाऊ । कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इनहि विलोकत अति अनुरागा । बरबस ब्रह्मसुखहिं मन त्यागा ॥
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका । बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
ये प्रिय सबहिं जहां लगि प्रानी । मन मुसुकाहिं राम सुनि बानी ॥
रघुकुलमनि दशरथ के जाये । मम हित लागि नरेश पठाये ॥

दो० । राम लषन दौ बंधु बर रूपशील बलधाम ।
मख राखेउ सब साखि जग जीते असुर संग्राम । २२८ ॥

चौ० । मुनि तव चरन देखि कह राऊ । कहि न सकौं निज पुन्यप्रभाऊ ॥
सुंदर श्याम गौर दौ भ्राता । आनँदहू के आनँददाता ॥
इन की प्रीति परस्पर पावनि । कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पद शीशा । चलेउ लिवाइ नगर अवनीशा ॥
सुन्दर सदन सुखद सब काला । तहां बास लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब विधि सेवकाई । गयउ राउ गृह विदा कराई ॥

दो० । ऋषय संग रघुबंसमनि करि भोजन विश्राम ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवस रहा भरि याम । २२९ ॥

चौ० । लषनहृदय लालसा विशेषी । जाइ जनकपुर आइय देखी ॥
प्रभुभय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥
राम अनुजमन की गति जानी । भक्तवछलता हिय हुलसानी ॥
परम विनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुरुअनुशासन पाई ॥
नाथ लषन पुर देखन चहहीं । प्रभुसकोच डर प्रगट न कहहीं ॥
जौं राउर आयसु मैं पाऊं । नगर देखाइ तुरत लै आऊं ॥

सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती । कसन राम राखऊ तुम नीती ॥
धर्मसेतुपालक तुम ताता । प्रेमबिबस सेवक सुखदाता ॥

दो० । जाइ देखि आवऊ नगर सुखनिधान दो भाइ ।
करऊ सुफल सब के नयन सुंदर बदन दिखाइ । २३० ॥

चौ० । मुनिपद कमल बंदि दो भ्राता । चले लोकलोचन सुखदाता ॥
बालकबृन्द देखि अति सोभा । लगे संग लोचन मन लोभा ॥
पीत बसन परिकर क[illegible]ाथा । चारु चाप सर सोहत हाथा ॥
तनु अनुहरत सुचंदनखोरी । स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरिकंधर बाऊ बिसाला । उर अति रुचिर नागमनिमाला ॥
सुभग स्रवन सरसीरुहलोचन । बदनमयंक तापत्रय मोचन ॥
कानन्ह कनकफूलछबि देहीं । चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं ॥
चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी । तिलकरेख सोभा जनु चांकी ॥

दो० । रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केस ।
नखसिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस । २३१ ॥

चौ० । देखन नगर भूपसुत आये । समाचार पुरबासिन पाये ॥
धाये धामकाम सब त्यागे । मनऊं रंक निधि लूटन लागे ॥
निरखि सहज सुन्दर दो भाई । होहिं सुखी लोचनफल पाई ॥
युवती भवनझरोखनि लागी । निरखहिं राम रूप अनुरागी ॥
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती । सखि इन कोटिकामछबि जीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं । सोभा असि कऊं सुनियत नाहीं ॥
बिस्नु चारि भुज बिधि मुख चारी । बिकटभेष मुखपंच पुरारी ॥
अपर देव अस को जग आही । इहि छबि सखि पटतरिऐ जाही ॥

दो० । बयकिसोर सुखमासदन स्याम गौर सुखधाम ।
अंग अंग पर वारियें कोटि कोटि सत काम । २३२ ॥

चौ० । कहऊ सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । जो मैं सुना सो सुनऊ सयानी ॥
ये दो नृप दसरथ के ढोटा । बाल मरालनि के कल जोटा ॥
मुनि कौसिकमख के रखवारे । जिन रन अजय निसाचर मारे ॥
स्यामगात कल कंजबिलोचन । जो मारीच सुभुजमदमोचन ॥
कौसल्यासुत सो सुखखानी । नाम राम धनुसायकपानी ॥
गौर किसोर भेष बर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ॥
लछिमन नाम राम लघुभ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दो० । बिप्रकाज करि बंधु दोउ मग मुनिबधू उधारि ।
आये देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि । २३३ ॥

चौ० । देखि रामछबि कोउ इक कहई । जोग्य जानकी कहँ यह अहई ॥
जौ सखि इन्हहिं देखि नरनाहू । प्रन परिहरि हठि करै बिबाहू ॥
कोउ कह इन भूपति पहिचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परंतु प्रन राउ न तजई । बिधिबस हठि अबिबेकहि भजई ॥
कोउ कह जौ भल अहै बिधाता । सब कहँ सुनिय उचित फलदाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहि बर एहू । नाहिन आली यह संदेहू ॥
जौ बिधिबस अस बनै सँजोगू । तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥
सखि हमरे अति आरति तातें । कबहुँक ये आवहिं एहि नातें ॥

दो० । नाहिंत हम कहँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसन दूरि ।
यह संघट तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि । २२४ ॥

चौ० । बोली अपर कहेउ सखि नीका । यहि बिबाह अति हित सबही का ॥
कोउ कह संकर चाप कठोरा । ये स्यामल मृदु गात किसोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी । यह सुनि अपर कहै मृदु बानी ॥
सखि इन कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पदपंकजधूरी । तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥
सो कि रहै बिनु सिवधनु तोरे । यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥
जेहि बिरंचि रचि सीय सँवारी । तेहि स्यामल बर रचेउ बिचारी ॥
तासु बचन सुनि सब हरषानी । ऐसइ होउ कहहिं मृदु बानी ॥

दो० । हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनिबृन्द ।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानन्द । २२५ ॥

चौ० । पुरपूरबदिसि गे दोउ भाई । जहँ धनुमखहित भूमि बनाई ॥
अति बिस्तार चारु गच ढारी । बिमल बेदिका रुचिर सँवारी ॥
चहुँ दिसि कंचनमंच बिसाला । रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा । अपर मंच मंडली बिलासा ॥
कछुक ऊँच सब भाँति सुहाई । बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥
तिन के निकट बिसाल सुहाये । धवल धाम बहु बरन बनाये ॥
जहँ बैठी देखहिं पुरनारी । जथाजोग्य निज कुल अनुहारी ॥
पुरबालक कहि कहि मृदु बचना । सादर प्रभुहिं देखावहिं रचना ॥

दो० । सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात ।
तनु पुलकहिं अति हरष हिय देखि देखि दोउ भ्रात । २२६ ॥

चौ० । सिसु सब राम प्रेमबस जाने । प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निज निज रुचि सब लेहिं बुलाई । सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥
राम देखावहिं अनुजहि रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥
लवनिमेष महँ भुवननिकाया । रचै जासु अनुसासन माया ॥

भक्त हेतु सोइ दीनदयाला । चितवत चकित धनुषमखशाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंब त्रास मन माहीं ॥
जासु त्रास डर कहँ डर होई । भजनप्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाईं । किये बिदा बालक बरिआईं ॥
दो० । सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।
गुरुपदपंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ । २२७ ॥
चौ० । निशिप्रवेश मुनि आयसु दीन्हा । सबही संध्याबंदन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥
मुनिबर शयन कीन्ह तब जाई । लगे चरन चापन दोउ भाई ॥
जिन के चरन सरोरुह लागी । करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते । गुरुपदकमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा । रघुबर जाइ शयन तब कीन्हा ॥
चापत चरन लखन उर लाये । सभय सप्रेम परम सुख पाये ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता । पौढ़े धरि उर पदजलजाता ॥
दो० । उठे लखन निशिबिगत सुनि अरुनशिखाधुनि कान ।
गुरु तें पहिले जगतपति जागे राम सुजान । २२८ ॥
चौ० । सकल शौच करि जाइ नहाये । नित्य निबाहि गुरुहि सिर नाये ॥
समय जानि गुरुआयसु पाई । लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूपबाग बर देखेउ जाई । जहं बसन्त ऋतु रही लुभाई ॥
लागे बिटप मनोहर नाना । बरन बरन बर बेलिबिताना ॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाये । निज संपति सुरतरुहि लजाये ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजत बिहंग नचत कल मोरा ॥
मध्य बाग सर सोह सुहावा । मनिसोपान बिचित्र बनावा ॥
बिमल सलिल सरसिज बहु रंगा । जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥
दो० । बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत ।
परम रम्य आराम यह जो रामहि सुख देत । २२९ ॥
चौ० । चहुं दिशि चितै पूछि मालीगन । लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥
तेहि अवसर सीता तहं आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
संग सखी सब सुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी ॥
सर समीप गिरिजागृह सोहा । बरनि न जाइ देखि मन मोहा ॥
मज्जन करि सर सखी समेता । गई मुदित मन गौरिनिकेता ॥
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग बर मांगा ॥
एक सखी सिय संग बिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥
तेइ दोउ बंधु बिलोकेउ जाई । प्रेमबिबस सीता पहं आई ॥

दो० । तासु दसा देखी सखिन पुलक गात जल नैन ।
कहु कारन निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बैन । २४० ॥

चौ० । देखन बाग कुंवर दो आये । बयकिशोर सब भांति सुहाये ॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥
सुनि हरषीं सब सखी सयानी । सियहिय अति उतकंठा जानी ॥
एक कहहिं नृप सुत ते आली । सुने जे मुनि संग आए काली ॥
जिन निज रूप मोहनी डारी । कीन्हे स्ववस नगर नर नारी ॥
बरनत छबि जहं तहं सब लोगू । अवसि देखिये देखन जोगू ॥
तासु बचन अति सियहि सुहाने । दरस लागि लोचन अकुलाने ॥
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥

दो० । सुमिरि सीय नारदबचन उपजी प्रीति पुनीत ।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत २४१ ॥

चौ० । कंकनकिंकिनिनूपुरधुनि सुनि । कहत लखन सन राम हृदय गुनि ॥
मानहु मदन दुन्दुभी दीन्ही । मनसा बिस्वबिजय कहं कीन्ही ॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सियमुख ससि भये नयन चकोरा ॥
भये बिलोचन चारु अचंचल । मनहुं सकुचि निमि तजेउ दृगंचल ॥
देखि सीयसोभा सुख पावा । हृदय सराहत बचन न आवा ॥
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई । बिरचि बिस्व कहं प्रगट दिखाई ॥
सुंदरता कहं सुंदर करई । छबिगृह दीपसिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी । केहि पटतरिय बिदेहकुमारी ॥

दो० । सियसोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि ।
बोले सुचिमन अनुज सन बचन समय अनुहारि । २४२ ॥

चौ० । तात जनकतनया यह सोई । धनुषयज्ञ जेहि कारन होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई । करति प्रकाश फिरति फुलवाई ॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा । सहज पुनीत मोर मन छोभा ॥
सो सब कारन जान बिधाता । फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता ॥
रघुबंसिन कर सहज सुभाऊ । मन कुपंथ पग धरै न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति जिय केरी । जेहि सपनेहु परनारि न हेरी ॥
जिन की लहहिं न रिपु रन पीठी । नहि लावहिं पर तिय मन डीठी ॥
मंगन लहहिं न जिन के नाहीं । ते नर बर थोरे जग माहीं ॥

दो० । करत बतकही अनुज सन मन सियरूप लुभान ।
मुखसरोजमकरंदछबि करत मधुप इव पान । २४३ ॥

चौ० । चितवति चकित चहूं दिसि सीता । कहं गये नृपकिसोर मनचीता ॥
जहं बिलोकि मृगसावकनैनी । जनु तहं बरस कमलसितस्रेनी ॥

लता ओट तब सखिन लखाये । स्यामल गौर किसोर सुहाये ॥
देखि रूप लोचन ललचाने । हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥
थके नयन रघुपतिछबि देखी । पलकनहूं परिहरी निमेषी ॥
अधिक सनेह देह भइ भोरी । सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचन मग रामहिं उर आनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन प्रेमबस जानी । कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥

दो० । लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलदपटल बिलगाइ । २४४ ॥

चौ० । सोभासीवं सुभग दोउ बीरा । नील पीत जलजाभ सरीरा ॥
काकपच्छ सिर सोहत नीके । गुच्छा बिच बिच कुसुमकली के ॥
भाल तिलक स्रमबिंदु सुहाये । स्रवन सुभग भूषन छबि छाये ॥
बिकट भ्रकुटि कच घूंघरवारे । नव सरोजलोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला । हासबिलास लेत मन मोला ॥
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं । जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मनिमाल कंबु कल ग्रीवां । कामकलभकर भुज बल सींवां ॥
सुमन समेत बाम कर दोना । सांवर कुंवर सखी सुठि लोना ॥

दो० । केहरिकटि पट पीत धर सुखमासीलनिधान ।
देखि भानुकुलभूषनहिं बिसरा सखिन अपान । २४५ ॥

चौ० । धरि धीरज एक सखी सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । भूप किसोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे । सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥
नखसिख देखि राम की सोभा । सुमिरि पिताप्रन मन अति छोभा ॥
परबस सखिन लखी जब सीता । भये गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब एहि बिरियां काली । अस कहि मन बिहंसी एक आली ॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी । भये बिलंब मातुभय मानी ॥
धरि बड़ धीर राम उर आनी । फिरि अपन प्रम पितु बस जानी ॥

दो० । देखनमिस मृग बिहंग तरु फिरै बहोरि बहोरि ।
निरखि निरखि रघुबीरछबि बाढ़ी प्रीति न थोरि । २४६ ॥

चौ० । जानि कठिन सिवचाप बिसूरति । चली राखि उर स्यामल मूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी । सुखसनेह सोभागुनखानी ॥
परमप्रेममय मृदु मसि कीन्ही । चारु चित्त भीतर लिखि लीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी । बंदि चरन बोली कर जोरी ॥
जय जय जय गिरिराजकिसोरी । जय महेस मुखचंदचकोरी ॥
जय गजबदन षडाननमाता । जगतजननि दामिनिदुतिगाता ॥

नहिं तव आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाव बेद नहिं जाना ॥
भवभौविभवपराभवकारिनि । बिश्वबिमोहनि स्ववस बिहारिनि ॥

दो० । पतिदेवता सुतीय महं मातु प्रथम तव रेख ।
महिमा अमित न कहि सकहिं सहस सारदा सेष । २४७ ॥

चौ० । सेवत तोहि सुलभ फल चारी । बरदायिनि त्रिपुरारिपियारी ॥
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे । सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहु नीके । बसहु सदा उरपुर सबही के ॥
कीन्हेउं प्रगट न कारन तेही । अस कहि चरन गहे बैदेही ॥
बिनयप्रेमबस भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ । बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मनकामना तुम्हारी ॥
नारदबचन सदा सुचि सांचा । सो बर मिलिहि जाहि मन राचा ॥

छं० । मन जाहि राच्यो मिलिहि सो बर सहज सुंदर सांवरो ।
करुनानिधान सुजान सील सनेह जानत रावरो ॥
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदितमन मंदिर चली । १२ ॥

सो० । जानि गौरि अनुकूल सियहिय हर्ष न जाय कहि ।
मंजुल मंगलमूल बाम अंग फरकन लगे । २४ ॥

चौ० । हृदय सराहत सीयलुनाई । गुरु समीप गवने दो भाई ॥
राम कहा सब कौसिक पाहीं । सरल सुभाव छुआ छल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दो भाइन्ह दीन्ही ॥
सुफल मनोरथ होंइ तुम्हारे । राम लषन सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर बिज्ञानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
बिगतदिवस मुनि आयसु पाई । संध्या करन चले दो भाई ॥
प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा । सियमुख सरिस देखि सुख पावा ॥
बहुरि बिचार कीन्ह मन माहीं । सीयबदन सम हिमकर नाहीं ॥

दो० । जन्म सिंधु पुनि बंधु बिष दिन मलीन सकलंक ।
सियमुखसमता पाव किमि चंद्र बापुरो रंक । २४८ ॥

चौ० । घटै बढै बिरहिनिदुखदाई । ग्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोकसोकप्रद पंकजद्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
बैदेहीमुखपटतर दीन्हे । होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सियमुखछबि बिधुब्याज बखानी । गुरु पहं चले निसा बड़ि जानी ॥
करि मुनिचरनसरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥

बिगतनिसा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
उगेउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकजकोकलोकसुखदाता ॥
बोले लषन जोरि जुग पानी । प्रभुप्रभावसूचक मृदु बानी ॥

दो० । अरुनोदय सकुचे कुमुद उडुगनजोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन । २४९ ॥

चौ० । नृप सब नखत करहिं उजियारी । टारि न सकहिं चाप तम भारी ॥
कमल कोक मधुकर खग नाना । हरषे सकल निसाअवसाना ॥
ऐसेहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे । होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानु बिनु स्रम तमनासा । दुरे नखत जगतेजप्रकासा ॥
रबि निज उदयब्याज रघुराया । प्रभुप्रताप सब नृपन दिखाया ॥
तव भुजबलमहिमाउदघाटी । प्रगट धनुर्बिघटनपरिपाटी ॥
बंधुबचन सुनि प्रभु मुसुकाने । होइ सुचि सहज पुनीत अन्हाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरु पहं आये । चरनसरोज सुभग सिर नाये ॥
सतानंद तब जनक बुलाये । कौसिक मुनि पहं तुरत पठाये ॥
जनकबिनय तिन आय सुनाई । हरषे बोलि लिये दौ भाई ॥

दो० । सतानंदपद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहं जाइ ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बुलाइ । २५० ॥

चौ० । सीयस्वयंबर देखिय जाई । ईस काहि धौं देहिं बड़ाई ॥
लषन कहा जसभाजन सोई । नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे सुनि सब मुनिबरबानी । दीन्ह असीस सबहि सुख मानी ॥
पुनि मुनिबृन्द समेत कृपाला । देखन चले धनुषमखसाला ॥
रंगभूमि आये दौ भाई । असि सुधि सब पुरबासिन पाई ॥
चले सकल गृहकाज बिसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीरि भइ भारी । सुचि सेवक सब लिये हंकारी ॥
तुरत सकल लोगन पहं जाहू । आसन उचित देहु सब काहू ॥

दो० । कहि मृदु बचन बिनीत तिन बैठारे नर नारि ।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि । २५१ ॥

चौ० । राजकुंवर तेहि अवसर आये । मनहुं मनोहरता छबि छाये ॥
गुनसागर नागर बर बीरा । सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥
राजसमाज बिराजत रूरे । उडुगन महं जनु जुग बिधु पूरे ॥
जिन के रही भावना जैसी । प्रभुमूरति देखी तिन तैसी ॥
देखहिं भूप महा रनधीरा । मनहुं बीररस धरें सरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी । मनहुं भयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जो नृपबेषा । तिन प्रभु प्रगट काल सम देखा ॥

पुरबासिन देखे दोउ भाई । नरभूषन लोचनसुखदाई ॥

दो० । नारि बिलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप ।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप । २५२ ॥

चौ० । बिदुषन प्रभु बिराटमय दीसा । बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥
जनकजाति अवलोकहिं कैसे । सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी । सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥
जोगिन परम तत्त्वमय भासा । सांत सुद्ध मन सहजप्रकासा ॥
हरिभक्तन देखेउ दोउ भ्राता । इष्टदेव इव सबसुखदाता ॥
रामहिं चितव भाव जेहि सीया । सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ । कवन प्रकार कहै कबि कोऊ ॥
एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ । तेहं तस देखेउ कोसलराऊ ॥

दो० । राजत राजसमाज महं कोसलराजकिसोर ।
सुंदर स्यामल गौर तनु बिस्वबिलोचनचोर । २५३ ॥

चौ० । सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥
सरदचंदनिंदक मुख नीके । नीरजनयन भावते जी के ॥
चितवनि चारु मारमदहरनी । भावति हृदय जाय नहिं बरनी ॥
कल कपोल स्रुति कुंडल लोला । चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥
कुमुदबंधु कर निंदक हासा । भ्रकुटी बिकट मनोहर नासा ॥
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं । कच बिलोकि अलिअवलि लजाहीं ॥
पीत चौतनी सिरन सुहाईं । कुसुमकली बिच बीच बनाईं ॥
रेखा रुचिर कंबु कल ग्रीवां । जनु त्रिभुवनसुखमा की सीवां ॥

दो० । कुंजरमनिकंठाकलित उर तुलसी की माल ।
वृषभकंध केहरिठवनि बलनिधि बाहु बिसाल । २५४ ॥

चौ० । कटि तूनीर पीत पट बांधे । कर सर धनुष बाम बर कांधे ॥
पीत यज्ञउपबीत सुहाई । नखसिख मंजु महा छबि छाई ॥
देखि लोग सब भये सुखारे । इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई । मुनिपदकमल गहे तब जाई ॥
करि बिनती निज कथा सुनाई । रंगअवनि सब मुनिहि दिखाई ॥
जहं जहं जाहिं कुंअर बर दोऊ । तहं तहं चकित चितव सब कोऊ ॥
निज निज रुचि रामहिं सब देखा । कोउ न जान कछु मर्म बिसेषा ॥
भलि रचना नृप सन मुनि कहेऊ । राजा मुदित महा सुख लहेऊ ॥

दो० । सब मंचन तें मंच इक सुंदर बिसद बिसाल ।
मुनि समेत दोउ बंधु तहं बैठारे महिपाल । २५५ ॥

चौ० । प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे । जनु राकेस उदय भये तारे ॥
असि प्रतीति सब के मन माहीं । राम चाप तोरब सक नाहीं ॥
बिनु भंजेउ भवधनुष बिसाला । मेलिहि सीय रामउर माला ॥
अस बिचारि गवनहु घर भाई । जसु प्रताप बल तेज गंवाई ॥
बिहसे अपर भूप सुनि बानी । जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥
तोरेहुं धनुष ब्याह अवगाहा । बिनु तोरे को कुंवरि बिआहा ॥
एक बार कालउ किन होई । सिय हित समर जितब हम सोई ॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने । धर्मसील हरिभक्त सयाने ॥

सो० । सीय बिआहब राम गर्ब दूरि करि नृपन कर ।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रनबांकुरे । २४५ ॥

चौ० । वृथा मरहु जनि गाल बजाई । मनमोदक नहिं भूख बुताई ॥
सिख हमारि सुनु परम पुनीता । जगदंबा जानहु जिय सीता ॥
जगतपिता रघुपतिहिं बिचारी । भरि लोचन छबि लेहु निहारी ॥
सुंदर सुखद सकल गुन रासी । ये दौ बंधु संभु उर बासी ॥
सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृगजल निरखि मरहु कत धाई ॥
करहु जाइ जा कहं जोइ भावा । हम तो आजु जन्मफल पावा ॥
अस कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना । बरषहिं सुमन करहिं कल गाना ॥

दो० । जानि सुअवसर सीय तब पठवा जनक बुलाइ ।
चतुर सखी सुंदरि सकल सादर चलीं लिवाइ । २४६ ॥

चौ० । सियसोभा नहिं जाइ बखानी । जगदंबिका रूपगुनखानी ॥
उपमा सकल मोहि लघु लागी । प्राकृत नारि अंगअनुरागी ॥
सीय बरनि तेहि उपमा देई । को कबि कहै अजस को लेई ॥
जौं पटतरिय तीय सम सीया । जग अस युवति कहां कमनीया ॥
गिरा मुखर तनुअर्द्ध भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही । कहिय रमा सम किमि बैदेही ॥
जौं छबिसुधापयोनिधि होई । परम रूपमय कच्छप सोई ॥
सोभा रजु मंदर सिंगारू । मथै पानिपंकज निज मारू ॥

दो० । इहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरतासुखमूल ।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय सम तूल । २४७ ॥

चौ० । चलीं संग लै सखी सयानी । गावति गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवल तनु सुंदरि सारी । जगतजननि अतुलित छबि भारी ॥
भूषन सकल सुदेस सुहाये । अंग अंग रचि सखिन बनाये ॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ॥

बरषि सुमन दुंदुभी बजाई । बरषि प्रसून अपछरा गाई ॥
पानिसरोज सोह जयमाला । औचक चितै सकल महिपाला ॥
सीय चकित चित रामहि चाहा । भये मोहबस सब नरनाहा ॥
मुनि समीप बैठे दो भाई । लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥

दो० । गुरजनलाज समाज बड़ि देखि सीय सकुचानि ।
लगी बिलोकन सखिन तन रघुबीरहि उर आनि । २५८ ॥

चौ० । रामरूप अरु सियछबि देखी । नर नारिन परिहरी निमेषी ॥
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं । बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं ॥
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई । मति हमारि अस देहु सुहाई ॥
बिनु बिचार प्रन तजि नरनाहू । सीय राम कर करै बिबाहू ॥
जग भल कहहिं भाव सब काहू । हठ कीन्हे अंतहु उर दाहू ॥
यह लालसा मगन सब लोगू । बर साँवरो जानकी जोगू ॥
तब बंदीजन जनक बुलाये । बिरदावली कहत चलि आये ॥
कह नृप जाइ कहहु प्रन मोरा । चले भाट हिय हर्ष न थोरा ॥

दो० । बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।
प्रन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल । २५९ ॥

चौ० । नृपभुजबल बिधु सिवधनु राहू । गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥
रावन बान महाभट भारे । देखि सरासन गवहिं सिधारे ॥
सोइ पुरारिकोदंड कठोरा । राजसमाज आजु जेइ तोरा ॥
त्रिभुवनजय समेत बैदेही । बिनहि बिचार बरै हठि तेही ॥
सुनि प्रन सकल भूप अभिलाषे । भट मानी अतिसय मन माखे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई । चले इष्टदेवन सिर नाई ॥
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । उठइ न कोटि भाँति बल करहीं ॥
जिन के कछु बिचार मन माहीं । चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दो० । तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।
मनहुँ पाइ भटबाहुबल अधिक अधिक गरुआइ । २६० ॥

चौ० । भूप सहस दस एकहि बारा । लगे उठावन टरइ न टारा ॥
डगै न संभुसरासन कैसें । कामीबचन सतीमन जैसें ॥
सब नृप भये जोग उपहासी । जैसें बिनु बिराग सन्यासी ॥
कीरति बिजय बीरता भारी । चले चापकर बरबस हारी ॥
श्रीहत भये हारि हिय राजा । बैठे निज निज जाइ समाजा ॥
नृपन बिलोकि जनक अकुलाने । बोले बचन रोष जनु साने ॥
दीप दीप के भूपति नाना । आये सुनि हम जो प्रन ठाना ॥

देव दनुज धरि मनुज सरीरा । बिपुल बीर आये रनधीरा ॥

दो० । कुंवरि मनोहरि बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय ।
पावनहार बिरंचि जनु रचेउ न धनुदमनीय । २६१ ॥

चौ० । कहहु काहि यह लाभ न भावा । काहु न संकरचाप चढ़ावा ॥
रहो चढ़ाउब तोरब भाई । तिल भरि भूमि न सकेउ छुड़ाई ॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी । बीर बिहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू । लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू ॥
सुकृत जाइ जौं प्रन परिहरऊं । कुंवरि कुंवारि रहो का करऊं ॥
जौं जनितौं बिनु भट भुंइ भाई । तौ प्रन करि होतौं न हंसाई ॥
जनकबचन सुनि सब नर नारी । देखि जानकिहि भये दुखारी ॥
माखे लषन कुटिल भइं भौंहैं । रदपुट फरकत नयन रिसौहैं ॥

दो० । कहि न सकत रघुबीरडर लगे बचन जनु बान ।
नाइ रामपदकमल सिर बोले गिरा प्रमान । २६२ ॥

चौ० । रघुबंसिन महं जहं कोउ होई । तेहि समाज अस कहइ न कोई ॥
कही जनक जसि अनुचित बानी । बिद्यमान रघुकुलमनि जानी ॥
सुनहु भानुकुलपंकजभानू । कहौं सुभाव न कछु अभिमानू ॥
जौं राउर अनुसासन पाऊं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊं ॥
कांचे घट जिमि डारौं फोरी । सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रतापमहिमा भगवाना । का बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुक करौं बिलोकिय सोऊ ॥
कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं । सतयोजन प्रमान लै धावौं ॥

दो० । तोरौं छत्रकदंड जिमि तव प्रतापबल नाथ ।
जौं न करौं प्रभुपदसपथ पुनि न धरौं धनु हाथ । २६२ ॥

चौ० । लषन सकोप बचन जब बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोक सब भूप डेराने । सियहिय हर्ष जनक सकुचाने ॥
गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं । मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं ॥
सैनहिं रघुपति लषन निवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
बिस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति सनेह मृदु बानी ॥
उठहु राम भंजहु भवचापू । मेटहु तात जनकपरितापू ॥
सुनि गुरुबचन चरन सिर नावा । हर्ष बिषाद न कछु उर आवा ॥
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये । ठवनि जुबा मृगराज लजाये ॥

दो० । उदित उदयगिरिमंच पर रघुबर बालपतंग ।
बिकसे संत सरोजबन हरषे लोचन भृंग । २६४ ॥

चौ० । नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । बचन नखत अवलीन प्रकासी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये बिसोक कोक मुनि देवा । बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुरुपद बंदि सहित अनुरागा । राम मुनिन्ह सन आयसु मांगा ॥
सहजहिं चले सकल जगस्वामी । मत्त मंजु कुंजर बर गामी ॥
चलत राम सब पुरनरनारी । पुलक पूरितनु भये सुखारी ॥
बंदि पितर सुर सुकृत संभारे । जौ कछु पुन्यप्रभाव हमारे ॥
तौ सिवधनुष मृनाल कि नाईं । तोरहिं राम गनेस गुसाईं ॥

दो० । रामहि प्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ ।
सीतामातु सनेहबस बचन कहै बिलखाइ । २६५ ॥

चौ० । सखि सब कौतुक देखनहारे । जोउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं । ये बालक असि हठ भल नाहीं ॥
रावन बान छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुंअरकर देहीं । बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥
भूपसयानप सकल सिरानी । सखि बिधिगति कछु जाय न जानी ॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी । तेजवन्त लघु गनिय न रानी ॥
कहं कुंभज कहं सिंधु अपारा । सोषेउ सुजस सकल संसारा ॥
रविमंडल देखत लघु लागा । उदय तासु त्रिभुवनतम भागा ॥

दो० । मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब ।
महा मत्त गजराज कहं बस कर अंकुस खर्ब । २६६ ॥

चौ० । काम कुसुमधनुसायक लीन्हे । सकल भुवन अपने बस कीन्हे ॥
देबि तजिय संसय अस जानी । भंजब धनुष राम सुनु रानी ॥
सखीवचन सुनि भइ परतीती । मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती ॥
तब रामहिं बिलोकि बैदेही । सभय हृदय बिनवति जेहि तेही ॥
मनही मन मनाव अकुलानी । होउ प्रसन्न महेस भवानी ॥
करहु सुफल आपनि सेवकाई । करि हित हरहु चापगरुआई ॥
गननायक बरदायक देवा । आजु लगे कीन्ही तव सेवा ॥
बार बार बिनती सुनि मोरी । करहु चापगुरुता अति थोरी ॥

दो० । देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर ।
भरे बिलोचन प्रेमजल पुलकावली सरीर । २६७ ॥

चौ० । नीके निरखि नयन भरि सोभा । पितुप्रन सुमिरि बहुरि मन छोभा ॥
अहह तात दारुन हठ ठानी । समुझत नहिं कछु लाभ न हानी ॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई । बुधसमाज बड़ अनुचित होई ॥
कहं धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहं स्यामल मृदु गात किसोरा ॥

बिधि केहि भांति धरौं उर धीरा । सिरिससुमन किमि बेधिय हीरा ॥
सकल सभा की मति भइ भोरी । अब मोहि संभु चाप गति तोरी ॥
निज जड़ता लोगन पर डारी । होउ हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अति परिताप सीय मन माहीं । लवनिमेष जुग सत सम जाहीं ॥

दो० । प्रभुहि चितै पुनि चितै महि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधुमंडल डोल । २६८ ॥

चौ० । गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
लोचनजल रह लोचनकोना । जैसे परम कृपनकर सोना ॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरज प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर प्रन सांचा । रघुपतिपदसरोज मन रांचा ॥
तौ भगवान सकल उरबासी । करिहहिं मोहि रघुपति की दासी ॥
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलत न कछु संदेहू ॥
प्रभुतन चितै प्रेम प्रन ठाना । कृपानिधान राम सब जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे । चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसे ॥

दो० । लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हरकोदंड ।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंड । २६९ ॥

चौ० । दिसकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं संकरधनु तोरा । होउ सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप राम जब आये । नर नारिन सुर सुकृत मनाये ॥
सब कर संसय अरु अज्ञानू । मंद महीपन कर अभिमानू ॥
भृगुपति केरि गर्ब गरुआई । सुरमुनिबरन केरि कदराई ॥
सिय कर सोच जनकपछितावा । रानिन कर दारुन दुखदावा ॥
संभुचाप बड़ बोहित पाई । चढ़े जाइ सब संग बनाई ॥
रामबाहुबल सिंधु अपारा । चहत पार नहिं कोउ कनधारा ॥

दो० । राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेखि । २७० ॥

चौ० । देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कल्प सम तेही ॥
त्रषित बारि बिनु जौं तन त्यागा । मुये करै का सुधातड़ागा ॥
का बर्षा जब कृषी सुखाने । समय चूक पुनि का पछिताने ॥
अस जिय जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेखी ॥
गुरहि प्रनाम मनहिं मन कीन्हा । अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ । पुनि धनु नभमंडल सम भयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े । काहु न लखा देख सब ठाढ़े ॥
तेहि छन मध्य राम धनु तोरा । भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छं० । भरि भुवन घोर कठोररव रबिबाजि तजि मारग चले ।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारहीं ।
कोदंड भंजेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं । २२ ॥

दो० । संकरचाप जहाज सागर रघुबरबाहुबल ।
बूडे सकल समाज चढ़े जे प्रथमहि मोहबस । २७० ॥

चौ० । प्रभु दौ खंड चाप महि डारे । देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौसिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेमबारि अवगाह सुहावन ॥
रामरूप राकेस निहारी । बढ़ी बीचि पुलकावलि भारी ॥
बाजे नभ गहगहे निसाना । देवबधू नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा ॥
बरषहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किंनर गीत रसाला ॥
रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंगधुनि जात न जानी ॥
मुदित कहहिं जहं तहं नर नारी । भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥

दो० । बंदी मागध सूतगन बिरद बदहिं मतिधीर ।
करहिं निछावरि लोग सब हय गज धन मनि चीर । २७१ ॥

चौ० । झांझ मृदंग संख सहनाई । भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये । जहं तहं युबतिन मंगल गाये ॥
सखिन सहित हर्षित अति रानी । सूखत धान परा जनु पानी ॥
जनक लहेउ सुख सोच बिहाई । पैरत थके थाह जनु पाई ॥
स्रीहत भये भूप धनुटूटे । जैसे दिवस दीपछबि छूटे ॥
सियहियसुख बरनिय केहि भांती । जनु चातकी पाइ जल स्वाती ॥
रामहिं लषन बिलोकत कैसे । ससिहि चकोरकिसोरक जैसे ॥
सतानंद तब आयसु दीन्हा । सीता गमन राम पहं कीन्हा ॥

दो० । संग सखी सुंदरि चतुरि गावहिं मंगल चार ।
गवनी बालमरालगति सुखमा अंग अपार । २७२ ॥

चौ० । सखिन मध्य सिय सोहति कैसी । छबिगन मध्य महाछबि जैसी ॥
कर सरोज जयमाल सुहाई । बिस्वबिजयसोभा जनु छाई ॥
तनु सकोच मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाइ समीप रामछबि देखी । रहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी ॥
चतुर सखी लखि कहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगल कर माल उठाई । प्रेमबिबस पहिराइ न जाई ॥
सोहत जनु युग जलज सनाला । ससिहि सभीत देत जयमाला ॥

गावहिं छबि अवलोकि सहेली । सिय जयमाल राम उर मेली ॥

सो० । रघुबरउर जयमाल देखि देव बरषहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन । २७ ॥

चौ० । पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । खल भये मलिन साधु सब गाजे ॥
सुर किंनर नर नाग मुनीसा । जय जय सब कहि देहिं असीसा ॥
नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटी । बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहं तहं बिप्र बेदधुनि करहीं । बंदी बिरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाक जस ब्यापा । राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥
करहिं आरती पुरनरनारी । देहिं निछावरि बित्त बिसारी ॥
सोहत सीय राम की जोरी । छबि सृंगार मनहुं इक ठोरी ॥
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता । करति न चरनपरस अति भीता ॥

दो० । गौतमतियगति सुरति करि नहिं परसति पद पानि ।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि । २७३ ॥

चौ० । तब सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कपूत मूढ़ मन माखे ॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे । जहं तहं गाल बजावन लागे ॥
लेहु छुड़ाइ सीय कह कोऊ । धरि बांधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष चाड़ नहिं सरई । जीवत हमहिं कुंवरि को बरई ॥
जौ बिदेह कछु करै सहाई । जीतहु समर सहित दो भाई ॥
साधु भूप बोले सुनि बानी । राजसमाजहिं लाज लजानी ॥
बल प्रताप बीरता बड़ाई । नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ सूरता कि अब कहुं पाई । असि बुधि तौ बिधिमुहमसि लाई ॥

दो० । देखहु रामहिं नयन भरि तजि इरषा मद मोहु ।
लषनरोष पावक प्रबल जानि सलभ जनि होहु । २७४ ॥

चौ० । बैनतेयबलि जिमि चह कागू । जिमि सस चहहिं नागअरिभागू ॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही । सुख संपदा चहहिं सिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई । अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरिपदबिमुख परम गति चाहा । तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी । सखी लिवाइ गईं जहं रानी ॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं । सियसनेह बरनत मन माहीं ॥
रानिन सहित सोचबस सीया । अबधौं बिधिहि कहा करनीया ॥
भूपबचन सुनि इत उत तकहीं । लषन रामडर बोलि न सकहीं ॥

दो० । अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन सकोप ।
मनहुं मत्त गजगन निरखि सिंहकिसोरहि चोप । २७५ ॥

चौ० । खरभर देखि बिकल नरनारी । सब मिलि देहिं महीपन गारी ॥
तेहि अवसर सुनि सिवधनुभंगा । आये भृगुकुलकमलपतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
गौर सरीर भूति भलि भ्राजा । भाल बिसाल त्रिपुण्ड बिराजा ॥
सीस जटा ससि बदन सुहावा । रिसबस कछुक अरुन है आवा ॥
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते । सहजहिं चितवत मनहुं रिसाते ॥
वृषभ कंध उर बाहु बिसाला । चारु जनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनिबसन तून दुइ बांधे । धनु सर कर कुठार कल कांधे ॥

दो० । सन्तभेष करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप ।
धरि मुनि तनु जनु बीररस आये जहं सब भूप । २७६ ॥

चौ० । देखत भृगुपतिभेष कराला । उठे सकल भय बिकल भुआला ॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा । लगे करन सब दंडप्रनामा ॥
जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी । सो जाने जनु आयु खुटानी ॥
जनक बहोरि आय सिर नावा । सीय बुलाय प्रनाम करावा ॥
आसिष दीन्ह सखी हरषानी । निज समाज लेगईं सयानी ॥
बिस्वामित्र मिले पुनि आई । पदसरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लखन दसरथ के ढोटा । दीन्ह असीस जानि भल जोटा ॥
रामहि चितय रहे थकि लोचन । रूप अपार मारमदमोचन ॥

दो० । बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु कहा अति भीर ।
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोप सरीर । २७७ ॥

चौ० । समाचार कहि जनक सुनाये । जेहि कारन महीप सब आये ॥
सुनत बचन फिरि अनत निहारे । देखे चापखंड महि डारे ॥
अति रिस बोले बचन कठोरा । कहु जड़ जनक धनुष केइ तोरा ॥
बेगि देखाउ मूढ़ नतु आजू । उलटौं महि जहं लगि तव राजू ॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं । कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥
सुर मुनि नाग नगर नरनारी । सोचहिं सकल त्रास उर भारी ॥
मन पछिताति सीय महतारी । बिधि संवारि सब बात बिगारी ॥
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता । अर्ध निमेष कल्प सम बीता ॥

दो० । सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीर ।
हृदय न हर्ष बिषाद कछु बोले श्रीरघुबीर । २७८ ॥

चौ० ॥ नाथ संभुधनुभंजनिहारा । होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ॥
आयसु कहा कहिय किन मोही । सुनि रिसाय बोले मुनि कोही ॥
सेवक सो जो करै सेवकाई । अरिकरनी करि करिय लराई ॥

सुनहु राम जेइ सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । नतु मारे जैहैं सब राजा ॥
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहिं अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरेउं लरिकाईं । कबहुं न असि रिस कीन्ह गोसाईं ॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू ॥

दो० । रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न संभार ।
धनुहीं सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार । २७९ ॥

चौ० । लखन कहा हंसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का छति लाभ जीर्न धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहि न दोषू । मुनि बिनु काज करिय कत रोषू ॥
बोले चितय परसु की ओरा । रे सठ सुनेसि सुभाव न मोरा ॥
बालक बोलि बधौं नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानेसि मोही ॥
बालब्रह्मचारी अति कोही । बिस्वबिदित छत्रीकुलद्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । बिपुल बार महिदेवन दीन्ही ॥
सहसबाहुभुजछेदनहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥

दो० । मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीपकिसोर ।
गर्भन के अर्भकदलन परसु मोर अति घोर । २८० ॥

चौ० । बिहसि लखन बोले मृदु बानी । अहो मुनीस महा भट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारा । चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥
इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं । जो तर्जनि देखत मरि जाहीं ॥
देखि कुठार सरासन बाना । मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी । जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरे कुल इन पर न सुराई ॥
बधे पाप अपकीरति हारे । मारतहूं पां परिय तुम्हारे ॥
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा । वृथा धरहु धनु बान कुठारा ॥

दो० । जो बिलोकि अनुचित कहेउं छमहु महा मुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर । २८१ ॥

चौ० । कौसिक सुनहु मंद यह बालक । कुटिल कालबस निज कुलघालक ॥
भानुबंसराकेसकलंकू । निपट निरंकुस अबुध असंकू ॥
कालकवर होइहि छन माहीं । कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लखन कहेउ मुनिसुयस तुम्हारा । तुमहि अछत को बरनै पारा ॥
अपने मुख तुम आपनि करनी । बार अनेक भांति बहु बरनी ॥

नहिं संतोष त पुनि कछु कहहू । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीरब्रती तुम धीर अछोभा । गारी देत न पावहु सोभा ॥

दो० । सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु । २८२ ॥

चौ० । तुम तौ काल हाँकि जनु लावा । बार बार मोहि लागि बोलावा ॥
सुनत लखन के बचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
अब जनि देइ दोष मोहि लोगू । कटुबादी बालक बधजोगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा । अब यह मरनहार भा साँचा ॥
कौसिक कहा छमिय अपराधू । बालदोषगुन गनहिं न साधू ॥
कर कुठार मैं अकरुन कोही । आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥
उत्तर देत छाड़ौं बिनु मारे । केवल कौसिक सील तुम्हारे ॥
नत एहि काटि कुठार कठोरे । गुरहि उरिन होतेउँ स्रम थोरे ॥

दो० । गाधिसुवन कह हृदय हँसि मुनिहिं हरियरे सूझ ।
अजगव खंडेउ ऊख जिमि अजहुं न बूझ अबूझ । २८३ ॥

चौ० । कहेउ लखन मुनि सील तुम्हारा । को नहिं जान बिदित संसारा ॥
मातहिं पितहिं उरिन भये नीके । गुरुरिन रहा सोच बड़ जी के ॥
सो जनु हमरे माथे काढ़ा । दिन चलि गयेउ ब्याज बहु बाढ़ा ॥
अब आनिय ब्यवहरिया बोली । तुरत.देव मैं थैली खोली ॥
मुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाहा कहि सब लोग पुकारा ॥
भृगुबर परसु देखावहु मोही । बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही ॥
मिले न कबहुं सुभट रन गाढ़े । द्विज देवता घरही के बाढ़े ॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सैनहि लखन निवारे ॥

दो० । लखनउतर आहुति सरिस भृगुपतिकोप कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु । २८४ ॥

चौ० । नाथ करहु बालक पर छोहू । सूध दूधमुख करिय न कोहू ॥
जौ पै प्रभुप्रभाव कछु जाना । तौ कि बराबरि करत अयाना ॥
जौं लरिका कछु अनुचित करहीं । गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
करिय कृपा सिसु सेवक जानी । तुम सम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥
रामबचन सुनि कछुक जुड़ाने । कहि कछु लखन बहुरि मुसुकाने ॥
हँसत देखि नखसिख रिस ब्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥
गौर सरीर स्याम मन माहीं । कालकूटमुख पयमुख नाहीं ॥
सहज टेढ़ अनुहरै न तोहीं । नीच मीच सम लखै न मोहीं ॥

दो० । लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल ।

जेहि बस जन अनुचित करहिं चलहिं बिस्व प्रतिकूल २८५ ॥

चौ० । मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोप करिय अब दाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने । बैठिय होइहहिं पाय पिराने ॥
जौ अति प्रिय तो करिय उपाई । जोरिय कोउ बड़ गुनिय बुलाई ॥
बोलत लषनहि जनक डेराहीं । मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ॥
थरथर कांपहिं पुरनरनारी । छोट कुमार खोट अति भारी ॥
भृगुपति सुनि सुनि निर्भय बानी । रिस तन जरै होइ बलहानी ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा । बंचौं बिचारि बंधु लघु तोरा ॥
मन मलीन तन सुंदर कैसे । बिषरसभरा कनकघट जैसे ॥

दो० । सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम । २८६ ॥

चौ० । अति बिनीत मृदु सीतल बानी । बोले राम जोरि जुग पानी ॥
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालकबचन करिय नहिं काना ॥
बररे बालक एक सुभाऊ । इनहिं न सन्त बिदूषहिं काऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप बध बंध गोसाईं । मो पर करिय दास की नाईं ॥
कहिय बेगि जेहि बिधि रिस जाई । मुनिनायक सोइ करिय उपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे । अजहुं अनुज तव चितव अनैसे ॥
इहि के कंठ कुठार न दीन्हा । तौ मैं कहा कोप करि कीन्हा ॥

दो० । गर्भ स्रवहिं अवनिपरवनि सुनि कुठारगति घोर ।
परसु अछत देखौं जियत बैरी भूपकिसोर । २८७ ॥

चौ० । बहै न हाथ दहै रिस छाती । भा कुठार कुंठित नृपघाती ॥
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपा कसि काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा । सुनि सौमित्रि बिहसि सिर नावा ॥
बाउ कृपामूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
जौ पै कृपा जरै मुनिगाता । क्रोध भये तनु राखु बिधाता ॥
देखु जनक हठि बालक येहू । कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू ॥
बेगि करहु किन आंखिन ओटा । देखत छोट खोट नृपढोटा ॥
बिहंसे लषन कहा मुनि पाहीं । मूंदिय आंखि कतहुं कोउ नाहीं ॥

दो० । परसुराम तब राम प्रति बोले बचन सक्रोध ।
संभु सरासन तोरि सठ करसि हमार प्रबोध । २८८ ॥

चौ० । बंधु कहै कटु संमत तोरे । तूं छल बिनय करसि कर जोरे ॥
कर परितोष मोर संग्रामा । नाहिंत छाडु कहाउब रामा ॥

छल तजि करहु समर सिवद्रोही । बंधु सहित नतु मारौं तोही ॥
भृगुपति तमकि कुठार उठाये । मन मुसुकाहिं राम सिर नाये ॥
गुनहु लषन कर हम पर रोषू । कतहुं सुधाइहु ते बड़ दोषू ॥
टेढ़ जानि संका सब काहू । बक्र चंद्रमहिं ग्रसै न राहू ॥
राम कहेउ रिस तजिय मुनीसा । कर कुठार आगे यह सीसा ॥
जेहि रिस जाइ करिय सोइ स्वामी । मोहि जानि आपन अनुगामी ॥

दो० । प्रभु सेवकहि समर कस तजहु बिप्र बर रोष ।
भेष बिलोकि कहेसि कछु बालकहूं नहिं दोष । २८८ ॥

चौ० । देखि कुठार बानधनुधारी । भै लरिकहि रिस बीर बिचारी ॥
नाम जान पै तुमहि न चीन्हा । बंस सुभाव उतर तेहि दीन्हा ॥
जौ तुम अवतेहु मुनि की नाईं । पदरज सिर सिसु धरत गुसाईं ॥
छमहु चूक अनजानत केरी । चहिय बिप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहिं तुमहिं सरबरि कस नाथा । कहहु तो कहां चरन कहं माथा ॥
राममात्र लघु नाम हमारा । परसु सहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
देव एक गुन धनुष हमारे । नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुम सन हारे । छमहु बिप्र अपराध हमारे ॥

दो० । बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष होइ०तुहूं बंधु सम बाम २९० ॥

चौ० । निपटहि द्विज करि जानेहु मोही । मैं जस बिप्र सुनावौं तोही ॥
चाप स्रुवा सर आहुति जानू । कोप मोर अति घोर कृसानू ॥
समिध सेन चतुरंग सुहाई । महा महीप भये पसु आई ॥
मैं एहि परसु काटि बलि दीन्हा । समरयज्ञ जप कोटिन कीन्हा ॥
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे । बोलसि निदरि बिप्र के भोरे ॥
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा । अहमिति मनहुं जीति जग ठाढ़ा ॥
राम कहा मुनि कहहु बिचारी । रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
छुअतहि टूट पिनाक पुराना । मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ॥

दो० । जौ हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जग सुभट जेहि भयबस नावहिं माथ २९१ ॥

चौ० । देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ॥
जौ रन हमहिं प्रचारय कोऊ । लरहिं सुखेन काल किन होऊ ॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना । कुलकलंक तेहि पांवर आना ॥
कहौं सुभाव न कुलहि प्रसंसी । कालहु डरहिं न रन रघुबंसी ॥
बिप्रबंस की असि प्रभुताई । अभय होइ जो तुमहि डेराई ॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के । उघरे पटल परसुधरमति के ॥

राम रमापति कर धनु लेहू । खैंचहु मोर मिटै संदेहू ॥
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ । परसुराममन बिस्मय भयऊ ॥

दो० । जाना रामप्रभाव तब पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पानि बोले बचन प्रेम न हृदय समात । २८२ ॥

चौ० । जय रघुबंसबनजबनभानू । गहनदनुजकुलदहनकृसानू ॥
जय सुरबिप्रधेनुहितकारी । जय मदमोहकोहभ्रमहारी ॥
बिनयसीलकरुनागुनसागर । जयति बचनरचना अति आगर ॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा । जय सरीरछबि कोटिअनंगा ॥
करौं कहा मुख एक प्रसंसा । जय महेसमन मानसहंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउं अज्ञाता । छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ॥
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गये बनहि तप हेतू ॥
अपभय कुटिल महीप डेराने । जहं तहं कायर गवंहि पराने ॥

दो० । देवन दीन्हो दुन्दुभी प्रभु पर बरषहिं फूल ।
हरषे पुरनरनारि सब मिटा मोह भय सूल । २८३ ॥

चौ० । अति गहगहे बाजने बाजे । सबहि मनोहर मंगल साजे ॥
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी । करहिं गान कल कोकिलबयनी ॥
सुख बिदेह कर बरनि न जाई । जन्मदरिद्र मनहुं निधि पाई ॥
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी । जनु बिधुउदय चकोरकुमारी ॥
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा । प्रभुप्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुं भाई । अब जो उचित सो कहिय गुसांई ॥
कह मुनि सुनु नरनाह प्रबीना । रहा बिबाह चाप आधीना ॥
टूटतही धनु भयउ बिबाहू । सुर नर नागबिदित सब काहू ॥

दो० । तदपि जाइ तुम करहु अब यथा बंस ब्यवहार ।
बूझिबिप्रकुलबृद्धिगुरु बेद बिदित आचार । २८४ ॥

चौ० । दूत अवधपुर पठवहु जाई । आनें नृप दसरथहिं बुलाई ॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला । पठये दूत अवध तेहि काला ॥
बहुरि महाजन सकल बुलाये । आइ सबनि सादर सिरनाये ॥
हाट बाट मंदिर सुरबासा । नगर संवारहु चारिहु पासा ॥
हरषि चले निज निज गृह आये । पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥
रचहु बिचित्र बितान बनाई । सिर धरि बचन चले सचु पाई ॥
पठये बोलि गुनी तिन्ह नाना । जे बितानबिधिकुसल सुजाना ॥
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । बिरचे कनककदलीथंभा ॥

दो० । हरित मनिन के पत्र फल पद्मराग के फूल ।

रचना देखि बिचित्र अति मन बिरंचि के भूल । २८५ ॥

चौ० । बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे । सरल सपर्न परहिं नहिं चीन्हे ॥
कनक कलित अहिबेलि बनाई । लखि नहिं परै सपर्न सुहाई ॥
तेहि के रचि पचि बंध बनाये । बिच बिच मुकुतादाम सुहाये ॥
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहु रंग बिहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवनप्रसंगा ॥
सुरप्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ी । मंगलद्रव्य लिये सब ठाढ़ी ॥
चौके भांति अनेक पुराईं । सिंदुर मनिमय सहज सुहाईं ॥

दो० । सौरभपल्लव सुभग सुठि किये नीलमनि कोरि ।
हेमबौर मरकतघवरि लसत पाटमयडोरि । २८६ ॥

चौ० । रचे रुचिर बरबंदनवारे । मनहुं मनोभव फंद संवारे ॥
मंगलकलस अनेक बनाये । ध्वजपताकपट चमर सुहाये ॥
दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न बरनि बिचित्र बिताना ॥
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही । सो बरनै असि मति कबि केही ॥
दूलह राम रूपगुनसागर । सो बिताम तिहुं लोक उजागर ॥
जनकभवन की सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥
जेहिं तिरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगे भुवन दसचारी ॥
जो संपदा नीचगृह सोहा । सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥

दो० । बसै नगर जेहि लच्छि करि कपट नारि बर भेष ।
तेहि पुर की सोभा कहत सकुचे सारद सेष । २८७ ॥

चौ० । पहुंचे दूत रामपुर पावन । हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥
भूपद्वार तिन्ह खबरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रनाम तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आप उठि लीन्ही ॥
बारि बिलोचन बांचत पाती । पुलक गात आई भरि छाती ॥
राम लषन उर कर बर चीठी । रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषी सभा बात सुनि सांची ॥
खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरत सहित हौ भाई ॥
पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहां ते पाती आई ॥

दो० । कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहि देस ।
सुनि सनेहसाने बचन बांची बहुरि नरेस । २८८ ॥

चौ० । सुनि पाती पुलके दौ भ्राता । अधिक सनेह समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरत की देखी । सकल सभा सुख लहेउ बिसेषी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैया कहहु कुसल दौ बारे । तुम नीके निज नयन निहारे ॥

स्यामल गौर धरे धनुभाथा । बय किसोर कौसिक मुनि साथा ॥
पहिचानेहु तो कहहु सुभाऊ । प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ ॥
जा दिन ते मुनि गये लिवाई । तब तें आजु साँचि सुधि पाई ॥
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने । सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥

दो० । सुनहु महीपतिमुकुटमनि तुम सम धन्य न कोउ ।
राम लषन जिन के तनय बिस्वबिभूषन दोउ । १९९ ॥

चौ० । पूछनयोग न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंह तिहुं पुर उजियारे ॥
जिन के जस प्रताप के आगे । ससि मलीन रबि सीतल लागे ॥
तिन कहं कहिय नाथ किमि चीन्हे । देखिय रबि कि दीप कर लीन्हे ॥
सीयस्वयंबर भूप अनेका । सिमिटे सुभट एक तें एका ॥
संभुसरासन काहु न टारा । हारे सकल भूप बरियारा ॥
तीनि लोक महं जे भट मानी । सब की सक्ति संभुधनु भानी ॥
सकै उठाइ सुरासुर मेरू । सोउ हिय हारि गयउ कर फेरू ॥
जेहिं कौतुक सिवसैल उठावा । सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥

दो० । तहां राम रघुबंसमनि सुनिय महा महिपाल ।
भंजेउ चाप प्रयास बिन जिमि गज पंकजनाल । २०० ॥

चौ० । सुनि सरोष भृगुनायक आये । बहुत भांति तिन आंखि देखाये ॥
देखि रामबल निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा ॥
राजत राम अतुलबल जैसे । तेजनिधान लषन पुनि तैसे ॥
कंपहिं भूप बिलोकत जाके । जिमि गज हरिकिसोर के ताके ॥
देव देखि तव बालक दोऊ । अब न आंखि तर आव न कोऊ ॥
दूतबचनरचना प्रिय लागी । प्रेमप्रतापबीररसपागी ॥
सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्हि देन निछावर लागे ॥
कहि अनीति ते मूंदेउ काना । धर्म बिचारि सबहि सुख माना ॥

दो० । तब उठि भूप बसिष्ठ कहं दीन्ह पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बुलाइ । २०१ ॥

चौ० । सुनि बोले मुनि अति सुख पाई । पुन्य पुरुष कहं महि सुख छाई ॥
जिमि सरिता सागर महं जाहीं । यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख संपति बिनहिं बुलाये । धर्मसीलपहं जाहिं सुभाये ॥
तुम गुरुबिप्रधेनुसुरसेवी । तसि पुनीत कौसल्या देवी ॥
सुकृती तुम समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥
तुम ते अधिक पुन्य बड़ काके । राजन राम सरिस सुत जाके ॥
बीर बिनीत धर्मब्रतधारी । गुनसागर बालक बर चारी ॥

तुम कहं सर्ब काज कल्याना । सजेहु बरात बजाइ निसाना ॥

दो० । चलेउ बेगि सुनि गुरुबचन भलेहि नाथ सिर नाइ ।
भूपति गवने भवन तब दूतहि बास दिवाइ । ३०२ ॥

चौ० । राजा सब रनिवास बुलाई । जनकपत्रिका बांचि सुनाई ॥
सुनि संदेस सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी ॥
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । मनहुं सिखिन सुनि बारिद्बानी ॥
मुदित असीस देहिं गुरुनारी । अति आनंदमगन महंतारी ॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
राम लषन की कीरति करनी । बारहिं बार भूपबर बरनी ॥
मुनिप्रसाद कहि द्वार सिधाये । रानिन्ह तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनंद समेता । चले बिप्रबर आसिष देता ॥

सो० । याचक लिये हंकारि दीन्ह निछावरि कोटि बिधि ।
चिरजीवहु सुत चारि चक्रबर्ति दसरत्थ के । ९८ ॥

चौ० । कहत चले पहिरें पट नाना । हरषि हने गहगहे निसाना ॥
समाचार सब लोगन पाये । लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारिदस भरेउ उछाहू । जनकसुतारघुबीरबिबाहू ॥
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गली संवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीति की रीति सुहाई । मंगलरचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू । छावा परम बिचित्र बजारू ॥
कनक कलस तोरनमनिजाला । हरद दूब दधि अच्छत माला ॥

दो० । मंगलमय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ ।
बीथी सींची चतुर सब चौकें चारु पुराइ । ३०३ ॥

चौ० । जहं तहं यूथ यूथ मिलि भामिनि । सजि नवसप्त सकल द्युतिदामिनि ॥
बिधुबदनी मृगसावकलोचनि । निज सरूप रतिमानबिमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुल बानी । सुनि कल रव कलकंठ लजानी ॥
भूपभवन किमि जाइ बखाना । बिस्वबिमोहन रचेउ बिताना ॥
मंगल द्रब्य मनोहर नाना । राजत बाजत बिपुल निसाना ॥
कतहुं बिरद बंदी उच्चरहीं । कतहुं बेदधुनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुंदरि मंगल गीता । लै लै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा । मानहुं उमगि चला चहुं ओरा ॥

दो० । सोभा दसरथभवन की को कबि बरनै पार ।
जहां सकल सुरसीसमनि राम लीन्ह अवतार । ३०४ ॥

चौ० । भूप भरत पुनि लिये बुलाई । हय गज स्यंदन साजहु जाई ॥
चलहु बेगि रघुबीरबराता । सुनत पुलक पूरे दौ भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बुलाये । आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये ॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन साजे । बर्न बर्न बर बाजि बिराजे ॥
सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अय जिमि जरत धरत पग धरनी ॥
नाना भांति न जाहिं बखाने । निदरि पवन जनु चहत उड़ाने ॥
तिन सब छयल भये असवारा । भरत सरिस सब राज कुमारा ॥
सब सुंदर सब भूषनधारी । कर सर चाप तून कटि भारी ॥

दो० । छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नवीन ।
युग पदचर असवार प्रति जे असिकलाप्रवीन । २०५ ॥

चौ० । बांधे बिरद बीर रन गाढ़े । निकसि भये पुरबाहिर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना । हरषहिं धुनि सुनि पनव निसाना ॥
रथ सारथिन बिचित्र बनाये । ध्वज पताक मनि भूषन छाये ॥
चंवर चारु किंकिनिधुनि करहीं । भानुयानसोभा अपहरहीं ॥
स्यामकर्न अगनित हय होते । ते तिन्ह रथन सारथिन जोते ॥
सुंदर सकल अलंकृत सोहैं । जिनहिं बिलोकत मुनिमन मोहैं ॥
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं । टाप न बूड़ बेग अधिकाईं ॥
अस्त्र सस्त्र सब साज सजाई । रथी सारथिन लिये बुलाई ॥

दो० । चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात ।
होत सगुन सुंदर सबहि जो जेहि कारज जात । २०६ ॥

चौ० । कलित करिबरन्ह परीं अंबारी । कहि न जाइ जेहि भांति संवारी ॥
चले मत्त गज घंट बिराजे । मनहुं सुभग सावनघन गाजे ॥
बाहन अपर अनेक बिधाना । सिबिका सुभग सुखासन याना ॥
तिन चढ़ि चले बिप्रबरबृंदा । जनु तनधरे सकल स्रुति छंदा ॥
मागध सूत बंदि गुनगायक । चले यान चढ़ि जो जेहि लायक ॥
बेसर ऊंट बृषभ बहु जाती । चले बस्तु भरि अगनित भांती ॥
कोटिन कांवरि चले कहारा । बिबिध बस्तु को बरनै पारा ॥
चले सकल सेवकसमुदाई । निज निज साज समाज बनाई ॥

दो० । सब के उर निर्भर हरष पूरित पुलक सरीर ।
कबहिं देखिहैं नयन भरि राम लखन दौ बीर । २०७ ॥

चौ० । गरजहिं गजघंटाधुनि घोरा । रथरव बाजि हींस चहुं ओरा ॥
निदरि घनहि घुम्मरहि निसाना । निज पराय कछु सुनिय न काना ॥
महा भीर भूपति के द्वारे । रज होइ जाइ पखान पबारे ॥

चढ़ी अटारिन देखहिं नारी । लिये आरती मंगल थारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना । अति अनंद नहिं जाइ बखाना ॥
तब सुमंत दुइ स्यंदन साजी । जोते रबिहयनिंदक बाजी ॥
दौ रथ रुचिर भूप पहं आने । नहिं सारद प्रति जाहिं बखाने ॥
राजसमाज एक रथ साजा । दूसर तेजपुंज अति राजा ॥

दो० । तेहि रथ रुचिर बसिष्ट कहं हरषि चढ़ाइ नरेस ।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गनेस । ३०८ ॥

चौ० । सहित बसिष्ट सोह नृप कैसे । सुरगुरु संग पुरंदर जैसे ॥
करि कुलरीति बेदबिधि राऊ । देखि सबहिं सब भांति बनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरुआयसु पाई । चले महीपति संख बजाई ॥
हरषे बिबुध बिलोकि बराता । बरषहिं सुमन सुमंगलदाता ॥
भयउ कोलाहल हय गज गाजे । ब्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुरनरनारि सुमंगल गाईं । सरस राग बाजहिं सहनाईं ॥
घंटघंटिधुनि बरनि न जाई । सरौं करैं पायक फहराई ॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना । हासकुसल कलगानसुजाना ॥

दो० । तुरग नचावहिं कुंवर बर अकनि मृदंग निसान ।
नागर नट चितवहिं चकित डिगहिं न तालबिधान । ३०९ ॥

चौ० । बनैं न बरनत बनी बराता । होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥
चारा चाखु बाम दिसि लेई । मनहुं सकल मंगल कहि देई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुलदरस सब काहुन पावा ॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी । सघट सबाल आव बर नारी ॥
लोवा फिरि फिरि दरस दिखावा । सुरभी सन्मुख सिसुहि पिआवा ॥
मृगमाला दाहिन दिसि आई । मंगलगन जनु दीन्ह दिखाई ॥
छेमकरी कह छेम बिसेषी । स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥
सन्मुख आयउ दधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥

दो० । मंगलमय कल्यानमय अभिमत फल दातार ।
जनु सब सांचे होन हित भये सगुन एक बार । ३१० ॥

चौ० । मंगल सगुन सुगम सब ताके । सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके ॥
राम सरिस बर दुलहिनि सीता । समधी दसरथ जनक पुनीता ॥
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे । अब कीन्हे बिरंचि हम सांचे ॥
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना । हय गज गाजहिं हनहिं निसाना ॥
आवत जानि भानुकुलकेतू । सरितन जनक बंधाये सेतू ॥
बीच बीच बर बास बनाये । सुरपुर सरिस संपदा छाये ॥
असन सयन बर बसन सुहाये । पावहिं सब निज निज मन भाये ॥

सिय नूतन सुख लखि अनुकूला । सकल बरातिन मंदिर भूला ।

दो० । आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान ।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान । ३११ ॥

चौ० । कनककलस कल कोपर थारा । भोजन ललित अनेक प्रकारा ।
भरे सुधा सम सब पकवाना । भांति भांति नहिं जाहिं बखाना ।
फल अनेक बर बस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूप पठाई ।
भूषन बसन महामनि नाना । खग मृग हय गज बहु बिध याना ॥
मंगल सगुन सुगंध सुहाये । बहुत भांति महिपाल पठाये ॥
दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि कांवरि चले कहारा ॥
अगवानन जब दीख बराता । उर आनंद पुलक भर गाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन हने निसाना ॥

दो० । हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल ।
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल । ३१२ ॥

चौ० । बरषि सुमन सुरसुंदरि गावहिं । मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखी नृप आगे । बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागे ॥
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा । भै बकसीस याचकन दीन्हा ॥
करि पूजा बहु मान बड़ाई । जनवासे कहं चले लवाई ॥
बसन बिचित्र पांवड़े परहीं । नृपदसरथ ता पर पग धरहीं ॥
देखि धनद धनमद परिहरहीं । बरषि सुमन सुर जय जय करहीं ॥
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा । जहं सब कहं सब भांति सुपासा ॥
जानी सिय बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्र[illegible] जनाई ॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई । भूप पहुनई करन [illegible] ॥

दो० । सियआयसु सिर सिद्धि धरि गईं जहां जनवास ।
लिये संपदा सकल सुख सुरपुरभोगबिलास । ३१३ ॥

चौ० । निज निज बास बिलोकि बराती । सुरसुख सकल सुलभ सब भांती ॥
बिभवभेद कछु काहु न जाना । सकल जनक कर करहिं बखाना ॥
सियमहिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितुआगमन सुनत दौ भाई । हृदय न अति आनंद समाई ॥
सकुचत कहि न सकत गुरुपाहीं । पितुदरसन लालच मन माहीं ॥
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी । उपजा उर सन्तोष बिसेषी ॥
हरषि बंधु दौ हृदय लगाये । पुलक अंग लोचन जल छाये ॥
चले जहां दसरथ जनवासे । मनहुं सरोबर तके पियासे ॥

दो० । भूप बिलोके जबहि मुनि आवत सुतन समेत ।
उठेउ हरषि सुख सिंधु महं चले थाह सी लेत । ३१४ ॥

ो० । मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । बार बार पदरज धरि सीसा ॥
कौशिक राउ लिये उर लाई । कहि असीस पूछी कुशलाई ॥
पुनि दंडवत करत दो भाई । देखि नृपतिउर सुख न समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक शरीर प्रान जनु भेंटे ॥
पुनि बशिष्ठ पद सिर तिन नाये । प्रेममुदित मुनिवर उर लाये ॥
विप्रवृन्द बंदे दुहुं भाई । मनभावति असीस तिन्ह पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लषन देखि दो भ्राता । मिले प्रेमपरिपूरित गाता ॥

ो० । पुरजन परिजन, जातिजन याचक मंत्री मीत ।
मिले यथाविधि सबहि प्रभु परम कृपालु बिनीत । ३१५ ॥

ो० । रामहिं देखि बरात जुड़ानी । प्रीति की रीति न जाइ बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुत चारी । जनु धन धर्मादिक तनुधारी ॥
सुतन्ह सहित दशरथ कहं देखी । मुदित नगरनरनारि बिशेषी ॥
सुमन बरषि सुर हनहिं निशाना । नाकनटी नाचहिं करि गाना ॥
शतानंद अरु बिप्रसचिवगन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना । आयसु मांगि फिरे अगवाना ॥
प्रथम बरात लगन ते आई । तातें पुर प्रमोदअधिकाई ॥
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं । बढ़उ दिवस निशि बिधि सन कहहीं ॥

ा० । रामसीयशोभाअवधि सुकृतअवधि दो राज ।
जहं तहं पुरजन कहहिं अस मिलि नरनारिसमाज । ३१६ ॥

ो० । जनकसुकृतमूरति बैदेही । दशरथसुकृत राम धरि देही ॥
इन सम काहु न शिव अवराधे । काहु न इन समान फल साधे ॥
इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीं । है नहिं कतहूं होनेहु नाहीं ॥
हम सब सकल सुकृत की रासी । भये जग जन्मि जनकपुरबासी ॥
जिन जानकीरामछबि देखी । को सुकृती हम सरिस बिशेषी ॥
पुनि देखब रघुबीर बिवाहू । लेब भली बिधि लोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी । यहि बिवाह बड़ लाहु सुनयनी ॥
बड़े भाग बिधि बात बनाई । नयनअतिथि होइहैं दो भाई ॥

० । बारहिं बार सनेहबश जनक बोलाउब सीय ।
लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय । ३१७ ॥

ो० । बिबिध भांति होइहि पहुनाई । प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥
तब तब राम लषनहिं निहारी । होइहहिं सब पुरलोग सुखारी ॥
सखि जस राम लषन कर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥

स्याम गौर सब अंग सुहाये । ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ संवारे ॥
भरत राम एकहि अनुहारी । सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥
लषन सत्रुसूदन इक रूपा । नखसिख ते सब अंग अनूपा ॥
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं । उपमा कहं त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छं० । उपमा न कोउ कहं दासतुलसी कतहुं कबि कोबिद कहैं ।
बलबिनयविद्यासीलसोभासिंधु इन सम ये लहैं ॥
पुरनारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं ।
ब्याहिय सुचारिउ भाइ इहिं पुर हम सुमंगल गावहीं । ३४॥

सो० । कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तनु ।
सखि सब करब पुरारि पुन्यपयोनिधि भूप दोउ । २८ ॥

चौ० । इहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । आनंद उमगि उमगि उर भरहीं ॥
जे नृप सीयस्वयंबर आये । देखि बंधु सब तिन सुख पाये ॥
कहत रामजस बिसद बिसाला । निज निज भवन गये महिपाला ॥
गये बीति कछु दिन इहि भांती । प्रमुदित पुरजन सकल बराती ॥
मंगलमूल लगनदिन आवा । हिमरितु अगहनमास सुहावा ॥
ग्रह तिथि नखत योग बर बारू । लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू ॥
पठै दीन्ह नारद सन सोई । गनी जनक के गनकन जोई ॥
सुनी सकल लोगन यह बाता । कहहिं योतिषी अहहि बिधाता ॥

दो० । धेनुधूलि बेला बिमल सकल सुमंगलमूल ।
बिप्रन कहेउ बिदेह सन जानि समय अनुकूल । ३१८ ॥

चौ० । उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अब बिलंब कर कारन काहा ॥
सतानंद तब सचिव बुलाये । मंगल कलस साजि सब ल्याये ॥
संख निसान पनव बहु बाजे । मंगल कलस सगुन सब साजे ॥
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं बेदधुनि बिप्र पुनीता ॥
लेन चले सादर इहि भांती । गये जहां जनवास बराती ॥
कोसलपति कर देखि समाजू । अति लघु लगे तिनहि सुरराजू ॥
भयेउ समय अब धारिय पाऊ । यह सुनि परा निसानन घाऊ ॥
गुरहि पूछि करि कुलबिधि राजा । चले संग मुनि साजि समाजा ॥

दो० । भाग्यबिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि । ३१९ ॥

चौ० । सुरन सुमंगल अवसर जाना । बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥
सिव ब्रह्मादिक बिबधबरूथा । चढ़े बिमानन्ह नाना यूथा ॥

प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू । चले बिलोकन रामबिआहू ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे । निज निज लोक सबहि लघु लागे ॥
चितवहिं चकित बिलोकि बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ॥
नगरनारिनर रूपनिधाना । सुघर सुधर्म सुसील सुजाना ॥
तिनहिं देखि सब सुर सुरनारी । भये नखत जनु बिधुउजियारी ॥
बिधिहि भयउ आचरज बिसेषी । निज करनी कछु कतहुं न देषी ॥

दो० । सिव समुझाये देव सब जनि आचरज भुलाहु ।
हृदय बिचारहु धीर धरि सियरघुबीरबिआहु । ३२० ॥

चौ० । जिन कर नाम लेत जग माहीं । सकल अमंगलमूल नसाहीं ॥
कर तल होहिं पदारथ चारी । ते सिय राम कहेउ कामारी ॥
एहि बिधि संभु सुरन समुझावा । पुनि आगे बर बसह चलावा ॥
देवन देखे दसरथ जाता । महा मोद मन पुलकित गाता ॥
साधुसमाज संग महिदेवा । जनु तनु धरे करहिं सुख सेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपबर्ग सकल तनुधारी ॥
मरकतकनकबरन बर जोरी । देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी ॥
पुनि रामहिं बिलोकि हियहरषे । नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥

दो० । रामरूप नखसिख सुभग बारहिं बार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि । ३२१ ॥

चौ० । केकिकंठद्युतिस्यामल अंगा । तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा ॥
ब्याहबिभूषन बिबिध बनाये । मंगलमय सब भांति सुहाये ॥
सरदबिमलबिधुबदन सुहावन । नयन नवलराजीवलजावन ॥
सकल अलौकिक सुंदरताई । कहि न जाइ मनही मन भाई ॥
बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुंवर बर बाजि नचावहिं । बंसप्रसंसक बिरद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर राम बिराजे । गति बिलोकि खगनायक लाजे ॥
कहि न जाइ सब भांति सुहावा । बाजिबेष जनु काम नचावा ॥

छं० । जनु बाजिबेष बनाइ मनसिज राम हित अति सोहहीं ।
आपने बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहहीं ।
जगमगित जीन जड़ाव जोति सुमोति मानिक तेहि लगे ।
किंकिनि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे । ३५ ॥

दो० । प्रभुमनसहिं लयलीन मन चलत बाजि छबि पाव ।
भूषित उडुगन तड़ित घन जनु बर बरहि नचाव । ३२२ ॥

चौ० । जेहि बर बाजि राम असवारा । तेहि सारदहु न बरनै पारा ॥
संकर रामरूप अनुरागे । नयन पंचदस अति प्रिय लागे ॥

हरि हित सहित राम जब जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि रामछबि बिधि हरखाने । आठै नयन जानि पछिताने ॥
सुरसेनपउर बहुत उछाहू । बिधि ते डेवढ़ लोचनलाहू ॥
रामहिं चितव सुरेस सुजाना । गौतमस्राप परम हित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं । आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं ॥
मुदित देवगन रामहिं देखी । नृपसमाज दुहुं हरष बिसेषी ॥

छं० । अति हर्ष राजसमाज दुहुं दिसि दुन्दुभी बाजहिं घनी ।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥
इहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं । ३२ ॥

दो० । सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल संवारि ।
चलीं मुदित परिछन करन गजगामिनि बर नारि । ३२३ ॥

चौ० । बिधुबदनी मृगसावकलोचनि । सब निज तनुछबि रतिमदमोचनि ॥
पहिरे बरन बरन बर चीरा । सकल बिभूषन सजे सरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये । करहिं गान कलकंठ लजाये ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । चाल बिलोकि कामगज लाजहिं ॥
बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥
सची सारदा रमा भवानी । जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥
कपटनारिबर भेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहि आई ॥
करहिं गान कल मंगल बानी । हरषबिबस सब काहु न जानी ॥

छं० । को जान केहि आनंदबस सब ब्रह्म बर परिछन चली ।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली ॥
आनंदकंद बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई ।
अंभोजअंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई । ३७ ॥

दो० । जो सुख भा सियमातुमन देखि रामबरभेष ।
सो न सकहिं कहि कल्प सत सहस सारदा सेष ॥

चौ० । नयननीर हटि मंगल जानी । परिछन करहिं मुदित मन रानी ॥
बेदबिहित अरु कुलब्यवहारू । कीन्ह भली बिधि सब परिचारू ॥
पंचसब्दधुनि मंगल गाना । पटपांवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा । राम गवन मंडप तब कीन्हा ॥
दसरथ सहित समाज बिराजे । बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥
समय समय सुर बरषहिं फूला । सांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई । आपन पर कछु सुनै न कोई ॥
इहि बिधि राम मंडपहिं आये । अर्घ देइ आसन बैठाये ॥

छं० । बैठारि आसन आरती करि निरखि बर सुख पावहीं ।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुर बर बिप्रभेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघुकुलकमलरबिछबि सुफल जीवन लेखहीं ।३८॥

दो० । नाऊ बारी भाट नट रामनिछावरि पाइ ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर हर्ष न हृदय समाइ । ३२५ ॥

चौ० । मिले जनक दसरथ अति प्रीती । करि बैदिक लौकिक सब रीती ॥
मिलत महा दौ राज बिराजे । उपमा खोजि खोजि कबि लाजे ॥
लही न कतहुं हारि हिय मानी । इन सम ये उपमा उर आनी ॥
समधी देखि देव अनुरागे । सुमन बरषि जस गावन लागे ॥
जग बिरंचि उपजावा जब तें । देखे सुने ब्याह बहु तब तें ॥
सकल भांति सम साज समाजू । सम समधी देखे हम आजू ॥
देवगिरा सुनि सुंदरि सांची । प्रीति अलौकिक दुहुं दिसि माची ॥
देत पांवड़े अर्घ सुहाये । सादर जनक मंडपहिं ल्याये ॥

छं० । मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनिमन हरे ।
निज पानि जनक सुजान सब कहं आनि सिंहासन धरे ॥
कुलइष्ट सरिस बसिष्ठ पूजे बिनय करि आसिष लही ।
कौसिकहिं पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही ।३९॥

दो० । बामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीस ।
दिये दिव्य आसन सबहि सब सन लही असीस । ३२६ ॥

चौ० । बहुरि कीन्ह कोसलपतिपूजा । जानि ईस सम भाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई । कहि निज भाग्य बिभव बहुताई ॥
पूजे भूपति सकल बराती । सम समधी सादर सब भांती ॥
आसन उचित दिये सब काहू । कहौं काह मुख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान बिनती बर बानी ॥
बिधि हरि हर दिसिपति दिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥
कपटबिप्रबरभेष बनाये । कौतुक देखहिं अति सचु पाये ॥
पूजे जनक देव सम जाने । दिये सुआसन बिन पहिचाने ॥

छं० । पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई ।
आनंदकंद बिलोकि दूलह उभय दिसि आनंदमई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ।
अवलोकि सर सुभाव प्रभु को बिबुध मन प्रमुदित भये ।४०॥

दो० । रामचन्द्रमुखचन्द्रछबि लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर । ३२७ ॥

चौ० । समय बिलोकि बसिष्ठ बुलाये । सादर सतानंद सुनि आये ॥
बेगि कुंवरि अब आनहु जाई । चले मुदित मुनि आयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहितबानी । प्रमुदित सखिन समेत सयानी ॥
बिप्रबधू कुलवृद्ध बुलाई । करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥
नारिभेष जे सुरबरबामा । सकल सुभाय सुंदरी स्यामा ॥
तिनहिं देखि सुख पावहिं नारी । बिनु पहिचानि प्रान ते प्यारी ॥
बार बार सनमानहिं रानी । उमा रमा सारद सम जानी ॥
सीय संवारि समाज बनाई । मुदित मंडपहिं चलीं लिवाई ॥

छं० । चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी ।
नवसप्त साजे सुंदरी सब मत्तकुंजरगामिनी ॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं कामकोकिल लाजहीं ।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति बर बाजहीं । ४१ ॥

दो० । सोहति बनिताछन्द महं सहज सुहावनि सीय ।
छबि ललनागन मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय । ३२८ ॥

चौ० । सियसुंदरता बरनि न जाई । लघु मति बहुत मनोहरताई ॥
आवत देखि बरातिन सीता । रूपरासि सब भांति पुनीता ॥
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रनामा । देखि राम भये पूरन कामा ॥
हरषे दसरथ सुतन समेता । कहि न जाइ उर आनंद जेता ॥
सुर प्रनाम करि बर्षहिं फूला । मुनि असीसधुनि मंगलमूला ॥
गान निसान कुलाहल भारी । प्रेम प्रमोद नगर नरनारी ॥
इहि बिधि सीय मंडपहिं आई । प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई ॥
तेहि अवसर करि बिधि ब्यवहारू । दुहु कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ॥

छं० । आचार करि गुरु गौरिगनपति मुदित बिप्र पुजावहीं ।
सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं असीस सुनि सुख पावहीं ॥
मधुपर्क मंगलद्रब्य जो जेहिं समय मुनिमन महं चहें ।
भरे कनक कोपर कलस सब कर लिये परिचारक रहें ४२ ॥
कुलरीति प्रीति समेत रबि कहिदेत सब सादर कियो ।
इहि भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासन दियो ॥
सियरामअवलोकन परस्पर प्रेम काहु न लखि परै ।
मनबुद्धिबरबानीअगोचर प्रगट कबि कैसे करै । ४३ ॥

दो० । होमसमय तन धरि अनल अति छित आहुति लेहिं ।
बिप्रभेष धरि बेद सब कहि बिवाह बिधि देहिं । ३२९ ॥

चौ० । जनकपाटमहिषी जग जानी । सीयमातु किमि जाइ बखानी ॥
सुयस सुकृत सुख सुंदरताई । सब समेटि बिधि रची बनाई ॥

समय जानि मुनिबरन बुलाई । सुनत सुआसिनि सादर ल्याई ॥
जनकबामदिसि सोह सुनयना । हिमगिरि संग बनी जनु मयना ॥
कनककलस मनिकोपर रूरे । सुचि सुगंध मंगलजल पूरे ॥
निज कर मुदित राउ अरु रानी । धरे राम के आगे आनी ॥
पढ़हिं बेद मुनि मंगल बानी । गगन सुमन झरि अवसर जानी ॥
बर बिलोकि दंपति अनुरागे । पाय पुनीत पखारन लागे ॥

छं० । लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तनु पुलकावली ।
नभ नगर गाननिसानजयधुनि उमगि जनु चहुं दिसि चली ॥
जे पदसरोज मनोजअरि उर सर सदैव बिराजहीं ।
जे सुकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजहीं ।४४॥
जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई ।
मकरंद जिन को संभुसिर सुचिता अवधि सुर बरनई ॥
करि मधुप मुनि मन योगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं ।
ते पद पखारत भाग्यभाजन जनक जय जय सब कहैं । ४५ ॥
बर कुंवरि करतल जोरि साखोचार दोउ कुलगुरु करैं ।
भयो पानिग्रहन बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनंद भरैं ॥
सुखमूल दूलह देखि दंपति पुलकतनु हुलसैं हिये ।
करि लोकबेदबिधान कन्यादान नृपभूषन दिये । ४६ ॥
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहिं हरिहिं श्रीसागर दई ।
तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी बिस्व कल कीरति नई ॥
इक ठौर करि जोरी सुभग पुनि गौरि मूरति सांवरी ।
करि होम बिधिवत गांठि जोरी होन लागीं भांवरी । ४७ ॥

दो० । जयधुनि बंदी बेदधुनि मंगल गान निसान ।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरुसुमन सुजान । ३२० ॥

चौ० । कुंवरि कुंवर कल भांवरि देहीं । नयनलाभ सब सादर लेहीं ॥
जाइ न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कछु कहिय सो थोरी ॥
राम सीय सुंदर परिछाहीं । जगमगाहिं मनिखंभन माहीं ॥
मनहुं मदनरति धरि बहु रूपा । देखहिं राम बिवाह अनूपा ॥
दरसलालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भये मगन सब देखनिहारे । जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी । नेग सहित सब रीति निबेरी ॥
राम सीयसिर सिंदुर देहीं । सोभा कहि न जात बिधि केहीं ॥
अरुन पराग जलज भरि नीके । ससिहि भूष अहि लोभ अमी के ॥
बहुरि बसिष्ट दीन्ह अनुसासन । बर दुलहिनि बैठे इक आसन ॥

छं॰ । बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भये ।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृतसुरतरुफल नये ॥
भरि भुवन रहा उछाह रामबिबाह भा सबही कहा ।
केहि भांति बरनि सिरात रसना एक सुख मंगल महा । ४८ ॥
तब जनक पाइ बसिष्ठआयसु ब्याहसाज संवारिकै ।
मांडवी श्रुतिकीरति उरमिला कुंवरि लई हंकारि कै ॥
कुसकेतुकन्या प्रथम जो गुनसीलसुखसोभामयी ।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दयी । ४९ ॥
जानकी लघुभगिनी परम सुंदरि सिरोमनि जानि कै ।
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषनहि सकल बिधि सनमानि कै ॥
जेहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सबगुनआगरी ।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपसीलउजागरी । ५० ॥
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हरषहीं ।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं ॥
सुंदरी सुंदर बरन बर सब एक मंडप राजहीं ।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं । ५१ ॥

दो॰ । मुदित अवधपति सकल सुत बधुन समेत निहारि ।
जनु पाये महिपालमनि क्रियन सहित फल चारि । ३३१ ॥

चौ॰ । जस रघुबीरब्याह बिधि बरनी । सकल कुंवर ब्याहे तेहि करनी ॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मनि मंडप पूरी ॥
कंबल बसन बिचित्र पटोरे । भांति भांति बहुमोल न थोरे ॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी । धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥
बस्तु अनेक करिय किमि लेखा । कहि न जाइ जानहिं जिन देखा ॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सब सुख माने ॥
दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा । उबरा सो जनवासहि आवा ॥
तब कर जोरि जनक मृदु बानी । बोले सब बरात सनमानी ॥

छं॰ । सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै ।
प्रमुदित महामुनिवृन्द बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै ॥
सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किये ।
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दिये । ५२ ॥
कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों ।
बोले मनोहर बचन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥
संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये ।
यह राज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गथ लये । ५३ ॥

ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुनामयी ।
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठो दयी ॥
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान बिधि समधी किये ।
कहि जात नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिये । ५४ ॥
वृन्दारकागन सुमन बरषहिं राउ जनवासहि चले ।
दुन्दुभीधुनि अरु वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखी मंगल गान करति मुनीसआयसु पाइ कै ।
दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरि चली कोहबर ल्याइ कै । ५५ ।

दो० । पुनि पुनि रामहिं चितव सिय सकुचति मन सकुचय न ।
हरत मनोहर मीनछबि प्रेमपियासे नयन । ३३९ ॥

चौ० । स्याम सरीर सुभाय सुहावन । सोभा कोटिमनोजलजावन ॥
यावकयुत पदकमल सुहाये । मुनिमन मधुप रहत जहं छाये ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरत बालरबि दामिनिजोती ॥
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर । बाहु बिसाल बिभूषन सोहर ॥
पीत जनेउ महाछबि देई । करमुद्रिका चोरि चित लेई ॥
सोहत ब्याहसाज सब साजे । उर आयत उरभूषन राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती । दुहुं आंचरन्ह लगे मनि मोती ॥
नयन कमल कल कुंडल काना । बदन सकल सौंदर्य्य निधाना ॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलक रुचि रुचिर निवासा ॥
सोहत मौर मनोहर माथे । मंगलमय मुकता मनि गांथे ॥

छं० । गांथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।
पुरनारि सुंदर बर बिलोकहिं निरखि छबि तृन तोरहीं ॥
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बंदि सुयस सुनावहीं । ५६ ॥
कोहबरहिं आने कुंवर कुंवरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै ।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहैं ।
रनिवास हासबिलासरसबस जनम को फल सब लहैं । ५७ ॥
निजपानि मनि महं देखि प्रतिमूरति सुरूपनिधान की ।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरहबस भइ जानकी ॥
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अलीं ।
बर कुंवरि सुंदर सकल सखिन लवाइ जनवासहिं चलीं । ५८ ॥
तेहि समय सुनिय असीस जहं तहं नगर नभ आनंद महा ।
चिर जियहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबहीं कहा ॥

योगींद्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी ।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ।५८॥

दो० । महित बधूटिन कुंवर सब तब आये पितु पास ।
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास । ३३३ ॥

चौ० । पुनि जेंवनार भयउ बहु भांती । पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पांवड़े बसन अनूपा । सुतन समेत गवन किय भूपा ॥
सादर सब के पांव पखारे । यथायोग पीढ़न बैठारे ॥
धोये जनक अवधपतिचरना । सील सनेह जाइ नहिं बरना ॥
बहुरि रामपद पंकज धोये । जे हर हृदय कमल महं गोये ॥
तीनौ भाइ राम सम जानी । धोये चरन जनक निज पानी ॥
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे । कनककील मनिपरन संवारे ॥

दो० । सूपोदन सुरभीसरपि सुंदर स्वादु पुनीत ।
छन महं सब के परुसि गे चतुर सुआर बिनीत । ३३४ ॥

चौ० । पंचकौर करि जेंवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भांति अनेक परे पकवाना । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना ॥
परुसन लगे सुआर सुजाना । व्यंजन बिबिध नाम को जाना ॥
चारि भांति भोजन बिधि गाई । एक एक बिधि बरनि न जाई ॥
छ रस रुचिर व्यंजन बहु जाती । एक एक रस अगनित भांती ॥
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारि बिराजा । हंसत राउ सुनि सहित समाजा ॥
इहि बिधि सबही भोजन कीन्हा । आदर सहित आचमन लीन्हा ॥

दो० । देइ पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज ।
जनवासे गवने मुदित सकलभूपसिरताज । ३३५ ॥

चौ० । नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं ॥
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । याचक गुन गन गावन लागे ॥
देखि बर कुंवर बधुन समेता । किमि कहि जात मोद मन जेता ॥
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रनाम पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा । भयउ आजु मम पूरन काजा ॥
अब सब बिप्र बुलाइ गुसाईं । देहु धेनु सब भांति बनाईं ॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥

दो० । बामदेव अरु देवऋषि बालमीक जाबालि ।
आये मुनिबरनिकर तब कौसिकादि तपसालि । ३३६ ॥

चौ० । दंडप्रनाम सबहिं नृप कीन्हा । पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा ॥
चारि लच्छ बर धेनु मंगाईं । कामसुरभि सम सील सुहाईं ॥
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्ही । मुदित महीप महिदेवन्ह दीन्ही ॥
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू । लहेउं आजु जग जीवन लाहू ॥
पाइ असीस महीस अनंदा । लिये बोलि पुनि याचकबृंदा ॥
कनक बसन मनि हय गज स्यंदन । दिये बूझि रुचि रबिकुलनंदन ॥
चले पढ़त गावत गुनगाथा । जय जय जय दिनकरकुलनाथा ॥
इहि बिधि रामबिवाहउछाहू । सकै न बरनि सहस मुख जाहू ॥

दो० । बार बार कौसिकचरन सीस नाइ कह राउ ।
यह सब सुख मुनिराज तव कृपाकटाक्षप्रभाउ । ३२७ ॥

चौ० । जनकसनेहसीलकरतूती । नृप सब भांति सराह बिभूती ॥
दिन उठि बिदा अवधपति मांगा । राखहिं सहित जनक अनुरागा ॥
नित नूतन आदर अधिकाई । दिन प्रति सहस भांति पहुनाई ॥
नित नव नगर अनंद उछाहू । दसरथगवन सुहाइ न काहू ।
बहुत दिवस बीते इहि भांती । जनु सनेहरजु बंधे बराती ॥
कौसिक सतानंद तब जाई । कहो बिदेह नृपहिं समुझाई ॥
अब दसरथ कहं आयसु देहू । जद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये । कहि जयजीव सीस तिन नाये ॥

दो० । अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।
भये प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ । ३२८ ॥

चौ० । पुरबासी सुनि चली बराता । पूछत बिकल परस्पर बाता ॥
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने । मनहुं सांझ सरसिज सकुचाने ॥
जहं जहं आवत बसे बराती । तहं तहं सीध चली बहु भांती ॥
बिबिध भांति मेवा पकवाना । भोजन साज न जाइ बखाना ॥
भरि भरि बसह अपार कहारा । पठये जनक अनेक सुसारा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा । सकल संवारे नख अरु सीसा ॥
मत्त सहस दस सिंधुर साजे । जिनहिं देखि दिसिकुंजर लाजे ॥
कनक बसन मनि भरि भरि जाना । महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना ।

दो० । दाइज अमित न सकिय कहि दीन्ह बिदेह बहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोकसंपदा थोरि । ३२९ ॥

चौ० । सब समाज इहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सब रानी । बिकल मीनगन जनु लघु पानी ॥
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं । देइ असीस सिखावन देहीं
होइहु संतत पियहि पियारी । चिर अहिवात असीस हमारी ॥

सासुससुरगुरसेवा करेहू । पतिरुख लखि आयसु अनुसरेहू ॥
अतिसनेहबस सखी सयानी । नारिधर्म सिखवहिं मृदु बानी ॥
सादर सकल कुंवरि समुझाईं । रानिन बार बार उर लाईं ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी । कहहिं बिरंचि रची कत नारी ॥

दो० । तेहि अवसर भाइन सहित राम भानुकुलकेतु ।
चले जनकमंदिर मुदित बिदा करावन हेतु । ३४० ॥

चौ० । चारिउ भाइ सुभाय सुहाये । नगरनारिनर देखन धाये ॥
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू । कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू ॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी । प्रीय पाहुने भूपसुत चारी ॥
को जाने केहि सुकृत सयानी । नयनअतिथि कीन्ह बिधि आनी ॥
मरनसील जिमि पाव पियूषा । सुरतरु लहै जनम कर भूखा ॥
पाव नारकी हरिपद जैसे । इन कर दरसन हम कहं तैसे ॥
निरखि रामसोभा उर धरहू । निज मन फनि मूरति मनि करहू ॥
एहि बिधि सबहि नयन फल देता । गये कुंवर सब राजनिकेता ॥

दो० । रूपसिंधु सब बंधु लखि हरषि उठो रनिवासु ।
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु । ३४१ ॥

चौ० । देखि रामछबि अति अनुरागी । प्रेमबिबस पुनि पुनि पद लागी ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई । सहज सनेह बरनि किमि जाई ॥
भाइन सहित उबटि अन्हवाये । छ रस असन अति हेतु जेंवाये ॥
बोले राम सुअवसर जानी । सीलसनेहसकुचमय बानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये । बिदा होन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करब नित नेहू ॥
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू । बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू ॥
हृदय लगाइ कुंवरि सब लीन्ही । पतिन सौंपि बिनती अति कीन्ही ॥

छं० । करि बिनय सिय रामहिं समर्पी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।
बलिजाउं तात सुजान तुम कहं बिदित गति सब की अहै ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी ।
तुलसीस सील सनेह लखि निज किंकरी करि मानिबी । १० ॥

सो० । तुम परिपूरनकाम जानसिरोमनि भावप्रिय ।
जनगुनगाहक राम दोषदलन करुनायतन । ३० ॥

चौ० । अस कहि रही चरन गहि रानी । प्रेमपंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेहसानी बर बानी । बहु बिधि राम सासु सनमानी ॥
राम बिदा मांगत कर जोरी । कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ असीस बहुरि सिर नाई । भाइन सहित चले रघुराई ॥

मंजु मधुर मूरति उर आनी । भईं सनेहसिथिल सब रानी ॥
पुनि धीरज धरि कुंवरि हंकारी । बार बार भेंटहिं महतारी ॥
पहुंचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी । बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनि पुनि मिलति सखिन बिलगाई । बालबच्छ जनु धेनु लवाई ॥

दो० । प्रेमबिबस नर नारि सब सखिन सहित रनिवास ।
मानहुं कीन्ह बिदेहपुर करुना बिरह निवास । ३४२ ॥

चौ० । सुक सारिका जानकी ज्याये । कनकपिंजरन राखि पढ़ाये ॥
ब्याकुल कहहिं कहां बैदेही । सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये बिकल खग मृग इहि भांती । मनुजदसा कैसे कहि जाती ॥
बंधु समेत जनक तब आये । प्रेम उमगि लोचन जल छाये ॥
सीय बिलोकि धीरता भागी । रहे कहावत परम बिरागी ॥
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी । मिटी महा मर्य्याद ज्ञान की ॥
समुझावत सब सचिव सयाने । कीन्ह सुभाव चलनअवसर जाने ॥
बारहिं बार सुता उर लाई । सजि सुंदरि पालकी मंगाई ॥

दो० । प्रेमबिबस परिवार सब जानि सुलगन नरेस ।
कुंवरि चढ़ाई पालकी सुमिरे सिद्धि गनेस । ३४३ ॥

चौ० । बहु बिधि भूप सुता समुझाई । नारिधर्म कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे । सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी । होहिं सगुन सुभ मंगलरासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा । संग चले पहुंचावन राजा ॥
रथ गज बाजि बरातिन साजे । मुनि गहगहे बाजने बाजे ॥
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे । दान मान परिपूरन कीन्हे ॥
चरन सरोज धूरि धरि सीसा । मुदित महीपति पाइ असीसा ॥
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना । मंगलमूल सगुन भये नाना ॥

दो० । सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान । ३४४ ॥

चौ० । नृप करि बिनय महाजन फेरे । सादर सकल मागने टेरे ॥
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे । प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
बार बार बिरदावलि भाषी । फिरे सकल रामहिं उर राखी ॥
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं । जनक प्रेमबस फिरा न चहहीं ॥
पुनि कह भूपति बचन सुहाये । फिरिय महीप दूरि बड़ि आये ॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े । प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढ़े ॥
तब बिदेह बोले कर जोरी । बचन सनेहसुधा जनु बोरी ॥
करौं कवन बिधि बिनय बनाई । महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई ॥

दो० । कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति ।
मिलन परसपर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति । ३४५ ॥

चौ० । मुनिमंडली जनक सिर नावा । आसिरबाद सबहि सन पावा ॥
सादर पुनि भेंटे जामाता । रूपसीलगुननिधि सब भ्राता ॥
जोरि पंकरुह पानि सुहाये । बोले बचन प्रेम जनु जाये ॥
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा । मुनिमहेसमनमानसहंसा ॥
करहिं जोग जोगी जेहि लागी । कोह मोह ममता मद त्यागी ॥
ब्यापक ब्रह्म अलख अबिनासी । चिदानंद निर्गुन गुनरासी ॥
मन समेत जेहि जान न बानी । तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥
महिमा निगम नेति करि कहहीं । जो तिहुं काल एकरस रहहीं ॥

दो० । नयनबिषय मोकहं भयउ सो समस्तसुखमूल ।
सबहिं सुलभ जगजीव कहं भये ईस अनुकूल । ३४६ ॥

चौ० । सबहि भाँति मोहि दीन्ह बड़ाई । निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥
होहिं सहस दस सारद सेषा । करहिं कल्पकोटिक भरि लेषा ॥
मोर भाग्य राउर गुनगाथा । कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा ॥
मैं कछु कहौं एक बल मोरे । तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार माँगौं कर जोरे । मन परिहरै चरन जनि भोरे ॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे । पूरनकाम राम परितोषे ॥
करि बर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही ॥

दो० । मिले लषन रिपुसूदनहिं दीन्ह असीस महीस ।
भये परस्पर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस । ३४७ ॥

चौ० । बार बार करि बिनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौसिकपद जाई । चरनरेनु सिर नयनन लाई ॥
सुनु मुनीस बर दरसन तोरे । अगम न कछु प्रतीति मन मोरे ॥
जो सुख सुजस लोकपति चहहीं । करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी । सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥
कीन्ह बिनय पुनि पुनि सिर नाई । फिरे महीपति आसिष पाई ॥
चली बरात निसान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्रामनरनारी । पाइ नयनफल होहिं सुखारी ॥

दो० । बीच बीच बर बास करि मगलोगन सुख देत ।
अवध समीप पुनीत दिन पहुंची आय जनेत । ३४८ ॥

चौ० । हने निसान पनव बहु बाजे । भेरिसंखधुनि हय गज गाजे ॥
झांझ मृदंग डिमडिमी सुहाई । सरस राग बाजे सहनाई ॥

पुरजन आवत अकनि बराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥
निज निज सुंदर सदन सँवारे । हाट बाट चौहट पुरद्वारे ॥
गली सकल अरगजा सिंचाई । जहं तहं चौकें चारु पुराई ॥
बना बजारु न जाइ बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ॥
सुफल पुंगिफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदंब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरनी । मनिमय आलबाल की करनी ॥

दो० । बिबिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबरपुरी निहारि । ३४९ ॥

चौ० । भूपभवन तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदनमन मोहा ॥
मंगल सगुन मनोहरताई । रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये । तनु धरि धरि दसरथगृह छाये ॥
देखन हेतु राम बैदेही । कहहु लालसा होइ न केही ॥
जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि । निज छबि निदरहिं मदनबिलासिनि ॥
सकल सुमंगल सजी आरती । गावहिं जनु बहु भेष भारती ॥
भूपतिभवन कुलाहल होई । जाइ न बरनि समय सुख सोई ॥
कौसल्यादि राममहतारी । प्रेम बिबस तनुदसा बिसारी ॥

दो० । दिये दान बिप्रन बिपुल पूजि गनेस पुरारि ।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि । ३५० ॥

चौ० । प्रेमप्रमोदबिबस सब माता । चलहिं न चरन सिथिल सब गाता ॥
रामदरस हित अति अनुरागीं । परिछनसाज सजन सब लागीं ॥
बिबिध बिधान बाजने बाजे । मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान पुंगिफल मंगल मूला ॥
अछत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा ॥
छुहे पुरटघट सहज सुहाये । मदनसकुनि जनु नीड़ बनाये ॥
सगुन सुगंध न जाहिं बखानी । मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥
रची आरती बिबिध बिधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥

दो० । कनकथार भरि मंगलनि कमलकरनि लिये मात ।
चलीं मुदित परिछन करन पुलकपल्लवित गात । ३५१ ॥

चौ० । धूपधूम नभ मेचक भयऊ । सावनघनघमंड जनु ठयऊ ॥
सुरतरुसुमनमाल सुर बरषहिं । मनहुं बलाकअवलि मन करषहिं ॥
मंजुल मनिमय बंदनवारा । मनहुं पाकरिपुचाप संवारा ॥
प्रगटहिं दुरहिं अटन पर भामिनि । चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि ॥
दुन्दुभिधुनि घन गरजनि घोरा । याचक चातक दादुर मोरा ॥
सुचि सुगंध सब बरषहिं बारी । सुखी सकल ससि पुरनरनारी ॥

समय जानि गुर आयसु दीन्हा । पुरप्रबेस रघुकुलमनि कीन्हा ॥
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा । मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दो० । होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ ।
बिबुधबधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ । ३५२ ॥

चौ० । मागध सूत बंदि नट नागर । गावहिं जस तिहुं लोक उजागर ॥
जयधुनि बिमल बेद बरबानी । दस दिसि सुनिय सुमंगलसानी ॥
बिपुल बाजने बाजन लागे । नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरनि न जाहीं । महा मुदित मन सुख न समाहीं ॥
पुरबासिन तब राउ जुहारे । देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मनिगन चीरा । बारि बिलोचन पुलक सरीरा ॥
आरति करहिं मुदित पुरनारी । हरषहिं निरखि कुंवर बर चारी ॥
सिबिका सुभग ओहार उघारी । देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥

दो० । इहि बिधि सबही देत सुख आये राजदुआर ।
मुदित मातु परिछन करहिं बधुन समेत कुमार । ३५३ ॥

चौ० । करहिं आरती बारहिं बारा । प्रेम प्रमोद कहै को पारा ॥
भूषन मनि पट नाना जाती । करहिं निछावरि अगनित भांती ॥
बधुन समेत देखि सुत चारी । परमानंद मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय रामछबि देखी । मुदित सुफल जग जीवन लेखी ॥
सखी सीयमुख पुनि पुनि चाही । गान करहिं निज सुकृत सराही ॥
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा । नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारिउ जोरी । सारद उपमा सकल ढंढोरी ॥
देत न बनहिं निपट लघु लागी । एकटक रही रूप अनुरागी ॥

दो० । निगमनीति कुलरीति करि अरघ पांवड़े देत ।
बधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लिवाइ निकेत । ३५४ ॥

चौ० । चारि सिंघासन सहज सुहाये । जनु मनोज निज हाथ बनाये ॥
तिन पर कुंवरि कुंवर बैठारे । सादर पाय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैबेद बेदबिधि । पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि ॥
बारहिंबार आरती करहीं । ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥
बस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥
पावा परम तत्त्व जनु जोगी । अमृत लहो जनु संततरोगी ॥
जनमरंक जनु पारस पावा । अंधहि लोचनलाभ सुहावा ॥
मूकबदन जनु सारद छाई । मानहुं समर सूर जय पाई ॥

दो० । इहि सुख तें सतकोटिगुन पावहिं मातु अनंद ।
भाइन सहित बिआहि घर आये रघुकुलचंद । ३५५ ॥

लोकरीति जननी करहिं बरदुलहिनि सकुचाहिं ।
मोद बिनोद बिलोकि बड़ राम मनहिं मुसुकाहिं । ३४६ ॥

चौ० । देव पितर पूजे बिधि नीकी । पूजी सकल बासना जी की ॥
सबहिं बंदि मांगहिं बरदाना । भाइन सहित राम कल्याना ॥
अंतरहित सुर आसिष देहीं । मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपति बोलि बरातिन्ह लीन्हे । जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥
आयसु पाइ राखि उर रामहिं । मुदित गये सब निज निज धामहिं ॥
पुरनरनारि सकल पहिराये । घर घर बाजहिं लगे बधाये ॥
याचकजन याचहिं जोइ जोई । प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियाँ नाना । पूरन किये दान सनमाना ॥

दो० । देहिं असीस जुहारि सब गावहिं गुनगनगाथ ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह गवन कीन्ह नरनाथ । ३४७ ॥

चौ० । जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्हा । लोकबेदबिधि सादर कीन्हा ॥
भूसुरभीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
पाय पखारि सकल अन्हवाये । पूजि भली बिधि भूप जेंवाये ॥
आदर दान प्रेम परिपोषे । देत असीस चले मन तोषे ॥
बहु बिधि कीन्ह गाधिसुत पूजा । नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥
कीन्ह प्रसंसा भूपति भूरी । रानिन सहित लीन्ह पगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह बरबासू । मन जुगवत रह नृप रनिवासू ॥
पूजे गुरुपदकमल बहोरी । कीन्ह बिनय मन प्रीति न थोरी ॥

दो० । बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीस ।
पुनि पुनि बंदत गुरु चरन देत असीस मुनीस । ३४८ ॥

चौ० । बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे । सुत संपदा राखि सब आगे ॥
नेग मांगि मुनिनायक लीन्हा । आसिरबाद बहुत बिधि दीन्हा ॥
उर धरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता ॥
बिप्रबधू सब भूप बुलाई । चैल चारु भूषन पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्ही । रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्ही ॥
नेगी नेग जोग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भांति सनमाने ॥
देव देखि रघुबीर बिबाहू । बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥

दो० । चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।
कहत परसपर राम जस प्रेम न हृदय समाइ । ३४९ ॥

चौ० । सब बिधि सबहिं समदि नरनाहू । रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहं रनिवास तहां पगु धारे । सहित बधूटिन कुंअर निहारे ॥

लिये गोद करि मोद समेता । को कहि सकै भयउ सुख जेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारी । बार बार हिय हरषि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू । सब के उर आनंद कियबासू ॥
कहेउ भूप जिमि भयेउ बिवाहू । सुनि सुनि हरष होत सब काहू ॥
जनकराज गुन सील बड़ाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥
बहु बिधि भूप भाट जिमि बरनी । रानी सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दो० ॥ सुतन समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुरज्ञाति ।
भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पांच गइ राति । ३६० ॥

चौ० । मंगलगान करहिं बर भामिनि । भइ सुखमूल मनोहर जामिनि ॥
अँचै पान सब काहुन पाये । स्रगसुगंधभूषित छबि छाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ।
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय समाज मनोहरताई ॥
कहि न सकहिं सत सारद सेसू । बेद बिरंचि महेस गनेसू ॥
सो मैं कहौं कवनि बिधि बरनी । भूमिनाग सिर धरै कि धरनी ॥
नृप सब भांति सबहिं सनमानी । कहि मृदु बचन बुलाई रानी ॥
बधू लरिकिनी पर घर आईं । राखेउ नयनपलक की नाई ॥

दो० । लरिका स्रमित उनींद बस सयन करावहु जाइ ॥
अस कहि गे बिस्रामगृह रामचरन चित लाइ । ३६१ ॥

चौ० । भूपबचन सुनि सहज सुहाये । जरित कनक मनि पलंग डसाये ॥
सुभग सुरभिपयफेन समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥
उपबरहन बर बरनि न जाहीं । स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥
रतनदीप सुठि चारु चंदोवा । कहत न बनै जान जेहि जोवा ॥
सेज रुचिर रचि राम उठाये । प्रेम समेत पलंग पौढ़ाये ॥
आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीनी । निज निज सेज सयन तिन कीनी ॥
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥
मारग जात भयावनि भारी । केहि बिधि तात ताड़का मारी ॥

दो० । घोर निसाचर बिकट भट समर गनै नहिं काहु ।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु । ३६२ ॥

चौ० । मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारे । ईस अनेक करवरे टारे ।
मखरखवारी करि दुहुं भाई । गुरुप्रसाद सब बिद्या पाई ।
मुनितिय तरी लगत पगधूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ।
कमठपीठ पविकूट कठोरा । नृपसमाज महं सिवधनु तोरा ।
बिस्वबिजय जस जानकि पाई । आये भवन ब्याहि सब भाई ।
सकल अमानुषकर्म तुम्हारे । केवल कौसिक कृपा सुधारे ।

आजु सुफल जग जन्म हमारे । देखि तात बिधुबदन तुम्हारे ॥
जे दिन गये तुम्हहिं बिनु देखे । ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे ॥

दो० । राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बर बचन ।
सुमिरि संभुगुर बिप्रपद किये नींदबस नयन । ३६३ ॥

चौ० । नींदहुं बदन सोह सुठि लोना । मनहुं सांझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरन नारी । देहिं परसपर मंगल गारी ॥
पुरी बिराजति राजत रजनी । रानी कहहिं बिलोकहु सजनी ॥
सुंदरि बधुन सासु लै सोईं । फनिपति जनु सिरमनि उर गोईं ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचूड़ बर बोलन लागे ॥
बंदी मागध गुनगन गाये । पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
बंदि बिप्र सुर गुरु पितु माता । पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दो० । कीन्ह सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।
प्रातक्रिया करि तात पहं आये चारिउ भाइ । ३६४ ॥

चौ० । भूप बिलोकि लिये उर लाई । बैठे हरषि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी । लोचनलाभअवधि अनुमानी ॥
पुनि बसिष्ठ मुनि कौसिक आये । सुभग आसनन्ह मुनि बैठाये ॥
सुतन समेत पूजि पद लागे । निरखि राम दो उर अनुरागे ॥
कहहिं बसिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहिं महीप सहित रनिवासा ॥
मुनिमनअगम गाधिसुतकरनी । मुदित बसिष्ठ बिपुलबिधि बरनी ॥
बोले बामदेव सब सांची । कीरति कलित लोक तिहुं माची ॥
सुनि आनंद भयउ सब काहू । रामलखनउर अधिक उछाहू ॥

दो० । मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस इहि भांति ।
उमगी अवध अनंद भरि अधिकं अधिक अधिकाति । ३६५ ॥

चौ० । सुदिन सोधि करकंकन छोरे । मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं । अवधजन्म जाचहिं बिधि पाहीं ॥
बिस्वामित्र चलन नित चहहीं । रामसप्रेमबिनयबस रहहीं ॥
दिन दिन सदगुन भूपतिभाऊ । देखि सराह महामुनि राऊ ॥
मांगत बिदा राउ अनुरागे । सुतन समेत ठाढ़ भये आगे ॥
नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकन पर छोहू । दरसन देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहि राउ सहित सुत रानी । परेउ चरन मुख आव न बानी ॥
दीन्ह असीस बिप्र बहु भांती । चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुंचाई ॥

त

दो० । रामरूप भूपतिभगति ब्याहउछाहअनंद ।
जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंद । ३५९ ॥

चौ० । बामदेव रघुकुलगुरु ज्ञानी । बहुरि गाधिसुतकथा बखानी ॥
सुनि मुनि सुजस मनहिं मन राऊ । बरनत आपन पुन्यप्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन समेत नृपति गृह गयऊ ॥
जहं तहं रामब्याहसब गावा । सुजस पुनीत लोक तिहुं छावा ॥
आये ब्याहि राम घर जब तें । बसे अनंद अवध सब तब तें ॥
प्रभुबिबाह जस भयऊ उछाहा । सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहा ॥
कबिकुलजीवन पावन जानी । रामसीयजस मंगलखानी ॥
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी । करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

छं० । निज गिरा पावन करन कारन रामजस तुलसी कह्यौ ।
रघुबीरचरित अपार बारिधि पार कबि कवने लह्यौ ॥
उपबीतब्याहउछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ।
बैदेहिरामप्रसाद ते जन सर्बदा सुख पावहीं । ६१ ॥
सुनि गाथ कहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही ।
नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुन भक्ति अनुपम ते लही ॥
रघुबीरपद अनुराग जस सोभागि बेगि सुझावई ।
यह जानि तुलसीदास मन क्रम बचन हरिगुन गावई । ६२ ॥

दो० । कठिन काल मलकोषित तनु साधन कछु क न होइ ।
यह बिचारि बिस्वास करि हरि सुमिरैं बुध सोइ । ३६० ॥

सो० । मन हरिपद अनुराग करहु त्यागि नाना कपट ।
महामोहनिसि जाल सोवत बीते काल बहु । ३१ ॥
सियरघुबीरबिबाह जे सप्रेमआदर सुनहिं ।
तिन कहं सदा उछाह मंगलायतन रामजस । ३२ । ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने ।
बिमलबिज्ञानबैराग्यसंतोषसम्पादनो नाम तुलसीकृत ॥
बालकाण्डः प्रथमः सोपानः समाप्तः ॥ * ॥



अथ अयोध्याकाण्ड ॥

श्लोक ॥

वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके ।
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥
सो ऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ।
सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् । १ ॥
प्रसन्नताम् यो न गतो भिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः
मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मञ्जुलमङ्गलप्रदम् । २ ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गम् सीता समारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापम् नमामि रामम् रघुवंशनाथम् । ३ ॥

दो० । श्रीगुरुचरनसरोजरज निजमनमुकुर सुधारि ।
बरनौं रघुबरजस बिमल जो दायक फल चारि । १ ॥

चौ० । जब तें राम ब्याहि घर आये । नित नव मंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दस भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥
ऋधि सिधि संपति नदी सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहं आई ॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भांती ॥
कहि न जाइ कछु नगरबिभूती । जनु इतनी बिरंचिकरतूती ॥
सब बिधि सब पुरलोग सुखारी । रामचन्द्रमुख चन्द्र निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेली । फलित बिलोकि मनोरथबेली ॥
रामरूप गुन सील सुभाऊ । प्रमुदित होहिं देखि सुनि राऊ ॥

दो० । सब के उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेस ।
आपु अछत जुबराजपद रामहिं देहिं नरेस । २ ॥

चौ० । एक समय सब सहित समाजा । राजसभा रघुराज बिराजा
सकल सुकृतमूरति नरनाहू । रामसुजस सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे । लोकप रहहिं प्रीतिरुख राखे ॥
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं । भूरिभाग दसरथ सम नाहीं ॥

मंगलमूल रामसुत जासू । जो कछु कहिय थोर सब तासू ॥
राउ सुभाव मुकुर कर लीन्हा । बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्हा ॥
स्रवन समीप भये सित केसा । मनहुं चौथपन अस उपदेसा ॥
नृप जुबराज राम कहं देहू । जीवन जनम सुफल करि लेहू ॥

दो० । यह बिचारि उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ ।
तन पुलकित मन मुदित अति गुरहि सुनायउ जाइ । ३ ॥

चौ० । कहेउ भुआल सुनिय मुनिनायक । भये राम सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमार अरि मित्र उदासी ॥
सबहि राम प्रिय जेहि बिधि मोही । प्रभुअसीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गुसाईं । करहिं छोह सब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरुचरन रेनु सिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥
मोहि समान अस भयउ न दूजे । सब पायउं प्रभुपदरज पूजे ॥
अब अभिलाष एक मन मोरे । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥

दो० । राजन राउर नाम जस सब अभिमतदातार ।
फलअनुगामी महिपमनि मन अभिलाष तुम्हार । ४ ॥

चौ० । सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी । बोलेउ राउ बिहंसि मृदु बानी ॥
नाथ राम करिये जुबराजू । कहिय कृपा करि करिय समाजू ॥
मोहि अछत यह होउ उछाहू । लहहिं लोग सब लोचनलाहू ॥
प्रभुप्रसाद सिव सबै निबाही । यह लालसा एक मन माही ॥
पुनि न सोच तनु रहै कि जाऊ । जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दसरथबचन सुहाये । मंगलमूल मोद अति पाये ॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं । जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं ॥
भयउ तुम्हार तनय सो स्वामी । राम पुनीत प्रेमअनुगामी ॥

दो० । बेगि बिलंब न करिय नृप साजिय सबै समाज ।
सुदिन सुमंगल तबहि जब राम होहिं जुबराज । ५ ॥

चौ० । मुदित महीपति मंदिर आये । सेवक सचिव सुमन्त्र बुलाये ॥
कहि जयजीव सीस तिन नाये । भूप सुमंगलबचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू । रामहि राज देहु जुबराजू ॥
जो पांचहि मत लागै नीका । करहु हरषि हिय रामहि टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । अभिमतबिरव परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिं कर जोरी । जियहु जगतपति बरस करोरी ॥
जगमंगल भल काज बिचारा । बेगहिं नाथ न लाइय बारा ॥
नृपहि मोद सुनि सचिवसुभाखा । बढ़त बिटप जनु लही सुसाखा ॥

दो० । कहेउ भूप मुनिराज कर जो जो आयसु होइ ।
रामराजअभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ । ६ ॥

चौ० । हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥
औषध मूल फूल फल नाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥
चामरचमर बसन बहु भांती । रोमपाटपट अगनित जाती ॥
मनिगन मंगलबस्तु अनेका । जो जग जोग भूपअभिषेका ॥
बेदबिदित कहि सकल बिधाना । कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना ॥
पनस रसाल पुंगिफल केरा । रोपहु बीथिन पुर चहुं फेरा ॥
रचहु मंजु मनिचौके चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू ॥
पूजहु गनपति गुरु कुलदेवा । सब बिधि करहु भूमिसुरसेवा ॥

दो० । ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।
सिर धरि मुनिबरबचन सब निज निज काजहिं लाग । ७ ॥

चौ० । जेहि मुनीस जो आयसु दीन्हा । सो जनु काज प्रथम तेइ कीन्हा ॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥
सुनत रामअभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ॥
रामसीयतनु सगुन जनाये । फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं । भरतआगमनसूचक अहहीं ॥
भये बहुत दिन अति अवसेरी । सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । यहै सगुनफल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बंधु सोच दिन राती । अंडन्ह कमठहृदय जेहि भांती ॥

दो० । तेहि अवसर मंगल परम सुनि हरषेउ रनिवास ।
सोभित लखि बिधु बढ़त जनु बारिधिबीचिबिलास । ८ ॥

चौ० । प्रथम जाइ जिन्ह खबरि जनाये । भूषन बसन भूरि तिन पाये ॥
प्रेम पुलकतनु मन अनुरागीं । मंगलसाज सजन सब लागीं ॥
चौके चारु सुमित्रा पूरी । मनिमय बिबिध भांति अति रूरी ॥
आनंदमगन राममहतारी । दिये दान बहु बिप्र हंकारी ॥
पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
जेहि बिधि होइ रामकल्याना । देहु दया करि सो बरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिलबयनी । बिधुबदनी मृगसावकनयनी ॥

दो० । रामराजअभिषेक सुनि हियहरषीं बर नारि ।
लगीं सुमंगल सजन सब बिधिअनुकूल बिचारि । ९ ॥

चौ० । तब नरनाह बसिष्ठ बुलाये । रामधाम सिख देन पठाये ॥
गुरुआगमन सुनत रघुनाथा । द्वार आइ नायेउ पद माथा ॥
सादर अर्घ देइ घर आने । सोरह भांति पूजि सनमाने ॥

गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले राम कमलकर जोरी ॥
सेवकसदन स्वामिआगमनू । मंगलमूल अमंगलदमनू ॥
तदपि उचित जन बोलि सप्रीती । पठइय काज नाथ अस नीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु मम गेहू ॥
आयसु होइ सो करिय गुसाईं । सेवक लहै स्वामिसेवकाई ॥
दो० । सुनि सनेहसाने बचन मुनि रघुबरहिं प्रसंस ।
राम कस न तुम कहहु अस हंसबंसअवतंस । १० ॥
चौ० । बरनि रामगुनसीलसुभाऊ । बोले प्रेमपुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेकसमाजू । चाहत देन तुमहिं जुवराजू ॥
राम करहु सब संयम आजू । जौ बिधि कुसल निबाहै काजू ॥
गुरु सिख देइ राउ पहं गयऊ । रामहृदय अस बिसमय भयऊ ॥
जनमे एक संग सब भाई । भोजन सयन केलि लरिकाई ॥
कर्नबेध उपबीत बिवाहा । संग संग सब भयउ उछाहा ॥
बिमलबंस यह अनुचित एका । अनुज बिहाइ बड़ेहि अभिषेका ॥
प्रभुप्रेमपछितानि सुहाई । हरउ भरतमन की कुटिलाई ॥
दो० । तेहि अवसर आये लषन मगन प्रेम आनंद ।
सनमाने प्रिय बचन कहि रबिकुल कैरव चंद । ११ ॥
चौ० । बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना । पुरप्रमोद नहिं जाइ बखाना ॥
भरतआगमन सकल मनावहिं । आवहिं बेगि नयनफल पावहिं ॥
हाट बाट घर गली अथाई । कहहिं परस्पर लोग लोगाई ॥
कालि लगन भलि केतिक बारा । पूजिहि बिधि अभिलाष हमारा ॥
कनकसिंहासन सीय समेता । बैठहिं राम होइ चित चेता ॥
सकल कहहिं कब होइहि काली । बिघ्न मनावहिं देव कुचाली ॥
तिनहिं सोहात न अवध बधावा । चोरहिं चांदनिराति न भावा ॥
सारद बोलि बिनय सुर करहीं । बारहिं बार पाय लै परहीं ॥
दो० । बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिय सोइ आजु ।
राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुरकाजु । १२ ॥
चौ० । सुनि सुरबिनय ठाढ़ि पछिताती । भयिउं सरोजबिपिन हिमराती ॥
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी । मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी ॥
बिसमय हर्ष रहित रघुराऊ । तुम जानहु रघुबीरसुभाऊ ॥
जीव कर्मबस दुखसुखभागी । जाइय अवध देवहित लागी ॥
बार बार गहि चरन संकोची । चली बिचारि बिबुधमति पोची ॥
ऊंच निवास नीच करतूती । देखि न सकहिं पराइ बिभूती ॥
आगिल काज बिचारि बहोरी । करिहैं चाह कुसल कबि मोरी ॥

हरषि हृदय दसरथपुर आई । जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई ॥

दो० । नाम मंथरा मंदमति चेरि कैकयी केरि ।
अजसपिटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि । १३ ॥

चौ० । देखि मंथरा नगर बनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा ॥
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । रामतिलक सुनि भा उर दाहू ॥
करै बिचार कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाज कवन बिधि राती ॥
देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गव तकै लेउं केहि भांती ॥
भरतमातु पहं गइ बिलखानी । का अनमनि हसि कह हंसि रानी ॥
उतर न देइ सो लेइ उसांसू । नारिचरित करि ढारति आंसू ॥
हंसि कह रानि गाल बड़ तोरे । दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे ॥
तबहुं न बोलि चेरि बड़ि पापिनि । छाड़ै स्वास कारि जनु सांपिनि ॥

दो० । सभय रानि कह कहसि किन कुसल राम महिपाल ।
भरत लखन रिपुदमन सुनि भा कुबरी उर साल । १४ ॥

चौ० । कत सिख देइ हमहिं कोउ माई । गाल करब केहि कर बल पाई ॥
रामहिं छाड़ि कुसल केहि आजू । जाहि नरेस देत जुबराजू ॥
भा कौसल्यहि बिधि अति दाहिन । देखत गर्ब रहत उर नाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सब सोभा । जो अवलोकि मोर मन छोभा ॥
पूत बिदेस न सोच तुम्हारे । जानति हौ बस नाह हमारे ॥
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूपकपटचतुराई ॥
सुनि प्रिय बचन कुटिल मन जानी । झुकी रानि अब रहु अरगानी ॥
पुनि अस कबहुं कहसि घरफोरी । तौ धरि जीभ कढ़ावौं तोरी ॥

दो० । काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तियबिसेष पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि । १५ ॥

चौ० । प्रियबादिनि सिख दीन्हेउं तोही । सपनेहु तो पर कोप न मोही ॥
सुदिन सुमंगलदायक सोई । तोर कहा फुर जा दिन होई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकरकुलरीति सुहाई ॥
रामतिलक जौ सांचेहु काली । मांगु देउं मन भावत आली ॥
कौसल्या सम सब महतारी । रामहिं सहज सुभाय पियारी ॥
मो पर करहिं सनेह बिसेषी । मैं करि प्रीतिपरीक्षा देखी ॥
जौ बिधि जन्म देइ करि छोहू । होहिं राम सिय पूत पतोहू ॥
प्रान तें अधिक राम प्रिय मोरे । तिन के तिलक छोभ कस तोरे ॥

दो० । भरतसपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराव ।
हरषसमय बिसमय करसि कारन मोहि सुनाव । १६ ॥

चौ० । एकहि बार आस सब पूजी । अब कछु कहब जीभ करि दूजी ॥

फोरै योग कपार अभागा । भलौ कहत दुष रौरेहु लागा ॥
कहहिं झूठ फुर बात बनाई । ते प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई ॥
हमहुं कहब अब ठकुर सुहाती । नाहिं तो मौन रहब दिनराती ॥
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा । बवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी । चेरि छांड़ि अब होब कि रानी ॥
जारै योग सुभाव हमारा । अनभल देषि न जाइ तुम्हारा ॥
तातें कछुक बात अनुसारी । छमब देवि बड़ि चूक हमारी ॥

दो० । गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।
सुरमायाबस बैरिनिहिं सुहृद जानि पतिआनि । १७ ॥

चौ० । सादर पुनि पुनि पूछति ओही । सबरीगान मृगी जनु मोही ॥
तसि मति फिरी अहै जसि भावी । रहसी चेरि घात भलि फाबी ॥
तुम पूछहु मैं कहत डेराऊं । धरेहु मोर घरफोरी नाऊं ॥
सजि प्रतीति गढ़ि बहु बिधि छोली । अवध साढ़साती जनु बोली ॥
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी । रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी ॥
रहे प्रथम अब सो दिन बीते । समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमलकुलपोषनिहारा । बिनु जल जारि करै सोई छारा ॥
जर तुम्हारि चह सवति उपारी । रूंधहु करि उपाय बर बारी ॥

दो० । तुमहिं न सोच सुहागबल निज बस जानहु राव ।
मन मलीन मुंह मीठ नृप राउर सरल सुभाव । १८ ॥

चौ० । चतुर गंभीर राममहतारी । बीच पाइ निज काज संवारी ॥
पठये भरत भूप ननिऔरे । राममातुमत जानब रौरे ॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीके । गर्बित भरतमातु बल पी के ॥
सालु तुम्हार कौसिल्यहिं माई । चतुर कपट नहिं परत लषाई ॥
राजहि तुम पर प्रीति बिसेषी । सवतिसुभाव सकै नहिं देषी ॥
रचि प्रपंच भूपहिं अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई ॥
इहि कुल उचित राम कहं टीका । सबहि सुहाइ मोहि सुठि नीका ॥
आगिलि बात समुझि डर मोही । देउ दैव फिरि सो फल ओही ॥

दो० । रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपटप्रबोध ।
कहेसि कथा सत सौति कर जा तें बढ़ै बिरोध । १९ ॥

चौ० । भावीबस प्रतीति उर आई । पूछि रानि निज सपथ दिवाई ॥
का पूछहु तुम अजहुं न जाना । निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥
भये पाषदिन सजत समाजू । तुम सुधि पायेहु मो सन आजू ॥
षाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहे नहिं दोष हमारे ॥
जौं असत्य कछु कहब बनाई । तौ बिधि देइहि मोहि सजाई

रामहिं तिलक कालि जौं भयऊ । तुम कहं बिपतिबीज बिधि बयऊ ॥
रेखा खैंचि कहौं बलु भाखी । भामिनि भइहु दूध की माखी ॥
जौं सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो० । कद्रू बिनतहि दीन्ह दुख तुमहि कौसिला देब ।
भरत बंदिगृह सेइहैं रामलखन कर नेब । २० ॥

चौ० । केकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकै कछु सहमि सुखानी ॥
तनु पसेव कदली जिमि कांपी । कुबरी दसन जीह तब चांपी ॥
कहि कहि कोटिक कपटकहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू । जिमि न नवै फिरि उकठि कुकाठू ॥
फिरा कर्म प्रिय लागि कुचाली । बकिहि सराहति मनहुं मराली ॥
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि आंखि नित फरकति मोरी ॥
दिन प्रति देखौं राति कुसपना । कहौं न तोहि मोहबस अपना ॥
काह करौं सखि सूधु सुभाऊ । दहिन बाम जानौं नहिं काऊ ॥

दो० । अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहि अघ एकहि बार मोहि दैव दुसह दुख दीन्ह । २१ ॥

चौ० । नैहर जनम भरब बरु जाई । जियत न करब सवतिसेवकाई ॥
अरिबस दैव जिआवै जाही । मरन नीक तेहि जियब न चाही ॥
दीन बचन कह बहु बिधि रानी । सुनि कुबरी तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना । सुख सोहाग तुम कहं दिन दूना ॥
जो राउर अस अनभल ताका । सो पाइहि यह फल परिपाका ॥
जब तें कुमति सुना मैं स्वामिनि । भूख न बासर नींद न यामिनि ॥
पूछा गुनिन्ह रेख तिन खांची । भरत भुआल होब यह सांची ॥
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ । है तुम्हरे सेवाबस राऊ ॥

दो० । परौं कूप तव बचन लगि सकौं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखि बड़ कस न करब हित लागि । २२ ॥

चौ० । कुबरी करी कबुलि कैकेई । कपटछुरी उरपाहन टेई ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे । चरै हरित तृन बलि पसु जैसे ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुं मधु माहुर घोरी ॥
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं । स्वामिनि कहेहु कथा मोहि पाहीं ॥
दुइ बर दान भूप सन थाती । मांगहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहि राज रामहिं बनबासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति रामसपथ जब करई । तब मांगहु जेहि बचन न टरई ॥
होइ अकाज आजु निसि बीते । बचनु मोर प्रिय मानहु जी ते ॥

ब

दो० । बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु ।
काज संवारहु सजग सब सहसा जनि पतिआउ ॥ २३ ॥

चौ० । कुबरिहिं रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तोहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कर भइसि अधारा ॥
जौं बिधि पुरब मनोरथ काली । करौं तोहि चखपूतरि आली ॥
बहु बिधि चेरिहिं आदर देई । कोप भवन गवनी कैकेई ॥
बिपति बीज बर्षा ऋतु चेरी । भुंइ भइ कुमति कैकयी केरी ॥
पाइ कपट जल अंकुर जामा । बर दो दल फल दुख परिनामा ॥
कोपसमाजसाज सजि सोई । राज करत निज कुमति बिगोई ॥
राजनगर कोलाहल होई । यह कुचाल कछु जान न कोई ॥

दो० । प्रमुदित पुरनरनारि सब साजि सुमंगल चार ।
एक प्रविसहिं एक निकसहीं भीर भूपदरबार । २४ ॥

चौ० । बालसखा सुनि हिय हरषाहीं । मिलि दस पांच राम पहं जाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी । पूछहिं कुसल छेम मृदु बानी ॥
फिरहिं भवन प्रभुआयसु पाई । करत परस्पर रामबड़ाई ॥
को रघुबीर सरिस संसारा । सील सनेह निबाहनिहारा ॥
जेहि जेहि जोनि कर्मबस भ्रमहीं । तहं तहं ईस देहिं यह हमहीं ॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू । होउ नात यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाष नगर सब काहू । केकयसुताहृदय अति दाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नसाई । रहै न नीचमते चतुराई ॥

दो० । सांझसमय सानन्द नृप गयउ कैकयीगेह ।
गवन निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेह । २५ ॥

चौ० । कोपभवन सुनि सकुचे राऊ । भयबस अगु मग परै न पाऊ ॥
सुरपति बसै बाहुबल जाके । नरपति रहहिं सकल रुख ताके ॥
सो सुनि तियरिस गये सुखाई । देखहु कामप्रताप बड़ाई ॥
सूल कुलिस असि अंगवनिहारे । ते रतिनाथ सुमनसर मारे ॥
सभय नरेस प्रिया पहं गयऊ । देखि दसा दुख दारुन भयऊ ॥
भूमि सयन पट मोट पुराना । दिये डारि तनुभूषन नाना ॥
कुमतिहि कस कुबेषता फाबी । अनअहिवात सोचु जनु भावी ॥
जाइ निकट नृप कह मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छं० । केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निवारई ।
मानहुं सरोष भुअंगभामिनि बिषम भांति निहारई ॥
दुइ बासना रसना दसन बर मर्म ठाहर देखई ।
तुलसी नृपति भवितब्यताबस कामकौतुक लेखई । १ ॥

दो० । बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि ।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निजकोप कर । १ ॥

चौ० । अनहित तोर प्रिया केइ कीन्हा । केहि दुइ सिर केहि जम चह लीन्हा ॥
कहु केहि रंकहिं करौं नरेसू । कहु केहि नृपहिं निकारौं देसू ॥
सकौं तोर अरि अमरउ मारी । कहा कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर सुभाउ बरोरू । मन तव आनन चंद चकोरू ॥
प्रिया प्रान सुत सरबस मोरे । परिजन प्रजा सकल बस तोरे ॥
जौं कछु कहौं कपट करि तोही । भामिनि रामसपथ सत मोही ॥
बिहसि मागु मनभावति बाता । भूषन सजहु मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू । बेगि प्रिया परिहरहु कुबेषू ॥

दो० । यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहसि उठी मतिमंद ।
भूषन सजति बिलोकि मृग मनहुं किरातिनि फंद । २६ ॥

चौ० । पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी । प्रेमपुलकि मृदु मंजुल बानी ॥
भामिनि भयउ तोर मन भावा । घर घर नगर अनंद बधावा ॥
रामहिं देउं कालि जुबराजू । सजहु सुलोचनि मंगलसाजू ॥
दलकि उठी सुनि बचन कठोरा । जनु छुइ गयउ पाक बरतोरा ॥
ऐसी पीर बिहसि तेइ गोई । चोरनारि जिमि प्रगट न रोई ॥
लखी न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई ॥
जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी । बोली बिहसि नयन मुह मोरी ॥

दो० । मागु मागु पै कहहु पिय कबहुं देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु । २७ ॥

चौ० । जानेउं मर्म राउ हंसि कहई । तुमहि कोहाब परम प्रिय अहई ॥
थाती राखि न मागेहु काऊ । बिसरि गयो मम भोर सुभाऊ ॥
झूठेहु दोष हमहिं जनि देहू । दुइ के चारि मागि किन लेहू ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाइ बरु बचन न जाई ॥
नहिं असत्य सम पातकपुंजा । गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥
सत्य मूल सब सुकृत सुहाई । बेद पुरान बिदित मनि गाई ॥
तेहि पर रामसपथ करि आई । सुकृतसनेहअवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हंसि बोली । कुमति बिहंगकुलह जनु खोली ॥

दो० । भूपमनोरथ सुभग बन सुख सुबिहंगसमाज ।
भिल्लिनि जनु छाड़न चहति बचन भयंकर बाज । २८ ॥

चौ० । सुनहु प्रानपति भावत जी का । देहु एक बर भरतहिं टीका ॥
दूसर बर मांगौं कर जोरे । नाथ मनोरथ पुरवहु मोरे ॥

तापसभेष बिसेष उदासी । चौदह बर्ष राम बनबासी ॥
सुनि तियबचन भूपउर सोकू । ससिकर छुवत बिकल जिमि कोकू ॥
गये सहमि कछु कहि नहिं आवा । जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥
बिबरन भयउ निपट महिपालू । दामिनि हनेउ मनहुं तरु तालू ॥
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन । तनु धरि सोच लागु जनु सोचन ॥
मोर मनोरथ सुरतरुफूला । फरत करिनि जनु हतेउ समूला ॥
अवध उजारि कीन्ह कैकेई । दीन्हेसि अचल बिपति कै नेई ॥

दो० । कवने अवसर का भयउ गयउं नारि बिस्वास ।
योग सिद्धि फलसमय जिमि यतिहि अबिद्यानास । २८ ॥

चौ० । इहि बिधि राउ मनहिं मन दहई । देखि कुभांति कुमति अस कहई ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं । आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं ॥
जो सुनि सर अस लाग तुम्हारे । काहे न बोलेहु बचन संभारे ॥
देहु उतर अब करहु कि नाहीं । सत्यसिंधु तुम रघुकुल माहीं ॥
देन कहेहु बर अब जनि देहू । तजहु सत्य जग अपयस लेहू ॥
सत्य सराहि कहेउ बर देना । जानेहु लेइहि मांगि चबेना ॥
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा । तनु धन तजेउ बचनपन राखा ॥
अति कटु बचन कहति कैकेई । मानहुं लोन जरे पर देई ॥

दो० । धर्मधुरंधर धीर धरि नयन उघारि राउ ।
सिर धुनि लीन्ह उसास अति मारेसि मोहि कुठाउ । ३० ॥

चौ० । आगे दीखि जरति रिसि भारी । मनहुं रोषतरवारि उघारी ॥
मूठ कुबुद्धि धार निठुराई । धरि कुबरी जनु सान बनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवन लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती । बानी बिनय न ताहि सोहाती ॥
मोरे भरत राम दौ आंखी । सत्य कहौं करि संकर साखी ॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभांती । रीति प्रतीति प्रीति करि घाती ॥
अवसि दूत मैं पठउब प्राता । ऐहैं बेगि सुनत दौ भ्राता ॥
सुदिन सोधि सब साज सजाई । देउँ भरतहि राज बजाई ॥

दो० । लोभ न रामहिं राज कर बहुत भरत पर प्रीति ।
मैं बड़ छोट बिचारि करि करत रहेउं नृपनीति । ३१ ॥

चौ० । रामसपथ सत कहौं सुभाऊ । राममातु मोहि कहा न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूछे । तातें परेउ मनोरथ छूछे ॥
रिस परिहरु अब मंगल साजू । कछु दिन गये भरत जुबराजू ॥
एकहि बात मोहि दुख लागा । बर दूसर असमंजस मांगा ॥
अजहूं हृदय जरत तेहि आंचा । रिस परिहास कि सांचहु सांचा ॥

कहु तजि रोष रामअपराधू । सब कोउ कहत राम सुठि साधू ॥
तुहूं सराहसि करसि सनेहू । अब सुनि मोहि परम संदेहू ॥
जासु सुभाव अरिहु अनुकूला । सो किमि करहिं मातु प्रतिकूला ॥

दो० । प्रिया हास रिस परिहरहु मांगु बिचारि बिबेक ।
जेहि देखौं अब नयन भरि भरतराजअभिषेक । ३२ ॥

चौ० । जियै मीन बरु बारि बिहीना । मनि बिनु फनिक जियै दुखदीना ॥
कहौं सुभाव न छल मन माहीं । जीवन मोर राम बिनु नाहीं ॥
समुझि देखु तैं प्रिया प्रबीना । जीवन रामदरसआधीना ॥
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई । मनहुं अनल आहुति घृत परई ॥
कहहु करहु किन कोटि उपाया । इहां न लागिहि राउरि माया ॥
देहु कि लेहु अयस करि नाहीं । मोहि न बहु परपंच सोहाहीं ॥
राम साधु तुम साधु सुजाना । राममातु भलि तुम पहिचाना ॥
जस कौसिला मोर भल ताका । तस फल देउं उन्हैं करि साका ॥

दो० । होत प्रात मुनिभेष धरि जौं न राम बन जाहिं ।
मोर मरन राउर अयस नृप समुझहु मन माहिं । ३३ ॥

चौ० । अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहुं रोषतरंगिनि बाढ़ी ॥
पापपहार प्रगट भई सोई । भरी क्रोधजल जाइ न जोई ॥
दोउ बर कूल कठिन हठधारा । भंवर कूबरी बचन प्रचारा ॥
ढाहति भूपरूपतरुमूला । चली बिपति बारिधि अनुकूला ॥
लखी नरेस बात सब सांची । तियमिस मीच सीस पर नाची ॥
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकरकुल होसि कुठारी ॥
मांगु माथ अबहीं देउं तोही । रामबिरह जनि मारसि मोही ॥
राखु राम कहं जेहि तेहि भांती । नाहिंत जरिहि जन्म भरि छाती ॥

दो० । देखी ब्याधि असाध्य नृप परेउ धरनि धुनि माथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ । ३४ ॥

चौ० । ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता । करिनि कलपतरु मनहुं निपाता ॥
कंठ सूख मुख आव न बानी । जिमि पाठीन दीन बिनु पानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेई । मनहुं घाय महं माहुर देई ॥
जौं अंतहु अस करतब रहेऊ । मांगु मांगु केहि के बल कहेऊ ॥
दुइ कि होइ एक समय भुआलू । हंसब ठठाइ फुलाइब गालू ॥
दानि कहाउब अरु कृपनाई । होइ कि खेमकुसल रौताई ॥
छाड़हु बचन कि धीरज धरहू । जनि अबला इव करुना करहू ॥
तनु तिय तनय धाम धन धरनी । सत्यसिंधु कहं तृनसम बरनी ॥

दो० । मर्मबचन सुनि राउ कह कहुक दोष नहिं तोर ।
लागेउ तोहिपिसाच जनु काल कहावत मोर । ३५ ॥

चौ० । चहत न भरत भूपपद भोरे । बिधिबस कुमति बसी जिय तोरे ॥
सो सब मोर पापपरिनामू । कहु न बनाइ भयो बिधि बामू ॥
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई । सब गुनधाम रामप्रभुताई ॥
करिहैं भाइ सकल सेवकाई । होइहै तिहुं पुर रामबड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ । मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ ॥
अब तोहि नीक लाग करु सोई । लोचनओट बैठु मुख गोई ॥
जौलौं जियौं कहौं कर जोरी । तौलौं जनि कछु कहसि बहोरी ॥
फिरि पछितैहसि अंत अभागी । मारेसि गाय नाहरु लागी ॥

दो० । परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदान ।
कपटसयानि न कहति कछु जागति मनहुं मसान । ३६ ॥

चौ० । राम राम रटि बिकल भुआलू । जनु बिनु पंख बिहंग बिहालू ॥
हृदय मनाव भोर जनि होई । रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥
उदय करहु जनि रबिकुलगुरा । अवध बिलोकि सूल होइ ऊरा ॥
भूपप्रीति कैकयिनिठुराई । उभय अवधि बिधि रची बनाई ॥
बिलपत नृपहिं भयउ भिनुसारा । बीनाबेनुसंखधुनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक । सुनत नृपहि जानहिं जनु सायक ॥
मंगल सकल सुहाइ न कैसें । सहगामिनीबिभूषन जैसें ॥
तेहि निसि नींद परी नहिं काहू । रामदरसलालसा उछाहू ॥

दो० । द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदय रबि देखि ।
जागे अजहुं न अवधपति कारन कवन बिसेषि । ३७ ॥

चौ० । पछिले पहर भूप नित जागा । आजु हमहि बड़ अचरज लागा ॥
जाहु सुमंत जगावहु जाई । कीजिय काज रजायसु पाई ॥
गे सुमंत तबमन्दिर माहीं । देखि भयानक जात डेराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जात न हेरा । मानहुं बिपतिबिषादबसेरा ॥
पूछत कोउ न उत्तर कछु देई । गे जेहि भवन भूप कैकेई ॥
कहि जयजीव बैठि सिर नाई । देखि भूपगति गयउ सुखाई ॥
सोकबिकल बिबरन महि परेऊ । मानहुं कमलमूल परिहरेऊ ॥
सचिव सभीत सकै नहिं पूछी । बोली असुभ भरी सुभ छूछी ॥

दो० । परी न राजहि नींद निसि मर्म जानु जगदीस ।
राम राम रटि भोर किय हेतु न कहेउ महीस । ३८ ॥

चौ० । आनहु रामहिं बेगि बुलाई । समाचार तब पूछहु आई ॥
चलो सुमंत रायरुख जानी । लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी ॥

सोचबिकल मग परै न पाऊ । रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ॥
उर धरि धीरज गयउ दुआरे । पूछहिं सकल देखि मन मारे ॥
समाधान सब करि सबही का । गये जहां दिनकरकुलटीका ॥
राम सुमंतहिं आवत देखा । आदर कीन्ह पिता सम लेखा ॥
निरखि बदन कहि भूपरजाई । रघुकुलदीपहिं चले लवाई ॥
राम कुभांति सचिव संग जाहीं । देखि लोग जहं तहं बिलखाहीं ॥

दो० । जाइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाज ।
सहमि परेउ लखि सिंहिनिहि मनहुं बृद्ध गजराज । ३९ ॥

चौ० । सूखे अधर जरे सब अंगा । मनहुं दीन मनिहीन भुअंगा ॥
सरुष समीप देखि कैकेई । मानहुं मृत्यु घरी गनि देई ॥
करुनामय रघुनाथसुभाऊ । प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
तदपि धीर धरि समय बिचारी । पूछी मधुर बचन महतारी ॥
मोहि कहु मातु तात दुखकारन । करिय जतन जेहि होइ निवारन ॥
सुनहु राम सब कारन एहू । राजहिं तुम पर बहुत सनेहू ॥
देन कहेउ मोहि दुइ बरदाना । मांगेउं जो कछु मोहि सोहाना ॥
सो सुनि भयेउ भूप उर सोचू । छाड़ि न सकहिं तुम्हार सकोचू ॥

दो० । सुतसनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेस ।
सकहु तो आयसु सीस धरि मेटहु कठिन कलेस । ४० ॥

चौ० । निधरक बैठि कहति कटु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुं महिप मृदु लच्छ समाना ॥
जनु कठोरपन धरे सरीरा । सीख धनुषबिद्या बर बीरा ॥
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई । बैठी मनु तनु धरि निठुराई ॥
मन मुसुकाहिं भानुकुलभानू । राम सहजआनंदनिधानू ॥
बोले बचन बिगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनु बागबिभूषन ॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़ भागी । जो पितुमातुबचनअनुरागी ॥
तनय मातुपितुतोषनिहारा । दुर्लभ जननी यहि संसारा ॥

दो० । मुनिगनमिलन बिसेष बन सबहि भांति हित मोर ।
तेहि महं पितुआयसु बहुरि संमत जननी तोर । ४१ ॥

चौ० । भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू । बिधि सब बिधि मोहि सन्मुख आजू ॥
जौं न जाउं बन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिय मोहिं मूढ़ समाजा ॥
सेवहिं अरंड कलपतरु त्यागी । परिहरि अमिय लेहिं बिष मांगी ॥
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं । देखु बिचारि मातु मन माहीं ॥
अंब एक दुख मोहिं बिसेषी । निपट बिकल नरनायक देखी ॥
थोरिहि बात पितहिं दुख भारी । होत प्रतीति न मोहिं महतारी ॥

राउ धीर गुनउदधि अगाधू । भा मोतें कछु बड़ अपराधू ॥
जा तें मोहि न कहत कछु राऊ । मोर सपथ तोहिं कहु सति भाऊ ॥

दो० । सहज सरल रघुबरबचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलै जोंक जिमि बक्र गति जद्यपि सलिल समान । ४१ ॥

चौ० । रहसी रानि रामरुख पाई । बोली कपट सनेह जनाई ॥
सपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध जोग नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥
राम सत्य तुम जो कछु कहहू । तुम पितुमातुबचनरत अहहू ॥
पितहिं बुझाइ कहो बलि सोई । चौथेपन जेहि अजस न होई ॥
तुम सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हे । उचित न तासु निरादर कीन्हे ॥
लागहि कुमुखि बचन सुभ कैसे । मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातुबचन सब भाये । जिमि सुरसरिगति सलिल सुहाये ॥

दो० । गै मुर्छा रामहिं सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव रामआगमन कहि बिनय समय सम कीन्ह । ४२ ॥

चौ० । अव नृप अकनि राम पगु धारे । धरि धीरज तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे । चरन परत नृप राम निहारे ॥
लिये सनेह बिकल उर लाई । गइ मनि फनिक बहुरि जिमि पाई ॥
रामहि चितै रहे नरनाहू । चला बिलोचन बारिप्रबाहू ॥
सोकबिकल कछु कहै न पारा । हृदय लगावत बारहि बारा ॥
बिधिहि मनाउ राउ मन माहीं । जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेसहिं कहहिं निहोरी । बिनती सुनहु सदा सिव मोरी ॥
आसु तोष तुम औढरदानी । आरति हरहु दीन जन जानी ॥

दो० । तुम प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु
बचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि सील सनेहु । ३४ ॥

चौ० । अयस होउ बरु सुयस नसाऊ । नरक परौं बरु सुरपुर जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं । लोचनओट राम जनि होंहीं ॥
अस मन गुनत राउ नहिं बोला । पीपरपात सरस मन डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी । पुनि कछु कहैउ मातु अनुमानी ॥
देस काल अवसर अनुसारी । बोले बचन बिनीत बिचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचित छमब जानि लरिकाई ॥
अति लघु बात लागि दुख पावा । काहे न कहि मोहि प्रथम जनावा ॥
देखि गुसाइँहिं पूछेउं माता । सुनि प्रसंग भौ सीतल गाता ॥

दो० । मंगलसमय सनेहबस सोच परिहरिय तात ।
आयसु देइय हरषि हिय कहि पुलक प्रभुगात । ४५ ॥

चौ० । धन्य जनम जगतीतल तासू । पितहि प्रबोध चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके ॥
आयसु पालि जनमफल पाई । ऐहौं बेगहि होउ रजाई ॥
बिदा मातु सन आवौं मांगी । चलिहौं बनहिं बहुरि पग लागी ॥
अस कहि राम गवन तब कीन्हा । भूप सोकबस उतर न दीन्हा ॥
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥
सुनि भये बिकल सकल नर नारी । बेलिबिटप जनु लाग दवारी ॥
जो जहं सुनै धुनै सिर सोई । बड़ बिषाद नहिं धीरज होई ॥

दो० मुख सुखहिं लोचन स्रवहिं सोक न हृदय समाइ ।
मानहुं करुनारसकटक उतरा अवध बजाइ । ४६ ॥

चौ० । भलि बनाइ बिधि बात बिगारी । जहं तहं देहिं कैकयिहि गारी ॥
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ । छाय भवन पर पावक धरेऊ ॥
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा बिष चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुबंस बेनुबन आगी ॥
पालव बैठि पेड़ एहि काटा । सुख महं सोकठाट धरि ठाटा ॥
सदा राम एहि प्रान समाना । कारन कवन कुटिल पन ठाना ॥
सत्य कहहिं कबि नारिसुभाऊ । सब बिधि अगम अगाध दुराऊ ॥
निज प्रतिबिंब मुकुर गहि जाई । जानि न जाइ नारिगति भाई ॥

दो० । का नहिं पावक जरि सकै का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग काल न खाइ । ४७ ॥

चौ० । का सुनाइ बिधि काह सुनावा । का दिखाइ चह काह देखावा ॥
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा । बर बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयउ सकलदुखभाजनु । अबलाबिबस ग्यान गुन गा जनु ॥
एक धरमपरमिति पहिचाने । नृपहि दोष नहिं देहिं सयाने ॥
सिबिदधीचिहरिचंदकहानी । एक एक सन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदासभाव सुनि रहहीं ॥
कान मूंदि कर रद गहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे । भरत राम कहं प्रानपियारे ॥

दो० । चंद्र चवै बरु अनलकन सुधा होइ बिष तूल ।
सपनेहु कबहु न करहिं कछु भरत राम प्रतिकूल । ४८ ॥

चौ० । एक बिधातहि दूषन देहीं । सुधा दिखाइ दीन्ह बिष जेहीं ॥
खरभर नगर सोच सब काहू । दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी । जे प्रिय परम कैकयी केरी ॥
लगीं देन सिख सील सराही । बचन बान सम लागहिं ताही ॥

भरत न प्रिय मोहि राम समाना । सदा कहहु यह सब जग जाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ॥
कबहु न कीन्ह सवतिअवरेहू । प्रीति प्रतीति जान सब देहू ॥
कौसल्या अब काह बिगारा । तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दो० । सीय कि पिय संग परिहरिहि लखन कि रहिहहिं धाम ।
भरत कि भूँजब राज पुर नृप कि जियहिं बिनु राम । ४८ ॥

चौ० । अस बिचारि जिय छाड़हु कोहू । सोककलंककोठि जनि होहू ॥
भरतहि अवसि देहु युवराजू । कानन कवन राम कर काजू ॥
नाहिन राम राज कर भूखे । धर्मधरीन बिषयरसरूखे ॥
गुरगृह बसहिं राम तजि गेहू । नृप सन अस बर दूसर लेहू ॥
राम सरिस सुत कानन योगू । कहा कहहिं सुनि तुम कहं लोगू ॥
जौ न मानिहौ कहे हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे ॥
जौ परिहास कीन्ह कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि बिधि सोक कलंक नसाई ॥

छं० । जेहि भांति सोक कलंक जाइ उपाइ करि कुल पालहू ।
हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमि भानु बिन दिन प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि यामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं मन भामिनी । २ ॥

सो० । सखिन्ह सिखावन दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित ।
तेइ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी । २ ॥

चौ० । उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । मृगिहि चितव जनु बाघिनि भूखी ॥
ब्याधि असाधि जानि तिन त्यागी । चलीं कहति मतिमन्द अभागी ॥
राज करत इहि दैव बिगोई । कीन्हेसि अस जस करै न कोई ॥
इहि बिधि बिलपहिं पुरनरनारी । देहिं कुचालिहि कोटिक गारी ॥
जरहिं बिषम ज्वर लेहिं उसासा । कवन राम बिनु जीवन आसा ॥
बिकल बियोग प्रजा अकुलानी । जिमि जलचरगन सूखत पानी ॥
अति बिषाद बस लोग लुगाई । गये मातु पहं राम गुसाईं ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । इहै सोच जनि राखहिं राऊ ॥

दो० । नव गयंद रघुबंसमनि राज अलान समान ।
छूट जानि बनगवन सुनि उर आनंद अधिकान । ५० ॥

चौ० । रघुकुलतिलक जोरि दौ हाथा । मुदित मातुपद नायउ माथा ॥
दीन्ह असीस लाइ उर लीन्हे । भूषन बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चूमति माता । नयननेहजल पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाई । स्रवत प्रेमरस पयद सुहाई ॥

प्रेमप्रमोद न कछु कहि जाई । रंक धनदपदवी जनु पाई ॥
सादर सुन्दर बदन निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिं लगन मुदमंगलकारी ॥
सुकृतसीलसुखसीवं सुहाई । जन्मलाभ कहि अवधि अघाई ॥

दो० । जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत इहि भांति ।
जिमि चातकि चातक त्रषित वृष्टि सरद ऋतु स्वाति । ५१ ॥

चौ० । तात जाउं बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितु समीप तब जायेहु भैया । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैया ॥
मातुबचन सुनि अति अनुकूला । जनु सनेहसुरतरु के फूला ॥
सुखमकरन्दभरे स्रीमूला । निरखि राम मन भंवर न भूला ॥
धर्मधुरीन धर्मगति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
पिता दीन्ह मोहि काननराजू । जहं सब भांति मोर बड़ काजू ॥
आयसु देहु मुदित मन माता । जेहि मुद मंगल कानन जाता ॥
जनि सनेहबस डरपसि भोरे । आनंद मातु अनुग्रह तोरे ॥

दो० । बर्ष चारिदस बिपिन बसि करि पितुबचन प्रमान ।
आय पाय पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान । ५२ ॥

चौ० । बचन बिनीत मधुर रघुबर के । सर सम लगे मातुउर करके ॥
सहमि सूखि सुनि सीतल बानी । जिमि जवास पर पावस पानी ॥
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू । जनु सहमी करि केहरिनादू ॥
नयन सलिल तनु थरथर कांपी । मांजा मनहुं मीन कहं ब्यापी ॥
धरि धीरज सुतबदन निहारी । गद्गद बचन कहति महतारी ॥
तात पितहि तुम प्रानपिआरे । देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
राज देन कहं सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहि अपराधा ॥
तात सुनावहु मोहि निदानू । को दिनकरकुल भयउ कृसानू ॥

दो० । निरखि रामरुख सचिवसुत कारन कहेउ बुझाइ ।
सुनि प्रसंग रहि मूकगति दसा बरनि नहिं जाइ । ५३ ॥

चौ० । राखि न सकहिं न कहि सक जाहू । दुहूं भांति उर दारुन दाहू ॥
लिखत सुधाकर लिखि गा राहू । बिधिगति बाम सदा सब काहू ॥
धर्मसनेह उभय मति घेरी । भइ गति सांप छुछुंदरि केरी ॥
राखौं सुतहि करौं अनुरोधू । धर्म जाइ अरु बंधुबिरोधू ॥
कहौं जान बन तौ बड़ि हानी । संकट सोच बिबस भइ रानी ॥
बहुरि समुझि तियधर्म सयानी । राम भरत दोउ सुत सम जानी ॥
सरल सुभाव राममहतारी । बोली बचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउं बलि कीन्हेउ नीका । पितुआयसु सब धर्म क टीका ॥

दो० । राज देन कहं दीन्ह बन मुहि न सोच दुखलेस ।
तुम बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेस । ५४ ॥

चौ० । जौ केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जाइ बलि माता ॥
जौ पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग म्रुग चरन सरोरुह सेवी ॥
अंतहु उचित न्रुपहि बनबासू । बय बिलोकि हिय होत हरासू ॥
बड़ भागी बन अवध अभागी । जौ रघुबंसतिलक तुम त्यागी ॥
जौ सुत कहौं संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
पूत परम प्रिय तुम सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
ते तुम कहहु मातु बन जाऊं । मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं ॥

दो० । यह बिचारि नहिं करउं हठ झूठ सनेह बढ़ाइ ।
मानि मातु के नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ । ५५ ॥

चौ० । देव पितर सब तुमहि गुसाईं । राखहु पलक नयन की नाईं ॥
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम करुनाकर धर्मधुरीना ॥
अस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जियत जेहि भेंटहु आई ॥
जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊं । करि अनाथ जन परिजन गाऊं ॥
सब कर आजु सुक्रतफल बीता । भये कराल काल बिपरीता ॥
बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥
दारुन दुसह दाह उर ब्यापा । बरनि न जाइ बिलापकलापा ॥
राम उठाइ मातु उर लावा । कहि म्रुदु बचन बहुत समुझावा ॥

दो० । समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासुपगकमलयुग बंदि बैठि सिर नाइ । ५६ ॥

चौ० । दीन्ह असीस सासु म्रुदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥
बैठि नमित मुख सोचति सीता । रूपरासि पतिप्रेमपुनीता ॥
चलन चहत बन जीवननाथा । कवन सुक्रत सन होइहि साथा ॥
की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतब कछु जात न जाना ॥
चारु चरननख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ॥
मनहुं प्रेमबस बिनती करहीं । हमहि सीयपद जनि परिहरहीं ॥
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राममहतारी ॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सासु ससुर परिजनहिं पियारी ॥

दो० । पिता जनक भूपालमनि ससुर भानुकुलभानु ।
पति रबिकुलकैरवबिपिन बिधु गुनरूपनिधान । ५७ ॥

चौ० । मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूपरासि गुनसील सुहाई ॥
नयनपुतरि इव प्रीति बढ़ाइ । राखेउं प्रान जानकिहि लाई ॥

कल्पबेलि जिमि बहु बिधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भये बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ॥
पलँगपीठ तजि गोद हिंडोरा । सिय न दीन पग अवनि कठोरा ॥
जीवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊँ । दीपबाति नहिं टारन कहेऊँ ॥
सो सिय चलन चहति बन साथा । आयसु कहा होइ रघुनाथा ॥
चन्द्रकिरनरसरसिक चकोरी । रबिरुख नयन सकै किमि जोरी ॥

दो० । करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिषबाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनमूरि । ५८ ॥

चौ० । बन हित कोल किरातकिसोरी । रची बिरंचि बिषयरसभोरी ॥
पाहनकृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिनहिं कलेस न कानन काऊ ॥
कै तापसतिय कानन योगू । जिन तप हेतु तजा सब भोगू ॥
सिय बन बसिहि तात केहि भांती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती ॥
सुरसर सुभग बनजबनचारी । डाबरजोग कि हंसकुमारी ॥
अस बिचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥
जौं सिय भवन रहै कह अंबा । मो कहँ होइ प्रानअवलंबा ॥
सुनि रघुबीर मातुप्रियबानी । सील सनेह सुधा जनु सानी ॥

दो० । कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्ह मातुपरितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिनगुनदोष । ५९ ॥

चौ० । मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समय समुझि मन माहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू । आन भांति जिय जनि कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जौं चहहू । बचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासुसेवकाई । सब बिधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पदपूजा ॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेमबिकल मति भोरी ॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझायेउ मृदु बानी ॥
कहौं सुभाव सपथ सत मोहीं । सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं ॥

दो० । गुरुश्रुतिसम्मत धर्मफल पाइय बिनहिं कलेस ।
हठबस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस । ६० ॥

चौ० । मैं पुनि करि प्रमान पितुबानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागहिं बारा । सुंदरि सिखवन सुनहु हमारा ॥
जौ हठ करहु प्रेमबस बामा । तौ तुम दुख पाउब परिनामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घाम हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मग कांकर नाना । चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ॥
चरनकमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥

कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दो० । भूमिसयन बलकल बसन असन कंद फल मूल ।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं समय समय अनुकूल । ६१ ॥

चौ० । नरअहार रजनीचर करहीं । कपटभेष बिधि कोटिन धरहीं ॥
लागै अति पहार कर पानी । बिपिनबिपति नहिं जाइ बखानी ॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा । निसिचरनिकर नारिनरचोरा ॥
डरपहिं धीर गहनसुधि आये । मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये ॥
हंसगवनि तुम नहिं बनयोगू । सुनि अपयस दैहहिं मोहि लोगू ॥
मानससलिल सुधाप्रति पाली । जियइ कि लवनपयोधि मराली ॥
नवरसालबन बिहरन सीला । सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदय बिचारी । चन्द्रबदनि दुख कानन भारी ॥

दो० । सहज सुहृद गुरु स्वामिसिख जो न करै सिर मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हितहानि । ६२ ॥

चौ० । सुनि मृदु बचन मनोहर पी के । लोचनललित भरे जल सी के ॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसे । चकइहि सरदचाँदनी जैसे ॥
उतर न आव बिकल बैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचनबारी । धरि धीरज उर अवनि कुमारी ॥
लागि सासुपद कह कर जोरी । छमब देबि बड़ि अबिनय मोरी ॥
दीन्ह प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि बिधि मोर परम हित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं । पियबियोग सम दुख जग नाहीं ॥

दो० । प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम बिनु रघुकुल कुमुदबिधु सुरपुर नरक समान । ६३ ॥

चौ० । मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवार सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुरु सुजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनि ते ताते ॥
तन धन धाम धरनि पुर राजू । पतिबिहीन सब सोकसमाजू ॥
भोग रोग सम भूषन भारू । यमयातना सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम बिनु जगमाहीं । मो कहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसहिं नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे । सरदबिमलबिधु बदन निहारे ॥

दो० । खग मृग परिजन नगर बन बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल । ६४ ॥

चौ० । बन देवी बनदेव उदारा । करिहैं सासु ससुर सम सारा ॥

कुसकिसलयसाथरी सुहाई । प्रभु संग मंजु मनोजतुराई ॥
कंद मूल फल अमिय अहारू । अवध सौधसत सरिस पहारू ॥
छन छन प्रभुपदकमल बिलोकी । रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बनदुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभुबियोगलवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
अस जिय जानि सुजानसिरोमनि । लेइय संग मोहि छाड़िय जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उरअंतरजामी ॥

दो० । राखिय अवध तो अवधि लगि रहत जो जानिय प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुखद सीलसनेहनिधान । ६५ ॥

चौ० । मोहि मग चलत न होइहि हारी । छन छन चरनसरोज निहारी ॥
सबहि भांति पियसेवा करिहौं । मारगजनित सकल स्रम हरिहौं ॥
पांव पखारि बैठि तरुछाहीं । करिहौं बायु मुदित मन माहीं ॥
स्रमकनसहित स्याम तनु देखे । का दुख समय प्रानपति पेखे ॥
सम महि पर तृनपल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि ताप बयारि न मोही ॥
को प्रभु संग मोहि चितवनि हारा । सिंहबधुहि जिमि ससक सियारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बनयोगू । तुमहिं उचित तप मो कहं भोगू ॥

दो० । ऐसेहु बचन कठोर सुनि जौ न हृदय बिलगान ।
तौ प्रभु बिषम बियोगदुख सहिहैं पांमर प्रान । ६६ ॥

चौ० । अस कहि सीय बिकल भइ भारी । बचनबियोग न सकी संभारी ॥
देखि दसा रघुपति जिय जाना । हठि राखे राखिहि नहिं प्राना ॥
कहेउ कृपालु भानुकुलनाथा । परिहरि सोच चलहु बन साथ ॥
नहिं बिषाद कर अवसर आजू । बेगि करहु बनगवनसमाजू ॥
कहि प्रिय बचन प्रियहि समुझाई । लगे मातुपद आसिष पाई ॥
बेगि प्रजादुख मेटब आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । देखिहौं नैन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होई । जननी जियत बदनबिधु जोई ॥

दो० । बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बुलाइ लगाइ उर हरषि निरखिहौं गात । ६७ ॥

चौ० । लखि सनेह कातरि महतारी । बचन न आव बिकल भइ भारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना । समय सनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासुपग लागी । सुनिय माय मैं परम अभागी ॥
सेवासमय दैव बन दीन्हा । मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जनि छाड़ब छोहू । कर्म कठिन कछु दोष न मोहू ॥

सुनि सियवचन सासु अकुलानी । दसा कवनि विधि कहौं बखानी ॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही । धरि धीरज सिख आसिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा । जब लगि गंगयमुनजलधारा ॥

दो० । सीतहिं सासु असीस सिख दीन्ह अनेक प्रकार ।
चली नाइ पदपदुम सिर अति हित बारहिबार । ६८ ॥

चौ० । समाचार जब लछिमन पाये । व्याकुल बिलखि बदन उठि धाये ॥
कंप पुलक तनु नयन सनीरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीन दीन जनु जल तें काढ़े ॥
सोच हृदय विधि का होनिहारा । सब सुख सुकृत सिरान हमारा ॥
मो कहं काह कहब रघुनाथा । रखिहैं भवन कि लेहहिं साथा ॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरे । देह गेह सब सन तृन तोरे ॥
बोले बचन राम नयनागर । सीलसनेहसरलसुखसागर ॥
तात प्रेमबस जनि कदराहू । समुझि हृदय परिनाम उछाहू ॥

दो० । मातु पितागुरुस्वामिसिख सिर धरि करहिं सुभाय ।
लहेउ लाभ तिन जन्म के नतरु जन्म जग जाय । ६९ ॥

चौ० । अस जिय जानि सुनहु सिख भाई । करौ मातुपितुपदसेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं । राउ बृद्ध मम दुख मन माहीं ॥
मैं बन जाउं तुमहिं लै साथा । होइहि सब विधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू । सब कहं परै दुसहदुख भारू ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृप अवसि नरक अधिकारी ॥
रहहु तात असि नीति बिचारी । सुनत लषन भये ब्याकुल भारी ॥
सियरे बदन सूखि गो कैसे । परसत तुहिन तामरस जैसे ॥

दो० । उतरु न आवत प्रेमबस गहे चरन अकुलाइ ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम तजहु तो काह बसाइ । ७० ॥

चौ० । दीन्ह मोहि सिख नीकि गुसाईं । लागत अगम अपनि कदराईं ॥
नरबर धीर धर्मधुरधारी । निगम नीति के ते अधिकारी ॥
मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला । मंदरमेरु कि लेइ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानौं काहू । कहौं सुभाव नाथ पतियाहू ॥
जहं लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई ॥
मोरे सबै एक तुम स्वामी । दीनबंधु उरअंतरजामी ॥
धर्म नीति उपदेसिय ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥
मन क्रम बचन चरनरत होई । कृपासिंधु परिहरिय कि सोई ॥

दो० । करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत ।
समुझाये उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत । ७१ ॥

चौ० । मांगहु बिदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥
मुदित भये सुनि रघुबरबानी । भयेउ लाभ बड़ मिटी गलानी ॥
हरषितहृदय मातु पहं आये । मनहुं अंध फिरि लोचन पाये ॥
जाइ जननिपग नायेउ माथा । मन रघुनंदन जानकि साथा ॥
पूछेउ मातु मलिनमन देखी । लखन कहेउ सब कथा बिसेषी ॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहुं ओरा ॥
लखन लखेउ भा अनरथ आजू । इन सनेहबस करब अकाजू ॥
मांगत बिदा सभय सकुचाहीं । जाय संग बिधि कहिहि कि नाहीं ॥

दो० । समुझि सुमित्रा रामसियरूपसुसीलसुभाव ।
नृपसनेह लखि धुनेउ सिर पापिनि दीन्ह कुदाव । ७२ ॥

चौ० । धीरज धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही । पिता राम सब भांति सनेही ॥
अवध तहां जहं रामनिवासू । तहां दिवस जहं भानुप्रकासू ॥
जौ पै सीय राम बन जाहीं । अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बंधु सुर सांईं । सेइय सकल प्रान की नांईं ॥
राम प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथरहित सखा सबही के ॥
पूजनीय प्रिय परम जहां ते । मानिय सबहि राम के नाते ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू । लेहु तात जग जीवनलाहू ॥

दो० । भूरिभागभाजन भयेहु मोहि समेत बलि जाउं ।
जौ तुम्हार मन छाड़ि छल कीन्ह रामपद ठाउं । ७३ ॥

चौ० । पुत्रवती युवती जग सोई । रघुबरभक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बांझ भलि बादि बियानी । रामबिमुख सुत तें हितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं । दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर फल सुत एहू । रामसीयपद सहज सनेहू ॥
राग रोष इरषा मद मोहू । जनि सपनेहु इन के बस होहू ॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई । मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ॥
तुम कहं बन सब भांति सुपासू । संग पितु मातु राम सिय जासू ॥
जेहि न राम बन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करेहु इहै उपदेसू ॥

छं० । उपदेस यह जेहि तात तुम तें राम सिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुरसुख सुरति बन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु देइ पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सियरघुबीरपद नित नित नई । ३ ॥

सो० । मातुचरन सिर नाइ चले लषन संकितहिये ।
बागुर बिषम तुराइ मनहुं भाग म्रग भागबस । २ ॥

चौ० । गये लषन जहं जानकिनाथा । भये मन मुदित पाइ प्रिय साथा ॥
बंदि रामसियचरन सुहाये । चले संग नृपमंदिर आये ॥
कहहिं परस्पर पुरनरनारी । भलि बनाइ बिधि बात बिगारी ॥
तनु क्रस मन दुख बदन मलीना । बिकल मनहुं माखी मधु छीना ॥
कर मींजहिं सिर धुन पछिताहीं । जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूपदरबारा । बरनि न जाइ बिषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय बचन राम पगु धारे ॥
सिय समेत दो तनय निहारी । व्याकुल भये भूमिपति भारी ॥

दो० । सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेहबस राउ लिये उर लाइ । ७४ ॥

चौ० । सके न बोलि बिकल नरनाहू । सोकबिबस उर दारुन दाहू ॥
नाइ सीस पद अति अनुरागा । उठि रघुनाथ बिदा तब मांगा ॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजे । हर्षसमय बिसमय कत कीजे ॥
तात किये प्रिय प्रेमप्रमादू । जस जग जाइ होइ अपवादू ॥
सुनि सनेहबस उठि नरनाहू । बैठारे रघुपति गहि बाहू ॥
सुनहु तात तुम कहं मुनि कहहीं । राम चराचरनायक अहहीं ॥
सुभ अरु असुभ कर्म अनुहारी । ईस देइ फल हृदय बिचारी ॥
करै जो कर्म पाव फल सोई । निगम नीति अस कह सब कोई ॥

दो० । और करै अपराध कोउ और पाव फलभोग ।
अति बिचित्र भगवंतगति को जग जानै योग । ७५ ॥

चौ० । राउ राम राखन हितलागी । बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी ॥
लखेउ रामरुख रहत न जाने । धर्मधुरन्धर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीनी । अति हित बहुत भांति सिख दीनी ॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाये । सासुससुरपितुसुख समुझाये ॥
सियमन रामचरन अनुरागा । घर न सुगम बन अगम न लागा ॥
औरौ सबहि सीय समुझाई । कहि कहि बिपिनबिपतिअधिकाई ॥
सचिवनारि गुरुनारि सयानी । सहित सनेह कहहिं म्रदु बानी ॥
तुम कहं तौ न दीन्ह बनबासू । करहु जो कहंहि ससुर गुरु सासू ॥

दो० । सिख सीतल हित मधुर म्रदु सुनि सीतहिं न सुहानि ।
सरदचंदचांदनी लगत जनु चकई अकुलानि । ७६ ॥

चौ० । सीय सकुचबस उतर न देई । सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मनिपट भूषन भाजन आनी । आगे धरि बोली म्रदु बानी ॥

नृपहि प्रानप्रिय तुम रघुबीरा । सील सनेह न छाड़हिं भीरा ॥
सुकृत सुयस परलोक नसाऊ । तुमहि जात बन कहहिं न राऊ ॥
अस बिचारि सोइ करौ जु भावा । राम जननिसिख सुनि सुख पावा ॥
भूपहि बचन बान सम लागे । करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
लोकबिकल मूर्छित नरनाह । काह करिय कछु सूझ न काहू ॥
राम तुरत मुनिभेष बनाई । चले जनक जननी सिर नाई ॥

दो० । सजि बनसाज समाज सब बनिता बंधु समेत ।
बंदि बिप्रगुरुचरन प्रभु चले करि सबहि अचेत । ७७ ॥

चौ० । निकसि बसिष्टद्वार भये ठाढ़े । देखे लोग बिरहदवदाढ़े ॥
कहि प्रिय बचन सबहिं समुझाये । बिप्रबृन्द रघुबीर बुलाये ॥
गुरु सन कहि बरषासन दीन्हे । आदर दान बिनय बस कीन्हे ॥
याचक दान मान सन्तोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी । गुरहि सौंपि बोले कर जोरी ॥
सब कर सार संभार गुसांईं । करब जनक जननी की नाईं ॥
बारहिंबार जोरि युग पानी । कहत राम सब सन मृदु बानी ॥
सोइ सब भांति मोर हितकारी । जेहि तें रह नरनाह सुखारी ॥

दो० । मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होहिं दुखदीन ।
सो उपाय तुम करब सब पुरजन परम प्रबीन । ७८ ॥

चौ० । इहि बिधि राम सबहिं समुझावा । गुरुपदपद्म हरषि सिर नावा ॥
गनपति गौरि गिरीस मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयेउ बिषादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥
कुसगुन लंक अवध अति सोकू । हर्षबिषादबिबस सुरलोकू ॥
गै मूर्छा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत कहन अस लागे ॥
राम चले बन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तनु माहीं ॥
इहि तें कवनि व्यथा बलवाना । जो दुख पाइ तजहि तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू । लै रथ संग सखा तुम जाहू ॥

दो० । सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइ बन फिरेहु गये दिनचारि । ७९ ॥

चौ० । जो नहिं फिरहिं धीर दौ भाई । सत्यसिंधु दृढ़ब्रत रघुराई ॥
तौ तुम बिनय करेउ कर जोरी । फेरिय प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥
जब सिय कानन देखि डेराई । कहेउ मोरि सिख अवसर पाई ॥
सासु ससुर अस कहेउ संदेसू । पुत्रि फिरिय बन बहुत कलेसू ॥
पितुगृह कबहुं कबहुं ससुरारी । रहेउ जहां रुचि होइ तुम्हारी ॥
इहि बिधि करेउ उपायकदंबा । फिरइ तो होइ प्रानअवलंबा । ॥

लै रघुनाथहिं ठाम बतावा । कहेउ राम सब भांति सुहावा ॥
पुरजन करि जुहार घर आये । रघुबर संध्या करन सिधाये ॥
गुह संवारि सांथरी बनाई । कुश किसलय मृदु परम सुहाई ॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥

दो० । सिय सुमंत भ्राता सहित कन्द मूल फल खाइ ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ । ८७ ॥

चौ० । उठे लखन प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहिं सोवन मृदु बानी ॥
कछुक दूरि सजि बान सरासन । जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुह बुलाइ पहरू प्रतीती । ठांव ठांव राखे अति प्रीती ॥
आपु लखन पहं बैठेउ जाई । कटि भाथा सर चाप चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषादा । भयेउ प्रेमबस हृदय बिषादा ॥
तनु पुलकित लोचन जल बहई । बचन सप्रेम लखन सन कहई ॥
भुपतिभवन सुभाय सुहावा । सुरपति सदन न पटतर पावा ॥
मनिमय रचित चारु चौबारे । जनु रतिपति निज हाथ संवारे ॥

दो० । सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास ।
पलंग मंजु मनि दीप जहं सब बिधि सकल सुपास । ८८ ॥

चौ० । बिबिध बसन उपधान तुराई । छीर फेन मृदु बिसद सुहाई ॥
तहं सिय राम सयन निसि करहीं । निज छबि रति मनोजमद हरहीं ॥
ते सिय राम साथरी सोये । स्रमित बसन बिन जांहि न जोये ॥
मातु पिता परिजन परबासी । सखा सुसील दास अरु दासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्रान की नांईं । महि सोवत सो राम गुसांईं ॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ । ससुर सुरेस सखा रघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो बैदेही । महि सोवति बिधि बाम न केही ॥
सिय रघुबीर कि कानन योगू । कर्म प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दो० । केकयनन्दिनि मंदमति कठिन कुटिलपन कीन्ह ।
जेहि रघुनंदन जानकिहि सुखअवसर दुख दीन्ह । ८९ ॥

चौ० । भइ दिनकरकुलबिटपकुठारी । कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी ॥
रामसीयमहिसयन निहारी । भयेउ बिषाद निषादहि भारी ॥
बोले लखन मधुर मृदु बानी । ज्ञानबिरागभक्तिरसबानी ॥
कोउ न काहु दुख सुख कर दाता । निजकृतकर्मभोग सब भ्राता ॥
योग बियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रमफंदा ॥
जनम मरन जहं लगि जग जालू । संपति बिपति कर्म अरु कालू ॥
धरनि धाम धन पुर परिवारू । स्वर्ग नरक जहं लगि ब्यवहारू ॥
देखिय सुनिय गुनिय मन मांहीं । मोहमूल परमारथ नाहीं ॥

दो० । सपने होइ भिखारि नृप रंक नाकपति होइ ।
जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंच जिय जोइ । ८० ॥

चौ० । अस बिचारि नहिं कीजिय रोषू । बादि काहु नहिं दीजिय दोषू ॥
मोहनिसा सब सोवनिहारा । देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा ॥
इहि जगयामिनि जागहिं जोगी । परमारथ परिपंचबियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जग जागा । जब सब बिषय बिलास बिरागा ॥
होइ बिबेक मोह भ्रम भागा । तब रघुबीरचरन अनुरागा ॥
सखा परम परमारथ एहू । मन क्रम बचन रामपद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथरूपा । अबिगति अलख अनादि अनूपा ॥
सकल बिकाररहित गतभेदा । कहि निति नेति निरूपहिं बेदा ॥

दो० । भक्त भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुजतनु सुनत मिटै जगजाल । ८१ ॥

चौ० । सखा समुझि अस परिहरि मोहू । सियरघुबीरचरन रत होहू ॥
कहत रामगुन भा भिनुसारा । जागे जग मंगलदातारा ॥
सकल सौच करि राम अन्हाये । सुचि सुजान बटछीर मंगाये ॥
अनुज सहित सिर जटा बनाये । देखि सुमंत नयन जल छाये ॥
हृदय दाह अति बदन मलीना । कह कर जोरि बचन अति दीना ॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा । लै रथ जाहु राम के साथा ॥
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु बेगि फेरि दौ भाई ॥
लषन राम सिय आनेहु फेरी । संशय सकल सकोच निबेरी ॥

दो० । नृप अस कहेउ गुसाइं जस कहिय करौं बलि सोइ ।
करि बिनती पायन परेउ दीन बाल जिमि रोइ । ८२ ॥

चौ० । तात कृपा करि कीजिय सोई । जातें अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा । तात धर्ममग तुम सब सोधा ॥
सिबि दधीचि हरिचन्द नरेसा । सहे धर्म हित कोटि कलेसा ॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना । धर्म धरेउ सहि संकट नाना ॥
धर्म न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ॥
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा । तजे सो तिहुं पुर अपयश छावा ॥
संभावित कहं अपयशलाहू । मरनकोटि सम दारुन दाहू ॥
तुम सन तात बहुत का कहऊं । दिये उतर फिरि पातक लहऊं ॥

दो० । पितुपद गहि कहि कोटि बिधि बिनय करब कर जोरि ।
चिन्ता कवनिहु बात की तात करिय जनि मोरि । ८३ ॥

चौ० । तुम पुनि पितु समान हित मोरे । बिनती करौं तात कर जोरे ॥
सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारे । दुख न पाव नृप सोच हमारे ॥

सुनि रघुनाथसचिवसंबादू । भयेउ सपरिजन बिकल निषादू ॥
पुनि कछु लषन कहेउ कटु बानी । प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी ॥
सकुचि राम निज सपथ दिवाई । लषन संदेसु कहब जनि जाई ॥
कह सुमंत पुनि भूपसंदेसू । सहि न सकिहि सिय बिपिनकलेसू ॥
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुनाथ तुमहि करनीया ॥
नतरु निपट अवलंबबिहीना । मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना ॥

दो० । मैके ससुरे सकल सुख जबहिं जहां मन मान ।
तब तहं रहब सुखेन सिय जब लगि बिपतिबिहान । ९४ ॥

चौ० । बिनती कीन्ह भूप जेहि भांती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥
पितुसंदेस सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना ॥
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू । फिरहु तो सब कर मिटै खभारू ॥
सुनि पतिबचन कहति बैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥
प्रभु करुणामय परम बिबेकी । तनु तजि छांह रहति किमि छेकी ॥
प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई । कहं चंद्रिका चंद्र तजि जाई ॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥
तुम पितु ससुर सरिस हितकारी । उतर देउं फिरि अनुचित भारी ॥

दो० । आरतबस सन्मुख भइउं बिलग न मानब तात ।
आरजसुतपदकमल बिनु बादि जहां लग नात । ९५ ॥

चौ० । पितबैभवबिलास मैं दीठा । नृपमनिमुकुट मिलित पदपीठा ॥
सुखनिधान अस पितु गृह मोरे । पतिबिहीन मन भावन भोरे ॥
ससुर चक्कवय कोसलराऊ । भुवनचारदस प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे होइ जेहि सुरपति लेई । अर्द्धसिंहासन आसन देई ॥
ससुर एतादृस अवधनिवासू । प्रिय परिवार मातु सम सासू ॥
बिन रघुपतिपदपदुमपरागा । मोहि कोउ सपनेहुं सुखद न लागा ॥
अगम पंथ बन भूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहि सब सुखद प्रानपति संगा ॥

दो० । सासु ससुर सन मोरि हुति बिनय करब परि पाय ।
मोर सोच जनि करिय कछु मैं बन सुखी सुभाय । ९६ ॥

चौ० । प्राननाथ प्रिय देवर साथा । बीर धुरीनधरे धनु भाथा ॥
नहिं मगु स्रम भ्रम दुख मन मोरे । मोहि लगि सोच करिय जनि भोरे ॥
सुनि सुमंत सियसीतलबानी । भये बिकल जनु फनि मनिहानी ॥
नयन न सूझ सुनै नहिं काना । कहि न सकै कछु अति अकुलाना ॥
राम प्रबोध कीन्ह बहु भांती । तदपि होइ नहिं सीतल छाती ॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हा । उचित उतर रघुनंदन दीन्हा ॥

मेटि जाइ नहिं रामरजाई । कठिन करमगति कछु न बसाई ॥
रामलषनसियपद सिर नाई । फिरे बनिक जिमि मूर गंवाई ॥

दो० । रथ हांकि हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।
देखि निषाद बिषादबस सिर धुनि धुनि पछिताहिं । ९७ ॥

चौ० । जासु बियोग बिकल पसु ऐसे । प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे ॥
बरबस राम सुमंत पठाये । सुरसरितीर आपु चलि आये ॥
मांगी नाव न केवट आना । कहै तुम्हार मरम मैं जाना ॥
चरनकमलरज कहं सब कहई । मानुषकरनि मूरि कछु अहई ॥
छुवत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठकठिनाई ॥
तरनिउ मुनिघरनी होइ जाई । बाटपरै मोरि नाव उड़ाई ॥
यह प्रतिपालौं सब परिवारू । नहिं जानौं कछु और कबारू ॥
जौ प्रभु अवसि पार गा चहहू । तौ पदपदुम पखारन कहहू ॥

छं० । पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम राउरि आनि दसरथसपथ सब सांची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लषन पै जब लगि न पांव पखारिहौं ।
तौ लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं । ४ ॥

सो० । सुनि केवट के बैन प्रेमलपेटे अटपटे ।
बिहसे करुनाऐन चितै जानकीलषन तन । ४ ॥

चौ० । कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करहु जेहि नाव न जाई ॥
बेगि आनि जल पांव पखारू । होत बिलंब उतारहु पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा । जे कियो जग तिहुं पगहु तें थोरा ॥
पदनख निरखि देवसरि हरषी । सुनि प्रभुबचन मोहमति करषी ॥
केवट रामरजायसु पावा । पानि कठवता भरि लै आवा ॥
अति आनंद उमगि अनुरागा । चरनसरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं । इहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

दो० । पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार ।
पितर पार करि प्रभुहि पुनि मुदित गयेउ लै पार । ९८ ॥

चौ० । उतरि ठाढ़ भये सुरसरिरेता । सीय राम गुह लषन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभु सकुच इहि कछु नहिं दीन्हा ॥
पियहिय की सिय जाननहारी । मनिमुंदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई । केवट चरन गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु हम काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिददावा ॥
अमित काल मैं कीन्ह मजूरी । आजु दीन्ह बिधि सब भरिपूरी ॥

अब कछु नाथ न चाहिय मोरे । दीनदयाल अनुग्रह तोरे ॥
फिरती बार जो कछु मोहि देवा । सो प्रसाद मैं सिर धरि लेवा ॥

दो० । बहुत कीन्ह हठ लखन प्रभु नहिं कछु केवट लेइ ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भक्ति बिमल बर देइ । ९९ ॥

चौ० । तब मज्जन करि रघुकुलनाथा । पूजि पारथी नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहा कर जोरी । मातु मनोरथ पुरउब मोरी ॥
पति देवर संग कुसल बहोरी । आइ करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सियबिनय प्रेमरसपानी । भइ तब बिमल बारि बर बानी ॥
सुनु रघुबीरप्रिया बैदेही । तव प्रभाव जग बिदित न केही ॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरे । तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरे ॥
तुम जो हमहिं बड़ि बिनय सुनाई । कृपा कीन्ह मोहि दीन्ह बड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देब असीसा । सुफल होन हित निज बागीसा ॥

दो० । प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।
पूजिहि सब मनकामना सुजस रहिहि जग छाइ । १०० ॥

चौ० । गंगबचन सुनि मंगलमूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥
तब प्रभु गुहहि कहा घर जाहू । सुनत सूख मुख भा उर दाहू ॥
दीन बचन गुह कह कर जोरी । बिनय सुनिय रघुकुलमनि मोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथ दिखाई । करि दिन चारि चरनसेवकाई ॥
जेहि बन जाइ रहब रघुराई । पर्नकुटी मैं करब सुहाई ॥
तब मो कहँ जस देब रजाई । सो करिहौं रघुबीरदुहाई ॥
सहज सनेह राम लखि तासु । संग लीन्ह गुह हृदय हुलासु ॥
पुनि गुह ग्याति बोलि सब लीन्हा । करि परितोष बिदा तब कीन्हा ॥

दो० । तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवन कीन्ह रघुनाथ । १०१ ।

चौ० । तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू । लखन सखा सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराज दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीत हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भंडारू । पुन्यप्रदेस देस अति चारू ॥
छेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा । सपनेहु जिन्ह प्रतिपच्छ न पावा ॥
सेन सकल तीरथ बर बीरा । कलुष अनीकदलन रनधीरा ॥
संगम सिंहासन सुठि सोहा । छत्र अखयबट मुनिमन मोहा ॥
चंवर जमुनजल गंगतरंगा । देखि होहिं दुखदारिदभंगा ॥

दो० । सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम ।
बंदी बेद पुरानगन कहहिं बिमल गुनग्राम । १०२ ॥

चौ० । को कहि सकै प्रयागप्रभाऊ । कलुषपुंजकुंजरमृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा । सुखसागर रघुबर सुख पावा ॥
कहि सिय लखनहिं सखहिं सुनाई । श्रीमुख तीरथराजबड़ाई ॥
करि प्रनाम देखत बनबागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥
एहि बिधि आइ बिलोकेउ बेनी । सुमिरत सकलसुमंगलदेनी ॥
मुदित अन्हाइ कीन्ह सिवसेवा । पूजि यथाबिधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहं आये । करत दंडवत मुनि उर लाये ॥
मुनिमन मोद न कछु कहि जाई । ब्रह्मानंदरासि जनु पाई ॥

दो० । दीन्ह असीस मुनीस उर अति अनंद अस जानि ।
लोचनगोचर सुकृतफल मनहुं किये बिधि आनि । १०३ ॥

चौ० । कुसलप्रस्न करि आसन दीन्हा । पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हा ॥
कंद मूल फल अंकुर नीके । दिये आनि मुनि मनहुं अमी के ॥
सीय लखन जन सहित सुहाये । अति रुचि राम मूल फल खाये ॥
भये बिगतस्रम राम सुखारे । भरद्वाज मृदु बचन उचारे ॥
आजु सुफल तप तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप जोग बिरागू ॥
सुफल सकल सुभ साधनसाजू । राम तुम्हहिं अवलोकत आजू ॥
लाभअवधि सुखअवधि न दूजी । तुम्हरे दरस आस सब पूजी ॥
अब करि कृपा देहु बर एहू । निज पदसरसिज सहज सनेहू ॥

दो० । करम बचन मन छाड़ि छल जब लगि जन न तुम्हार ।
तब लगि सुख सपनेहु नहीं किये कोटि उपचार । १०४ ॥

चौ० । सुनि मुनिबचन राम सकुचाने । भाव भगति आनंद अघाने ॥
तब रघुबर मुनिसुजस सुहावा । कोटि भांति कहि सबहि सुनावा ॥
सो बड़ सो सबगुनगनगेहू । जेहि मुनीस तुम आदर देहू ॥
मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं । बचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥
यह सुधि पाइ प्रयागनिवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
भरद्वाजआस्रम सब आये । देखन दसरथसुवन सुहाये ॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित भये लहि लोचनलाहू ॥
देहिं असीस परम सुख पाई । फिरे सराहत सुंदरताई ॥

दो० । राम कीन्ह बिस्राम निसि प्रात प्रयाग अन्हाइ ।
चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिर नाइ । १०५ ॥

चौ० । राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं ॥
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं । सुगम सकल मग तुम कहं अहहीं ॥
साथ लागि मुनि सिष्य बुलाये । सुनि मनमुदित पचासक आये ॥
सबहिं रामपद प्रेम अपारा । सबहिं कहहिं मगु दीख हमारा ॥

मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जन्म सुकृत बड़ कीन्हे ॥
करि प्रनाम मुनिआयसु पाई । प्रमुदितहृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई । देखहिं दरस नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्मफल पाई । फिरहिं दुखित मन संग पठाई ॥

दो० । बिदा कीन्ह बटु बिनय करि फिरे पाइ मनकाम ।
उतरि अन्हाने यमुनजल जो सरीर समस्याम । १०६ ॥

चौ० । सुनत तीरबासी नर नारी । धाये निज निज काज बिसारी ॥
लखनरामसियसुंदरताई । देखि करहिं निज भाग्यबड़ाई ॥
अति लालसा सबहिं मन माहीं । नांव गांव पूछत सकुचाहीं ॥
जे तिन महं बयबृद्ध सयाने । तिन्ह करि युक्ति राम पहिचाने ॥
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई । बनहि चले पितुआयसु पाई ॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं । रानी राय कीन्ह भल नाहीं ॥
रामलखनसियरूप निहारी । सोचसनेहबिकल नर नारी ॥
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ॥

दो० । तब रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावन दीन्ह ।
रामरजायसु सीस धरि गवन भवन तिन्ह कीन्ह । १०७ ॥

चौ० । पुनि सिय राम लखन कर जोरी । यमुनहिं कीन्ह प्रनाम बहोरी ॥
गवने सीय सहित दौ भाई । रबितनया करि करत बड़ाई ॥
पथिक अनेक मिलहिं मगु जाता । कहहिं सप्रेम देखि दौ भ्राता ॥
राजलखन सब अंग तुम्हारे । देखि सोच हिय होत हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाये । जोतिष झूठ हमारे भाये ॥
अगम पंथ गिरि कानन भारी । तेहि महं साथ नारि सुकुमारी ॥
करि केहरि बन जाइ न जोई । हम संग चलहिं जो आयसु होई ॥
जाब जहां लगि तहं पहुंचाई । फिरब बहोरि तुमहिं सिर नाई ॥

दो० । इहि बिधि बूझहिं प्रेमबस पुलकगात जल नैन ।
कृपासिंधु फेरहिं तिनहिं करि बिनती मृदु बैन । १०८ ॥

चौ० । जे पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं । तिनहिं नागसुरनगर सिहाहीं ॥
कहि सुकृती केहि घरी बसाये । धन्य पुन्यमय परम सुहाये ॥
जहं जहं रामचरन चलि जाहीं । तेहि समान अमरावति नाहीं ॥
पुन्यपुञ्ज मगनिकटनिवासी । तिनहिं सराहहिं सुरपुरबासी ॥
जो भरि नयन बिलोकहिं रामहिं । सीता लखन सहित घनस्यामहिं ॥
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं । तिनहिं देवसरसरित सराहहिं ॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई ॥
परसि रामपदपद्मपरागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ॥

दो० । कोह करहिं सब विबुधगन बरषहिं सुमन सिहाहिं ॥
देखत गिरि बन बिहँग मृग राम चले मग जाहिं ।१०९॥

चौ० । सीता लषन सहित रघुराई । गाँव निकट जब निकसहिं आई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी । चलहिं तुरत गृह काज बिसारी ॥
रामलषनसियरूप निहारी । पाइ नयनफल होहिं सुखारी ॥
सजल नयन अति पुलक सरीरा । सब भये मगन देखि दोउ बीरा ॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ।
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं । लोचनलाहु लेहु छन एहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं संग लागे ॥
एक नयनमग छबि उर आनी । होहिं सिथिल तन मानस बानी ॥

दो० । एक देखि बटछाँह भलि डासि मृदुल तृन पात ।
कहहिं गँवाइय छनक स्रम गवनब अबहिं कि प्रात ।११०॥

चौ० । एक कलस भरि आनहिं पानी । अँचइय नाथ कहहिं मृदु बानी ॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । राम कृपालु सुसील बिसेषी ॥
जानी स्रमित सीय मन माहीं । घरिक बिलंब कीन्ह बटछाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप देखि मन लोभा ॥
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद्र चकोरा ॥
तरुनतमालबरन तनु सोहा । देखत कामकोटि मन मोहा ॥
दामिनिबरन लषन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥
मुनिपट कटिन्ह कसे तूनीरा । सोहत करकमलन्ह धनु तीरा ॥

दो० । जटा मुकुट सीसन सुभग उर भुज नयन बिसाल ।
सरदपर्बबिधुबदन बर लसत स्वेदकनजाल ।१११ ॥

चौ० । बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा अमित मोरि मति थोरी ॥
रामलषनसियसुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥
थके नारि नर प्रेमपियासे । मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे ॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूछत अति सनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाये । कहहिं बचन मृदु सरल सुभाये ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं । तियसुभाय कछु पूछत डरहीं ॥
स्वामिनि अबिनय छमब हमारी । बिलगु न मानब जानि गँवारी ॥
राजकुँवर दोउ सहज सलोने । इन्ह तें लहि दुति मरकत सोने ॥

दो० । स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुखमाऐन ।
सरदसर्बरीनाथमुख सरदसरोरुहनैन ।११२ ॥

चौ० । कोटिमनोजलजावनिहारे । सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुचि सीय मन महुँ मुसुकानी ॥

तिनहिं बिलोकि बिलोकेउ धरनी । दुहुं सकोच सकुचति बर बरनी ॥
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी । बोली मधुर बचन पिकबयनी ॥
सहजसुभाव सुभग तनु गोरे । नाम लषन लघु देवर मोरे ॥
स्यामबरन बिसालभुजनैना । अति सुंदर सोभत मृदु बैना ॥
बहुरि बदन बिधु अंचल ढांकी । पिय तन चितै भौंह करि बांकी ॥
खंजन मंजु तिरीछन नयनी । निज पति कहेउ तिनहिं सिय सयनी ॥
भईं मुदित सब ग्रामबधूटी । रंकन्ह रतनरासि जनु लूटी ॥

दो० । अति सप्रेम सिय पाय परि बहु बिधि देहिं असीस ।
सदा सोहागिनि रहहु तुम जब लगि महि अहिसीस । ११३ ॥

चौ० । पारबती सम पति प्रिय होहू । देवि न हम पर छाड़ब छोहू ॥
पुनि पुनि बिनय करहिं कर जोरी । जौ इहि मारग फिरिय बहोरी ॥
दरसन देब जानि निज दासी । लखी सीय सब प्रेमपियासी ॥
मधुर बचन कहि कहि परितोषी । जनु कुमुदिनी कौमुदीपोषी ॥
तबहिं लषन रघुबररुख जानी । पूछेउ मगु लोगन मृदु बानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी । पुलकित अंग बिलोचन बारी ॥
मिटा मोद मन भये मलीने । बिधि निधि दीन्ह लीन्ह जनु छीने ॥
समुझि कर्मगति धीरज कीन्हा । सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा ॥

दो० । लषन जानकी सहित बन गवन कीन्ह रघुनाथ ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ । ११४ ॥

चौ० । फिरत नारि नर अति पछिताहीं । दैवहिं दोष देहिं मन माहीं ॥
सहित बिषाद परस्पर कहहीं । बिधिकरतब सब उलटे अहहीं ॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकू । जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥
रूख कलपतरु सागर खारा । तेइ पठये बन राजकुमारा ॥
जौपै इनहिं दीन्ह बनबासू । कीन्ह बादि बिधि भोगबिलासू ॥
ये बिचरहिं मगु बिनु पदत्राना । रचे बादि बिधि बाहन नाना ॥
ये महि परहिं डासि कुस पाता । सुभग सेज कत कीन्ह बिधाता ॥
तरु तर बास इनहिं बिधि दीन्हा । धवल धाम रचि रचि स्रम कीन्हा ॥

दो० । जौं ये मुनिपटधर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार ।
बिबिध भांति भूषन बसन बादि किये करतार । ११५ ॥

चौ० । जौं ये कंद मूल फल खाहीं । बादि सुधादि असन जग माहीं ॥
एक कहहिं ये सहज सुहाये । आपु प्रगट भये बिधि न बनाये ॥
जहं लगि बेद कहेउ बिधि करनी । स्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥
देखहु खोजि भुवन दसचारी । कहं अस पुरुष कहां असि नारी ॥
इनहिं देखि बिधि मन अनुरागा । पटतर योग बनावन लागा ॥

कीन्ह बहुत श्रम एक न आये । तेहि हरषा बन आनि दुराये ॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहि परम धन्य करि मानहिं ।
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥

दो० । इहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर ।
किमि चलिहैं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर । ११६ ॥

चौ० । नारिसनेह बिकल सब होहीं । चकई सांझसमय जिमि सोहीं ॥
मृदु पदकमल कठिन मग जानी । गहबरि हृदय कहहिं मृदु बानी ॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे । सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
जौं जगदीस इनहिं बन दीन्हा । कस न सुमनमय मारग कीन्हा ॥
जौं मांगे पाइय बिधि पाहीं । राखिय सखि इन्ह आंखिनमाहीं ॥
जे नर नारि न अवसर आये । ते सिय राम न देखन पाये ॥
सुनि सरूप पूछहिं अकुलाई । अब लगि गये कहां लगि भाई ॥
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदित फिरहिं नयनफल पाई ॥

दो० । अबला बालक बृद्ध जन कर मींजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमबस लोग इमि राम जहां जहं जाहिं । ११७ ॥

चौ० । गांउं गांउं अस होइ अनंदू । देखि भानुकुलकैरवचंदू ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहिं दोष लगावहिं ॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहिं जिन्ह लोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर लोग लुगाई । बातें सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये । धन्य सो नगर जहां तें आये ॥
धन्य सो सैल देस बन गाऊं । जहं जहं जाहिं धन्य सो ठाऊं ॥
सुख पायो बिरंचि रचि तेही । जे इन्ह के सब भांति सनेही ॥
रामलषनसियकथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥

दो० । इहि बिधि रघुकुलकमलरबि मग लोगन सुख देत ।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत । ११८ ॥

चौ० । आगे राम लषन पुनि पाछें । तापसभेष बिराजत काछें ॥
उभय मध्य सिय सोहति कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ॥
बहुरि कहौं छबि जस मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ॥
प्रभुपदरेख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति सभीता ॥
सीयरामपदअंक बराये । लषन चलहिं मग दाहिन लाये ॥
रामलषनसियप्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
खग मृग मगन देखि छबि होहीं । लिये चोरि चित राम बटोहीं ॥

दो० । जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सीय सहित दौ भाइ ।
भवमग अगम अनंद तें बिनु स्रम रहे सिराइ ।११९ ॥

चौ० । अजहुं जासु उर सपनेहु काऊ । बसहिं राम सिय लषन बटाऊ ॥
रामधामपथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुं मुनि कोई ॥
तब रघुबीर स्रमित सिय जानी । देखि निकट बट सीतल पानी ॥
तहं बसि कंद मूल फल खाई । प्रात अन्हाइ चले रघुराई ॥
देखत बन सर सैल सुहाये । बाल्मीकआस्रम प्रभु आये ॥
राम देखि मुनिबास सुहावन । सुंदर गिरि कानन जल पावन ॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले । गुञ्जत मंजु मधुप मरभूले ॥
खग मृग बिपुल कुलाहल करहीं । रहित बैर प्रमुदित मन चरहीं ॥

दो० । सुचि सुंदर आस्रम निरखि हरषे राजिवनैन ।
सुनि रघुबरआगमन मुनि आगे आये लैन । १२० ॥

चौ० । मुनि कहं राम दंडवत कीन्हा । आसिरबाद बिप्रबर दीन्हा ॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने । करि सनमान आस्रमहिं आने ॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये । मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाये ॥
कन्द मूल फल मधुर मंगाये । सिय सौमित्रि राम फल खाये ॥
बाल्मीकिमन आनंद भारी । मंगलमूरति नयन निहारी ॥
तब करकमल जोरि रघुराई । बोले बचन स्रवन सुखदाई ॥
तुम त्रिकालदरसी मुनिनाथा । बिस्व बदरि जिमि तुम्हरे हाथा ॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी । जेहि जेहि भांति दीन्ह बन रानी ॥

दो० । तातबचन पुनि मातुमत भाइ भरत अस राउ ।
मोकहं दरस तुम्हार प्रभु सब मम पुन्यप्रभाउ । १२१ ॥

चौ० । देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भये सुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहं राउर आयसु होई । मुनि उद्वेग न पावहिं कोई ।
मुनि तापस जिन तें दुख लहहीं । ते नरेस बिनु पावक दहहीं ॥
मंगलमूल बिप्रपरितोषू । दहै कोटि कुल भूसुररोषू ॥
अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊं । सिय सौमित्रि सहित तहं जाऊं ॥
तहं रचि रुचिर परनतृनसाला । बास करौं कछु काल कृपाला ॥
सहज सरल सुनि रघुबरबानी । साधु साधु बोले मुनिज्ञानी ॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू । तुम पालक संततस्रुतिसेतू ॥

छं० । स्रुतिसेतुपालक राम तुम जगदीस माया जानकी ।
जो स्रुजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की ॥
जो सहससीस अहीस महिधर लषन सचराचरधनी ।
सुरकाज धरि नरराजतनु चले दलन खलनिसिचरअनी । ४ ॥

सो० । राम सरूप तुम्हार बचनअगोचर बुद्धिपर ॥
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह । ॥

चौ० । जग पेखन तुम देखनिहारे । बिधि हरि संभु नचावनहारे ॥
तेउ न जानहिं मर्म तुम्हारा । और तुमहिं को जाननिहारा ॥
सो जानै जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हैं तुमहिं होइ जाई ॥
तुम्हरी कृपा तुमहि रघुनंदन । जानत भक्त भक्तउरचंदन ॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी । बिगतबिकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
तुम जो कहहु करहु सब साँचा । जस काछिय तस चाहिय नाचा ॥

दो० । पूछेहु मोहि कि रहौं कहाँ मैं पूछत सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुमहि दिखावौं ठाउँ । १२२ ॥

चौ० । मुनि मुनिबचन प्रेमरससाने । सकुचि राम मन महँ मुसुकाने ॥
बालमीक हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमियरसबोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता । बसहु जहाँ सिय लखन समेता ॥
जिन के स्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे । तिन के हिये सदन तव रूरे ॥
लोचन चातक जिन करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलाखे ॥
निदरहिं सिंधुसरितसरबारी । रूपबिंदु लहि होहिं सुखारी ॥
तिन के हृदय सदन सुखदायक । बसहु लखन सिय सह रघुनायक ॥

दो० । जस तुम्हार मानस बिमल हंसनि जीहा जासु ।
मुकाहल गुनगन चुनहिं बसहु राम हिय तासु । १२३ ॥

चौ० । प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा । सादर जासु लहै नित नासा ॥
तुमहि निबेदित भोजन करहीं । प्रभुप्रसाद पट भूषन धरहीं ॥
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी । प्रीति सहित करि बिनय बिसेखी ॥
कर नित करहिं रामपदपूजा । रामभरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरन रामतीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन के मन माहीं ॥
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुमहि सहित परिवारा ॥
तर्पन होम करहिं बिधि नाना । बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ॥
तुम तें अधिक गुरुहि जिय जानी । सकल भाय सेवहिं सनमानी ॥

दो० । सब करि मांगहि एक फल रामचरनरति होउ ।
तिन के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ । १२४ ॥

चौ० । काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥

सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी । जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥
तुमहिं छाड़ि गति दूसरि नाहीं । राम बसहु तिन्ह के उर माहीं ॥
जननी सम जानहिं परनारी । धन पराव बिष तें बिष भारी ॥
जे हरषहिं परसंपति देखी । दुखित होहिं परबिपति बिसेषी ॥
जिनहि राम तुम प्रानपियारे । तिन के उर सुभ सदन तुम्हारे ॥

दो० । स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिन के सब तुम तात ।
तिन के मन मंदिर बसहु सीय सहित दोउ भ्रात । १२५ ॥

चौ० । अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीतिनिपुन जिन की जग लीका । घर तुम्हार तिन के मन नीका ॥
गुन तुम्हार समुझहिं निज दोसू । जेहि सब भांति तुम्हार भरोसू ॥
रामभक्तप्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥
जाति पांति धन धर्म बड़ाई । प्रिय परिवार सदनसमुदाई ॥
सब तजि तुमहिं रहै लौ लाई । ता के हृदय बसहु रघुराई ॥
स्वर्ग नर्क अपबर्ग समाना । जहं तहं दीख धरे धनुबाना ॥
मन क्रम बचन जो राउर चेरा । राम करहु ताके उर डेरा ॥

दो० । जाहि न चाहिय कबहुं कछु तुम सन सहज सनेह ।
बसहु निरंतर तासु उर सो राउर निज गेह । १२६ ॥

चौ० । इहि बिधि मुनिबर ठाम देखाए । बचन सप्रेम राममन भाए ॥
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक । आस्रम कहौं समय सुखदायक ॥
चित्रकूटगिरि करहु निवासू । तहं तुम्हार सब भांति सुपासू ॥
सैल सुहावन कानन चारू । करि केहरि मृग बिहंग बिहारू ॥
नदी पुनीत पुरान बखानी । अत्रितीय निज तपबल आनी ॥
सुरसरिधार नाम मंदाकिनि । जो सब पातक पोतक डाकिनि ॥
अत्रि आदि मुनिबर तहं बसहीं । करहिं योग जप तप तनु कसहीं ॥
चलहु सफल स्रम सब कर करहू । राम देहु गौरव गिरिबर हू ॥

दो० । चित्रकूटमहिमा अमित कही महामुनि गाइ ।
आइ नहाने सरित बर सीय सहित दोउ भाइ । १२७ ॥

चौ० । रघुबर कहेउ लखन भल घाटू । करहु कतहुं अब ठाहरठाटू ॥
लखन दीख पय उतर करारा । चहुं दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा ॥
नदी पनच सर सम दम दाना । सकल कलुष कलि साउज नाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चूक न घात मार मुठभेरी ॥
अस कहि लखन ठाम देखरावा । थल बिलोकि रघुपति सुख पावा ॥
रमेउ राममन देवन्ह जाना । चले सहित सुरपति परधाना ॥

कीन्ह किरात भेष धरि आये । रचे पर्नतृनसदन सुहाये ।
बरनि न जाइ मंजु दुइ साला । एक ललित लघु एक बिसाला ॥

दो० । लखन जानकी सहित प्रभु राजत पर्न निकेत ।
सोह मदन मुनिभेष जनु रति ऋतुराज समेत । १२८ ॥

चौ० । अमर नाग किन्नर दिगपाला । चित्रकूट आये तेहि काला ॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित देव लहि लोचनलाहू ॥
बरषि सुमन कह देवसमाजू । नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
करि बिनती दुख दुसह सुनाये । हरषित निज निज गेह सिधाये ॥
चित्रकूट रघुनंदन छाये । समाचार सुनि सुनि मुनि आये ॥
आवत देखि मुदित मुनिबृन्दा । कीन्ह दंडवत रघुकुलचन्दा ॥
मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं । सुफल होन हित आशिष देहीं ॥
सियसौमित्रिरामछबि देखहिं । साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥

दो० । यथायोग सनमानि प्रभु बिदा किये मुनिबृन्द ।
करहिं योग जप यज्ञ तप निजआस्रमन स्वछन्द । १२९ ॥

चौ० । यह सुधि कोल्ह किरातन्ह पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई ॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥
तिन महं जिन्ह देखे दोउ भ्राता । और तिन्हहिं पूछहिं मग जाता ॥
कहत सुनत रघुबीरनिकाई । आय सबन देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे । प्रभुहिं बिलोकत अति अनुरागे ॥
चित्र लिखे जनु जहं तहं ठाढ़े । पुलकसरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेहमगन सब जाने । कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी । बचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥

दो० । अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभु पाय ।
भाग्य हमारे आगमन राउर कोसलराय । १३० ॥

चौ० । धन्य भूमि बन पंथ पहारा । जहं जहं नाथ पांव तुम धारा ॥
धन्य बिहग मृग काननचारी । सुफल जन्म भये तुमहिं निहारी ॥
हम सब धन्य सहित परिवारा । देखि नयन भरि दरस तुम्हारा ॥
कीन्ह बास भल ठाम बिचारी । इहां सकल ऋतु रहब सुखारी ॥
हम सब भांति करब सेवकाई । करि केहरि अहि बाघ बराई ॥
बन बीहड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
तहं तहं तुमहिं अहेर खेलाउब । सर निर्झर जल ठाम देखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

दो० । बेदबचन मुनिमन अगम ते प्रभु करुनाऐन ।
बचन किरातन के सुनत जिमि पितु बालकबैन । १३१ ॥

चौ० । रामहिं केवल प्रेम पियारा । जानि लेहु जो जाननिहारा ॥
राम सकल बनचर परितोषे । कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे ॥
बिदा किये सिर नाइ सिधाये । प्रभुगुन कहत सुनत घर आये ॥
इहि बिधि सीय सहित दोउ भाई । बसहिं बिपिन [illegible]मुनिसुखदाई ॥
जब तें आइ रहे रघुनायक । तब तें भो [illegible] मंगलदायक ॥
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना । मंजु बलित बर बेलिबिताना ॥
सुरतरु सरिस सुभाव सुहाये । मनहुं बिबुधबन परिहरि आये ॥
गुञ्जत मंजुल मधुकरस्रेनी । त्रिबिध बयारि बहै सुखदेनी ॥

दो० । नीलकंठ कलकंठ सुक चातिक चक्क चकोर ।
भांति भांति बोलहिं बिहग स्रवनसुखद चितचोर । १३२ ॥

चौ० । करि केहरि कपि कोल कुरंगा । बिगतबयर बिहरहिं इकसंगा ॥
फिरत अहेर रामछबि देखी । होहिं मुदित मृगबृन्द बिसेषी ॥
बिबुधबिपिन जहं लगि जग माहीं । देखि रामबन सकल सिहाहीं ॥
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सरि सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥
उदयअस्तगिरि अरु कैलासू । मंदर मेरु सकल सुरबासू ॥
सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूटयस गावहिं तेते ॥
बिंधु मुदित मन सुख न समाई । स्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई ॥

दो० । चित्रकूट के बिहंग मृग बेलि बिटप तृनजाति ।
पुन्यपुञ्ज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति । १३३ ॥

चौ० । नयनवंत रघुपतिहिं बिलोकी । पाइ जन्मफल होहिं बिसोकी ॥
परसि चरनरज अचर सुखारी । भये परम पद के अधिकारी ॥
सो बन सैल सुभाय सोहावन । मंगलमय अतिपावनपावन ॥
महिमा कहौं कवन बिधि तासू । सुखसागर जहं कीन्ह निवासू ॥
पय पयोधि तजि अवध बिहाई । जहं सिय राम लषन रहे आई ॥
कहि न सकहिं सुखमा जस कानन । जौं सत सहस होहिं सहसानन ॥
सो मैं बरनि कहौं बिधि केही । डाबरकमठ कि मंदर लेही ॥
सेवहिं लषन कर्म मन बानी । जाइ न सील सनेह बखानी ॥

दो० । छन छन लखि सियरामपद जानि आपु पर नेह ।
करत न सपनेहु लषन चित बंधु मातु पितु गेह । १३४ ॥

चौ० । राम संग सिय रहहिं सुखारी । पुरपरिजनगृहसुरति बिसारी ॥
छन छन पियबिधुबदन निहारी । प्रमुदित मनहुं चकोरकुमारी ॥
नाहनेह नित बढ़त बिलोकी । हरषित रहति दिवस जिमि कोकी ॥
सियमन रामचरन अनुरागा । अवध सहस सम बन प्रिय लागा ॥

पर्नकुटी प्रिय प्रीतम संगा । प्रिय परिवार कुरंग बिहंगा ॥
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिवर । असन अमिय सम कंद मूल फर ॥
नाथ साथ साथरी सुहाई । मयनसयन सत सम सुखदाई ॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू । तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू ॥

दो० । सुमिरत रामहिं तजहिं जन तृन सम बिषयबिलासु ।
रामप्रिया जगजननि सिय कछु न आचरज तासु । १३५ ॥

चौ० । सीय लखन जेहि बिधि सुख लहहीं । सोइ रघुनाथ करैं सोइ कहहीं ॥
कहहिं पुरातनि कथा कहानी । सुनहिं लखन सिय अति सुख मानी ॥
जब जब राम अवध सुधि करहीं । तब तब बारि बिलोचन भरहीं ॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरतसनेहसीलसेवकाई ॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरज धरहिं कुसमय बिचारी ॥
लखि सिय लखन बिकल होइ जाहीं । जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं ॥
प्रियाबंधुगति लखि रघुनंदन । धीर कृपालु भक्तउरचंदन ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता । सुनि सुख लहहिं लखन अरु सीता ॥

दो० । राम लखन सीता सहित सोहत पर्ननिकेत ।
जिमि बासव बसु अमरपुर सची जयंत समेत । १३६ ॥

चौ० । जुगवहिं प्रभु सिय अनुजहि कैसे । पलक बिलोचनगोलक जैसे ॥
सेवहिं लखन सीय रघुबीरहिं । जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहिं ॥
इहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी । खगमृगसुरतापसहितकारी ॥
कहेउँ रामबनगवन सुहावा । सुनहु सुमंत अवध जिमि आवा ॥
फिरेउ निषाद प्रभुहिं पहुँचाई । सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू । कहि न सकहिं जस भयउ बिषादू ॥
राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल ब्याकुल भारी ॥
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं । जिमि बिनु पंख बिहग अकुलाहीं ॥

दो० । नहिं तृन चरहिं न पियहिं जल मोचहिं लोचन बारि ।
ब्याकुल भयेउ निषादगन रघुबर बाजि निहारि । १३७ ॥

चौ० । धरि धीरज तब कहहिं निषादू । अब सुमंत परिहरहु बिषादू ॥
तुम पंडित परमारथज्ञाता । धरहु धीर लखि बाम बिधाता ॥
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारयो बरबस आनी ॥
सोकसिथिल रथ सकहिं न हाँकी । रघुबरबिरहपीर उर बाँकी ॥
तरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अटकि परहिं फिरि चितवहिं पीछे । रामबियोग बिकल दुख तीछे ॥
जो कह राम लखन बैदेही । हिंकरि हिंकरि हय हेरहिं तेही ॥
बाजिबिरहगति किमि कहि जाती । बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती ॥

दो० । भये निषाद बिषादबस देखत सचिव तुरंग ।
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग । १३८ ॥

चौ० । गुह सारथिहि फिरौ पहुंचाई । बिरहबिषाद बरनि नहिं जाई ॥
चले अवध लै रथहि निषादा । होत छनहिं छन मगन बिषादा ॥
सोच सुमंत बिकल दुख दीना । धिक जीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहिहि न अंतहु अधम सरीरू । जस न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ॥
भये अयसअघभाजन प्राना । कौन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मंदमति अवसर चूका । अजहुं न हृदय होत दुइ टूका ॥
मींजि हाथ सिर धुनि पछिताई । मनहुं कृपन धनरासि गवांई ॥
बिरद बांधि बर बीर कहाई । चले समर जनु सुभट पराई ॥

दो० । बिप्र बिबेकी बेदबिद संमत साधु सजाति ।
जिमि धोखे मद पान करि सचिव सोच तेहि भांति । १३९ ॥

चौ० । जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता कर्म मन बानी ॥
रहै कर्मबस परिहरि नाहू । सचिवहृदय तिमि दारुन दाहू ॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनै न स्रवन बिकलमति भोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुह लाटी । जिय न जाइ उर अवधि कपाटी ॥
बिबरन भयेउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुं पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥
बचन न आव हृदय पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥

दो० । धाइ पूछिहहिं मोहि जब बिकल नगरनरनारि ।
उतर देब मैं सबहि तब हृदय बज्र बैठारि । १४० ॥

चौ० । पूछिहहिं दीन दुखित सब माता । कहब काह मैं तिनहिं बिधाता ॥
पूछिहहिं जबहिं लषनमहतारी । कहिहौं कवन संदेस सुखारी ॥
रामजननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥
पूछत उतर देब मैं तेही । गे बन राम लषन बैदेही ॥
जेइ पूछिहि तेहि उतर देवा । जाइ अवध अब यह सुख लेवा ॥
पूछहिं जबहिं राउ दुखदीना । जीवन जासु रामआधीना ॥
देहौं उतर कवन मुह लाई । आयेउं कुसल कुंवर पहुंचाई ॥
सुनत लषनसियरामसंदेसू । तृन इव तनु परिहरब नरेसू ॥

दो० । हृदय न बिदरत पंक जिमि बिछुरत प्रीतम नीर ।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यह जातना सरीर १४१ ॥

चौ० । इहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसातीर तुरत रथ आवा ॥
बिदा किये करि बिनय निषादू । फिरे पाय परि बिकल बिषादू ॥

पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुरु बाम्हन गाई ॥
बैठि बिटप तर दिवस गवांवा । सांझ समय तैं अवसर पावा ॥
अवध प्रवेस कीन्ह अंधियारे । पैठु भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये । भूपद्वार रथ देखन आये ॥
रथ पहिचानि बिकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
नगर नारि नर ब्याकुल कैसे । निघटत नीर मीनगन जैसे ॥

दो० । सचिवआगमन सुनत सब बिकल भई रनिवास ।
भवन भयंकर लाग तेहि मानहु प्रेतनिवास । १४२ ॥

चौ० । अति आरत सब पूछहिं रानी । उतर न आव बिकल भइ बानी ॥
सुनै न स्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहां नृप जेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिवबिकलाई । कौसिल्यागृह गईं लिवाई ॥
जाइ सुमन्त दीख कस राजा । अमियरहित जनु चंद बिराजा ॥
आसन सयन बिभूषनहीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसास सोच इहि भांती । सुरपुर तें जनु खंसेउ ययाती ॥
लेत सोच भरि छिनछिन छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ॥

दो० । देखि सचिव जयजीव कहि कीन्हेसि दंडप्रनाम ।
सुनत उठे ब्याकुल नृपति कहु सुमन्त कहं राम । १४३ ॥

चौ० । भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूछत राउ नयन भरि बारी ॥
राम कुसल कहु सखा सनेही । कहं रघुनाथ लखन बैदेही ॥
आने फेरि कि बनहिं सिधाये । सुनत सचिव लोचन जल छाये ॥
सोकबिकल पुनि पूछ नरेसू । कहु सियरामलखनसंदेसू ॥
रामरूपगुनसीलसुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
राज सुनाइ दीन्ह बनबासू । सुनि मन भयेउ न हरख हरासू ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना । को पापी बड़ मोहि समाना ॥

दो० । सखा राम सिय लखन जहं तहां मोहि पहुंचाउ ।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहौं सत भाउ । १४४ ॥

चौ० । पुनि पुनि पूछत मंत्रिहि राऊ । प्रीतम सुअनसंदेस सुनाऊ ॥
मनकु सखा सोइ करिय उपाऊ । राम लखन सिय बेगि दिखाऊ ॥
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी । महाराज तुम पंडित ग्यानी ॥
बीर सुधीर धुरंधर देवा । साधुसमाज सदा तुम सेवा ॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगा । हानि लाभ प्रियमिलनबियोगा ॥
कालकर्मबस होहिं गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाईं ॥

सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥
धीरज धरहु बिबेक बिचारी । छाड़िय सोच सकल हितकारी ॥

दो० । प्रथम बास तमसा भयेउ दूसर सुरसरितीर ।
न्हाइ रहे जलपान करि सिय समेत दोउ बीर । १४५ ॥

चौ० । केवट कीन्ह बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगबेर गवाँई ॥
होत प्रात बटछीर मंगावा । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥
रामसखा तब नाव मंगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
लखन धरे धनुबान बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रनाम तात सन कहेहु । बार बार पद पंकज गहेहु ॥
करबि पाय परि बिनय बहोरी । तात करिय जनि चिंता मोरी ॥
बनमग मंगल कुसल हमारे । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे ॥

छं० । तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननी सकल परितोषि करि परि पाय करि बिनती घनी ।
तुलसी करेहु सोइ यतन जेहि बिधि कुसल रह कोसलधनी । ५ ॥

सो० । गरु सन कहब संदेस बार बार पदपद्म गहि ।
करब सोइ उपदेस जेहि न सोच मोहि अवधपति । ५ ॥

चौ० पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनायहु बिनती मोरी ॥
सोइ सब भांति मोर हितकारी । जातें रह नरनाह सुखारी ॥
कहब संदेस भरत के आये । नीति न तजब राजपद पाये ॥
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी । सयेहु मातु सकल सम जानी ॥
और निबाहब भायप भाई । करि पितुमातुसुजनसेवकाई ॥
तात भांति तेहि राखब राऊ । सोच मोर जेहि करहिं न काऊ ॥
लखन कहेउ कछु बचन कठोरा । बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
बार बार निज सपथ दिवाई । कहबि न तात लखनलरिकाई ॥

दो० । कहि प्रनाम कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल पुलकपल्लवित देह । १४६ ॥

चौ० । तेहि अवसर रघुबर रुख पाई । केवट पारहिं नाव चलाई ॥
रघुकुलतिलक चले इहि भांती । देखेउं ठाढ़ कुलिस करि छाती ॥
मैं आपन किमि कहउं कलेसू । जियत फिरेउं लै रामसंदेसू ॥
अस कहि सचिव बचन रहि गयेऊ । हानिगलानिसोचबस भयेऊ ॥
सुनत सुमंतबचन नरनाहू । परेउ धरनि उर दारुन दाहू ॥
तलफत बिषम मोह मन मापा । मांजा मनहुं मीन कहं व्यापा ॥

करि बिलाप सब रोवहिं रानी । महा बिपति किमि जाइ बखानी ॥
सुनि बिलाप दुखहूं दुख लागा । धीरजहूं कर धीरज भागा ॥

दो० । भयउ कोलाहल अवध अति सुनि नृपराउर सोर ।
बिपुल बिहग बन परेउ निसि मानहुं कुलिस कठोर । १४७ ॥

चौ० । प्रान कंठगत भयेउ भुआलू । मनि बिहीन जिमि ब्याकुल ब्यालू ॥
इंद्रिय सकल बिकल भइं भारी । जनु सर सरसिजबन बिनु बारी ॥
कौसल्या नृप दीख मलीना । रबिकुलरबि अंथये जनु दीना ॥
उर धरि धीर राममहतारी । बोली बचन समय अनुसारी ॥
नाथ समुझि मन करिय बिचारू । रामबियोग पयोधि अपारू ॥
करनधार तुम अवधि जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय बनिक समाजू ॥
धीरज धरिय तो पाइय पारू । नाहित बूड़िहि सब परिवारू ॥
जो जिय धरिय बिनय पिय मोरी । राम लखन सिय मिलब बहोरी ॥

दो० । प्रियाबचन मृदु सुनत नृप चितयउ आंखि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि । १४८ ॥

चौ० । धरि धीरज उठि बैठ भुआलू । कहु सुमंत कहं राम कृपालू ॥
कहां लखन कहं राम सनेही । कहं प्रिय पुत्रबधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहु भांती । भइ युग सरिस सिराति न राती ॥
तापसअंधसापसुधि आई । कौसल्यहिं सब कथा सुनाई ॥
भयउ बिकल बरनत इतिहासा । रामरहित धिक जीवन आसा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा । जेइ न प्रेमपन मोर निबाहा ॥
हा रघुनन्दन प्रानपिरीते । तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते ॥
हा जानकी लखन हा रघुबर । हा पितु हित चित चातक जलधर ।

दो० । राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबरबिरह राउ गये सुरधाम । १४९ ॥

चौ० । जियनमरनफल दसरथ पावा । अंड अनेक अमल जस छावा ॥
जियत राम बिधुबदन निहारी । रामबिरह मरि मरन संवारी ॥
सोकबिकल सब रोवहिं रानी । रूप सील बल तेज बखानी ॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमि तल बारहिं बारा ॥
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी । घर घर रुदन करहिं पुरबासी ॥
अंथयेउ आजु भानुकुलभानू । धर्मअवधि गुनरूपनिधानू ॥
गारी सकल कैकयिहि देहीं । नयनबिहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
इहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी । आये सकल महामुनि ज्ञानी ॥

दो० । तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।
सोक निवारेउ सबहि कर निज बिज्ञान प्रकास । १५० ॥

चौ० । तेल नाव भरि नृपतनु राखा । दूत बुलाइ बहुरि अस भाखा ॥
धावहु बेगि भरत पहं जाहू । नृपसुधि कतहुं कहहु जनि काहू ॥
इतने कहेहु भरत सन जाई । गुरु बुलाइ पठये दो भाई ॥
मुनि मुनिआयसु धावन धाये । चले बेगि बर बाजि लजाये ॥
अनरथ अवध अरंभेउ जब तें । कुसगुन होहिं भरत कहं तब तें ॥
देखहिं राति भयानक सपना । जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥
बिप्र जेंवाइ देहिं दिन दाना । सिवअभिषेक करहिं बिधि नाना ॥
मांगहिं हृदय महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥

दो० । इहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुंचे आइ ।
गुरुअनुसासन स्रवन सुनि चले गनेस मनाइ । १५१ ॥

चौ० । चले समीरबेगि हय हांके । नांघत सरित सैल बन बांके ॥
हृदय सोच बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जिय जाउं उड़ाई ॥
एक निमेष बरष सम जाई । इहि बिधि भरत नगर नियराई ॥
असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभांति कुखेत करारा ॥
खर सृगाल बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होहिं भरतउर सूला ॥
स्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर बिसेष भयावन लागा ॥
खग मृग हय गज जाहिं न जोये । रामबियोग कुरोग बिगोये ॥
नगरनारिनर निपट दुखारी । मनहुं सबनि सब संपति हारी ॥

दो० । पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गंवहि जोहारहिं जाहिं ।
भरत कुसल पूछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं । १५२ ॥

चौ० । हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दस दिसि लागि दवारी ॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुलजलरुहचंदिनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारहिं भेंटि भवन लै आई ॥
भरत दुखित परिवार निहारा । मानहुं तुहिन बनज बन मारा ॥
कैकयी हरषित इहि भांती । मनहुं मुदित दव लाइ किराती ॥
सुतहिं ससोच देखि मन मारे । पूछति नैहर कुसल हमारे ॥
सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूछी निज कुलकुसलभलाई ॥
कहु कहं तात कहां सब माता । कहं सिय राम लखन प्रिय भ्राता ॥

दो० । सुनि सुतबचन सनेहमय कपटनीर भरि नैन ।
भरतस्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन । १५३ ॥

चौ० तात बात मैं सकल संवारी । भइ मंथरा सहाय बिचारी ॥
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ । भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ ॥
सुनत भरत भये बिकल बिषादा । जनु सहमेउ करि केहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी । परउ भूमि तल व्याकुल भारी ॥

चलत न देखन पायेउं तोही । तात न रामहिं सौंपेउ मोही ॥
बहुरि धीर धरि उठे संभारी । कहु पितुमरनहेतु महतारी ॥
सुनि सुतबचन कहति कैकेई । मर्म पांछि जनु माहुर देई ॥
आदिहि तें सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी ॥

दो० । भरतहिं बिसरेउ पितुमरन सुनत रामबन गौन ।
हेतु अपन पुनि जानि जिय थकित रहे धरि मौन । १५४ ॥

चौ० । बिकल बिलोकि सुतहिं समुझावति । मनहुं जरे पर लोन लगावति ॥
तात राउ नहिं सोचन जोगू । बिढ़इ सुकृत जस कीन्हेउ भोगू ॥
जीवत सकल जनमफल पाये । अंत अमरपतिसदन सिधाये ॥
अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राजपुर करहू ॥
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा । पाके छत जनु लागु अंगारा ॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा । पापिनि सबहि भांति कुलनासा ॥
जौ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारेसि मोही ॥
पेड़ काटि तैं पालव सींचा । मीनजिअन हित बारि उलीचा ॥

दो० । हंसबंस दसरथ जनक राम लखन से भाइ ।
जननी तू जननी भई बिधि तें कहा बसाइ । १५५ ॥

चौ० । जब तें कुमति कुमत जिय ठयऊ । खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
बर मांगत मन भइ नहिं पीरा । गरि न जीह मुंह परेउ न कीरा ॥
भूपप्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरनकाल बिधि मति हरि लीन्ही ॥
बिधिहुं न नारिहृदयगति जानी । सकलकपटअघअवगुनखानी ॥
सरल सुसील धर्मरत राऊ । सो किमि जानहिं तीयसुभाऊ ॥
अस को जीवजंतु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥
भे अति अहित राम तेउ तोही । को तू अहसि सत्य कहु मोही ॥
जो हसि सो हसि मुंह मसि लाई । आंखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

दो० । रामबिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी बादि कहौं कछु तोहि । १५६ ॥

चौ० । सुनि सत्रुघ्न मातुकुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुबरी तहं आई । बसन बिभूषन बिबिध बनाई ॥
लखि रिस भरेउ लखनलघुभाई । बरत अनल घृतआहुति पाई ॥
हुमकि लात तकि कूबर मारा । परि महभरि महि करति पुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू । दलित दसन मुख रुधिरप्रचारू ॥
आहि दइय मैं काह नसावा । करत नीक फल अनइस पावा ॥
पुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसीटन धरि धरि झोंटी ॥
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई । कौसल्या पहिं गे द्वौ भाई ॥

दो० । मलिन बसन बिबरन बिकल कृससरीर दुखभार ।
कनककमलबरबेलिबन मानहुं हनी तुसार । १५७ ॥

चौ० । भरतहिं देखि मातु उठि धाई । मूर्छित अवनि परी झंव आई ॥
देखत भरत बिकल भये भारी । परे चरन तनु दसा बिसारी ॥
मातु तात कहं देहि देखाई । कहं सिय राम लखन दौ भाई ॥
कैकयि कत जनमी जग मांझा । जौ जनमी भइ काहे न बांझा ॥
कुलकलंक जेहि जनमेउ मोही । अपयसभाजन प्रियजनद्रोही ॥
को त्रिभुवन मोहि सरिस अभागी । गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥
पितु सुरपुर बन रघुकुलकेतू । मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिक मोहि भयेउं बेनुबन आगी । दुसह दाह दुखदूषनभागी ॥

दो० । मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी संभारि ।
लिये उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि । १५८ ॥

चौ० । सरल सुभाय माय हिय लाये । अति हित मनहुं राम फिरि आये ॥
भेंटेउ बहुरि लखनलघुभाई । सोक सनेह न हृदय समाई ॥
देखि सुभाव कहत सब कोई । राममातु असि काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे । आंसु पोंछि मृदु बचन उचारे ॥
अजहुं बच्छ बलि धीरज धरहू । कुसमय समुझि सोक परिहरहू ॥
जनि मानहु हिय हानि गलानी । कालकर्मगति अघटित जानी ॥
काहुहि दोष देहु जनि ताता । भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता ॥
जो ऐसेहु दुख मोहि जिआवा । अजहुं को जानै का तेहि भावा ॥

दो० । पितुआयसु भूषन बसन तात तजे रघुबीर ।
बिस्मय हर्ष न हृदय कछु पहिरे बलकलचीर । १५९ ॥

चौ० । मुख प्रसन्न मन राग न रोषू । सब कर सब बिधि करि परितोषू ॥
चले बिपिन सुनि सिय संग लागी । रही न रामचरनअनुरागी ॥
सुनतहि लखन चले उठि साथा । रहे न यतन किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही सिर नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥
राम लखन सिय बनहि सिधाये । गई न संग न प्रान पठाये ॥
यह सब भा इन्ह आंखिन्ह आगे । तउ न तजा तनु जीव अभागे ॥
मोहि न लाज निज नेह निहारी । राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जियै मरै भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो० । कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवास ।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुं सोकनिवास । १६० ॥

चौ० । बिलपहिं बिकल भरत दौ भाई । कौसल्या लिय हृदय लगाई ॥
भांति अनेक भरत समुझाये । कहि बिबेक बर बचन सुनाये ॥

भरतहु मातु सकल समुझाई । कहि पुरानश्रुतिकथा सुहाई ॥
छलबिहीन सुचि सरल सुबानी । बोले भरत जोरि जुग पानी ॥
जे अघ मातु पिता गुरु मारे । गाइगोठ महिसुरपुर जारे ॥
जे अघ तियबालकबध कीन्हे । मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीं । कर्मबचनमनभव कबि कहहीं ॥
ते पातक मोहि होहु बिधाता । जौं यह होइ मोर मत माता ॥

दो० । जे परिहरि हरिहरचरन भजहिं भूतगन घोर ।
तिन्ह की गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर । १६१ ॥

चौ० । बेंचहिं बेद धर्म दुहि लेहीं । पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी । बेदबिदूषक बिस्वबिरोधी ॥
लोभी लंपट लोल लबारा । जे ताकहिं परधन परदारा ॥
पावउं मैं तिन्ह करि गति घोरा । जौं जननी यह संमत मोरा ॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे । परमारथपथबिमुख अभागे ॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिन्हहि न हरिहरसुजस सुहाई ॥
तजि श्रुतिपंथ बामपथ चलहीं । बंचक बिरचि भेष जग छलहीं ॥
तिन्ह की गति मोहि संकर देऊ । जननी जौं यह जानौं भेऊ ॥

छं० । मन बचन कर्म कृपायतन कर दास मैं सुनु मातु री ।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥
अस कहत लोचन बहत जल तनु पुलक नख लेखत मही ।
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभुपदरत सही । ६ ॥

दो० । मातु भरत के बचन सुनि सांचे सरल सुभाय ।
कहति रामप्रिय तात तुम सदा बचन मन काय । १६२ ॥

चौ० । राम प्रान तें प्रान तुम्हारे । तुम रघुपतिहि प्रान तें प्यारे ॥
बिधु बिष चुवै स्रवै हिम आगी । होइ बारिचर बारि बिरागी ॥
भये ग्यान बरु मिटै न मोहू । तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार यह जो जग कहहीं । सो सपनेहु सुख सुगति न लहहीं ॥
अस कहि मातु भरत हिय लाये । थन पय स्रवहिं नयन जल छाये ॥
करत बिलाप बिपुल इहि भांती । बैठें बीति गई सब राती ॥
बामदेव बसिष्ठ मुनि आये । सचिव महाजन सकल बुलाये ॥
मुनि बहु भांति भरत उपदेसे । कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥

दो० । तात हृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुरुबचन सुनि करन कहेउ सब काजु । १६३ ॥

चौ० । नृपतनु बेदबिहित अन्हवावा । परम बिचित्र बिमान बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं राम दरसनअभिलाषी ॥

चंदन अगर भार बहु आये । अमित अनेक सुगंध सुहाये ॥
सरजुतीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
इहि बिधि दाहक्रिया सब कीन्ही । बिधिवत न्हाइ तिलांजलि दीन्ही ॥
सोधि सुमृति सब बेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात्रबिधाना ॥
जहं जस मुनिबर आयसु दीन्हा । तहं तस सहस भांति सब कीन्हा ॥
भये बिसुद्ध दिये सब दाना । धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥

दो० । सिंहासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।
दिय भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरनकाम । १६४ ॥

चौ० । पितु हित भरत कीन्ह जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी ॥
सुदिन सोधि मुनिबर तब आये । सकल महाजन सचिव बुलाये ॥
बैठे राजसभा सब जाई । पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरत बसिष्ट निकट बैठारे । नीतिधर्ममय बचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी । कैकयि कठिन कीन्ह जसि करनी ॥
भूपधर्मब्रतसत्य सराहा । जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा ॥
कहत रामगुनसीलसुभाऊ । सजल नयन पुलके मुनिराऊ ॥
बहुरि लखन सियप्रीति बखानी । सोकसनेहमगन मुनि ज्ञानी ॥

दो० । सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनि नाथ ।
हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस बिधिहाथ । १६५ ॥

चौ० । अस बिचारि केहि दीजिय दोषू । ब्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात बिचार करहु मन माहीं । सोचयोग दसरथ नृप नाहीं ॥
सोचिय बिप्र जो बेदबिहीना । तजि निज धर्म बिषयलयलीना ॥
सोचिय नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ॥
सोचिय बैस्य कृपन धनवानू । जो न अतिथिसिवभक्त सुजानू ॥
सोचिय सूद्र बिप्रअपमानी । मुखर मानप्रिय ज्ञानगुमानी ॥
सोचिय पुनि पतिबंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
सोचिय बटु निज ब्रत परिहरई । जो नहिं गुरुआयसु अनुसरई ॥

दो० । सोचिय गृही जो मोहबस करै धर्मपथत्याग ।
सोचिय जती प्रपंचरत बिगतबिबेकबिराग । १६६ ॥

चौ० । बैखानस सोइ सोचन योगू । तप बिहाय जेहि भावै भोगू ॥
सोचिय पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुरु बन्धु बिरोधी ॥
सब बिधि सोचिय परअपकारी । निजतनुपोषक निर्दय भारी ॥
सोचनीय सबही बिधि सोई । जो न छाड़ि छल हरिजन होई ॥
सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहै न अब होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
बिधि हरि हर सुरपति दिसिनाथा । बरनहिं सब दसरथगुनगाथा ॥

दो० । कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु ।
राम लखन तुम सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु । १६७ ॥

चौ० । सब प्रकार भूपति बड़भागी । बादि बिषाद करिय तेहि लागी ॥
यह सुनि समुझि सोच परिहरहू । सिर धरि राजरजायसु करहू ॥
राय राजपद तुम कहँ दीन्हा । पिताबचन फुर चाहिय कीन्हा ॥
तजे राम जेहि बचनहि लागी । तनु परिहरेउ रामबिरहागी ॥
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितुबचन प्रमाना ॥
करहु सीस धरि भूपरजाई । है तुम कहँ सब भाँति भलाई ॥
परसुराम पितुआज्ञा राखी । मारी मातु लोक सब साखी ॥
तनय ययातिहि जौबन दयऊ । पितुआज्ञा अघ अजस न भयऊ ॥

दो० । अनुचित उचित बिचार तजि जे पालहिं पितुबैन ।
ते भाजन सुखसुजस के बसहिं अमरपतिऐन । १६८ ॥

चौ० । अवसि नरेसबचन फुर करहू । पालहु प्रजा सोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू । तुम कहँ सुकृत सुजस नहिं दोषू ॥
बेदबिदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावै टीका ॥
करहु राज परिहरहु गलानी । मानहु मोर बचन हित जानी ॥
सुनि सुख लहब राम-बैदेही । अनुचित कहब न पंडित केही ॥
कौसल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ॥
परम तुम्हार राम सब जानिहिं । सो सब बिधि तुम सन भल मानिहिं ॥
सौंपेहु राज राम के आये । सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥

दो० । कीजिय गुरआयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।
रघुपति आये उचित जस तस तब करब बहोरि । १६९

चौ० । कौसल्या धरि धीरज कहई । पूत पितागुरआयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हित मानी । तजिय बिषाद कालगति जानी ॥
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू । तुम एहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा । तुमहीं सुत सब कहँ अवलंबा ॥
लखि बिधि बाम कालकठिनाई । धीरज धरहु मातु बलि जाई ॥
सिर धरि गुरआयसु अनुसरहू । प्रजा पालि परिजनदुख हरहू ॥
गुरु के बचन सचिव अभिनंदन । सुनत भरतहिय हित जनु चंदन ॥
सुनी बहोरि मातुमृदुबानी । सीलसनेह सरल रससानी ॥

छं० । सानी सरल रस मातुबानी सुनि भरत ब्याकुल भये ।
लोचनसरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये ।
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की । ० ॥

सो० । भरत कमलकर जोरि धर्मधुरंधर धीर धरि ।
बचनअमिय जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहिं । ६ ॥

चौ० । मोहि उपदेस दीन्ह गुरु नीका । प्रजासचिवसंमत सबही का ॥
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहिय कीन्हा ॥
गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी । सुनि मनमुदित करिय भल जानी ॥
उचित कि अनुचित किये बिचारू । धर्म जाइ सिर पातकभारू ॥
तुम तौ देहु सरल सिख सोई । जो आचरत मोर हित होई ॥
यद्यपि यह समुझत हौं नीके । तदपि होत परितोष न जी के ॥
अब तुम बिनय मोरि सुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावन देहू ॥
उत्तर देउं छमब अपराधू । दुखित दोषगुन गनहिं न साधू ॥

दो० । पितु सुरपुर सिय राम बन करन कहहु मोहि राज ।
इहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काज । १७० ॥

चौ० । हित हमार सियपतिसेवकाई । सो हरिलीन्ह मातुकुटिलाई ॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपाय मोर हित नाहीं ॥
सोकसमाज राज केहि लेखे । लषनरामसियपद बिनु देखे ॥
बादि बसन बिनु भूषनभारू । बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू ॥
सरुज सरीर बादि बहु भोगा । बिनु हरिभक्ति जाय जप योगा ॥
जाय जीव बिनु देह सुहाई । बादि मोर सब बिनु रघुराई ॥
जाउं राम पहं आयसु देहू । एकहि अंक मोर हित येहू ॥
मोहि नृप करि आपन भल चहहू । सो सनेहजड़तावस कहहू ॥

दो० । कैकेयीसुत कुटिलमति रामबिमुख गतलाज ।
तुम चाहत सुख मोहबस मोहि से अधम के राज । १७१ ॥

चौ० । कहौं सांच सब सुनि पतियाहू । चाहिय धर्मसील नरनाहू ॥
मोहि राज हठि देइहु जबहीं । रसा रसातल जाइहि तबहीं ॥
मोहि समान को पापनिवासी । जेहि लगि सीय राम बनबासी ॥
राय राम कहं कानन दीन्हा । बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा ॥
मैं सठ सब अनरथ कर हेतू । बैठि बात सब सुनउं सचेतू ॥
बिनु रघुबीर बिलोकिय बासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत बिषयरस रूखे । लोलुप भूप भोग के भूखे ॥
कहं लगि कहउं हृदयकठिनाई । निदरि कुलिस जेहिं लही बड़ाई ॥

दो० । कारन तें कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर ।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर । १७२ ॥

चौ० । कैकेयीभव तनु अनुरागे । पामर प्रान अघाइ अभागे ॥
जो प्रियबिरह प्रान प्रिय लागे । देखब सुनब बहुत अब आगे ॥

लषन राम सिय कहं बन दीन्हा । पठय अमरपुर पति हित कीन्हा ॥
लीन्ह बिधवपन अपयस आपु । दीन्हेउ प्रजहि सोक संतापू ॥
मोहि दीन्ह सुख सुयस सुराजू । कीन्ह कैकयी सब कर काजू ॥
इहि तें मोर काह अब नीका । तेहि पर देन कहहु तुम टीका ॥
कैकयिजठर जन्मि जग माहीं । यह मोहि कहं कछु अनुचित नाहीं ॥
मोरि बात सब बिधिहि बनाई । प्रजा पंच कत करहु सहाई ॥

दो० । ग्रहग्रहीत पुनि बातबस तेहि पुनि बीछी मार ।
ताहि पिआइय बारुनी कहहु कवन उपचार । १७३ ॥

चौ० केकयिसुअनयोग जग जोई । चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥
दसरथतनय रामलघुभाई । दीन्ह मोहि बिधि बादि बड़ाई ॥
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका । राय राज सबही कहं नीका ॥
उतर देउं केहि बिधि केहि केही । कहहु सुखेन यथारुचि जेही ॥
मोहि कुमातु समेत बिहाई । कहहु कहिहि को कीन्ह भलाई ॥
मोहि बिनु को सचराचर माहीं । जेहि सियराम प्रानप्रिय नाहीं ॥
परम हानि सब कहं बड़ लाहू । अदिन मोर नहिं दूषन काहू ॥
संसयसील प्रेमबस अहहू । सबै उचित सब जो कुछ कहहू ॥

दो० । राममातु सुठि सरलचित मो पर प्रेम बिसेषि ।
कहहिं सुभाव सनेह बस मोरि दीनता देखि । १७४ ॥

चौ० । गुरु बिबेकसागर जग जाना । जिन्हहि बिस्व करबदरि समाना ॥
मो कहं तिलकसाज सजि सोऊ । भा बिधि बिमुख बिमुख सब कोऊ ॥
परिहरि राम सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥
सो मैं सुनब सहब सुख मानी । अंतहुं कीच तहां जहं पानी ॥
डर न मोहि जग कहिहि कि पोचू । परलोकहु कर नाहिन सोचू ॥
एकै बड़ि उर दुसह दवारी । मोहि लगि मे सियराम दुखारी ॥
जीवन लाहु लषन भल पावा । सब तजि रामचरन मन लावा ॥
मोर जन्म रघुबरबन लागी । झूठ काह पछिताउं अभागी ॥

दो० । आपनि दारुन दीनता सबहि कहेउं सिरुनाय ।
देखे बिनु रघुबीरपद जिय की जरनि न जाय । १७५ ॥

चौ० । आन उपाय मोहि नहिं सूझा । को जिय की रघुबर बिनु बूझा ॥
एकहि आंक इहै मन माहीं । प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं ॥
यद्यपि मैं अनभल अपराधी । भइ मोहि कारन सकल उपाधी ॥
तदपि सरनसन्मुख मोहि देषी । छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी ॥
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपासनेहसदन रघुराऊ ॥
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं सिसु सेवक यद्यपि बामा ॥

तुम्ह पै पांच मोर भल मानी । आयसु आसिष देहु सुबानी ।
जेहि सुनि बिनय मोहि जन जानी । आवहिं बहुरि राम रजधानी ।

दो० । यद्यपि जनम कुमातु तें मैं सठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागि हैं मोहि रघुबीरभरोस । १७६ ॥

चौ० । भरतबचन सब कहं प्रिय लागे । रामसनेहसुधा जनु पागे ॥
लोग बियोग बिषमबिष दागे । मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी । सकल सनेह बिकल भै भारी ॥
भरतहि कहहिं सराहि सराही । राम प्रेममूरतितनु आही ॥
तात भरत अस काहे न कहहू । प्रान समान राम प्रिय अहहू ॥
जो पामर आपनि जड़ताई । तुमहि सुगाइ मातु कुटिलाई ॥
सो सठ कोटिक पुरुष समेता । बसहिं कल्प सत नरकनिकेता ॥
अहि अघ अवगुन नहि मनि गहई । हरै गरल दुख दारिद दहई ॥

दो० । अवसि चलिय बन राम पहं भरतमंत्र भल कीन्ह ।
सोकसिंधु बूड़त सबहि तुम अवलंबन दीन्ह । १७७ ॥

चौ० । भा सब कें मन मोद न थोरा । जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लखि निरनय नीके । भरत प्रानप्रिय भे सबही के ॥
मुनिहि बंदि भरतहि सिर नाई । चले सकल घर बिदा कराई ॥
धन्य भरत जीवन जग माहीं । सीलसनेह सराहत जाहीं ॥
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू । सकल चलै कर साजहिं साजू ॥
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी । सो जानै जनु गरदनि मारी ॥
कोउ कहं रहन कहिय नहिं काहू । को न चहै जग जीवन लाहू ॥

दो० । जरौ सुसंपति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ।
सन्मुख होत जो रामपद करै न सहज सहाइ । १७८ ॥

चौ० । घर घर साजहिं बाहन नाना । हर्ष हृदय परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू । नगर बाजि गज भवन भंडारू ॥
संपति सब रघुपति कै आही । जौं बिनु जतन चलौं तजि ताही ॥
तौ परिनाम न मोरि भलाई । पापसिरोमनि सांइ दोहाई ॥
करहिं स्वामिहित सेवक सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥
अस बिचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुं निज धर्म न डोले ॥
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा । जो जेहि लायक सो तहं राखा ॥
करि सब जतन राखि रखवारे । राममातु पहं भरत सिधारे ॥

दो० । आरत जननी जानि सब भरतसनेह सुजान ।
कहेउ सजावन पालकी सुखद सुखासन जान । १७९ ॥

चौ० । चक चकइ इव पुर नरनारी । चहत प्रात उर आरति भारी ॥
जागत सब निसि भयउ बिहाना । भरत बुलाये सचिव सुजाना ॥

कहेउ लेहु सब तिलक समाजू । बनहिं देब मुनि रामहिं राजू ॥
बेगि चलहु मुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग संवारे ॥
अरुंधती अरु अगिनिसमाजू । रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू ॥
बिप्रबृन्द चढ़ि बाहन नाना । चले सकल तपतेजनिधाना ॥
नगर लोग सब सजि सजि याना । चित्रकूट कहं कीन्ह पयाना ॥
सिबिका सुभग न जाइ बखानी । चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी ॥

दो० । सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सबहिं चलाइ ।
सुमिरि रामसियचरन तब चले भरत दौ भाइ । १८० ॥

चौ० । रामदरसबसि सब नर नारी । जनु करि करिनि चले तकि बारी ॥
बन सियराम समुझि मन माहीं । सानुज भरत पयादेहि जाहीं ॥
देखि सनेह लोग अनुरागे । उतरि चले हय गज रथ त्यागे ॥
जाइ समीप राखि निज डोली । राममातु मृदु बानी बोली ॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवार दुखारी ॥
तुम्हरे चलत चलहि सब लोगू । सकल सोक कृस नहिं मग योगू ॥
सिर धरि बचन चरन सिर नाई । रथ चढ़ि चलत भये दौ भाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करि बासू । दूसर गोमतितीर निवासू

दो० । पयअहार फल असन इक निसि भोजन इक लोग ।
करत रामहित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग । १८१ ॥

चौ० । सईतीर बसि चले बिहाने । सृंगबेरपुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुनेउ निषादा । हृदय बिचार करै सबिषादा ॥
कारन कवन भरतबन जाहीं । है कछु कपटभाव मन माहीं ॥
जौं पै जिय न होति कुटिलाई । तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥
जानहिं सानुज रामहिं मारी । करौं अकंटक राज सुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी । तब कलंक अब जीवनहानी ॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा । रामहिं समर न जीतनिहारा ॥
का आचर्य भरत अस करहीं । नहिं बिषबेलि अमियफल फरहीं ॥

दो० । अस बिचारि गुह ज्ञाति सन कहेउ सजग सब होहु ।
हथवासहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोहु । १८२ ॥

चौ० । होहु सजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरन के ठाटा ॥
सन्मुख लोह भरत सन लेऊं । जियत न सुरसरि उतरन देऊं ॥
समर मरन पुनि सुरसरितीरा । रामकाज छनभंग सरीरा ॥
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू । बड़े भाग असि पाइय मीचू ॥
स्वामिकाज करिहौं रन रारी । जस धवलहु भुवन दसचारी ॥
तजहुं प्रान रघुनाथनिहोरे । दुहूं हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधुसमाज न जा कर लेखा । रामभक्त महं जासु न रेखा ॥

जाय जियत जग सो महिभारू । जननीयौवनबिटप कुठारू ॥

दो० । बिगतबिषाद निषादपति सबहि बढ़ाय उछाह ।
सुमिरि राम मांगेउ तुरत तरकस धनुष सनाह ।१८३ ॥

चौ० । बेगिहि भाइ सजहु संजोऊ । सुनि रजाय कदराय न कोऊ ॥
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा । एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा ॥
चले निषाद जुहारि जुहारी । सूर सकल रन रूचै रारी ॥
सुमिरि रामपदपंकज पनहीं । भाथा बांधि चढ़ावहिं धनुहीं ॥
आंगरि पहिरि कूंड़ि सिर धरहीं । फरसा बांस सेल सम करहीं ॥
एक कुसल अति ओड़न खांड़े । कूदहिं गगन मनहु छिति छांड़े ॥
निज निज साज समाज बनाई । गुह राउतहिं जुहारे जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो० । भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहु ।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहु ।१८४ ॥

चौ० । रामप्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे ॥
जियत पांव नहिं पाछे धरहीं । रुंडमुंडमय मेदिनि करहीं ॥
दीख निषाद नाथ भल टोलू । कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
एतना कहत छींक भइ बायें । कहेउ सकुनिअन्ह खेत सुहायें ॥
बूढ़ एक कह सगुन बिचारी । भरतहि मिलिय न होइहि रारी ॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं । सगुन कहै अस बिग्रह नाहीं ॥
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा । सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा ॥
भरतसुभावसील बिनु बूझे । बड़ि हितहानि जानि बिनु जूझे ॥

दो० । गहहु घाट भट सिमिटि सब लेउ मर्म मिलि जाय ।
बूझि मित्र अरि मध्यगति तब तस करब उपाय । १८५ ॥

चौ० । लखब सनेह सुभाव सुहाये । बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये ॥
अस कहि भेंट संजोवन लागे । कंद मूल फल खग मृग मांगे ॥
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥
सकल साज सजि मिलन सिधाये । मंगल मूल सगुन सुभ पाये ॥
देखि दूरि तें कहि निज नामू । कीन्ह मुनीसहिं दंडप्रनामू ॥
जानि रामप्रिय दीन्ह असीसा । भरतहि कहेउ बुझाय मुनीसा ॥
रामसखा सुनि स्यंदन त्यागा । चले उतरि उमगत अनुरागा ॥
गांव जातिगुह नांव सुनाई । कीन्ह जुहारि माथ महि लाई ॥

दो० । करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।
मनहु लखन सन भेंट भइ प्रेम न हृदय समाइ । १८६ ॥

चौ० । भेंटे भरत ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥

धन्य धन्य धुनि मंगलमूला । सुर सराहि तेहि बरषहिं फूला ॥
लोक बेद सब भांतिहि नीचा । जासु छांह छुइ लेइय सींचा ॥
तेहि भरि अंक रामलघुभ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीं ॥
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा । कुल समेत जगपावन कीन्हा ॥
करमनासजल सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥
उलटा नाम जपत जग जाना । बालमीक भए ब्रह्म समाना ॥

दो० । स्वपच सबर खस जमन जड़ पांवर कोल किरात ।
राम कहत पावन परम होत भुवनविख्यात । १८७ ॥

चौ० । नहिं अचरज जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई ॥
रामनाममहिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवधलोग सुख लहहीं ॥
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूछहिं कुसल सुमंगल छेमा ॥
देखि भरत कर सील सनेहू । भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा । भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥
धरि धीरज पद बंदि बहोरी । बिनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
कुसल मूल पदपंकज पेखी । मैं तिहुं काल कुसल निज लेखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे । सहित कोटि कुल मंगल मोरे ॥

दो० । समुझि मोरि करतूति कुल प्रभुमहिमा जिय जोइ ।
जो न भजै रघुबीरपद जग बिधिबंचित सोइ । १८८ ॥

चौ० । कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक बेद बाहिर सब भांती ॥
राम कीन्ह आपन जबहीं तें । भयेउं भुवनभूषन तबहीं तें ॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई । मिले बहोरि लखनलघुभाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुबानी । सादर सकल जुहारी रानी ॥
जानि लखन सम देहिं असीसा । जियहु सुखी सत लाख बरीसा ॥
निरखि निषाद नगरनरनारी । भये सुखी जनु लखन निहारी ॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू । भेंटेउ रामभाइ भरि बाहू ॥
सुनि निषाद निज भागबड़ाई । प्रमुदित मन लइ चलेउ लिवाई ॥

दो० । सनकारे सेवक सकल चले स्वामिरुख पाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनायेन्ह जाइ । १८९ ॥

चौ० । सृंगबेरपुर भरत दीख जब । भये सनेहबस अंग सिथिल तब ॥
सोहत दिये निषादहिं लागू । जनु तनु धरे बिनय अनुरागू ॥
इहि बिधि भरत सेन सब संगा । दीख जाइ जगपावनि गंगा ॥
रामघाट कह कीन्ह प्रनामा । भा मन मगन मिले जनु रामा ॥
करहिं प्रनाम नगरनरनारी । मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥

करि मज्जन मांगहिं कर जोरी । रामचंद्रपद प्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥
जोरि पानि बर मांगौं एहू । सीयरामपद सहज सनेहू ॥

दो० । इहि बिधि मज्जन भरत करि गुरुअनुसासन पाइ ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लवाइ । १९० ॥

चौ० । जहं तहं लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोध सबही कर लीन्हा ॥
गुरुसेवा करि आयसु पाई । राममातु पहिं गे द्वौ भाई ॥
चरन चांपि कहि कहि मृदु बानी । जननी सकल भरत सनमानी ॥
भाइहि सौंपि मातुसेवकाई । आपु निषादहिं लीन्ह बुलाई ॥
चले सखा कर सों कर जोरे । सिथिल सरीर सनेह न थोरे ॥
पूछत सखहिं सो ठांव देखाऊ । नेकु नयन मनजरनि जुड़ाऊ ॥
जहं सिय राम लषन निसि सोये । कहत भरे जल लोचनकोये ॥
भरतबचन सुनि भयेउ बिषादू । तुरत तहां लै गयेउ निषादू ॥

दो० । जहं सिंसिपा पुनीत तरु रघुबर किय बिस्राम ।
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनाम । १९१ ॥

चौ० । कुससाथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई ॥
चरनरेख रज आंखिन लाई । बनै न कहत प्रीतिअधिकाई ॥
कनकबिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥
सजलबिलोचन हृदय गलानी । कहत सखा सन बचन सुबानी ॥
श्रीहत सीयबिरह दुतिहीना । यथा अवधनरनारि मलीना ॥
पिता जनक देउं पटतर केही । करतल भोगयोग जग जेही ॥
ससुर भानुकुलभानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥
प्राननाथ रघुनाथ गोसांई । जो बड़ होत सो राम बड़ाई ॥

दो० । पतिदेवता सुतीयमनि सीय साथरी देखि ।
बिहरत हृदय न हहरि मम पबि तें कठिन बिसेषि । १९२ ॥

चौ० । लालनयोग लषन लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजनप्रिय पितुमातुदुलारे । सियरघुबीरहि प्रानपियारे ॥
मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ । तातिबाउ तन लाग न काऊ ॥
ते बन सहहिं बिपति सब भांती । निदरे कोटिकुलिस यह छाती ॥
राम जनमि जग कीन्ह उजागर । रूपसील सुखसबगुनसागर ॥
पुरजन परिजन गुरुपितु माता । रामसुभाव सबहिं सुखदाता ॥
बैरिउ रामबड़ाई करहीं । बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं ॥
सारद कोटि कोटिसत सेषा । करि न सकहिं प्रभुगुनगन लेखा ॥

दो० । सुखस्वरूप रघुबंसमनि मंगलमोदनिधान ।
ते सोवत कुस डासि महि बिधिगति अति बलवान । १९३ ॥

चौ० । राम सखा दुख काहु न काहू । जीवनतरु जिमि जुगवत राऊ ॥
पलक नैन फनि मनि जेहि भांती । जुगवहिं जननि सकल दिन राती ॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥
धिक कैकेयि अमंगलमूला । भइसि प्रानप्रियतम प्रतिकूला ॥
मैं धिक धिक अघउदधि अभागी । सब उतपात भयउ जेहि लागी ॥
कुलकलंक करि सृजेउ बिधाता । सांइद्रोह मोहि कीन्ह कुमाता ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू । नाथ करिय कत बादि बिषादू ॥
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं । यह निरदोष दोष बिधि बामहिं ॥

छं० । बिधि बाम की करनी कठिन जेइ मातु कीन्हीं बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु आदर सराहन रावरी ॥
तुलसी न तुम सो राम प्रीतम कहत हौं सौंहें किये ।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये । ८ ॥

सो० । अंतरजामी राम सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलिय करिय बिस्राम यह बिचार दृढ़ आनि मन । ० ॥

चौ० । सखाबचन सुनि उर धरि धीरा । बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
यह सुधि पाइ नगरनरनारी । चले बिलोकन आरत भारी ॥
परदछिन करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकेयिहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं । बाम बिधातहिं दूषन देहीं ॥
एक सराहहिं भरतसनेहू । कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥
निंदहिं आपु सराहि निषादहिं । को कहि सकै बिमोह बिषादहिं ॥
एहि बिधि राति लोग सब जागा । भा भिनुसार गुदारा लागा ॥
गुरहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दंड चारि महं भा सब पारा । उतरि भरत तब सबहिं संभारा ॥

दो० । प्रातक्रिया करि मातुपद बंदि गुरहि सिर नाइ ।
आगे किये निषादगन दीन्हेउ कटक चलाइ । १८४ ॥

चौ० । कियेउ निषादनाथ अगुआई । मातुपालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा । बिप्रन्ह सहित गवन गुरु कीन्हा ॥
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥
गवने भरत पयादेहि पाये । कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा । होइय नाथ अस्व असवारा ॥
राम पयादेहिं पांव सिधाये । हम कहं रथ गज बाजि बनाये ॥
सिर भर जाउं उचित अस मोरा । सब तें सेवक धर्म कठोरा ॥
देखि भरतगति सुनि मृदु बानी । सब सेवकगन गरहिं गलानी ॥

दो० । भरत तीसरे पहर कहं कीन्ह प्रबेस प्रयाग ।
कहत रामसिय रामसिय उमगि उमगि अनुराग । १८५ ॥

चौ० । झलका झलकत पायन्ह कैसे । पंकजकोस ओसकन जैसे ॥
भरत पयादेहिं आये आजू । भये दुखित सुनि सकल समाजू ॥
खबरि लीन्ह सब लोग नहाये । कीन्ह प्रनाम त्रिबेनिहिं आये ॥
सबिधि सितासितनीर नहाने । दिये दान महिसुर सनमाने ॥
देखत स्यामल धवल हिलोरे । पुलकसरीर भरत कर जोरे ॥
सकलकामप्रद तीरथराऊ । बेदबिदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
माँगौं भीख त्यागि निजधरम । आरत काह न करहिं कुकरमू ॥
अस जिय जानि सुजानि सुदानी । सफल करौ जगयाचक बानी ॥

दो० । अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहौं निर्बान ।
जन्म जन्म रति रामपद यह बरदान न आन । १९६ ॥

चौ० । जानहिं राम कुटिल करि मोही । लोग कहौ गुरुसाहिबद्रोही ॥
सीतारामचरनरति मोरे । अनुदिन बढ़ौ अनुग्रह तोरे ॥
जलद जन्म भरि सुरति बिसारे । याचत जल पबि पाहन डारे ॥
चातकरटनि घटंत घटि जाई । बढ़ै प्रेम सब भाँति भलाई ॥
कनकहि बान चढ़ै जिमि दाहे । तिमि प्रीतमपद नेम निबाहे ॥
भरतबचन सुनि माँझ त्रिबेनी । भइ मृदु बानि सुमंगलदेनी ॥
तात भरत तुम सब बिधि साधू । रामचरन अनुराग अगाधू ॥
बादि गलानि करहु मन माहीं । तुम सम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं ॥

दो० । तनु पुलके हिय हर्ष सुनि बेनिबचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्य कहि नभ सुर बरषहिं फूल । १९७ ॥

चौ० । प्रमुदित तीरथराजनिवासी । बैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलि दसपाँचा । भरत सनेह सील सुचि साँचा ॥
सुनत रामगुनगान सुहाये । भरद्वाज मुनिबर पहँ आये ॥
दंड प्रनाम करत मुनि देखे । मूरतिवंत भाग निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे । दीन्ह असीष कृतारथ कीन्हे ॥
आसन दीन्ह नाइ सिर बैठे । चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे ॥
मुनि पूछब कछु यह बड़ सोचू । बोले रिषि लखि सील सँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । बिधिकरतब पर कछु न बसाई ॥

दो० । तुम गलानि जिय जनि करहु समुझि मातुकरतूति ।
तात कैकयिहि दोष नहिं गई गिरा मति धूति । १९८ ॥

चौ० । इहौ कहत भल कहिहि न कोऊ । लोकवेदबुधसंमत दोऊ ॥
तात तुम्हार बिमल यश गाई । पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोक वेदसंमत सब कहई । जेहि पितु राज देइ सो लहई ॥
राउ सत्यब्रत तुमहिं बुलाई । देत राज सुख धर्म बड़ाई ॥

रामगवन बन अनरथमूला । जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला ॥
सो भावीबस रानि अयानी । करि कुचालि अंतहुं पछितानी ॥
तहंउ तुम्हार अलप अपराधू । कहै सो अधम अयान असाधू ॥
करतेहु राज तुम्हहि नहिं दोषू । रामहि होत सुनत संतोषू ॥
दो० । अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहिं उचित मत एहु ।
सकलसुमंगलमूल जग रघुबरचरनसनेहु । १९९ ॥
चौ० । सो तुम्हार धन जीवन प्राना । भूरिभाग को तुम्हहिं समाना ॥
यह तुम्हार आचरज नहिं ताता । दसरथसुअन रामप्रियभ्राता ॥
सुनहु भरत रघुपतिमन माहीं । प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥
लषनरामसीतहिं अति प्रीती । निसि सब तुम्हहिं सराहत बीती ॥
जाना मर्म नहात प्रयागा । मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुम पर अस सनेह रघुबर के । सुखजीवन जग जस जड़ नर के ॥
यह न अधिक रघुबीरबड़ाई । प्रनतकुटुम्बपाल रघुराई ॥
तुम तौ भरत मोर मत येहू । धरे देह जनु रामसनेहू ॥
दो० । तुम कहं भरत कलंक यह हम सब कहं उपदेस ।
रामभक्तिरससिद्धि हित भा यह समय गनेस । २०० ॥
चौ० । नव बिधु बिमल तात जस तोरा । रघुबरकिंकर कुमुद चकोरा ॥
उदै सदा अंथइहि कबहूं ना । घटिहि न जगनभ दिन दिन दूना ॥
कोक त्रिलोकप्रीति अति करहीं । प्रभुप्रतापरबिछबिहि न हरहीं ॥
निसि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसहिं न कैकयिकरतब राहू ॥
पूरन राम सुप्रेमपियूषा । गुरअपमानदोष नहिं दूषा ॥
राम भक्ति अब अमिय अघाहू । कीन्हेउ सुलभ सुधा बसुधाहू ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकलसुमंगलखानी ॥
दसरथगुनगन बरनि न जाहीं । अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं ॥
दो० । जासु सनेहसकोचबस राम प्रगट भे आय ।
जे हरहियनयनन्ह कबहुं निरखे नाहिं अघाय । २०१ ॥
चौ० । कीरतिसिंधु तुम कीन्ह अनूपा । जहं बस राम प्रेममृगरूपा ॥
तात गलानि करहु जिय जाये । डरहु दरिद्रहि पारस पाये ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधन कर सुफल सुहावा । लषनरामसियदरसन पावा ॥
तेहि फल कर फल दरस तुम्हारा । सहित प्रयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुम जग जस जयऊ । कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ ॥
सुनि मुनिबचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा । सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दो० । पुलकगात हिय राम सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रनाम मुनिमंडलिहि बोले गदगद बैन । २०२ ॥

चौ० । मुनिसमाज अरु तीरथराजू । सांचिहु सपथ अघाइ अकाजू ।
इहि थल जौ कछु कहिय बनाई । इहि सम नहिं कछु अघ अधमाई ।
तुम सरबग्य कहौं सतिभाऊ । उरअंतरजामी रघुराऊ ।
मोहि न मातुकरतब कर सोचू । नहिं दुख जिय जग जानहि पोचू ।
नाहिन डर बिगरहि परलोकू । पितहु मरे कर नाहिन सोकू ।
सुकृत सुयस भरि भुवन सुहाये । लछिमन राम सरिस सुत पाये ।
रामबिरह तजि तनु छनभंगू । भूपसोच कर कवन प्रसंगू ।
राम लखन सिय बिनु पग पनही । करि मुनिबेष फिरहिं बन बनहीं ।

दो० । अजिनबसन फल असन महि सयन डासि कुस पात ।
बसि तरु तर नित सहत दुख हिम तप बरषा बात । २०३ ॥

चौ० । यह दुख दाह दहै नित छाती । भूख न बासर नींद न राती ।
यह कुरोग कर औषध नाहीं । सोधेउं सकल बिस्व मन माहीं ।
मातु कुमत बढ़ई अघमूला । तेहि हमार हित कीन्ह बसूला ।
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुयंत्रू । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू ।
मोहि लगि यह कुठाट तेहि ठाटा । घालिसि सब जग बारहबाटा ।
मिटै कुयोग राम फिरि आये । बसै अवध नहिं आन उपाये ।
भरतबचन सुनि मुनि सुख पाई । सबहि कीन्ह बहु भांति बड़ाई ।
तात करहु जनि सोच बिसेषी । सब दुख मिटिहि राम पद देखी ।

दो० । करि प्रबोध मुनिबर कहेउ अतिथि प्रानप्रिय होहु ।
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु । २०४ ॥

चौ० । सुनि मुनिबचन भरतहिय सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सकोचू ।
जानि गरुअ गुरुगिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ।
सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा । परम धर्म यह नाथ हमारा ।
भरतबचन मुनिबरमन भाये । सुचि सेवक सब निकट बुलाये ।
चाहिय कीन्ह भरतपहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ।
भले नाथ कहि तिन्ह सिर नाये । प्रमुदित निज निज काज सिधाये ।
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिय जस देवता ।
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । आयसु होइ सो करैं गुसांई ।

दो० । रामबिरह ब्याकुल भरत सानुज सकल समाज ।
पहुनाई करि हरहु स्रम कहेउ मुदित मुनिराज । २०५ ॥

चौ० । रिधि सिधि सिर धरि मुनिबरबानी । बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ।
कहहिं परस्पर सिधिसमुदाई । अतुलित अतिथि रामलघुभाई ।
मुनिपद बंदि करिय सोइ आजू । होइ सुखी सब राजसमाजू ।
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । जे बिलोकि बिलखाहिं बिमाना

भोगविभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहिं अमर अभिलाखे ॥
दासी दास साज सब लीन्हे । जोगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे ॥
सब समाज सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सपनेहु सुरपुर नाहीं ॥
प्रथमहिं बास दिये सब केही । सुंदर सुखद यथारुचि जेही ॥

दो० । बहुरि सपरिजन भरत कहं ऋषि आयसु अस दीन्ह ।
बिधिबिसमयदायक बिभव मुनिबर तप बल कीन्ह ।२०६ ॥

चौ० । मुनिप्रभाव जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपतिलोका ॥
सुखसमाज नहिं जाइ बखानी । देखत बिरति बिसारहिं ज्ञानी ॥
आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृग नाना ॥
सुरभि फूल फल अमिय समाना । बिमल जलाशय बिबिध बिधाना ॥
असन पान सुचि अमित अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ॥
सुरसुरभी सुरतरु सबही के । लखि अभिलाष सुरेस सची के ॥
ऋतु बसंत बह त्रिबिध बयारी । सब कहं सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक चंदन बनितादिक भोगा । देखि हर्षबिसमयबस लोगा ॥

दो० । संपति चकई भरत चक मुनिआयसु खेलवार ।
तेहि निसि आस्रम पींजरा राखे भा भिनुसार । २०७ ॥

चौ० । कीन्ह निमज्जन तीरथराजा । नाइ मुनिहिं सिर सहित समाजा ॥
ऋषिआयसु असीस सिर राखी । करि दंडवत बिनय बहु भाखी ॥
पथगति कुसल साथ सब लीन्हे । चले चित्रकूटहि चित दीन्हे ॥
रामसखा कर दीन्हे लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
नहिं पदत्रान सीस नहिं छाया । प्रेम नेम ब्रत धर्म अमाया ॥
लखनरामसियपंथकहानी । पूछत सखहिं कहत मृदु बानी ॥
रामबासथल बिटप बिलोके । उर अनुराग रहत नहिं रोके ॥
देखि दसा सुर बरषहिं फूला । भइ मृदु महि मगु मंगलमूला ॥

दो० । किये जाहिं छाया जलद सुखद बहै बर बात ।
तस मगु भयउ न राम कहं जस भा भरतहि जात । २०८ ॥

चौ० । जड़ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
ते सब भये परमपदयोगू । भरतदरस मेटा भव रोगू ॥
यह बड़ि बात भरत कै नाहीं । सुमिरत जिन्हहि राम मन माहीं ॥
बारेक राम कहत जग जेऊ । होत तरनतारन नर तेऊ ॥
भरत रामप्रिय पुनि लघु भ्राता । कस न होइ मगु मंगलदाता ॥
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं । भरतहिं निरखि हर्ष हिय लहहीं ॥
देखि प्रभाव सुरेसहिं सोचू । जग भल भलहिं पोच कहं पोचू ॥
गुरु सन कहेउ करहु प्रभु सोई । रामहिं भरतहिं भेंट न होई ॥

दो० । राम सकोची प्रेमबस भरत सुप्रेमपयोधि ।
बनी बात बिगरन चहत करिय यतन छल सोधि । २०९ ॥

चौ० । बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । सहसनयन बिनु लोचन जाने ॥
कह गुरु बादि छोभ छल छांडू । इहां कपट करि होइय भांडू ॥
मायापतिसेवक सन माया । करिय त उलटि परै सुरराया ॥
तब कछु कीन्ह रामरुख जानी । अब कुचालि करि होइहि हानी ॥
सुनु सुरेस रघुनाथसुभाऊ । निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥
जो अपराध भक्त कर करई । रामरोषपावक सो जरई ॥
लोकहुं बेद बिदित इतिहासा । यह महिमा जानहिं दुरबासा ॥
भरत सरिस को रामसनेही । जेहि जप राम राम जपु जेही ॥

दो० । मनहुं न आनिय अमरपति रघुबरभक्तअकाज ।
अयस लोक परलोक दुख दिन दिन सोकसमाज । २१० ॥

चौ० । सुनु सुरेस उपदेस हमारा । रामहिं सेवक परम पियारा ॥
मानत सुख सेवकसेवकाई । सेवकबैर बैर अधिकाई ॥
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू । गहहिं न पाप पुन्य गुन दोषू ॥
कर्म प्रधान बिस्व करि राखा । जो जस करै सो तस फल चाखा ॥
तदपि करहिं सम बिसम बिहारा । भक्तअभक्तहृदय अनुसारा ॥
अगुन अलेप अमान एकरस । राम सगुन भये भक्तप्रेमबस ॥
राम सदा सेवकरुचि राखी । बेद पुरान साधु सुर साखी ॥
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई । करहु भरतपदप्रीति सुहाई ॥

दो० । रामभक्त परहितनिरत परदुखदुखी दयाल ।
भक्तसिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल । २११ ॥

चौ० । सत्यसिंधु प्रभु सुरहितकारी । भरत रामआयसुअनुसारी ॥
स्वारथबिबस बिकल तुम होहू । भरतदोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरबर सुरगुरबरबानी । भा प्रबोध मन मिटी गलानी ॥
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ । लगे सराहन भरतसुभाऊ ॥
इहि बिधि भरत चले मग जाहीं । दसा देखि मुनिसिद्ध सिहाहीं ॥
जबहि राम कहि लेहिं उसासा । उमगत प्रेम मनहुं चहुं पासा ॥
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना । पुरजनप्रेम न जाइ बखाना ॥
बीच बास करि जमुनहि आये । निरखि नीर लोचन जल छाये ॥

दो० । रघुबरबरन बिलोकि बर बारि समेत समाज ।
होत बिरहबारिधि मगन चढ़े बिबेकजहाज । २१२ ॥

चौ० । जमुनतीर तेहि दिन करि बासू । भयेउ समय सम सबहिं सुपासू ॥
रातिहि घाटघाट की तरनी । आईं अगनित जाइ न बरनी ॥

प्रात पार भे एकहि खेवा । तोषे राम सखा करि सेवा ॥
चले नन्हाइ नदिहि सिर नाई । साथ निषादनाथ लघु भाई ॥
आगे मुनिवर बाहन आछे । राजसमाज जाइ सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे । भूषन बसन बेष सुठि सादे ॥
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा । सुमिरत लषन सीय रघुनाथा ॥
जहं जहं रामबासबिस्रामा । तहं तहं करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

दो० । मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।
देखि सरूप सनेहबस मुदित जनमफल पाइ । २१३ ॥

चौ० । कहहिं सप्रेम एक एक पाहीं । राम लषन सखि होहिं कि नाहीं ॥
बय बपु बरन रूप सोइ आली । सील सनेह सरिस सम चाली ॥
बेष न सो सखि सीय न संगा । आगे अनी चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा । सखि संदेह होत एहि भेदा ॥
तासु तर्क तियगन मन मानी । कहहिं सकल तेहि सम न सयानी ॥
तेहि सराहि बानी फुर पूजी । बोली मधुर बचन तिय दूजी ॥
कहि सप्रेम सब कथाप्रसंगू । जेहि बिधि रामराजरसभंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाव सुभागी ॥

दो० । चलत पयादे खात फल पिता दीन्ह तजि राज ।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आज । २१४ ॥

चौ० । भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुखदूषनहरनू ॥
जो कछु कहिय थोर सखि सोई । रामबंधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखे । भये धन्य युबतीजन लेखे ॥
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं । कैकयिजननि जोग सुत नाहीं ॥
कोउ कह दूषन रानिहु नाहिन । बिधि सब भांति हमहिं जो दाहिन ॥
कहं हम लोकबेदबिधिहीना । लघुकुलतिय करतूति मलीना ॥
बसहिं कुदेस कुगांव कुठामा । कहं यह दरस पुन्यपरिनामा ॥
अस अनंद अचरज प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कल्पतरु जामा ॥

दो० । भरतदरस देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भाग ।
जनु सिंघलबासिन्ह भयेउ बिधिबस सुलभ प्रयाग । २१५ ॥

चौ० । निज गुन सहित रामगुनगाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनिआस्रम सुरधामा । निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥
मनहीं मन मांगहिं बर एहू । सीयरामपद पदुम सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल बनबासी । बैखानस बटु जती उदासी ॥
करि प्रनाम पूछहिं जेहि तेही । केहि बन लषन राम बैदेही ॥
ते प्रभुसमाचार सब कहहीं । भरतहिं देखि जनमफल लहहीं ॥

जे जन कहहिं कुसल हम देखे । ते प्रिय रामलखन सम लेखे ॥
एहि बिधि बूझत सबहिं सुजानी । सुनत रामबनबासकहानी ॥

दो० । तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ ।
रामदरस की लालसा भरत सरिस सब साथ । २१६ ॥

चौ० । मंगल सगुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू ॥
भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहिं राम मिटिहि दुखदाहू ॥
करत मनोरथ जस जिय जाके । जांहि सनेहसुरा सब छाके ॥
सिथिल अंग मग पग डगि डोलहिं । बिह्वल बचन प्रेमबस बोलहिं ॥
रामसखा तेहि समय देखावा । सैलसिरोमनि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरितपयतीरा । सीय समेत बसहिं दो बीरा ॥
देखि करहिं सब दंडप्रनामा । कहि जय जानकिजीवन रामा ॥
प्रेममगन अस राजसमाजू । जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥

दो० । भरतप्रेम तेहि समय जस तस कहि सकै न सेषु ।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुख अह मम मलिन जनेषु । [illegible] ॥

चौ० । सकल सनेह सिथिल रघुबर के । गये कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
जल थल देखि बसे निसि बीते । कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते ॥
उहां राम रजनीअवसेखा । जागे सीय सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आये । नाथबियोग ताप तन ताये ।
सकल मलिनमन दीन दुखारी । देखी सासु आन अनुहारी ।
सुनि सियसपन भरे जल लोचन । भये सोचबस सोचबिमोचन ।
लखन सपन यह नीक न होई । कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ।
अस कहि बंधु समेत अन्हाने । पूजि पुरारि साधु सनमाने ।

छं० । सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भये ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभुआस्रम गये ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारन काह चित सचकित रहे ।
सब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि अवसर कहे । ८ ॥

सो० । सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलकभर ।
सरदसरोरुहनैन तुलसी भरे सनेहजल । ८ ॥

चौ० । बहुरि सोचबस भे सियरमनू । कारन कवन भरतआगमनू ।
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ।
सो सुनि रामहि भा अति सोचू । इत पितुबच उत बंधुसकोचू ।
भरतसुभाव समुझि मन माहीं । प्रभुचित हित थिति पावत नाहीं ।
समाधान तब भा यह जाने । भरत कहे महं साधु सयाने ।
लखन लखेउ प्रभुहृदयखभारू । कहत समय सम नीति बिचारू ।
बिनु पूछे कछु कहउं गुसांई । सेवक समय न ढीठ ढिठाई ।

तुम सर्वज्ञ सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझि कहौं अनुगामी ॥

दो० । नाथ सुहृद सुठि सरलचित सीलसनेहनिधान ।
सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान । २१८ ॥

चौ० । बिषयी जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोहबस होहिं जनाई ॥
भरत नीतिरत साधु सुजाना । प्रभुपद प्रेम सकल जग जाना ॥
तेऊ आजु राजपद पाई । चले धर्ममरयाद मिटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी । जानि राम बन बास एकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू । आये करन अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई । आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौं जिय होति न कपट कुचाली । केहि सोहात रथ बाजि गजाली ॥
भरतहि दोस देइ को जाये । जग बौराइ राजपद पाये ॥

दो० । ससि गुरुतियगामी नहुष चढ़ेउ भूमिसुरयान ।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम को बेनु समान । २१९ ॥

चौ० । सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रन रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सो आजु बिसेषी । समर सरोष राममुख पेषी ॥
इतना कहत नीतिरस भूला । रनरसबिटप पुलक जिमि फूला ॥
प्रभुपद बंदि सीस रज राषी । बोले सत्य सहज बल भाषी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥
कहं लगि सहिय रहिय मन मारे । नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दो० । छत्रिजाति रघुकुलजनम रामअनुज जग जान ।
लातहु मारे चढ़त सिर नीच को धूरि समान । २२० ॥

चौ० । उठि कर जोरि रजायसु मांगा । मनहु बीररस सोवत जागा ॥
बांधि जटा सिर कटि कसि भाथा । साजि सरासन सायक हाथा ॥
आजु रामसेवकजस लेऊं । भरतहि समर सिखावन देऊं ॥
रामनिरादर कर फल पाई । सोवहु समरसेज दो भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करौं रिस पाछिलि आजू ॥
जिमि करिनिकर दलै मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातौं खेता ॥
जौ सहाय कर संकर आई । तदपि हतौं रन रामदोहाई ॥

दो० । अति सरोष माखे लखन लखि सुनि सपथप्रमान ।
सभय बिलोकत लोकपति चाहत भभरि भगान । २२१ ॥

चौ० । जग भै मगन गगन भै बानी । लषनबाहुबल बिपुल बखानी ॥

तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा । को कहि सकै को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काज कछु होई । समुझि करिय भल कह सब कोई ॥
सहसा करि पाछे पछिताहीं । कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुरबचन लषन सकुचाने । राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई । सब ते कठिन राजमद भाई ॥
जो अंचवत मातहिं नृप तेई । नाहिन साधुसभा जिन्ह सेई ॥
सुनहु लषन भल भरत सरीखा । बिधिप्रपंच महं सुना न दीखा ॥

दो० । भरतहि होइ न राजमद बिधिहरिहरपद पाइ ।
कबहुं कि कांजीसीकरन्हि छीरसिंधु बिनसाइ । २१२ ॥

चौ० । तिमिर तरुन तरनिहिं सक गिलई । गगन मगन मकु मेघहि मिलई ॥
गोपदजल बूड़हिं घटयोनी । सहज छमा बरु छाड़हिं छोनी ॥
मसकफूंक बरु मेरु उड़ाई । होइ न नृपमद भरतहिं भाई ।
लषन तुम्हार सपथ पितुआना । सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥
सगुन छीर अवगुन जल ताता । मिलै रचै परपंच बिधाता ॥
भरत हंस रबिबंस तड़ागा । जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा ॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । निज जस जगत कीन्हि उजियारी ॥
कहत भरत गुनसीलसुभाऊ । प्रेमपयोधि मगन रघुराऊ ॥

दो० । सुनि रघुबरबानी बिबुध देखि भरत पर हेतु ।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु । २१३ ॥

चौ० । जौ न होत जग जनम भरत को । सकल धरमधुर धरनि धरत को ।
कबिकुल अगम भरतगुनगाथा । को जानै तुम बिनु रघुनाथा ।
लषन राम सिय सुनि सुरबानी । अति सुख लहेउ न जाइ बखानी ।
इहां भरत सब सहित सुहाये । मंदाकिनी पुनीत नहाये ।
सरित समीप राखि सब लोगा । मांगि मातुगुरसचिवनियोगा ।
चले भरत जहं सिय रघुराई । साथ निषादनाथ लघु भाई ॥
समुझि मातुकरतब सकुचाहीं । करत कुतर्क कोटि मन माहीं ।
राम लषन सिय सुनि मम नाऊं । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊं ।

दो० । मातुमते महं मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ।
अघ अवगुन तजि आदरहिं समुझि आपनी ओर । २१४ ॥

चौ० । जौ परिहरहिं मलिन मन जानी । जौ सनमानहिं सेवक मानी ।
मोरे सरन राम की पनहीं । राम सुस्वामि दोष सब जनहीं ॥
जग जसभाजन चातक मीना । नेम प्रेम निज निपुन नवीना ॥
अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेह सिथिल सब गाता ।

फेरति मनहुं मातुकृत खोरी । चलत भगतिबल धीरजधोरी ॥
जब समुझहिं रघुनाथसुभाऊ । तब पथ परत उताइल पाऊ ॥
भरतदसा तेहि अवसर कैसी । जलप्रबाह जलअलिगति जैसी ॥
देखि भरत कर सोच सनेहू । भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥

दो० । लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषाद ।
मिटिहि सोच होइहि हरष पुनि परिनाम बिषाद । २२५ ॥

चौ० । सेवक बचन सत्य सब जाने । आस्रम निकट जाइ नियराने ॥
भरत दीख बनसैलसमाजू । मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
ईतिभीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिबिधताप पीड़ित ग्रह मारी ॥
जाइ सुराजसुदेस सुखारी । होइ भरतगति तेहि अनुहारी ॥
रामबासबन संपति भ्राजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव बिराग बिबेक नरेसू । बिपिन सुहावन पावन देसू ॥
भट जमनीय सैल रजधानी । सांति सुमति सुचि सुंदरि रानी ॥
सकल अंग संपन्न सुराऊ । रामचरनआस्रित चित चाऊ ॥

दो० । जीति मोहमहिपालदल सहित बिबेक भुआल ।
करत अकंटक राज पुर सुख संपदा सुकाल । २२६ ॥

चौ० । बनप्रदेस मुनिबास घनेरे । जनु पुर नगर गांव गन खेरे ॥
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । प्रजासमाज न जाइ बखाना ॥
खगहा करि हरि बाघ बराहा । देखि महिष बृष साज सराहा ॥
बैर बिहाइ चरहिं एक संगा । जहं तहं मनहुं सेन चतुरंगा ॥
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं । मनहुं निसान बिबिधबिधि बाजहिं ॥
चक चकोर चातक सुक पिकगन । कूजत मंजु मराल मुदितमन ॥
अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहुं ओरा ॥
बेलि बिटप तृन सफल सफूला । सब समाज मुदमंगलमूला ॥

दो० । रामसैलसोभा निरखि भरतहृदय अति प्रेम ।
तापसतपफल पाइ जिमि सुखी सिराने नेम । २२७ ॥

चौ० । तब केवट ऊंचे चढ़ि धाई । कहा भरत सन भुजा उठाई ॥
नाथ देखु यह बिटप बिसाला । पाकरि जंबु रसाल तमाला ॥
जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बट सोहा । मंजु बिसाल देखि मन मोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला । अबिरल छांह सुखद सब काला ॥
मानहुं तिमिर अरुनमयरासी । बिरची बिधि संकेलि सुषमा सी ॥
ए तरु सरित समीप गुसांई । रघुबर परनकुटी जहं छाई ॥
तुलसीतरुबर बिबिध सुहाये । कहुं सियपिय कहुं लखन लगाये ॥
बटछाया बेदिका बनाई । सिय निजपानिसरोज सुहाई ॥

दो० । जहं बैठे मुनिगन सहित नित सियराम सुजान ।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान । २२८ ॥

चौ० । सखा बचन सुनि बिटप निहारी । उमगे भरत बिलोचन बारी ॥
करत प्रनाम चले दो भाई । कहत प्रीति सारद सकुचाई ॥
हर्षहिं निरखि रामपद अंका । मानहुं पारस पायेउ रंका ॥
रज सिर धरि हिय नैननि लावहिं । रघुबरमिलन सरिस सुख पावहिं ॥
देखि भरतगति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा ॥
सखहि सनेहबिबस मग भूला । कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला ॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेह सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाव भरत को । अचर सचर चर अचर करत को ॥

दो० । प्रेम अमिय मंदर बिरह भरत पयोधि गंभीर ।
मथि प्रगटे सुरसाधु हित कृपासिंधु रघुबीर । २२९ ॥

चौ० । सखा समेत मनोहर जोटा । लखउ न लखन सघन बन ओटा ॥
भरत दीख प्रभुआश्रम पावन । सकल सुमंगलसदन सुहावन ॥
करत प्रबेश मिटा दुखदावा । जनु जोगी परमारथ पावा ॥
देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूछत बचन कहत अनुरागे ॥
सीस जटा कटि मुनिपट बांधे । तून कसे कर [illegible] धनु कांधे ॥
बेदी पर मुनिसाधु समाजू । सीय सहित रा[illegible] रघुराजू ॥
बलकलबसन जटिल तनु स्यामा । जनु मुनिबेष क[illegible]रति कामा ॥
करकमलन धनु सायक फेरत । जी की जरनि ह[illegible] हँसि हेरत ॥

दो० । लसत मंजु मुनिमंडली मध्य सीय रघुचंद ।
ज्ञानसभा जनु तनु धरे भक्ति सच्चिदानंद । ३० ॥

चौ० । सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरे हर्ष सोक सुखदुखगन ।
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं । भूतल परे लकुट की नाईं ॥
बचन सप्रेम लखन पहिचाने । करत प्रनाम भरत जिय जाने ॥
बंधुसनेह सरस इहि ओरा । उत साहिबसेवाबरजोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई । सुकबि लखनमन की गति भनई ॥
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू ।
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा । कहुं पट कहुं निषंग धनु तीरा ।

दो० । बरबस लिये उठाइ उर लाये कृपानिधान ।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान । २३१ ॥

चौ० । मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । कबिकुल अगम कर्म मन बानी ।
परम प्रेमपूरन दो भाई । मन बुधि चित अहमिति बिसराई ।

कहहु सुप्रेम प्रगट को करई । केहि छाया कबिमति अनुसरई ॥
कबिहि अर्थआखरबल सांचा । अनुहरि तालगतिहि नट नाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुबर के । जहं न जाइ मन बिधि हरि हर के ॥
सो मैं बरनि कहौं केहि भांती । बाजु सुराग कि गाडर तांती ॥
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की । सुरगन सभय धुकधुकी धरकी ॥
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे । बरषि प्रसून प्रसंसन लागे ॥

दो० । मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवट भेंटेउ राम ।
भूरि भाइ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम । २३२ ॥

चौ० । भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई ॥
पुनि मुनिगन दुहुं भाइन्ह बंदे । अभिमत आसिष पाइ अनंदे ॥
सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरि सिर सिय पदपदुमपरागा ॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये । सिर करकमल परसि बैठाये ॥
सीय असीस दीन्ह मन माहीं । मगन सनेह देहसुधि नाहीं ॥
सब बिधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता ॥
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा । प्रेमभरा मन निज गति छूछा ॥
तेहि अवसर केवट धीरज धरि । जोरि पानि बिनवत प्रनाम करि ॥

दो० । नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब आये बिकल बियोग । २३३ ॥

चौ० । सीलसिंधु सुनि गुरुआगमनू । सीय समीप राखि रिपुदमनू ॥
चले सबेग राम तेहि काला । धीर धरमधुर दीनदयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दंडप्रनाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिबर धाइ लिये उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंडप्रनामू ॥
रामसखा ऋषि बरबस भेंटे । जनु महि लुठत सनेह समेटे ॥
रघुपतिभक्ति सुमंगलमूला । नभ सराहि सुर बरषहिं फूला ॥
यहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं ॥

दो० । जेहि लखि लखनहु ते अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीतापतिभजन को प्रगट प्रतापप्रभाउ । २३४ ॥

चौ० । आरत लोग राम सब जाना । करुनाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भांति रहा अभिलाषी । तेहि तेहि की तसि तसि रुचि राखी ॥
सानुज मिलि पल महं सब काहू । कीन्ह दूरि दुख दारुन दाहू ॥
यह बड़ि बात राम के नाहीं । जिमि घट कोटि एक रबिछाहीं ॥
मिलि केवटहिं उमगि अनुरागा । पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखी राम दुखित महतारी । जनु सुबेलिअवली हिम मारी ॥

प्रथम राम भेंटे कैकेई । सरल सुभाव भक्ति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी । काल करम बिधि सिर धरि षोरी ॥

दो० । भेंटे रघुबर मातु सब करि प्रबोध परितोष ।
अंब ईस आधीन जग काहु न दइय दोष । २३५ ॥

चौ० । गुरतियपद बंदे दो भाई । सहित बिप्र तिय जे संग आई ॥
गंग गौरि सम सब सनमानी । देहिं असीस मुदित मृदु बानी ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका ॥
पुनि जननी चरनन्ह दो भ्राता । परे प्रेम ब्याकुल सब गाता ॥
अति अनुराग अंब उर लाये । नयन सनेहसलिल अन्हवाये ॥
तेहि अवसर कर हर्ष बिषादू । किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू ॥
मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिय पाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीसनियोगू । जल थल तकि तकि उतरे लोगू ॥

दो० । महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिये साथ ।
पावन आस्रम गवन किय भरत लषन रघुनाथ । २३६ ॥

चौ० । सीय आइ मुनिबरपग लागी । उचित असीस लही मन मांगी ॥
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता । मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता ॥
बंदि बंदि पद सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥
सासु सकल जब सीय निहारी । मूंदेउ नयन सहमि सुकुमारी ॥
परीं बधिकबस मनहुं मराली । काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
तिन्ह सिय निरषि निपट दुष पावा । सो सब सहिय जो दैव सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा । नीलनलिनलोचन भरि नीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर करुना महि छाई ॥

दो० । लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ।
हृदय असीसहिं प्रेमबस रहिअहु भरी सोहाग । २३७ ॥

चौ० । बिकल सनेह सीय सब रानी । बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानी ॥
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा । कहेउ कछुक परमारथगाथा ॥
नृप कर सुरपुरगमन सुनावा । सुनि रघुनाथ दुसह दुष पावा ॥
मरनहेतु निज नेह बिचारी । भे अति बिकल धीर धुरधारी ॥
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी । बिलपत लषन सीय सब रानी ॥
सोक बिकल अति सकल समाजू । मानहुं राज अकाजेउ आजू ॥
मुनिबर बहुरि राम समुझाये । सहित समाज सुसरित नहाये ॥
ब्रत निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा । मुनिहु कहे जल काहु न लीन्हा ॥

दो० । भोर भये रघुनंदनहिं जो मुनि आयसु दीन्ह ।
स्रद्धा भक्ति समेत प्रभु सो सब सादर कीन्ह । २३८ ॥

चौ० । करि पितुक्रिया बेद जसि बरनी । भे पुनीत पातक तम तरनी ॥
जासु नाम पावक अघ तूला । सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
सुद्ध सो भयेउ साधु संमत अस । तीरथ आवाहन सुरसरि जस ॥
सुद्ध भये दुइ बासर बीते । बोले गुरु सन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी । कंद मूल फल अंबु अहारी ॥
सानुज भरत सचिव सब माता । देखि मोहिं पल जिमि जुग जाता ॥
सब समेत पुर धारिय पाऊ । आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियेउँ ढिठाई । उचित होइ तस करिय गुसाईं ॥

दो० । धर्मसेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ।
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहिं बिश्राम ।२३९॥

चौ० । रामबचन सुनि सभय समाजू । जनु जलनिधि महँ बिकल जहाजू ॥
सुनि गुरगिरा सुमंगलमूला । भयेउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावनपय तिहुँ काल नहाहीं । जेहि बिलोकि अघओघ नसाहीं ॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि । निरखहिं हरषि दंडवत करि करि ॥
राम सैल बन देखन जाहीं । जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ॥
झरना झरहिं सुधा सम बारी । त्रिबिध ताप हर त्रिबिध बयारी ॥
बिटप बेलि तृन अगनित जाती । फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥
सुंदरि सिला सुखद तरु छाहीं । जाइ बरनि बनछबि केहि पाहीं ॥

दो० । सरनि सरोरुह जलबिहग कूजत गुंजत भृंग ।
बैरबिगत बिहरत बिपिनि मृग बिहंग बहुरंग ।२४०॥

चौ० । कोल्ह किरात भील बनबासी । मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥
भरि भरि परन पुटी रचि रूरी । कंद मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा । कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा ॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं । फेरत रामदोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेहमगन मृदु बानी । मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम सुकृती हम नीच निषादा । पावा दरसन रामप्रसादा ॥
हमहिं अगम अति दरस तुम्हारा । जस मरु धरनि देवसरि धारा ॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा । परिजन प्रजा चहिय जस राजा ॥

दो० । यह जिय जानि सकोच तजि करिय छोह लखि नेहु ।
हमहिं कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु ।२४१॥

चौ० । तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे । सेवाजोग न भाग्य हमारे ॥
देब कहा हम तुमहिं गुसाईं । ईन्धन पात किरातमिताई ॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । लेहिं न बासन बसन चुराई ॥
हम जड़ जीव जीवगनघाती । कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥

पाप करत निसि बासर जाहीं । नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं ।
सपनेहु धर्मबुद्धि कस काऊ । यह रघुनंदनदरसप्रभाऊ
जब तें प्रभुपदपद्म निहारे । मिटे दुसह दुख दोष हमारे ।
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिन्ह के भाग सराहन लागे

छं० । लागे सराहन भाग सब अनुरागबचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनि सियरामचरनसनेह लखि सुख पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोलभिल्लन्ह की गिरा ।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै नौका तरा । १० ॥

सो० । बिहरहिं बन चहुं ओर प्रति दिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यौं दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम । ९ ॥

चौ० । पुरजननारि मगन अति प्रीती । बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासुप्रतिबेष बनाई । सादर करहि सरिस सेवकाई
लखा न मरम राम बिनु काहू । माया सब सिय माया माहू
सीय सासु सेवाबस कीन्ही । तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्ही
लखि सिय सहित सरल दौ भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई
अब जिय महिं याचति कैकेई । महि न बीच बिधि मीच न देई
लोकहुं बेद बिदित कबि कहहीं । रामबिमुख थल नरक न लहहीं
यह संसय सब के मन माहीं । राम गवन बिधि अवध कि नाहीं

दो० । निसि न नींद नहिं भूख दिन भरत बिकल सुठि सोच ।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिलसकोच । २४१ ॥

चौ० । कीन्हि मातुमिस काल कुचाली । ईतिभीति जस पाकत साली
कहि बिधि होइ रामअभिषेकू । मोहि अव करत उपाय न एकू
अवसि फिरहिं गुरआयसु मानी । मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ । रामजननि हठ करबि कि काऊ
मोहि अनुचर कर केतिक बाता । तेहि महं कुसमय बाम बिधाता
जौं हठ करौं तो निपट कुकरमू । हरगिरि तें गुरुसेवकधरमू
एकौ जुक्ति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैनि सिरानी
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठय रिषय बुलाई

दो० । गुरपदकमल प्रनाम करि बैठे आयसु पाइ ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ । २४२ ॥

चौ० । बोले मुनिबर समय समाना । सुनहु सभासद भरत सुजाना
धर्मधुरीन भानुकुलभानू । राजा राम स्वबस भगवानू
सत्यसिंधु पालक श्रुतिसेतू । रामजन्म जग मंगलहेतू
गुरु पितु मातु बचनअनुसारी । खलदलदलन देवहितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ । कोउ न राम सम जान यथारथ

बिधि हरि हर ससि रबि दिसिपाला । माया जीव करम कुलि काला ॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई । जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥
करि बिचार जिय देखहु नीकें । रामरजाय सीस सबही कें ॥
दो० । राखे रामरजायरुख हम सब कर हित होइ ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ । २५४ ॥
चौ० । सब कहँ सुखद रामअभिषेकू । मंगलमूल मोद मग एकू ॥
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराई । कहहु समुझि सोइ करैं उपाई ॥
सब सादर सुनि मुनिबरबानी । नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतर न आव लोग भे भोरे । तब सिर नाइ भरत कर जोरे ॥
भानुबंस भे भूप घनेरे । अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
जन्महेतु सब कहँ पितु माता । करम सुभासुभ देइ बिधाता ॥
दलि दुख सजै सकल कल्याना । असि असीस राउरि जग जाना ॥
सो गुसांइ बिधिगति जेइ छेंकी । सकै को टारि टेक जो टेकी ॥
दो० । बूझिय मोहिं उपाय अब सो सब मोर अभाग ।
सुनि सनेहमय बचन गुरु उर उमगा अनुराग । २५५ ॥
चौ० । तात बात फुरि रामकृपा ही । रामबिमुख सुख सपनेहु नाहीं ॥
सकुचौं तात कहत एक बाता । अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥
तुम्ह कानन गवनहु द्वौ भाई । फिरियहिं लखन सीय रघुराई ॥
सुनि सुभ बचन हर्ष द्वौ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा । जनु जिय राउ राम भे राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी । सम दुख सुख सब रोवहिं रानी ॥
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे । फल जग जीवन अभिमत दीन्हे ॥
कानन करउँ जन्म भरि बासू । इहि तें अधिक न मोर सुपासू ॥
दो० । अंतरजामी राम सिय तुम सरबज्ञ सुजान ।
जौं फुर कहहु तो नाथ निज कीजिय बचन प्रमान । २५६ ॥
चौ० । भरतबचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भये बिदेहू ॥
भरतमहामहिमा जलरासी । मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी ॥
गा चह पार जतन हिय हेरा । पावति नाव न बोहित बेरा ॥
और करहिं को भरतबड़ाई । सरसिसीप की सिंधु समाई ॥
भरत मुनिहि मन भीतर भाये । सहित समाज राम पहँ आये ॥
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह सुआसन । बैठे सब सुनि मुनिअनुसासन ॥
बोले मुनिबर बचन बिचारी । देस काल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सरबज्ञ सुजाना । धर्म नीति गुन ज्ञान निधाना ॥
दो० । सब के उर अंतर बसहु जानहु भाव कुभाव ।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिय उपाव । २५७ ।

चौ० । भरत कहहिं बिचारि न काऊ । सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुनि मुनिबचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ
सब कर हित रुख राउर राखे । आयसु करिय मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मो कहं होई । माथे मानि करौं सिख सोई
पुनि जेहि कहं जस होव रजाई । सो सब भांति करिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम भाषा । भरत सनेह बिचार न राषा
तेहि ते कहौं बहोरि बहोरी । भरतभक्ति भै मम मति भोरी
मोरे जान भरतरुचि राखी । जो कीजिय सो सुभ सिव साखी

दो० । भरतबिनयसादर सुनिय करिय बिचार बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत नृप नय निगम निचोरि । २४८ ॥

चौ० । गुरुअनुराग भरत पर देखी । रामहृदय आनंद बिसेषी
भरतहि धर्मधुरंधर जानी । निज सेवक तन मानस बानी
बोले गुरु आयसु अनुकूला । बचन मंजु मृदु मंगलमूला
नाथसपथ पितुचरनदोहाई । भयेउ न भुवन भरत सम भाई
जे गुरुपद अंबुज अनुरागी । ते लोकहुं वेदहुं बड़ भागी
राउर जा पर अस अनुरागू । को कहि सकै भरत कर भागू
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई । करत बदन पर भरत बड़ाई
भरत कहहिं सो किये भलाई । अस कहि राम रहे अरगाई

दो० । तब मुनि बोले भरत सन सब सकोच तजि तात ।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय की बात । २४९ ॥

चौ० । सुनि मुनिबचन रामरुख पाई । गुरु साहेब अनुकूल अघाई
लखि अपने सिर सब छरभारू । कहि न सकहिं कछु करैं बिचारू
पुलकसरीर सभा भे ठाढ़े । नीरज नयन नेहजल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । एहि तें अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानौं निजनाथसुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ
मो पर कृपा सनेह बिसेषी । खेलत खुनस कबहुं नहिं देखी
सिसुपन तें परिहरेउ न संगू । कबहुं न कीन्ह मोर मन भंगू ।
मैं प्रभुकृपारीति जिय जोही । हारेहु खेल जितावहिं मोही ।

दो० । मैं हूं सनेहसकोचबस सनमुख कहेउं न बैन ।
दरसनतृप्त न आजु लगि प्रेमपियासे नैन । २५० ॥

चौ० । बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीच बीच जननीमिसु पारा ॥
यहौ कहत मोहि आजु न सोभा । आपनि समुझि साधु सुचि को भा ।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ।
फरै कि कोदवबालि सुसाली । मुकुता सवै कि संबुक ताली ।

सपनेहु दोष कलेस न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
बिन समझें निज अघपरिपाकू । जारेउँ जाय जननि कहि काकू ॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भाँति भलेहि भल मोरा ॥
गुरु गुसाइँ साहिब सियरामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दो० । साधुसभा प्रभु गुरु निकट कहौं सुथल सतिभाउ ।
प्रेमप्रपंच कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ । २५१ ॥

चौ० । भूपतिमरन प्रेमपन राखी । जननीकुमति जगत सब साखी ॥
देखि न जाहिं बिकल महतारी । जरहिं दुसह जर पुरनरनारी ॥
महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहौं सब सूला ॥
सुनि बन गमन कीन्ह रघुनाथा । करि मुनिभेष लषन सिय साथा ॥
बिन पनही पद प्यादेहि पाये । संकर साखि रहौं एहि घाये ॥
बहुरि निहारि निषादसनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू ॥
अब सब आँखिन्ह देखेउँ आई । जियत जीव जड़ सबै सहाई ॥
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी । तजहिं बिषम बिष तामस तीछी ॥

दो० । तेइ रघुनंदन लषन सिय अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावै काहि । २५२ ॥

चौ० । सुनि अति बिकल भरतबरबानी । आरति प्रीति बिनय नय सानी ॥
सोकमगन सब सभा खभारू । मनहुँ कमलबन परौ तुषारू ॥
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी । भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी ॥
बोले उचित बचन रघुनंदू । दिनकरकुल कैरवबन चंदू ॥
तात जीय जनि करहु गलानी । ईसअधीन जीवगति जानी ॥
तीनि काल त्रिभुवन मत मोरे । पुन्यसलोक तात तनु तोरें ॥
उर आनत तुम पर कुटिलाई । जाइ लोक परलोक नसाई ॥
दोष देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुरुसाधुसभा नहिं सेई ॥

दो० । मिटहिं पाप परिपंच सब अखिलअमंगल भार ।
लोक सुजस परलोक सुख सुमिरत नाम तुम्हार । २५३ ॥

चौ० । कहौं सुभाव सत्य सिव साखी । भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
तात कुतर्क करहु जनि जाये । बैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥
मुनिगन निकट बिहंग मृग जाहीं । बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ॥
हित अनहित पसु पंछिउ जाना । मानुषतनु गुनज्ञाननिधाना ॥
तात तुम्हहि मैं जानौं नीके । करौं कहा असमंजस जी के ॥
राखेउ राउ सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ प्रेमपन लागी ॥
तासु बचन मेटत मन सोचू । तेहि तें अधिक तुम्हार सकोचू ॥
तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा । अवसि जो कहहु चहौं सोइ कीन्हा ॥

दो० । मन प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सो आज ।
सत्यसिंधु रघुबरबचन सुनि भा सुखी समाज । २५४ ॥

चौ० । सुरगन सहित सभय सुरराजू । सोचहिं चाहत होन अकाजू
करत बिचार बनत कछु नाहीं । रामसरन सब गे मनै माहीं
बहुरि बिचार परस्पर कहहीं । रघुपति भक्तभक्तिबस अहहीं
सुधि करि अंबरीष दुर्बासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा । नरहरि किये प्रगट प्रहलादा
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा । अब सुरकाज भरत के हाथा
आन उपाय न देखिय देवा । मानत राम सुसेवकसेवा
हिय सप्रेम सेवहु सब भरतहि । निज गुनसील राम बस करतहि

दो० । सुनि सुर मत सुरगुरु कहेउ भल तुम्हार बड़ भाग ।
सकल सुमंगलमूल जग भरतचरन अनुराग । २५५ ॥

चौ० । सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु सत सरिस सुहाई
भरतभक्ति तुम्हरे मन आई । तजहु सोच बिधि बात बनाई
देखु देवपति भरतप्रभाऊ । सहजसुभाव बिबस रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं । भरतहि जानि रामपरिछाहीं
सुनि सुर गुरसुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू
निज सिर भार भरत जिय जाना । करत कोटि बिधि उर अनुमाना
करि बिचार मन दीन्ही ठीका । रामरजायसु आपन नीका
निज पन तजि राखेउ मन मोरा । छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० । कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रनाम बोले भरत जोरि जलजजुगहाथ । २५६ ॥

चौ० । कहउं कहावउं का अब स्वामी । कृपाअंबुनिधि अंतरजामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला । मिटी मलिन मनकलपित सूला
अपडर डरेउं न सोच समूले । रबिहि न दोष देव दिस भूले
मोर अभाग मातुकुटिलाई । बिधि गति बिषम काल कठिनाई
पांव रोपि सब मिलि मोहि घाला । प्रनतपाल पन आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई । लोकहु बेद बिदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गुसाईं । कहिय होइ भल कासु भलाईं
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ । सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ

दो० । जाइ निकट पहिचानि तरु छांह समनि सब सोच ।
मांगत अभिमत पाव जग राउ रंक भल पोच । २५७ ॥

चौ० । लखि सब बिधि गुरुस्वामिसनेहू । मिटेउ छोभ नहिं मन संदेहू
अब करुनाकर कीजिय सोई । जनहित प्रभुचित छोभ न होई

सो सेवक साहिबसंकोची । निज हित चहै तासु मति पोची ॥
सेवकहित साहिबसेवकाई । करै सकल सुख लोभ बिहाई ॥
स्वारथ नाथ फिरे सबही का । किये रजाइ कोटिबिधि नीका ॥
यह स्वारथपरमारथसारू । सकलसुकृतफल सुगतिसिंगारू ॥
देव एक बिनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करब बहोरी ॥
तिलकसमाज साजि सब आना । करिय सुफल प्रभु जो मन माना ॥

० । सानुज पठइय मोहि बन कीजिय सबहि सनाथ ।
नातरु फेरिय बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ । २५८ ॥

० । नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करुनासागर कीजिय सोई ॥
देव दीन्ह सब मोपर भारू । मोरे नीति न धर्म बिचारू ॥
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत के चित चेतू ॥
उतर देइ सुनि स्वामिरजाई । सो सेवक लखि लाज लजाई ॥
अस मैं अवगुनउदधि अगाधू । स्वामिसनेह सराहत साधू ॥
अब कृपाल मोहिं सो मत भावा । सकुच स्वामिमन जाइ न पावा ॥
प्रभुपदसपथ कहौं सति भाऊ । जगमंगल हित एक उपाऊ ॥

० । प्रभु प्रसन्नमन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ।
सो सिर धरि धरि करिहि सब मिटिहि अनट अवरेब ।२५९ ॥

० । भरतबचन सुचि सुनि सुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
असमंजस बस अवधनिवासी । प्रमुदितमन तापस बनबासी ॥
चुप रहि गे रघुनाथ सकोची । प्रभुगति देखि सभा सब सोची ॥
जनकदूत तेहि अवसर आये । मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बुलाये ॥
करि प्रनाम तिन्ह राम निहारे । बेष देखि भे निपट दुखारे ॥
दूतन्हि मुनिबर पूछी बाता । कहहु बिदेहभूपकुसलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोले चर बर जोरे हाथा ॥
बूझब राउर सादर साईं । कुसलहेतु सो भयेउ गुसाईं ॥

० । नाहित कोसलनाथ के साथ कुसल गइ नाथ ।
मिथिला अवध बिसेष तें जग सब भयउ अनाथ । २६० ॥

० । कोसलपतिगति सुनि जनकौरा । भे सब लोग सोकबस बौरा ॥
जेहि देखा तेहि समय बिदेहू । नाम सत्य अस लाग न केहू ॥
रानिकुचालि सुनत नरपालहिं । सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहिं ॥
भरत राज रघुबर बनबासू । भा मिथिलेसहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुधसचिवसमाजू । कहहु बिचारि उचित का आजू ॥

समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ ।
नृपति धीर धरि हृदय बिचारी । पठये अवध चतुर चर चारी ।
बूझि भरतमनभावकुभाऊ । आयेहु बेगि न होइ लखाऊ ।

दो० । गये अवध चर भरतगति बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति । २६१ ॥

चौ० । दूतन्ह आइ भरत की करनी । जनकसमाज यथामति बरनी ।
सुनि गुरुपुरजन सचिव महीपति । भे सब सोच सनेह बिकलमति ।
धरि धीरज करि भरत बड़ाई । लिये सुभट साहनी बुलाई ।
घर पुर देस राखि रखवारे । हय गज रथ बहु यान संवारे ।
दुघरी साधि चले ततकाला । किय बिस्राम न मग महिपाला ।
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा । चले यमुनउतरन सब लागा ।
खबरि लेन हम पठये नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायेउ माथा ।
साथ किरात छसातक दीन्हे । मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे ।

दो० । सुनत जनकआगमन सब हरषेउ अवधसमाज ।
रघुनन्दनहिं सकोच बड़ सोचबिबस सुरराज । २६२ ॥

चौ० । गरइ गलानि कुटिल कैकेयी । काहि कहै केहि दूषन देयी ।
अस मन आनि मुदित नर नारी । भयेउ बहोरि रहब दिन चारी ।
एहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात अन्हान लगे सब कोऊ ।
करि मज्जन पूजहिं नर नारी । गनपति गौरि पुरारि तमारी ।
रमारमनपद बंदि बहोरी । बिनवहिं अंजलि अंचल जोरी ।
राजा राम जानकी रानी । आनँदअवधि अवध रजधानी ।
सुबस बसै फिरि सहित समाजा । भरतहिं राम करहिं जुबराजा ।
एहि सुख सुधा सींचि सब काहू । देव देहु जगजीवनलाहू ।

दो० । गुरुसमाज भाइन्ह सहित रामराज पुर होउ ।
अछत राम राजा अवध मरिय मांग सब कोउ । २६३ ॥

चौ० । सुनि सनेहमय पुरजनबानी । निंदहिंयोग बिरति मुनि ज्ञानी ।
एहि बिधि नित्यकर्म करि पुरजन । रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन ।
ऊंच नीच मध्यम नर नारी । लहहिं दरस निज निज अनुहारी ।
सावधान सबही सनमानहिं । सकल सराहत कृपानिधानहिं ।
लरिकाई तें रघुबर बानी । पालत नीति प्रीति पहिचानी ।
सीलसकोचसिंधु रघुराऊ । सुमुख सुलोचन सरलसुभाऊ ।
कहत रामगुनगन अनुरागे । सब निज भाग सराहन लागे ।
हम सम पुन्यपुंज जग थोरे । जिनहिं राम जानत करि मोरे ।

दो० । प्रेममगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेस ।
सहित सभा संभ्रम उठे रविकुलकमलदिनेस । २६४ ॥

चौ० । आगे गवन कीन्ह रघुनाथा । भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा ॥
गिरिवर दीख जनकपति जवहीं । करि प्रनाम त्यागा रथ तवहीं ॥
रामदरस लालसा उछाहू । पथश्रम लेस कलेस न काहू ॥
मन तहं जहं रघुवर वैदेही । विनु मन तनदुखसुखसुधि केही ॥
आवत जनक चले यहि भांती । सहित समाज प्रेममतिमाती ॥
आये निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परसपर लागे ॥
लगे जनक मुनिजनपद वंदन । रिषिन्ह प्रनाम कीन्ह रघुनंदन ॥
भाइन सहित राम मिलि राजहिं । चले लवाइ समेत समाजहिं ॥

दो० । आस्रम सागर सांतरस पूरन पावन पाथ ।
सेन मनहुं करुनासरित लिये जात रघुनाथ । २६५ ॥

चौ० । बोरति ज्ञान विराग करारे । वचन ससोक मिलत नद नारे ॥
सोच उसास समीर तरंगा । धीरज तटतरुवर कर भंगा ॥
विषम विषाद तुरावति धारा । भय भ्रम भंवर अवर्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बड़ि नावा । सकहिं न खेइ एक नहिं आवा ॥
वनचर कोल किरात विचारे । थके विलोकि पथिक हिय हारे ॥
आस्रम उदधि मिली जव जाई । मनहुं उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
सोक विकल दोउ राजसमाजा । रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ॥
भूप रूप गुन सील सराही । रोवहिं सोकसिंधु अवगाही ॥

छं० । अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा ।
दै दोष सकल सरोष वोलहिं वाम विधि कीन्हो कहा ॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि दसा देखि विदेह की ।
तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की । ११ ॥

सो० । किये अमित उपदेस जहं तहं लोगन्ह मुनिवरन ।
धीरज धरिय नरेस कहेउ वसिष्ट विदेह सन । १० ॥

चौ० । जासु ज्ञानरवि भवनिसिनासा । वचन किरन मुनिकमलविकासा ॥
तेहि कि मोहममता नियराई । यह सियरामसनेहवड़ाई ॥
विषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिविध जीव जग वेद वखाने ॥
रामसनेहसरस मन जासू । साधुसभा वड़ आदर तासू ॥
सोह न राम प्रेम विनु ज्ञाना । करनधार विनु जिमि जलयाना ॥
मुनि वहु विधि विदेह समुझाये । रामघाट सव लोग नहाये ॥
सकल सोकसंकुल नरनारी । सो वासर वीतेउ विनु वारी ॥
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारा । प्रिय परिजन कर कवन विचारा ॥

दो० । दो समाज निमिराज रघुराज नहाने प्रात ।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात । २६६ ॥

चौ० । जे महिसुर दसरथपुरबासी । जे मिथिलापतिनगरनिवासी ॥
हंसबंसगुरु जनकपुरोधा । जिन्ह जग मगु परमारथ सोधा ॥
लगे कहन उपदेस अनेका । सहित धर्म नय बिरति बिबेका ॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी । समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेउ । नाथ कालि जल बिनु सब रहेउ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
ऋषिरुख लखि कह तिरहुतिराजू । इहाँ उचित नहिं असन अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दो० । तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।
लै आये बनचर बिपुल भरि भरि कांवरि भार । २६७ ॥

चौ० । कामद भे गिरि रामप्रसादा । अवलोकत अपहरत बिषादा ॥
सर सरिता बन भूमिबिभागा । जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला । बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू । त्रिबिध समीर सुखद सब काहू ॥
जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु महि करति जनकपहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुबर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना । पावन सुंदर सुधा समाना ॥

दो० । सादर सब कहँ रामगुरु पठये भरि भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फलहार । २६८ ॥

चौ० । इहि बिधि बासर बीते चारी । राम निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहुँ समाज अस रुचि मन माहीं । बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं ॥
सीता राम संग बनबासू । कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि लषन राम बैदेही । जेहि घर भाव बाम बिधि तेही ॥
दाहिन दैव होइ जब सबहीं । राम समीप बसिय बन तबहीं ॥
मंदाकिनि मज्जन तिहुँ काला । रामदरस मुदमंगलमाला ॥
अटन रामगिरि बन तापसथल । असन अमिय सम कंद मूल फल ॥
सुख समेत संबत दुइ साता । पल सम होहिं न जानिय जाता ॥

दो० । इहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहा असि भाग ।
सहज सुभाव समाज दुहुँ रामचरन अनुराग । २६९ ॥

चौ० । इहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीयमातु तेहि समय पठाई । दासी देखि सुअवसर आई ॥

सावकास सुनि सब सियसासू । आइ जनकराजरनिवासू ॥
कौसल्या सादर सनमानी । आसन दीन्ह समय सम आनी ॥
सील सनेह सकल दुहुं ओरा । द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
पुलक सिथिल तनु बारि बिलोचन । महि नख लिखन लगीं सब सोचन ॥
सब सियरामप्रेम की मूरति । जनु करुना बहु भेष बिसूरति ॥
सीयमातु कह बिधिबुधि बांकी । जिमि पयफेनु फोर पबिटांकी ॥

दो० । सुनिय सुधा देखिय गरल सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल । २७० ॥

चौ० । सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा । बिधिगति अति बिपरीत बिचित्रा ॥
जो सृजि पालै हरै बहोरी । बालकेलि सम बिधिमति भोरी ॥
कौसल्या कह दोष न काहू । कर्मबिबस दुख सुख छति लाहू ॥
कठिन कर्मगति जान बिधाता । जो सुभअसुभकर्मफलदाता ॥
ईस आइ सीस सबही के । उतपति थिति लय बिषहु अमी के ॥
देबि मोहबस सोचिय बादी । बिधिप्रपंच अस अचल अनादी ॥
भूपतिजियबमरब उर आनी । सोचिय सखि लखि निज हित हानी ॥
सीयमातु कह सत्य सुबानी । सुकृती अवधि अवधपतिरानी ॥

दो० । लषन राम सिय जाहिं बन भल परिनाम न पोच ।
गहबरि हिय कह कौसिला मोहि भरत कर सोच । २७१ ॥

चौ० । ईसप्रसाद असीस तुम्हारी । सुत सुतबधू बिबुध सरिबारी ॥
रामसपथ मैं कीन्हि न काऊ । सो करि सखी कहौं सति भाऊ ॥
भरतसीलगुनबिनयबड़ाई । भायप भक्ति भरोस भलाई ॥
कहत सारदहु कै मति हीचे । सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
जानौं सदा भरत कुलदीपा । बारबार मोहि कहेउ महीपा ॥
कसे कनक मनि पारिख पाये । पुरुष परिखिये समय सुभाये ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा । सोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी । भईं सनेह बिकल सब रानी ॥

दो० । कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि ।
को बिबेकनिधिबल्लभहि तुमहि सकै उपदेसि । २७२ ॥

चौ० । रानि राय सन अवसर पाई । आपनि भांति कहब समुझाई ॥
राखिय लषन भरत गवनहिं बन । जौ यह मत मानै महीपमन ॥
तौ भल यतन करब सुबिचारी । मोरे सोच भरत कर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं । रहे नीक मोहि लागत नाहीं ॥
लखि सुभाव सुनि सरल सुबानी । सब भइं मगन करुनरसरानी ॥

नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि । सिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि ॥
सब रनिवास थकित लखि रहेऊ । तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ ॥
देवि दंड युग यामिनि बीती । राममातु सुनि उठी सप्रीती ॥

दो० । बेगि पाय धारिय थलहि कह सनेह सति भाय ।
हमरे तौ अब ईसगति कै मिथिलेस सहाय । २०३ ॥

चौ० । लखि सनेह सुनि बचन बिनीता । जनकप्रिया गहि पांव पुनीता ॥
देवि उचित अस बिनय तुम्हारी । दसरथ घरनि राममहतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अगिनि धूम गिरि सिर तन धरहीं ॥
सेवक राउ कर्म मन बानी । सदा सहाय महेस भवानी ॥
रौरे अंग योग जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
राम जाइ बन करि सुरकाजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ।
अमर नाग नर रामबाहुबल । सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
यह सब यागबल्क्य कहि राखा । देवि न होइ मुधा मुनिभाषा ॥

दो० । अस कहि पगु परि प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाइ ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ । २०४ ॥

चौ० । प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही । जो जेहि योग भांति तब तेही ।
तापसभेष जानकिहिं देखी । भे सब बिकल बिषाद बिसेषी ॥
जनक रामगुरु आयसु पाई । चले थलहि सिय देखी आई ।
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । पाहुनि पावनि प्रेमप्रान की ।
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मन मनहुं प्रयागू ।
सियसनेह बट बाढ़त जोहा । तापर रामप्रेम सिसु सोहा ।
चिरंजीवि मुनि ज्ञानबिकल जनु । बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु ।
मोहमगन मति नहिं बिदेह की । महिमा सियरघुबरसनेह की

दो० । सियपितुमातु सनेहबस बिकल न सकी संभारि ।
धरनिसुता धीरज धरेउ समय सुधर्म बिचारि । २०५ ॥

चौ० । तापसभेष जनक सिय देखी । भयउ प्रेम परितोष बिसेषी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ । सुयस धवल जग कह सब कोऊ
जिति सुरसरि कीरतिसरि तोरी । गवन कीन्ह बिधिअंड करोरी
गंग अवनिथल तीनि बड़ेरे । इहि किये साधुसमाज घनेरे
पितु कह सत्यसनेह सुबानी । सोच सकुचि मन माहं समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उर लाई । सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई
कहति न सीय सकुच मन माहीं । इहां बसब रजनी भल नाहीं
लखि रुख रानि जनायउ राऊ । हृदय सराहत सील सुभाऊ

दो० । बार बार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्ह सनमानि ।
कही समयसिर भरतगति रानि सुबानि सयानि । २७६ ॥

चौ० । सुनि भूपाल भरतव्यवहारू । सोन सुगंध सुधा ससि सारू ॥
मूदे सजल नयन पुलके तन । सुजस सराहन लगे मुदित मन ॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । भरतकथा भवबंधविमोचनि ॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू । इहां यथामति मोर प्रचारू ॥
सो मति मोरि भरत महिमाहीं । कहैं काह छलि छुअति न छाहीं ॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । कबि कोबिद बुध बुद्धिबिसारद ॥
भरतचरित कीरति करतूती । धर्म सील गुन बिमलबिभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू । सुचि सुरसरिरुचि निदरि सुधाहू ॥

दो० । निरवधि गुन निरुपम पुरुष भरत भरत सम जानि ।
कहो सुमेरु कि सेर सम कबिकुलमति सकुचानि । २७७ ॥

चौ० । अगम सबहि बरनत बर बरनी । जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
भरतअमितमहिमा सुनु रानी । जानहिं राम न सकहिं बखानी ॥
बरनि सप्रेम भरतअनुभाऊ । तियजिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
बहुरहिं लषन भरत बन जाहीं । सब कर भल सब के मन माहीं ॥
देवि परंतु भरत रघुबर की । प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरत सनेहअवधि ममता के । यद्यपि राम सीम समता के ॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे । भरत न सपनेहुं मनहुं निहारे ॥
साधन सिद्धि रामपद नेहू । मोहि लखि परत भरतमत एहू ॥

दो० । भोरेहुं भरत न पेलिहहिं मन सहुं रामरजाइ ।
करिय न सोच सनेहबस कहेउ भूप बिलखाइ । २७८ ॥

चौ० । रामभरतगुन गनत सप्रीती । निसि दंपतिहि पलक सम बीती ॥
राजसमाज प्रात युग जागे । न्हाइ न्हाइ सुरपूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरु पहं रघुराई । बन्दि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी । सोकबिकल बनबास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेसू । बहुत दिवस भे सहत कलेसू ॥
उचित होइ सो कीजिय नाथा । हित सबही कर रौरे हाथा ॥
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ । मुनि पुलके लखि सील सुभाऊ ॥
तुम बिनु राम सकल सुखसाजा । नरक सरिस दुहु राजसमाजा ॥

दो० । प्रान प्रान के जीव के जिय सुख के सुखराम ।
तुम तजि तात सोहात गृह जिन्हहिं तिन्हहिं बिधि बाम । २७९ ॥

चौ० । सो सुख करम धरम जरि जाऊ । जहं न रामपदपंकजभाऊ ॥
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू । जहां न रामप्रेम परधानू ॥

तुम बिनु दुखी सुखी तुम तें ही । तुम जानहु जिय जो जेहि केही ॥
राउर आयसु सिर सबही के । बिदित कृपालहि गति सब नीके ॥
आपु आश्रमहि धारिय पाऊ । भये सनेह सिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रनाम तब राम सिधाये । ऋषि धरि धीर जनक पहं आये ॥
रामबचन गुरु नृपहिं सुनाये । सील सनेह सुभाय सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई । सब कर धर्म सहित हित होई ॥

दो० । ज्ञाननिधान सुजान सुचि धर्मधीर नरपाल ।
तुम बिनु असमंजससमन को समर्थ इहि काल । २८० ॥

चौ० । सुनि मुनिबचन जनक अनुरागे । लखिगति ज्ञान बिराग बिरागे ॥
सिथिल सनेह गुनत मन माहीं । आये इहां कीन्ह भल नाहीं ॥
रामहि राय कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना ॥
हम अब बन तें बनहिं पठाई । प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई ॥
तापस मुनि महिसुर गति देखी । भये प्रेमबस बिकल बिसेखी ॥
समय समुझि धरि धीरज राजा । चले भरत पहं सहित समाजा ॥
भरत आय आगे भय लीन्हा । अवसर सरिस सुआसन दीन्हा ॥
तात भरत कह तिरहुतिराऊ । तुमहिं बिदित रघुबीरसुभाऊ ॥

दो० । राम सत्यब्रत धर्मरत सब कर सील सनेहु ।
संकट सहत सकोचबस कहिय जो आयसु देहु । २८१ ॥

चौ० । सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी । बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न बापू ॥
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । ज्ञानअंबुनिधि आपुन आजू ॥
सिसु सेवक आयसु अनुगामी । जानि मोहिं सिख देइय स्वामी ॥
इहि समाज थल बूझब राउर । मौन मलीन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता । छमब तात लखि बाम बिधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरम कठिन जग जाना ।
स्वामिधर्म स्वारथहि बिरोधू । बधिर अंध प्रेमहि न प्रबोधू ।

दो० । राखि रामरुख धर्मब्रत पराधीन मोहि जानि ।
सब के संमत सर्बहित करिय प्रेम पहिचानि । २८२ ॥

चौ० । भरतबचन मुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ।
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा । अर्थ अमित अति आखर थोरा ।
ज्यों मुख मुकुर मुकर निज पानी । गहि न जाइ अस अद्भुत बानी ।
भूप भरत मुनि साधु समाजू । गे जहं बिबुधकुमुदद्विजराजू ।
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा । मनहुं मीनगन नवजलजोगा ।

देव प्रबल कुलकुमति देखी । निरखि विदेहसनेह विवेकी ॥
रामभक्तिमय भरत निहारे । सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥
सब कहं राम प्रेममय पेखा । भये अलेख सोचबस लेखा ॥

दो० । राम सनेहसकोच बस कह ससोच सुरराज ।
रचहु प्रपंचहिं पंच मिलि नाहित भयउ अकाज । १८३ ॥

चौ० । सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देवि देव सरनागत पाही ॥
फेरि भरतमति करि निज माया । पालु विबुध कुल करि छलछाया ॥
विबुधविनय सुनि देवि सयानी । बोली सुर स्वारथि जड़ जानी ॥
मो सन कहहु भरतमति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
विधिहरिहरमाया बड़ि भारी । सो न भरतमति सकै निहारी ॥
सो मति मोहि कहत कर भोरी । चंदिनि कर कि चंड कर चोरी ॥
भरतहृदय सियरामनिवासू । तहं कि तिमिर जहं तरनिप्रकासू ॥
अस कहि सारद गइ विधिलोका । विबुध विकल निसि मानहुं कोका ॥

दो० । सुर स्वारथी मलीनमन कीन्ह कुमंत्र कुठाट ।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाट । १८४ ॥

चौ० । करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरतहाथ सब काज अकाजू ॥
गये जनक रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रघुकुलदीपा ॥
समय समाज धर्म अविरोधा । बोले तब रघुबंसपुरोधा ॥
जनकभरतसंबाद सुनाई । भरत कहावति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू । सो सब करै मोर मत एहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युग पानी । बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥
विद्यमान आपुन मिथिलेसू । मोर कहब सब भांति भदेसू ॥
राउर रायरजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर सोई ॥

दो० । राम सपथ सुनि मुनि जनक सकुचे सभा समेत ।
सकल विलोकहिं भरतमुख बनै न उतर देत । १८५ ॥

चौ० । सभा सकुचबस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरज भारी ॥
कुसमय देखि सनेह संभारा । बढ़त विंध्य जिमि घटज निवारा ॥
सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी विमलगुनगन जगजोनी ॥
भरतविवेक बराह विसाला । अनायास उधरी तेहि काला ॥
करि प्रनाम सब कहं करजोरी । राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥
छमब आजु अति अनुचित मोरा । कहउं बदन मृदु बचन कठोरा ॥
हिय सुमिरी सारदा सुहाई । मानस ते मुखपंकज आई ॥
विमल विवेक धर्म नयसाली । भरतभारती मंजु मराली ॥

दो० । निरखि बिबेकबिलोचनन्हि सिथिल सनेह समाज ।
करि प्रनाम बोले भरत सुमिरि सीय रघुराज । २८६ ॥

चौ० । प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥
सरल सुसाहिब सीलनिधानू । प्रनतपाल सरबज्ञ सुजानू ॥
समरथ सरनागतहितकारी । गुनग्राहक अवगुन अघहारी ।
स्वामि गुसांइहि सरिस गुसांई । मोहि समान मैं स्वामिदोहाई ॥
प्रभु पितुबचन मोहबस पेली । आयउं इहां समाज सकेली ॥
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू । अमी अमरपद माहुर मीचू ॥
रामरजाय मेटि मन माहीं । देखा सुना कतहुं कोउ नाहीं ॥
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दो० । कृपा भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषन सरिस सुयस चारु चहुं ओर । २८७ ॥

चौ० । राउरि रीति सुबानि बड़ाई । जगत बिदित निगमागम गाई ॥
क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥
ते सुनि सरन सामुहे आये । सकृत प्रनाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहुं न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥
को साहिब सेवकहि नेवाजी । आपु समान साज सब साजी ॥
निज करतूति न समुझिय सपने । सेवकसकुच सोच उर अपने ॥
सो गुसांइ नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहौं प्रन रोपी ॥
पसु नाचत सुक पाठप्रबीना । गुनगति नट पाठक आधीना ॥

दो० । सो सुधारि सनमानि जन किये साधुसिरमोर ।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरदावलिबरजोर । २८८ ॥

चौ० । सोक सनेह कि बालसुभायें । आयउं लाइ रजायसु बायें ॥
तबहुं कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भांति भल मानेहु मोरा ॥
देखेउं पाय सुमंगलमूला । जानेउं स्वामि सहज अनुकूला ॥
बड़े समाज बिलोकेउं भागू । बड़ी चूक साहिबअनुरागू ॥
कृपा अनुग्रह अंग अघाई । कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई ॥
राखा मोर दुलार गुसांई । अपने सील सुभाव भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई । स्वामिसमाज सकोच बिहाई ॥
अबिनय बिनय यथारुचि बानी । छमिय देव अति आरत जानी ॥

दो० । सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि ।
आयसु देइय देव अब सबइ सुधारिय मोरि । २८९ ॥

चौ० । प्रभुपदपदुमपरागदोहाई । सत्यसुकृतसुखसीम सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपने की । रुचि जागत सोवत सपने की ॥

सहजसनेह स्वामिसेवकाई । स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥
आज्ञा सम न सुसाहिबसेवा । सो प्रसाद जन पावै देवा ॥
अस कहि प्रेमबिबस भे भारी । पुलक सरीर बिलोचन बारी ॥
प्रभुपदकमल गहे अकुलाई । समय सनेह न सो कहि जाई ॥
कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाये समीप गहि पानी ॥
भरतबिनय सुनि देखि सुभाऊ । सिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥

छं० । रघुराउ सिथिल सनेह साधुसमाज मुनि मिथिलाधनी ।
मन महं सराहत भरतभायपभक्ति की महिमा घनी ॥
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से ।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुच निसागम नलिन से । १२ ॥

सो० । देखि दुखारी दीन दुहुं समाज नर नारि सब ।
मघवा महा मलीन मुये मारि मंगल चहत । २७९ ॥

चौ० । कपटकुचालिसीम सुरराजू । पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥
काक समान पाकरिपुरीती । छली मलीन कहुं न परतीती ॥
प्रथम कुमति करि कपटसकेला । सो उचाट सब के सिर मेला ॥
सुरमाया सब लोग बिमोहे । रामप्रेम अतिसय न बिछोहे ॥
भये उचाट सब मन थिर नाहीं । छन बनरुचि छन सदन सोहाहीं ॥
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी । सरितसिंधुसंगम जिमि बारी ॥
दुचित कतहुं परितोष न लहहीं । एक एक सन मर्म न कहहीं ॥
लखि हिय हंसि कह कृपानिधानू । सरिस स्वान मघवा निज बानू ॥

दो० । भरत जनक मुनिगन सचिव साधु सचेत बिहाइ ।
लागी देवमाया सबहि यथायोग जन पाइ । २८० ॥

चौ० । कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेह सुरपति छल भारे ॥
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री । भरतभक्ति सब की मति यंत्री ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
भरतप्रीति नति बिनय बड़ाई । सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥
जासु बिलोकि भक्तिलवलेसू । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू ॥
महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भक्तिप्रभाव सुमतिहिय हुलसी ॥
आपु छोट महिमा बड़ि जानी । कबिकुलकानि मानि सकुचानी ॥
कहि न सकत गुनरुचि अधिकाई । मतिगति बालबचन की नाई ॥

दो० । भरतबिमलजस बिमल बिधु सुमति चकोर कुमारि ।
उदित बिमलजनहृदय नभ एकटक रही निहारि । २८१ ॥

चौ० । भरतसुभाव न सुगम निगमहूं । लघुमतिचापलता कबि छमहूं ॥
कहत सुनत सतिभाव भरत को । सीयरामपद होइ न रत को ॥

चौ० । कहत धर्म इतिहास सप्रीती । भयेउ भोर निसि सो सुख बीती ।
निन्य निबाहि भरत दो भाई । राम अत्रिगुरु आयसु पाई ।
सहित समाज साज सब सादे । चले रामबन अटन पयादे ।
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं । भै मृदु भूमि सकुचि मनमनहीं ।
कुस कंटक कांकरी कुराई । कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ।
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे ।
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं । बिटप फूल फल तृन मृदुताहीं ।
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी । सेवहिं सकल राम प्रिय जानी ।

दो० । सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ।
रामप्रानप्रिय भरत कहं यह न होइ बड़ि बात । २९९ ॥

चौ० । इहि बिधि भरत फिरत बन माहीं । नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं ॥
पुन्य जलास्रय भूमिबिभागा । खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा ।
चारु बिचित्र पवित्र बिसेषी । बूझत भरत दिव्य सब देखी ।
सुनि मन मुदित कहत रिषिराजू । हेतु नाम गुन पुन्यप्रभाऊ ।
कतहुं निमज्जन कतहुं प्रनामा । कतहुं बिलोकत बन अभिरामा ।
कतहुं बैठि मुनिआयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दो भाई ।
देखि सुभाव सनेह सुसेवा । देहिं असीस मुदित बन देवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई । प्रभुपदकमल बिलोकहिं आई ॥

दो० । देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ ।
कहत सुनत हरिहरसुयस गयउ दिवस भइ सांझ । ३०० ॥

चौ० । भोर न्हाइ सब जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तिरहुतिराजू ।
भल दिन आजु जानि मन माहीं । राम कृपाल कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी ॥
सील सराहि सभा सब सोची । कहुं न राम सम स्वामि सकोची ॥
भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी ॥
करि दंडवत कहत कर जोरी । राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहि लगि सबहि सहेउ संतापू । बहुत भांति दुख पावा आपू ॥
अब गुसांइ मोहि देउ रजाई । सेवौं अवध अवधि लगि जाई ।

दो० । जेहि उपाय पुनि पाय जन देखिय दीनदयाल ।
सो सिख देइय अवधि लगि कोसलपाल कृपाल । ३०१ ॥

चौ० । पुरजन परिजन प्रजा गुसांई । सब सुचि सरस सनेह सगाई ।
राउर बदि भल भवदुखदाहू । प्रभु बिनु बादि परमपदलाहू ।
स्वामि सुजान जानि सबही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की ।

प्रनतपाल पालहिं सब काहू । देव दुहूं दिसि ओर निबाहू ॥
अब मोहि सब बिधि भूरि भरोसो । किये बिचार न सोच खरोसो ॥
आरति मोरि नाथ कर छोहू । दुहुं मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू ॥
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी । तजि सकोच सिखइय अनुगामी ॥
भरतबिनय सुनि सबहिं प्रसंसा । छीर नीर बिबरन गति हंसा ॥

दो० । दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।
देस काल अवसर सरिस बोले राम प्रबीन । ३०२ ॥

चौ० । तात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिन्ता गुरुहिं नृपहिं घर बन की ॥
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेसू । हमहिं तुमहिं सपनेहुं न कलेसू ॥
मोर तुम्हार परमपुरुषारथ । स्वारथ सुजस धरम परमारथ ॥
पितुआयसु पालिय दुहुं भाई । लोक बेद भल भूपभलाई ॥
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पाले । चलत सुमगु पगु परत न खाले ॥
अस बिचारि सब सोच बिहाई । पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
देस कोस परिजन परिवारू । गुरुपदरजहिं लाग छरभारू ॥
तुम मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दो० । मुखिआ मुख सो चाहिये खान पान को एक ।
पालै पोषै सकल अंग तुलसी सहित बिबेक । ३०३ ॥

चौ० । राजधर्म सरबस इतनोई । जिमि मन मांह मनोरथ गोई ॥
बंधुप्रबोध कीन्ह बहु भांती । बिनु अधार मन तोष न सांती ॥
भरतसील गुरु सचिव समाजू । सकुच सनेह बिबस रघुराजू ॥
प्रभु करि कृपा पांवरी दीन्ही । सादर भरत सीस धरि लीन्ही ॥
चरनपीठ करुनानिधान के । जनयुगजामिक प्रजाप्रान के ॥
संपुट भरतसनेहरतन के । आखर युग जनु जीवयतन के ॥
कुलकपाट कर कुसलकरम के । बिमल नयन सेवा सुधर्म के ॥
भरत मुदित अवलंब लहे ते । अस सुख जस सियराम रहे ते ॥

दो० । मांगेउ बिदा प्रनाम करि राम लिये उर लाइ ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाइ । ३०४ ॥

चौ० । सो कुचालि सब कहं भइ नीकी । अवधि आस सम जीवन जी की ॥
नतरु लखन सियरामबियोगा । हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥
रामकृपा अवरेव सुधारी । बिबुधधार भइ गुनद गोहारी ॥
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । रामप्रेमरस कहि न परत सो ॥
तन मन बचन उमगि अनुरागा । धीरधुरंधर धीरज त्यागा ॥
बारिजलोचन मोचत बारी । देखि दसा सुरसभा दुखारी ॥
मुनिगन गुरुजन धीर जनक से । ज्ञानअनल मन कसे कनक से ॥

जे बिरंचि निरलेप उपाये । पदुमपत्र जिमि जगजल जाये ॥

दो० । तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार ।
भये मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार । ३०५ ॥

चौ० । जहाँ जनक गुरगति मति भोरी । प्राकृतप्रीति कहत बड़ि षोरी ॥
बरनत रघुबरभरतबियोगू । सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू ॥
सो सकोचरस अकथ सुबानी । समय सनेह सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुबर समुझाये । पुनि रिपुदमन हरषि हिय लाये ॥
सेवक सचिव भरतरुष पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुन दुष दुहूं समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥
प्रभुपदपद्म बंदि दौ भाई । चले सीस धरि रामरजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो० । लषनहि भेंटि प्रनाम करि सिर धरि सियपदधूरि ।
चले सप्रेम असीस सुनि सकलसुमंगलमूरि । ३०६ ॥

चौ० । सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ॥
देव दयावस बड़ दुष पायेउ । सहित समाज काननहि आयेउ ॥
पुर पगु धारिय देइ असीसा । कीन्ह धीर धरि गमन महीसा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किये हरि हर सम जाने ॥
सासु समीप गए दौ भाई । फिरे बंदि पद आसिष पाई ॥
कौसिक बामदेव जाबाली । परिजन पुरजन सचिव सुचाली ॥
यथाजोग करि बिनय प्रनामा । बिदा किये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

दो० । भरतमातुपद बंदि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि । ३०७

चौ० । परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रियप्रेमपुनीता ।
करि प्रनाम भेंटी सब सासू । प्रीति कहत कबिहिय न हुलासू ॥
सुनि सिष अभिमत आसिष पाई । रही सीय दुहुं प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मंगाई । करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई ॥
बार बार हिलि मिलि दौ भाई । सम सनेह जननी पहुंचाई ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना । भूप भरत दल कीन्ह पयाना ॥
हृदय राम सिय लषन समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता ॥
बसह बाजि गज पसु हिय हारे । चले जाहिं परबस मनमारे ॥

दो० । गुरगुरतियपद बंदि प्रभु सीता लषन समेत ।
फिरे हर्ष बिसमय सहित आये परननिकेत । ३०८ ॥

चौ० । बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू ॥

कोल्ह किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जुहारी ॥
प्रभु सिय लखन बैठि बटछाहीं । प्रियपरिजनबियोग बिलखाहीं ॥
भरत सनेह सुभाव सुबानी । प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । श्रीमुख राम प्रेमबस बरनी ॥
तेहि अवसर खग मृग जलमीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
बिबुधबिलोकि दसा रघुबर की । बरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरोसो ॥

दो० । सानुज सीय समेत प्रभु राजत परनकुटीर ।
भक्ति ज्ञान बैराग्य जनु सोहत धरे सरीर । ३०९ ॥

चौ० । मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू । रामबिरह सब साज बिहालू ॥
प्रभुगुनग्राम गनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
जमुना उतरि पार सब भयऊ । सो बासर बिनु भोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू । रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये । चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनक रहे पुर बासर चारी । राजकाज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुरु भरतहि राजू । तिरहुति चले साजि सब साजू ॥
नगरनारिनर गुरुसिख मानी । बसे सुखेन रामरजधानी ॥

दो० । रामदरस लगि लोग सब करत नेम उपबास ।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि की आस । ३१० ॥

चौ० । सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघु भाई । सौंपी सकल मातुसेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम बर बिनय निहोरे ॥
ऊंच नीच कारज भल पोचू । आयसु देब न करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये । समाधान करि सुबस बसाये ॥
सानुज गे गुरुगेह बहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा । बोले मुनि तनु पुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहब करब तुम सोई । धर्मसार जग होइहि सोई ॥

दो० । सुनिसिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिन साधि ।
सिंहासन प्रभुपादुका बैठारी निरुपाधि । ३११ ॥

चौ० । राममातुगुरुपद सिर नाई । प्रभुपदपीठरजायसु पाई ४
नंदिग्राम करि परनकुटीरा । कीन्ह निवास धर्मधुरधीरा ॥
जटाजूट सिर मुनिपटधारी । महि खनि कुससाथरी सँवारी ॥
असन बसन आसन ब्रत नेमा । करत कठिन ऋषिधर्म सप्रेमा ॥
भूषन बसन भोग सुख भूरी । मन तन बचन तजे त्रिन तूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं । दसरथधन सुनि धनद लजाहीं ॥
तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा । चंचरीक जिमि चंपक [illegible] ॥

रमा बिलास रामअनुरागी । तजत बमन जिमि नर बड़ भागी ॥

दो० । रामप्रेमभाजन भरत बड़ो न यह करतूति ।
चातक हंस सराहियत टेकबिबेकबिभूति । ३२५ ॥

चौ० । देह दिनहिं दिन दूबरि होई । घटइ न तेज बल मुखछबि सोई ॥
नित नव रामप्रेमप्रनपीना । बढ़त धर्मदल मन न मलीना ॥
जिमि जल निघटत सरद प्रकासे । बिलसत बेत सुबनज बिकासे ॥
सम दम संयम नेम उपासा । नखत भरतहिय बिमल अकासा ॥
ध्रुव बिस्वास अवधि राकासी । स्वामिसुरति सुरबीथि बिकासी ॥
रामप्रेम बिधु अचल अदोषा । सहित समाज सोह नित चोषा ॥
भरतरहनि समुझनि करतूती । भक्ति बिरति गुन बिमल बिभूती ॥
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं । सेषगनेसगिरागम नाहीं ॥

दो० । नित पूजत प्रभुपांवरी प्रीति न हृदय समाति ।
मांगि मांगि आयसु करत राजकाज बहु भांति । ३२६ ॥

चौ० । पुलक गात हिय सिय रघुबीरू । जीह नाम जप लोचन नीरू ॥
लषन राम सिय कानन बसहीं । भरतभौन बसि तप तनु कसहीं ॥
दोउ दिसि समुझि कहत सब लोगू । सब बिधि भरत सराहनयोगू ॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं । देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥
परम पुनीत भरतआचरनू । मधुर मंजु मुदमंगलकरनू ॥
हरन कठिन कलिकलुष कलेसू । महामोह निसि दलन दिनेसू ॥
पापपुंज कुंजर मृगराजू । समन सकल संतापसमाजू ॥
जनरंजन भंजन भवभारू । रामसनेह सुधाकरसारू ॥

छं० । सियरामप्रेमपियूषपूरन होत जन्म न भरत को ।
मुनिमन अगम यम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को ॥
दुखदाह दारिद दंभ दूषन सुयसमिसु अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठहि हठि रामसनमुख करत को । १२ ॥

सो० । भरतचरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं ।
सीयरामपद प्रेम अवसि होइ भवरस बिरति । १९ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने बिमलबिज्ञानबैराग्यसम्पादनो नाम तुलसीकृत अयोध्याकाण्ड द्वितीयः सोपानः समाप्तः ॥

बनारस मेडिकल हाल के छापेखाने में छापी गई । श्री जे० जे० लाइजरस प्रिन्टर
सन् १८९१ ईसवी ॥

अथ अरण्यकाण्ड ॥

श्लोक ॥

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं ।
वैराग्याम्बुजभास्करमघहरं ध्वान्तापहं तापहं ॥
मोहाम्भोधरपुञ्जपाटनविधौ खे संभवं शङ्करम् ।
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुम्पीताम्बरं सुन्दरम् ।
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ॥
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितम् ।
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो० । उमा रामगुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह बिमूढ़ जे हरिबिमुख न धर्मरति । १ ॥

चौ० । पुरनरभरतप्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभुचरित सुनहु अति पावन । करत जे बन सुरनरमुनिभावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाये । निज कर भूषन राम बनाये ॥
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर । बैठे फटिकसिला पर सुंदर ॥
सुरपतिसुत धरि बायसबेषा । सठ चाहत रघुपतिबल देषा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महामंदमति पावन चाहा ॥
सीताचरन चोंच हति भागा । मूढ़ मंदमतिकारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना । सींकधनुषसायक संधाना ॥

दो० । अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ।
ता सन आइ कीन्ह छल मूरख अवगुनगेह । १ ॥

चौ० । प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा । चला भाजि बायस भय पावा ॥
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । राम बिमुख राखा तेहिं नाहीं ॥
भा निरास उपजी मन त्रासा । यथा चक्रभय रिषि दुर्बासा ॥
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका । फिरा स्रमित ब्याकुल भय सोका ॥

काहू बैठन कहा न ओही । राखि को सकै राम कर द्रोही ॥
मातु मृत्यु पितु समन समाना । सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना ॥
मित्र करै सत रिपु कै करनी । ता कहँ बिबुधनदी बैतरनी ॥
सब जग ताहि अनल तें ताता । जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ॥
नारद देखा बिकल जयंता । लागि दया कोमलचित संता ॥
पठवा तुरत राम पहं ताही । कहेसु पुकारि प्रनतहित पाही ॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई । त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई । मैं मतिमंद जानि नहिं पाई ॥
निजकृत कर्मजनित फल पायेउं । अब प्रभु पाहि सरन तकि आयेउं ॥
सुनि कृपालु अति आरतबानी । एकनयन करि तजा भवानी ॥

सो० । कीन्ह मोहबस द्रोह यद्यपि तेहि कर बध उचित ।
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपालु रघुबीर सम । २ ॥

चौ० । रघुपति चित्रकूट बसि नाना । चरित किए स्रुति सुधा समाना ॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भीर सबहि मोहि जाना ॥
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई । सीता सहित चले दोउ भाई ॥
अत्रि के आस्रम जब प्रभु गयऊ । सुनत महा मुनि हरषित भयऊ ॥
पुलकितगात अत्रि उठि धाये । देखि राम आतुर चलि आये ॥
करत दंडवत मुनि उर लाये । प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये ॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने । सादर निज आस्रम तब आने ॥
करि पूजा कहि बचन सुहाये । दिये मूल फल प्रभुमन भाये ॥

सो० । प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि ।
मुनिबर परम प्रबीन जोरि पानि अस्तुति करत । ३ ॥

छं० । नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शीलकोमलं ।
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकामश्यामसुंदरं भवाम्बुनाथमंदरं ।
प्रफुल्लकंजलोचनं मदादिदोषमोचनं ॥
प्रलंबबाहुबिक्रमं प्रभोप्रमेयवैभवं ।
निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोकनायकं ॥
दिनेशवंशमंडनं महेशचापखंडनं ।
मुनींद्रसंतरंजनं सुरारिवृन्दभंजनं ॥
मनोजवैरिवंदितं अजादिदेवसेवितं ।
विशुद्धबोधविग्रहं समस्तदूषणापहं ॥
नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं ।
भजे सशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं ॥

त्वदंघ्रिमूल ये नरा भजंति हीनमत्सरा: ।
पतंति नो भवार्णवे बितर्कबीचिसंकुले ॥
बिविक्तवासना: सदा भजंति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं बिभुं ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेवकेवलं ॥
भजामि भावबल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्तकल्पपादपं समस्तसेव्यमन्वहं ॥
अनूपरूपभूपतिं नतोहमुर्विजापतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं ।
ब्रजन्ति नात्र संशय: त्वदीयभक्तिसंयुत: १ ॥

• । बिनती करि मुनि नाइ सिर कह कर जोरि बहोरि ।
चरनसरोरुह नाथ जनि कबहुं तजै मति मोरि । २ ॥

० । अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील बिनीता ॥
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य बसन भूषन पहिराये । जे नित नूतन अमल सुहाये ॥
कह रिषिबधू सरल मृदु बानी । नारि धर्म कछु ब्याज बखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥
अमितदानि भर्ता बैदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपदकाल परखिअहि चारी ॥
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पति कर किये अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म एक ब्रत नेमा । काय बचन मन पतिपद प्रेमा ॥
जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं । बेद पुरान सन्त सब कहहीं ॥
उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम परपति देखै कैसे । भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई । सो निकिष्ट तिय स्रुति अस कहई ॥
बिनु अवसर भय तें रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिबंचक परपति रति करई । रौरव नरक कल्प सत परई ॥
छन सुख लागि जनम सत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥
बिनु स्रम नारि परम गति लहई । पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥
पति प्रतिकूल जनमि जहं जाई । बिधवा होइ पाइ तरुनाई ॥

चौ० । मुनिहिं राम बहु भांति जगावा । जाग न ध्यानजनित सुख पावा ॥
भूपरूप तब राम दुरावा । हृदय चतुर्भुजरूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा पुनि कैसे । बिकल हीनमनि फनि बर जैसे ॥
आगे देखि राम तनुस्यामा । सीता अनुज सहित सुखधामा ॥
परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी । प्रेममगन मुनिबर बड़भागी ॥
भुज बिसाल गहि लिये उठाई । परम प्रीति राखे उर लाई ॥
मुनिहिं मिलत इमि सोह कृपाला । कनकतरुहिं जिमि भेंटु तमाला ॥
रामबदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा । मानहुं चित्र मांझ लिखि काढ़ा ॥

दो० । तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहिंबार ।
निज आस्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार । ७ ॥

चौ० । कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवनि बिधि तोरी ॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी । रबिसन्मुख खद्योतअंजोरी ॥
स्याम तामरसदाम सरीरं । जटामुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पानि चाप सर कटि तूनीरं । नौमि निरंतर स्रीरघुबीरं ॥
मोहबिपिन घन दहन कृसानुं । संत सरोरुहकानन भानुं ॥
निसिचरकरिबरूथ मृगराजं । त्रातु सदा नो भवखग बाजं ॥
अरुननयनराजीव सुबेसं । सीतानयनचकोर निसेसं ॥
हरहृदिमानस राजमरालं । नौमि राम उरबाहुबिसालं ॥
संसयसर्प ग्रसन उरगादं । समन सुकर्कस तर्क बिषादं ॥
भवभंजन रंजन सुरयूथं । त्रातु सदा नो कृपाबरूथं ॥
निर्गुन सगुन बिषम सम रूपं । ज्ञानगिरागोतीतमरूपं ॥
अमल अखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्तकल्पपादपआरामं । तर्जन क्रोधलोभमदकामं ॥
अति नागर भवसागरसेतुं । त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुं ॥
अतुलितभुजप्रताप बलधामं । कलिमलबिपुलबिभंजन नामं ॥
धर्मबर्म नर्मद गुनग्रामं । संतत सं तनोतु मम रामं ॥
यदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सब के हृदय निरंतरबासी ॥
तदपि अनुज स्री सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहु स्वामी । सगुन अगुन उरअंतरजामी ॥
जोकोसलपति राजिवनयना । करौ सो राम हृदय मम अयना ॥
अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
सुनि मुनिबचन राम मन भाये । बहुरि हरषि मुनिबर उर लाये ॥
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जो बर मांगु देउं सो तोही ॥
मुनि कह मैं बर कबहुं न जांचा । समुझि न परै झूठ का सांचा ॥

जेहिं सोक लागे रघुराई । सो मोहि देहु दाससुखदाई ॥
अबिरल भक्ति बिरति बिज्ञाना । होहु सकलगुनज्ञाननिधाना ॥
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पावा । अब सो देहु मोहि जो भावा ॥

दो । अनुज जानकी सहित प्रभु चापबानधर राम ।
मम हियगगन इंदु इव बसहु सदा निःकाम । ८ ॥

९ । एवमस्तु कहि रमानिवासा । हरषि चले कुंभजऋषि पासा ॥
बहुत दिवस गुरुदरसन पाये । भये मोहिं एहि आस्रम आये ॥
अब प्रभु संग जाउं गुरु पाहीं । तुम कहं नाथ निहोरा नाहीं ॥
देखि कृपानिधि मुनिचतुराई । लिये संग बिहंसे दोउ भाई ॥
पंथ कहत निज भगति अनूपा । मुनिआस्रम पहुंचे सुरभूपा ॥
तुरत सुतीछन गुरु पहं गयऊ । करि दंडवत कहत अस भयऊ ॥
नाथ कोसलाधीस कुमारा । आये मिलन जगतआधारा ॥
राम अनुज समेत बैदेही । निसिदिन देव जपतहहु जेही ॥
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाये । हरि बिलोकि लोचन जल छाये ॥
मुनिपदकमल परे दोउ भाई । ऋषि अति प्रीति लिये उर लाई ॥
सादर कुसल पूछि मुनि ज्ञानी । आसन पर बैठारे आनी ॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा । मोहि सम भागवंत नहिं दूजा ॥
जहं लगि रहे अपर मुनिबृन्दा । हर्षे सब बिलोकि सुखकन्दा ॥

दो । मुनिसमूह महं बैठे सन्मुख सब की ओर ।
सरदइंदु तन चितवत मानहु निकर चकोर । ९ ॥

१० । तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । तुम सन प्रभु दुराउ कछु नाहीं ॥
तुम जानहु जेहि कारन आयेउं । ता तें तात न कहि समुझायेउं ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥
मुनि मुसकाने सुनि प्रभुबानी । पूछहु नाथ मोहि का जानी ॥
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी । जानौं महिमा कछुक तुम्हारी ॥
ऊमरि तरु बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
ते फलभच्छक कठिन कराला । तव भय डरत सदा सोउ काला ॥
ते तुम सकललोकपति साईं । पूछहु मोहि मनुज की नाईं ॥
यह बर मागौं कृपानिकेता । बसहु हृदय श्री अनुज समेता ॥
अबिरल भक्ति बिरति सतसंगा । चरनसरोरुह प्रीति अभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभवगम्य भजहिं जेहि संता ॥
अस तव रूप बखानौं जानौं । फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानौं ॥
संतत दासन्ह देहु बड़ाई । ता तें मोहि पूछहु रघुराई ॥

है प्रभु परम मनोहर ठाऊं । पावन पंचवटी तेहि नाऊं ॥
दंडकबन पुनीत प्रभु करहू । उग्र स्राप मुनिबर के हरहू ॥
बास करहु तहं रघुकुलराया । कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया ॥
चले राम मुनिआयसु पाई । तुरतहि पंचवटी नियराई ॥

दो० । गीधराज सों भेंट भइ बहुबिधि प्रीति बढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे परनगृह छाइ । १० ॥

चौ० । जब तें राम कीन्ह तहं बासा । सुखी भये मुनि बीती त्रासा ॥
गिरि बन नदी ताल छबि छाये । दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाये ॥
खगमृगबृन्द अनंदित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ॥
सो बन बरनि न सक अहिराजा । जहां प्रगट रघुबीर बिराजा ॥
एकबार प्रभु सुख आसीना । लछिमन बचन कहे अति दीना ॥
सुरनरमुनिसचराचरसाईं । मैं पूछौं निज प्रभु की नाईं ॥
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा । सब तजि करौं चरनरजसेवा ॥
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया । कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया ॥

दो० । ईस्वर जीवहि भेद प्रभु सकल कहहु समुझाइ ।
जा तें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ । ११ ॥

चौ० । थोरे महं सब कहौं बुझाई । सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तें माया । जेहि बस कीन्हे जीवनिकाया ॥
गो गोचर जहं लगि मन जाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम सोऊ । बिद्या अपर अबिद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा । जा बस जीव परा भवकूपा ॥
एक रचै जग गुनबस जाके । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ता के ॥
ज्ञान मान जहं एकौ नाहीं । देखत ब्रह्म समान सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम बिरागी । तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥

दो० । माया ईस न आपु कहं जान कहिय सो जीव ।
बंधमोच्छप्रद सर्बपर मायाप्रेरक सीव । १२ ॥

चौ० । धर्म तें बिरति योग तें ज्ञाना । ज्ञान मोच्छप्रद बेद बखाना ॥
जा तें बेगि द्रवौं मैं भाई । सो मम भक्ति भक्तसुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना । तेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला । मिलै जो संत होहिं अनुकूला ॥
भक्ति के साधन कहौं बखानी । सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥
प्रथमहिं बिप्रचरन अति प्रीती । निज निज कर्म निरत श्रुतिरीती ॥
यह कर फल पुनि बिषयबिरागा । तब मम धरम उपज अनुरागा ॥

स्रवनादिक नव भक्ति दिढाहीं । मम लीला रति अति मन माहीं ॥
संतचरनपंकज अति प्रेमा । मन क्रम बचन भजन दृढनेमा ॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा । सब मोहि कहं जानै दृढ सेवा ॥
मम गुन गावत पुलक सरीरा । गदगदगिरा नयन बह नीरा ॥
काम आदि मद दंभ न जा के । तात निरंतर बस मैं ता के ॥

। बचन कर्म मन मोरि गति भजन करहिं निःकाम ।
तिन्ह के हृदयकमल महं करौं सदा बिस्राम । १३ ॥

• । भक्ति योग सुनि अति सुख पावा । लछिमन प्रभु चरनन्हि सिर नावा ॥
एहि बिधि गये कछुक दिन बीती । कहत बिराग ज्ञान गुन नीती ॥
सूपनखा रावन कै बहिनी । दुष्टहृदय दारुन जस अहिनी ॥
पंचवटी सो गइ एकबारा । देखि बिकल भइ युगल कुमारा ॥
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखति नारी ॥
होइ बिकल सक मन नहिं रोकी । जिमि रबिमनि द्रव रबिहिं बिलोकी ॥
रुचिर रूप धरि प्रभु पहं जाई । बोली बचन बहुत मुसुकाई ॥
तुम सम पुरुष न मो सम नारी । यह संयोग बिधि रचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं । देखेउं खोजि लोक तिहुं नाहीं ॥
ता तें अब लगि रहिउं कुमारी । मन माना कछु तुमहिं निहारी ॥
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता । अहै कुआर मोर लघु भ्राता ॥
गइ लछिमन रिपुभगिनी जानी । प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी ॥
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा । पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोसलपुरराजा । जो कछु करहिं उन्हें सब छाजा ॥
सेवक सुख चह मान भिखारी । ब्यसनी धन सुभ गति ब्यभिचारी ॥
लोभी जस चह चार गुमानी । नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥
पुनि फिरि राम निकट सो आई । प्रभु लछिमन पहं बहुरि पठाई ॥
लछिमन कहा तोहि सो बरई । जो तृन तोरि लाज परिहरई ॥
तब खिसिआनि राम पहं गई । रूप भयंकर प्रगटति भई ॥
सीतहिं सभय देखि रघुराई । कहा अनुज सन सैन बुझाई ॥

दो० । लछिमन अति लाघव सो नाक कान बिनु कीन्हि ।
ता के कर रावन कहं मनहुं चुनौती दीन्हि । १४ ॥

चौ० । नाक कान बिनु भइ बिकरारा । जनु स्रव सैल गेरु कै धारा ॥
खर दूषन पहं गइ बिलपाता । धिक धिक तव पौरुष बल भ्राता ॥
तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई । यातुधान सुनि सेन बनाई ॥
धाये निसिचरनिकरबरूथा । जनु सपच्छकज्जलगिरियूथा ॥
नाना बाहन नानाकारा । नानायुधधर घोर अपारा ॥
सूपनखा आगे करि लीनी । असुभरूप स्रुतिनासाहीनी ॥

असगुन अमित होहिं भयकारी । गनहिं न मृत्यु बिबस सब झारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखि कटक भट अति हरषाहीं ॥
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई । धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई ॥
धूरि पूरि नभमंडल रहा । राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर । आवा निसिचर कटक भयंकर ॥
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा । बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छं० । कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह क्यों ।
मरकतसैल पर लरत दामिनि कोटि सों युग भुजंग ज्यों ॥
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।
चितवत मनहु मृगराज प्रभु गजराजघटा निहारि कै । ३ ॥

सो० । आइ गये बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।
यथा बिलोकि अकेल बालरबिहिं घेरत दनुज । ६ ॥

चौ० । प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी । थकित भई रजनीचर धारी ॥
सचिव बोलि बोले खर दूषन । यह कोउ नृपबालक नरभूषन ॥
नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम केते ॥
हम भरि जनम सुनहु सब भाई । देखी नहिं असि सुंदरताई ॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा । बध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
तुरत देहु निज नारि दुराई । जीवत भवन जाहु दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु । तासु बचन सुनि आतुर आवहु ॥
दूतन्ह कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम से खल मृग खोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । एकबार कालहु सन लरहीं ॥
यद्यपि मनुज दनुजकुलघालक । मुनिपालक खलसालक बालक ॥
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू । समर बिमुख मैं हतौं न काहू ॥
रन चढ़ि करिय कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन्ह आइ तुरत सब कहेऊ । सुनि खर दूषन उर अति दहेऊ ॥

छं० । उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाये बिकट भट रजनीचरा ।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुषटकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा ।
भये बधिर ब्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा । ४ ॥

दो० । सावधान होइ धाये जानि सबल आराति ।
लागे बरषन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥

तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर ।
तानि सरासन स्रवन लगि पुनि छाँड़े निज तीर । १५ ॥

तब चले बान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥
कोपेउ समर स्रीराम । चले बिसिख निसित निकाम ॥
अवलोकि खरतर तीर । मुरि चले निसिचर बीर ।
भए क्रुद्ध तीनौ भाइ । जो भागि रन ते जाइ ।
तेहि बधब हम निज पानि । फिरे मरन मन महुं ठानि । ५ ॥
आयुध अनेक प्रकार । सनमुख ते करहिं प्रहार ।
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष सर संधानि ॥
छाँड़े बिपुल नाराच । लगे कटन बिकट पिसाच ।
उर सीस भुज कर चरन । जहं तहं लगे महि परन ॥
चिक्करत लागत बान । धर परत कुधर समान ।
भट कटत तनु सत खंड । पुनि उठत करि पाषंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुण्ड । बिनु मौलि धावत रुंड ।
खग कंक काग सृगाल । कटकटहिं कठिन कराल । ६ ॥

कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर संचहीं ।
बेताल बीर कपालताल बजाइ योगिनि नंचहीं ॥
रघुबीरबान प्रचंड खंडहिं भटन के उर भुज सिरा ।
जहं तहं परहिं उठि लरहिं धरु धरु करहिं भयंकर गिरा ॥
अंतावरी गहि उड़हिं गीध पिसाच कर गहि धावहीं ।
संग्रामपुरबासी मनहुं बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कंहरत परे ।
अवलोकि निज दल बिकल भट तिसिरादि खर दूषन फिरे॥
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहि बारहीं ।
करि कोप स्रीरघुबीर पर अगिनित निसाचर डारहीं ॥
प्रभु निमिष महं रिपुसर निवारि प्रचारि डारे सायका ।
दस दस बिसिख उर मांझ मारे सकल निसिचरनायका ॥
महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी ।
सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि एक अवधधनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अति कौतुक करौ ।
देखहिं परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरौ । ७ ॥

१० । राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान ।
करि उपाय रिपु मारेउ छन महं कृपानिधान ॥
हरषित बरषहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निसान ।
अस्तुति करि करि सब चले सोभित बिबिध बिमान । १८ ॥

चौ० । जब रघुनाथ समर रिपु जीते । सुर नर मुनि सब के भय बीते ॥
तब लछिमन सीतहिं लै आये । प्रभुपद परत हरषि उर लाये ॥
सीता चितव स्याम मृदु गाता । परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचबटी बसि स्रीरघुनायक । करत चरित सुरमुनिसुखदायक ॥
धुआं देखि खर दूखन केरा । जाइ सुपनखा रावन प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करि भारी । देस कोस कै सुरति बिसारी ॥
करसि पान सोवसि दिन राती । सुधि नहिं तव सिर पर आराती ॥
राज नीति बिन धन बिन धर्मा । हरिहिं समर्पे बिन सतकर्मा ॥
बिद्या बिन बिबेक उपजाये । स्रम फल पढ़े किये अरु पाये ॥
संग तें यती कुमंत्र तें राजा । मान तें ज्ञान पान तें लाजा ॥
प्रीति प्रनय बिनु मद तें गुनी । नासहिं बेगि नीति असि सुनी ॥

सो० । रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिय न छोट करि ।
अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदन करन । ७ ॥

दो० । सभा मांझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कह रोइ ।
तोहि जियत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ । १७ ॥

चौ० । सुनत सभासद उठे अकुलाई । समुझाई गहि बांह उठाई ॥
कह लंकेस कहसि निज बाता । केंहि तव नासा कान निपाता ॥
अवधनृपति दसरथ के जाये । पुरुषसिंह बन खेलन आये ॥
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी । रहित निसाचर करिहहिं धरनी ॥
जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन । अभय भये बिचरत मुनि कानन ॥
देखत बालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुननाना ॥
अतुलितबलप्रताप दोउ भ्राता । खलबधरत सुरमुनिसुखदाता ॥
सोभाधाम राम अस नामा । तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥
रूपरासि बिधि नारि संवारी । रति सत कोटि तासु बलिहारी ॥
तासु अनुज काटे स्रुति नासा । सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा ॥
खर दूखन सुनि लगे पुकारा । छन महं सकल कटक उन्ह मारा ॥
खर दूखन तिसिरा कर घाता । सुनि दससीस जरे सब गाता ॥

दो० । सुपनखहिं समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भांति ।
गयउ भवन अति सोचबस नींद परी नहिं राति । १८ ॥

चौ० । सुर नर असुर नाग खग माहीं । मोरे अनुचर कहं कोउ नाहीं ॥
खर दूषन मोहिं सम बलवंता । तिन्है को मारै बिनु भगवंता ॥
सुररंजन भंजनमहिभारा । जौ भगवंत लीन्ह अवतारा ॥
तौ मैं जाइ बैर हठि करऊं । प्रभुसर प्रान तजे भव तरऊं ॥
होइहि भजन न तामसदेहा । मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ॥

। नररूप भूप सुत कोऊ । हरिहौं नारि जीति रन दोऊ ॥
ला अकेल यान चढ़ि तहवां । बस मारीच सिंधु तट जहवां ॥
हां राम जसि जुगुति बनाई । सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥

। लछिमन गये बनहिं जब लेन मूल फल कंद ।
जनकसुता सन बोले बिहंसि कृपा सुखवृन्द । १८ ॥

। सुनहु प्रियाव्रत रुचिर सुसीला । मैं कछु करब ललित नरलीला ॥
ह पावक महं करहु निवासा । जब लगि करौं निसाचर नासा ॥
बहिं राम सब कहा बखानी । प्रभुपद धरि हिय अनल समानी ॥
नज प्रतिबिंब राखि तहं सीता । तैसइ रूप सुसील बिनीता ॥
छिमनहूं यह मरम न जाना । जो कछु चरित रचा भगवाना ॥
समुख गयउ जहां मारीचा । नाइ माथ स्वारथरत नीचा ॥
वनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥
यदायक खल कै प्रिय बानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥

करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात ।
कवन हेतु मन ब्यग्र अति अकसर आयेहु तात । २० ॥

दससुख सकल कथा तेहि आगे । कही सहित अभिमान अभागे ॥
होहु कपटमृग तुम छलकारी । जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ॥
हि पुनि कहा सुनहु दससीसा । ते नररूप चराचरईसा ॥
॥ सों तात बैर नहिं कीजै । मारे मरिय जियाये जीजै ॥
मुनिमख राखन गयउ कुमारा । बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥
त योजन आयउं छन माहीं । तिन्ह सन बैर किये भल नाहीं ॥
भइ गति कीट भृङ्ग की नाई । जहं तहं मैं देखौं दोउ भाई ॥
जौ नर तात तदपि अति सूरा । तिनहि बिरोध न आइहि पूरा ॥

जेहि ताड़िका सुबाहु हति खंडेउ हरकोदंड ।
खर दूषन त्रिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड । २१ ॥

। जाहु भवन कुलकुसल बिचारी । सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी ॥
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहि समान को योधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना । नवहि बिरोधे नहि कल्याना ॥
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद्य बंदि कबि भान सगुनी ॥
उभय भांति देखा निज मरना । तब ताकेसि रघुनायक सरना ॥
उतर देत मोहि बधब अभागे । कस न मरौं रघुपतिसर लागे ॥
अस जिय जानि दसानन संगा । चला रामपदप्रेम अभंगा ॥
मन अति हर्ष जनाव न तेही । आज देखिहौं परम सनेही ॥

छं० । निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं ।
सौमहित अनुज समेत कृपानिकेतपद मन लाइहौं ॥
निर्बानदायक क्रोध जा कर भक्त ऐसेहि बस करी ।
निज पानि सर संधानि सो मोहि बधहिं सुखसागर हरी । ८॥

दो० । मम पाछें धर धावत धरे सरासन बान ।
फिरि फिरि प्रभुहिं बिलोकिहौं धन्य न मो सम आन । २२॥

चौ० । तेहि बन निकट दसानन गयऊ । तब मारीच कपट[illegible] भयऊ
अति बिचित्र कछु बरनि न जाई । कनकदेह मनि[illegible] बनाई
सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेखा ।
सुनहु देव रघुबीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥
सत्यसंध प्रभु बध करि एही । आनहु चर्म कहति बैदेही ॥
तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरषि सुरकाजसंवारन ॥
मृग बिलोकि कटि परिकर बांधा । कर तल चाप रुचिर सर साधा ॥
प्रभु लछिमनहिं कहा समुझाई । फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ।
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि बिबेक बल समय बिचारी ॥
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाये राम सरासन साजी ।
निगम नेति सिव ध्यान न पावा । मायामृग पाछे सोइ धावा ॥
कबहुं निकट पुनि दूरि पराई । कबहुंक प्रगटै कबहुं छपाई ।
प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि बिधि प्रभुहिं गयो लै दूरी ॥
तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा ।
लछिमन कै प्रथमहिं लै नामा । पाछें सुमिरेसि मन महं रामा ॥
प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि राम समेत सनेहा ॥
अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभगति दीन्ह सुजाना ।

दो० । बिपुल सुमन सुर बर्षहिं गावहिं प्रभुगुनगाथ ।
निज पद दीन्ह असुर कहं दीनबंधु रघुनाथ । २३ ॥

चौ० । खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥
आरतगिरा सुनी जब सीता । कह लछिमन सन परम सभीता ॥
जाहु बेगि संकट अति भ्राता । लछिमन बिहंसि कहा सुनु माता ॥
भृकुटिबिलास सृष्टि लय होई । सपनेहु संकट परै कि सोई ॥
मरमबचन जब सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमनमन डोला ॥
बनदिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहां रावनससिराहू ॥
सून बीच दसकंधर देषा । आवा निकट जती के भेषा ॥
जाके डर सुर असुर डेराहीं । निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं ॥
सो दससीस स्वान की नाईं । इत उत चितै चला भड़िहाईं ॥

मि कुपंथ पग देत खगेसा । रह न तेजबुधिबलतनलेसा ॥
ना बिधि कहि कथा सुनाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
ह सीता सुनु जती गुसाईं । बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ॥
व रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नाम सुनावा ॥
ह सीता धरि धीरज गाढ़ा । आइ गये प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥
जिमि हरिबधुहिं छुद्र सस चाहा । भयेसि कालबस निसिचरनाहा ॥
नत बचन दससीस रिसाना । मन महं चरन बंदि सुख माना ॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हेसि रथ बैठाइ
चला गगन पथ आतुर भय रथ हांकि न जाइ । २४ ॥

हा जगदेक बीर रघुराया । केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरतिहरन सरन सुखदायक । हा रघुकुलसरोज दिननायक ॥
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा । सो फल पायेउं कीन्हेउं रोसा ॥
बिबिध बिलाप करति बैदेही । भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
बिपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा । पुरोडास चह रासभ खावा ॥
सीता कै बिलाप सुनि भारी । भये चराचर जीव दुखारी ॥
गीधराज सुनि आरतबानी । रघुकुलतिलकनारि पहिचानी ॥
अधम निसाचर लीन्हे जाई । जिमि मलेछ बस कपिला गाई ॥
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा । करिहौं जातुधान कै नासा ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसे । छूटै पबि परबत पर जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भय चलेसि न जानेहि मोही ॥
आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जान सहित पति सोई ॥
जाना जरठ जटायू एहा । मम कर तीरथ छाड़िहि देहा ॥
सुनत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
तजि जानकिहिं कुसल गृह जाहू । नाहिन अस होइहि बहुबाहू ॥
राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ॥
उतर न देत दसानन जोधा । तबहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही । दंड एक भइ मुरछा तेही ॥
तब सक्रोध निसिचर खिसियाना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ॥
सीतहिं जान चढ़ाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति बिलाप जाति नभ सीता । ब्याधबिबस जनु मृगी सभीता ॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी ॥
एहि बिधि सीतहिं सो लै गयऊ । बनअसोक महं राखत भयऊ ॥

दो० । हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति दिखाइ ।
तब असोकपादप तर राखेसि जतन कराइ ॥
जेहि बिधि कपटकुरंग संग धाइ चले स्रीराम ।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम । २५ ॥

चौ० । रघुपति अनुजहिं आवत देखी । बाहिज चिंता कीन्हि बिसेखी ॥
जनकसुता परिहरेहु अकेली । आयेहु तात बचन मम पेली ॥
निसिचरनिकर फिरहिं बन माहीं । मम मन सीता आस्रम नाहीं ॥
गहि पदकमल अनुज कर जोरी । सुनहु नाथ कछु मोहि न खोरी ॥
अनुज समेत गयउ प्रभु तहवाँ । गोदावरितट आस्रम जहवाँ ॥
आस्रम देखि जानकीहीना । भये बिकल जस प्राकृत दीना ॥
हा गुनखानि जानकी सीता । रूप सील ब्रत नेम पुनीता ॥
लछिमन समुझाये बहु भाँती । पूछत चले लतातरुपाँती ॥
हे खग मृग हे मधुकरस्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुपनिकर कोकिला प्रबीना ॥
कुन्दकली दाडिम दामिनी । कमल सरद ससि अहिभामिनी ॥
बरुनपास मनोजधनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ॥
स्रीफल कनक कदलि हरखाहीं । नेकु न संक सकुच मन माहीं ॥
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू । हरखे सकल पाइ जनु राजू ॥
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी । मनहुँ महा बिरही अति कामी ॥
पूरनकाम राम सुखरासी । मनुजचरित कर अज अबिनासी ॥
आगे परा गीधपति देखा । सुमिरत रामचरन जिन्ह रेखा ॥

दो० । करसरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर ।
निरखि राम छबिधाम मुख बिगत भई सब पीर । २६ ॥

चौ० । तब कह गीध बचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजनभवभीरा ॥
नाथ दसानन यह गति कीन्ही । तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥
लै दच्छिन दिसि गयउ गुसाईं । बिलपति अति कुररी की नाईं ॥
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता ॥
जा कर नाम मरत मुख आवा । अधमौ मुक्त होइ स्रुति गावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे । राखौं देह नाथ केहि खाँगे ॥
जल भरि नयन कहहिं रघुराई । तात कर्म निज तें गति पाई ॥
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तन तजि तात जाहु मम धामा । देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ॥

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुनप्रेरक सही ।
दससीसबाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥
पाथोदगात सरोजमुख राजीव आयत लोचनं ।
नित नौमि राम कृपाल बाहुबिसाल भवभयमोचनं ॥
बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं ।
गोबिंद गोपर द्वंदहर बिज्ञानघन धरनीधरं ॥
जे राममंत्र जपंत संत अनंतजनमनरंजनं ।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादिखलदलगंजनं ॥
जेहि स्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ग्यान ध्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥
सो प्रगट करुनाकंद सोभावृन्द अग जग मोहई ।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ॥
जो अगम सुगम सुभावनिर्मल असम सम सीतल सदा ।
पश्यन्ति यं योगी जतन करि करत मनगोबस यदा ॥
सो राम रमानिवास संतत दासबस त्रिभुवनधनी ।
मम उर बसउ सो समनसंसृति जासु कीरति पावनी । ८ ॥

अबिरल भक्ति मांगि बर गीध गयउ हरिधाम ।
तेहि की क्रिया यथोचित निज कर कीन्ही राम । २७ ॥

० । कोमलचित अति दीनदयाला । कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गीध अधम खग आमिषभोगी । गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरि तजि होहिं बिषयअनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत दोउ भाई । चले बिलोकत बन बहुताई ॥
संकुल लता बिटप घन कानन । बहु खग मृग तहं गज पंचानन ॥
आवत पंथ कबंध निपाता । तेहि सब कही साप की बाता ॥
दुर्बासा मोहि दीन्ही सापा । प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
सुनु गंधर्ब कहौं मैं तोही । मोहि न सुहाइ ब्रह्मकुलद्रोही ॥

० । मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुरसेव ।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ता के सब देव । २८ ॥

० । सापत ताड़त परुष कहंता । बिप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय बिप्र सीलगुनहीना । सूद्र न गुनगनग्यानप्रबीना ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निजपदप्रीति देखि मन भावा ॥
रघुपतिचरनकमल सिर नाई । गयउ गगन आपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा । सबरी के आस्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि राम गृह आये । मुनि के बचन समुझि जिय भाये ॥
सरसिजलोचन बाहुबिसाला । जटामुकुट सिर उर बनमाला ॥

स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ॥
प्रेममगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पदसरोज सिर नावा ॥
सादर जल लेइ चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दो० । कंद मूल फल सरस अति दिये राम कहुं आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि । २८ ॥

चौ० । पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी ॥
अधम तें अधम अधम अति नारी । तिन महं मैं मतिमंद अघारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानौं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भक्तिहीन नर सोहै कैसा । बिनु जल बारिद देखिय जैसा ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहि पांही । सावधान सुनु धरु मन मांही ॥
प्रथम भक्ति सन्तन्ह कर संगा । दूसरि रति मम कथाप्रसंगा ॥

दो० । गुरुपदपंकजसेवा तीसरि भक्ति अमान ।
चौथि भक्ति मम गुनगन करइ कपट तजि गान । ३० ॥

चौ० । मंत्रजाप मम दृढ़ बिस्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा । निरत निरन्तर सज्जनधर्मा ॥
सातव सम मोहि मय जग देखा । मो तें सन्त अधिक करि लेखा ॥
आठव यथालाभ सन्तोषा । सपनेहु नहिं देखइ परदोषा ॥
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हिय हरष न दीना ॥
नव महं एकौ जिन्ह के होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे ॥
जोगिबृन्द दुर्लभ गति जोई । तो कहं आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दरसनफल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
जनकसुता कै सुधि भामिनी । जानहि कहु करिबरगामिनी ॥
पंपासरहि जाहु रघुराई । तहं होइहि सुग्रीवमिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा । जानतहूं पूछहु मतिधीरा ॥
बारबार प्रभुपद सिर नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छं० । कहि कथा सकल बिलोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे ।
तजि जोगपावक देह हरिपद लीन भइ जहं नहिं फिरे ॥
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू ।
बिस्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू । १० ॥

दो० । जातिहीन अघजन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि ।
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि । ३ ॥

चौ०। चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलितबल नरकेहरि दोऊ॥
बिरही इव प्रभु करत बिषादा। कहत कथा अनेक संबादा॥
लछिमन देखु बिपिन कै सोभा। देखत केहि कर मन नहिं छोभा॥
नारि सहित सब खगमृगबृन्दा। मानहुं मोरि करत हहिं निन्दा॥
हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं। मृगी कहहिं तुम कहं भय नाहीं॥
तुम आनंद करहु मृगजाये। कंचनमृग खोजन ये आये॥
संग लाइ करिनी करि लेहीं। मानहु मोहि सिखावन देहीं॥
सास्त्र सुचिन्तित पुनि पुनि देखिय। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिय॥
राखिय नारि यदपि उर माहीं। युवती सास्त्र नृपति बस नाहीं॥
देखहु तात बसंत सुहावा। प्रियाहीन मोहिं भय उपजावा॥

दो०। बिरहबिकल बलहीन मोहिं जानेसि निपट अकेल।
सहित बिपिन मधुकर खग मदन कीन्ह बगमेल॥
देखि गयउ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात।
डेरा कीन्हेउ मनहु तब कटक हटकि मनजात। ३२॥

चौ०। बिटप बिसाल लता अरुझानी। बिबिध बितान दिये जनु तानी॥
कदलि ताल बर ध्वजा पताका। देखि न मोह धीर मन जा का॥
बिबिध भांति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना॥
कहुं कहुं सुन्दर बिटप सुहाये। जनु भट बिलग बिलग होइ छाये॥
कूजत पिक मानहुं गज माते। ढेक महोख ऊंट बिसराते॥
मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी॥
तीतर लावक पदचरयूथा। बरनि न जाइ मनोजबरूथा॥
रथ गिरि सिला दुन्दुभी झरना। चातक बंदी गुनगन बरना॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिध बयारि बसीठी आई॥
चतुरंगिनी सेन संग लीन्हे। बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे॥
लछिमन देखत कामअनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका॥
एहि के एक परम बल नारी। तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी॥

दो०। तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिज्ञानधाममन करहिं निमिष महं छोभ॥
लोभ के इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष बचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि। ३३॥

चौ०। गुनातीत सचराचरस्वामी। राम उमा सब अन्तरजामी॥
कामिन्ह कै दीनता देखाई। धीरन्ह के मन बिरति दिढाई॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहिं सकल राम की दाया॥
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला। जा पर होइ सो नट अनुकूला॥
उमा कहौं मैं अनुभव अपना। सत हरि भजन जगत सब सपना॥

सुनु मुनि संतन के गुन कहऊं । जिन्ह ते मैं उन्ह के बस रहऊं ॥
षटबिकारजित अनघ अकामा । अचल अकिंचन सुचि सुखधामा ॥
अमितबोध अनीह मितभोगी । सत्यसंध कबि कोबिद योगी ॥
सावधान मानमदहीना । धीर धर्मगति परम प्रबीना ॥

दो० । गुनागार संसारदुख रहित बिगतसंदेह ।
तजि मम चरनसरोज प्रिय तिन्ह कहं देह न गेह । ४० ॥

चौ० । निजगुन सुनत स्रवन सकुचाहीं । परगुन सुनत अधिक हरषाहीं ॥
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती । सरल सुभाव सबहि सन प्रीती ॥
जप तप ब्रत दम संयम नेमा । गुरु गोबिंद बिप्रपद प्रेमा ॥
स्रद्धा छमा मयत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना । बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला । हेतुरहित परहितरत सीला ॥
मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । कहि न सकहिं सारद स्रुति तेते ॥

छं० । कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पदपंकज गहे ।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भक्तगुन निज मुख कहे ॥
सिर नाइ बारहिंबार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये ।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरिरंग रये । १ ॥

दो० । रावनारिजस पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।
रामभक्ति दृढ़ पावहीं बिनु बिराग जप योग ॥
दीप सिखा सम युबतिजन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग । ४१ ।

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ।
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम तृतीयः सोपानः ॥
समाप्तः शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ * ॥

अथ किसकिंदाकाण्ड ॥

श्लोक ।

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ ।
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ॥
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्म्मौ हि तौ ।
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं ।
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं ।
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥

सो० । मुक्तिजन्म महि जानि ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहं बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न ॥
जरत सकल सुरवृन्द विषम गरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मन्द को कृपाल संकर सरिस । १ ॥

चौ० । आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहं रह सचिव सहित सुग्रीवां । आवत देखि अतुलबलसींवां ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष युगल बलरूपनिधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जिय सैन बुझाई ॥
पठये बालि होहिं मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहं गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम स्यामलगौरसरीरा । क्षत्रीरूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमलपदगामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता ॥
की तुम तीनि देव महं कोऊ । नरनारायन की तुम दोऊ ॥

दो० । जगकारन तारन भव भंजन धरनीभार ।
की तुम अखिलभुवनपति लीन्ह मनुजअवतार । १ ॥

चौ० । कोसलेस दसरथ के जाये । हम पितुबचन मानि बन आये ॥
नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सोहाई ॥
इहां हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥
पुलकित तनु मुख आव न बचना । देखत रुचिर बेष कै रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही । हरष हृदय निज नाथहि चीन्ही ॥
मोर न्याव मैं पूछा साईं । तुम पूछहु कस नर की नाईं ॥
तव माया बस फिरौं भुलाना । तातें मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥

दो० । एक मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान । २ ॥

चौ० । यदपि नाथ बहु अवगुन मोरे । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहा । सो निस्तरै तुम्हारेहि छोहा ॥
ता पर मैं रघुबीर दोहाई । जानौं नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पतिमातुभरोसे । रहै असोच बनै प्रभु पोसे ॥
अस कहि परेउ चरन अकुलाई । निज तनु प्रगट प्रीति उर छाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा । निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ॥
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना । तैं मम प्रिय लछिमन तें दूना ॥
समदरसी मोहि कह सब कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥

दो० । सो अनन्य जा के असि मति न टरै हनुमन्त ।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवन्त । ३ ॥

चौ० । देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदय हरष बीती सब सूला ॥
नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तेहि सन नाथ मइत्री कीजै । दीन जानि तेहि अभय करीजै ॥
सो सीता कर खोज कराइहि । जहं तहं मरकट कोटि पठाइहि ॥
एहि बिधि सकल कथा समुझाई । लिये दुऔ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीव राम कहं देखा । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥
सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपि कर मन बिचार यह रीती । करिहहिं बिधि मो सन ये प्रीती ॥

दो० । तब हनुमन्त उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।
पावक साखी देइ कै जोरी प्रीति दिढ़ाइ । ४ ॥

चौ० । कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाखा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥
मंत्रिन्ह सहित इहां एक बारा । बैठ रहेउं मैं करत बिचारा ॥
गगनपंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत बिलपाता ॥

राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥
मांगा राम तुरत तेहि दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई । जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ॥

दो० । सखावचन सुनि हरषे कृपासिंधु बलसींव ।
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव । ५ ॥

चौ० । नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई । प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊं । आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्द्धराति पुरद्वार पुकारा । बाली रिपुबल सहै न पारा ॥
धावा बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउं बंधु संग लागा ॥
गिरिबरगुहा पैठ सो जाई । तबहि बालि मोहि कहा बुझाई ॥
परखेसु मोहि एक पखवारा । नहिं आवौं तौ जानेसु मारा ॥
मासदिवस तहं रहेउं खरारी । निसरी रुधिरधार तहं भारी ॥
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई । सिला देइ तहं चलेउं पराई ॥
मंत्रिन्ह देखा पुर बिनु साईं । दीन्हेउ मोहि राज बरिआईं ॥
बाली ताहि मारि गृह आवा । देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा ॥
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । हरि लीन्हेसि सर्बस अरु नारी ॥
ता कें भय रघुबीर कृपाला । सकल भुवन मैं फिरेउं बिहाला ॥
इहां सापबस आवत नाहीं । तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवकदुख दीनदयाला । फरकि उठे दोउ भुजा बिसाला ॥

दो० । सुनु सुग्रीव मारिहौं बालिहि एकहि बान ।
ब्रह्मरुद्रसरनागत गयेउ न उबरिहि प्रान । ६ ॥

चौ० । जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्र के दुख रज मेरु समाना ॥
जिन कें असि मति सहज न आई । ते सठ कत हठ करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । गुन प्रगटै अवगुनहिं दुरावा ॥
देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई ॥
बिपतिकाल कर सत गुन नेहा । स्रुति कह संतमित्रगुन एहा ॥
आगे कह मृदु बचन बनाई । पाछें अनहित मन कुटिलाई ॥
जा कर चित अहिगति सम भाई । अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरे । सब बिधि घटब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । बालि महाबल अतिरनधीरा ॥
दुंदुभिअस्थिताल दिखराये । बिनु प्रयास रघुबीर ढहाये ॥

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालि बधब इन्ह भइ परतीती ॥
बारबार नावा पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ॥
उपजा ग्यान बचन तब बोला । नाथ कृपा मन भयेउ अलोला ॥
सुख संपति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहौं सेवकाई ॥
ये सब रामभक्ति के बाधक । कहहिं संत तव पद अवराधक ॥
सत्रु मित्र दुख सुख जग माहीं । मायाकृत परमारथ नाहीं ॥
बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम समन बिषादा ॥
सपने जेहि सन होइ लराई । जागे समुझत मन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपा करहु एहि भांती । सब तजि भजन करौं दिन राती ॥
सुनि बिरागसंयुत कपिबानी । बोले बिहँसि राम धनुपानी ॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ॥
नट मरकट इव सबहि नचावत । राम खगेस बेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते दोउ बंधु तेजबलसींवा ॥
कोसलेससुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥

दो० । कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।
जौ कदापि मोहि मारिहैं तौ पुनि होब सनाथ । ७ ॥

चौ० । अस कहि चला महा अभिमानी । तृन समान सुग्रीवहि जानी ॥
भिरे उभय बाली अति तरजा । मुठिका मारि महा धुनि गरजा ॥
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्टिप्रहार बज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥
एक रूप तुम भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउं सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥
मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥
पुनि नाना बिधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ॥

दो० । बहु छल बल सुग्रीव करि हिय हारा भय मानि ।
मारा बालिहि राम तब हृदय मांझ सर तानि । ८ ॥

चौ० । परा बिकल महि सर के लागे । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
स्याम गात सिर जटा बनाये । अरुन नयन सर चाप चढ़ाये ॥
पुनि पुनि चितै चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा ॥
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितै राम की ओरा ॥
धर्महेतु अवतरेहु गुसाईं । मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ॥
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥

अनुजबधू भगिनी सुतनारी । सुनु सठ कन्या सम ये चारी ॥
इन्ह कुदृष्टि बिलोकै जोई । ताहि बधे कछु पाप न होई ॥
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ॥
मम भुजबलआश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दो० । सुनहु राम स्वामी सन चलन चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूं मैं पापी अन्तकाल गति तोरि । ८ ॥

चौ० । सुनत राम अति कोमल बानी । बालिसीस परसेउ निज पानी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं । अन्त राम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नामबल संकर कासी । देत सबहि सम गति अबिनासी ॥
मम लोचनगोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ॥

छं० । सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि स्रुति गावहीं ।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुंक पावहीं ।
मोहि जानि अति अभिमानबस प्रभु कहेउ राखु सरीरहीं ।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरहीं ॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मांगऊं ।
जेहि योनि जनमौं कर्मबस तहं रामपद अनुरागऊं ॥
यह तनय मम सम बिनयबलकल्यानप्रद प्रभु लीजिये ।
गहि बांह सुरनरनाह दास आपन अंगद कीजिये । १ ॥

दो० । रामचरन दृढ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमनमाल जिमि कंठ ते गिरत न जानै नाग । १० ॥

चौ० । राम बालि निज धाम पठावा । नगरलोग सब व्याकुल धावा ॥
नानाबिध बिलाप कर तारा । छूटे केस न देह संभारा ॥
तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया ॥
छिति जल पावक गगन समीरा । पंचरचित अति अधम सरीरा ॥
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा । जीव नित्य केहि लगि तुम रोवा ॥
उपजा ज्ञान चरन तब लागी । लीन्हेसि परम भक्ति बर मागी ॥
उमा दारुयोषित की नाईं । सबहि नचावत राम गुसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा । मृतककर्म बिधिवत सब कीन्हा ॥
राम कहा अनुजहिं समुझाई । राज देहु सुग्रीवहिं जाई ॥
रघुपतिचरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दो० । लछिमन तुरत बुलाये पुरजन बिप्रसमाज ।
राज दीन्ह सुग्रीव कहं अंगद कहं युबराज । ११ ॥

चौ० । उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥

सुर नर मुनि सब कै यह रीती । स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ॥
बालित्रास व्याकुल दिन राती । तनु बहु ब्रन चिंता जर छाती ॥
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ ॥
जानतहूं अस प्रभु परिहरहीं । काहे न बिपति जाल नर परहीं ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बुलाई । बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । पुर न जाउं दसचारि बरीसा ॥
गत ग्रीषम बरषा ऋतु आई । रहिहौं निकट सैल पर छाई ॥
अंगद सहित करहु तुम राजू । सन्तत हृदय धरहु मम काजू ॥
तब सुग्रीव भवन फिरि आये । राम प्रवर्षनगिरि पर छाये ॥

दो० । प्रथमहिं देवन गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ ।
राम कृपानिधि कछुक दिन बास करहिंगे आइ । १२ ॥

चौ० । सुंदर बन कुसुमित अति सोभा । गुञ्जत मधुपनिकर मधुलोभा ॥
कंद मूल फल पत्र सुहाये । भये बहुत जब तें प्रभु आये ॥
देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहं अनुज सहित सुरभूपा ॥
मधुकरखगमृगतनु धरि देवा । करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ॥
मंगल रूप भयउ बन तब तें । कीन्ह निवास रमापति जब तें ॥
फटिकसिला अति सुभ्र सुहाई । सुख आसीन तहां दोउ भाई ॥
कहत अनुज सन कथा अनेका । भक्ति बिरति नृपनीति बिबेका ॥
बरषाकाल मेघ नभ छाये । गरजत लागत परम सुहाये ॥

दो० । लछिमन देखु मोरगन नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हरष जस बिस्नुभक्त कहुं देखि । १३ ॥

चौ० । घनघमंड नभ गरजत घोरा । प्रियाहीन डरपत मन मोरा ॥
दामिनि दमकि रहत घन माहीं । खल कै प्रीति यथा थिर नाहीं ॥
बरषहिं जलद भूमि नियराये । यथा नवहिं बुध बिद्या पाये ॥
बुन्दअघात सहैं गिरि कैसे । खल के बचन सन्त सह जैसे ॥
छुद्र नदी भरि चलि उतराई । जस थोरेहु धन खल इतराई ॥
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहिं माया लपटानी ॥
सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सज्जन पहं आवा ॥
सरिताजल जलनिधि महं जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दो० । हरित भूमि तृनसंकुल समुझि परै नहिं पंथ ।
जिमि पाषंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ । १४ ॥

चौ० । दादुरधुनि चहुं ओर सुहाई । बेद पढैं जनु बटुसमुदाई ॥
नवपल्लव भे बिटप अनेका । साधकमन जस मिलें बिबेका ॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ । जस सुराज खलउद्यम गयऊ ॥
खोजत पंथ मिलै नहिं धूरी । करै क्रोध जिमि धर्महि दूरी ॥

ससिसंपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन कर जुरा समाजा ॥
महा वृष्टि चलि फूटि कियारी । जिमि सुतंत्र होइ बिगरहिं नारी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
देखियत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
ऊसर बरसै तृन नहिं जामा । जिमि हरिजन हिय उपज न कामा ॥
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥
जहं तहं रहे पथिक थकि नाना । जिमि इन्द्रियगन उपजे ज्ञाना ॥

दो० । कबहुं प्रबल चल मारुत जहं तहं मेघ बिलाहि ।
जिमि कपूत के ऊपजे कुलसद्धर्म नसाहि । १५ ॥

चौ० । बरषा बिगत सरद ऋतु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महि छाई । जनु बरषाकृत प्रगट बुढ़ाई ॥
उदित अगस्ति पंथ जल सोषा । जिमि लोभहि सोषै संतोषा ॥
सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
रस रस सूख सरितसरपानी । ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी ॥
जानि सरद ऋतु खंजन आये । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये ॥
पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुननृप कै जसि करनी ॥
जलसंकोच बिकल भए मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥
बिनु घन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥
कहुं कहुं वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भक्ति जिमि मोरी ॥

दो० । चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।
जिमि हरिभक्ति पाइ स्रम तजहिं आस्रमी चारि । १६ ॥

चौ० । सुखी मीन जहं नीर अगाधा । जिमि हरिसरन न एकौ बाधा ॥
फूले कमल सोह सर कैसे । निरगुन ब्रह्म सगुन भये जैसे ॥
गुञ्जत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खगरव नाना रूपा ॥
चक्रवाकमन दुख निसि पेखी । जिमि दुर्जन परसंपति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही ॥
सरदातप निसि ससि अपहरई । संतदरस जिमि पातक टरई ॥
देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥
मसकदंस बीते हिमत्रासा । जिमि द्विजद्रोह किये कुलनासा ॥

दो० । भूमि जीवसंकुल रहे गये सरद ऋतु पाइ ।
सतगुरु मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ । १७ ॥

चौ० । बरषागत निर्मल ऋतु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
एकबार कैसेहु सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महं आनौं ॥

कतहुं रहै जौं जीवति होई । तात जतन करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहि सायक मारा मैं बाली । तेहि सर हतौं मूढ कहं काली ॥
जासु कृपा छूटै मद मोहा । ता कहं उमा कि सपने हु कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी । जिन्ह रघुबीरचरन रति मानी ॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो० । तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुनासींव ।
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव । १८ ॥

चौ० । इहां पवनसुत हृदय बिचारा । रामकाज सुग्रीव बिसारा ॥
निकट जाइ चरनन्हि सिर नावा । चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ॥
सुनि सुग्रीव परम भय माना । बिषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना ॥
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहं तहं बानरयूहा ॥
कहहु पाख महं आव न जोई । मोरे कर ता कर बध होई ॥
तब हनुमंत बुलाये दूता । सब कर करि सनमान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई । चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥
तेहि अवसर लछिमन पुर आये । क्रोध देखि जहं तहं कपि धाये ॥

दो० । धनुष चढाइ कहा तब जारि करौं पुर छार ।
ब्याकुल नगर देखि तब आयेउ बालिकुमार । १९ ॥

चौ० । चरन नाइ सिर बिनती कीन्ही । लछिमन अभय बांह तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । कह कपीस अति भय अकुलाना ॥
सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि बिनती समुझाउ कुमारा ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ॥
करि बिनती मंदिर लै आये । चरन पखारि पलंग बैठाये ॥
तब कपीस चरनन्हि सिर नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं । मुनिमन मोह करै छन माहीं ॥
सुनत बिनीत बचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनाई । जेहि बिधि गये दूतसमुदाई ॥

दो० । हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।
रामानुज आगे करि आये जहं रघुनाथ । २० ॥

चौ० । नाइ चरन सिर कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥
अतिसय प्रबल देव तव माया । छूटै राम करहु जौं दाया ॥
बिषयबिबस सुर नर मुनि स्वामी । मैं पावर पसु कपि अति कामी ॥
नारिनयनसर जाहि न लागा । घोर क्रोध तमनिसि जो जागा ॥
लोभ पास जेहि गर न बंधाया । सो नर तुम समान रघुराया ॥

यह गुन साधन तें नहिं होई । तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई । तुम प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥
अब सोइ जतन करहु मन लाई । जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ॥

दो० । एहि बिधि होत बतकही आये बानरयूथ ।
नानाबरन सकल दिसि देखिय कीसबरूथ । २१ ॥

चौ० । बानर कटक उमा मैं देखा । सो मूरख जो करन चह लेखा ॥
आइ रामपद नावहिं माथा । निरखि बदन सब होहिं सनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥
यह कछु नहिं प्रभु कै अधिकाई । बिस्वरूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढ़ जहं तहं आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
रामकाज अरु मोर निहोरा । बानर यूथ जाहु चहुं ओरा ॥
जनकसुता कहं खोजहु जाई । मासदिवस महं आयेहु भाई ॥
अवधि मेटि जो बिन सुधि पाये । आवइ बनिहि सो मोहिं मराये ॥

दो० । बचन सुनत सब बानर जहं तहं चले तुरंत ।
तब सुग्रीव बुलाये अंगद नल हनुमंत । २२ ॥

चौ० । सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू । सीतासुधि पूछेहु सब काहू ॥
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु । रामचंद्र कै काज सवारेहु ॥
भानु पीठ सेइय उर आगी । स्वामिहि सर्ब भाव छल त्यागी ॥
तजि माया सेइय परलोका । मिटहिं सकल भवसंभवसोका ॥
देह धरे कर यह फल भाई । भजिय राम सब काम बिहाई ॥
सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी । जो रघुबीर चरनअनुरागी ॥
आयसु मांगि चरन सिर नाई । चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय सिर नावा । जानि काज प्रभु निकट बुलावा ॥
परसा सीस सरोरुह पानी । कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
बहु प्रकार सीतहिं समुझायेहु । कहि बल बिरह बेगि तुम आयेहु ॥
हनुमत जन्म सुफल करि जाना । चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरत्राता ॥

दो० । चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरिखोह ।
रामकाज लयलीन मन बिसरा तनु कर छोह । २३ ॥

चौ० । कतहुं होइ निसिचर सें भेंटा । प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । कोउ मुनि मिलहि ताहि सब घेरहिं ॥
लागि तृषा अतिसय अकुलाने । मिलै न जल घन गहन भुलाने ॥
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब बिनु जलपाना ॥

चढ़ि गिरिसिखर चहूं दिसि देखा । भूमिबिवर एक कौतुक पेखा ॥
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं । बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ॥
गिरि तें उतरि पवनसुत आवा । सब कहं लै सो बिवर दिखावा ॥
आगे कै हनुमंतहिं लीन्हा । पैठ बिवर बिलंब न कीन्हा ॥
दो० । दीख जाइ उपबन सर बर बिकसित बहु कंज ।
मन्दिर एक रुचिर तहं बैठि नारि तपपुञ्ज । २४ ॥
चौ० । दूरि तें ताहि सबन्हि सिर नावा । पूछे निज बृत्तान्त सुनावा ॥
तेहि तब कहा करहु जलपाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये । तासु निकट पुनि सब चलि आये ॥
ते सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाब जहां रघुराई ॥
मूंदहु नयन बिवर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥
नयन मूंदि पुनि देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥
सो पुनि गई जहां रघुनाथा । जाइ कमल पद नायेउ माथा ॥
नाना भांति बिनय तेहि कीन्ही । अनपायिनी भक्ति प्रभु दीन्ही ॥
दो० । बदरी बन कहं सो गई प्रभु अज्ञा धरि सीस ।
उर धरि रामचरनयुग जे बंदत अज ईस । २५ ॥
चौ० । इहां बिचारहिं कपि मन माहीं । बीती अवध काज कछु नाहीं ॥
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता । बिनु सुधि लिये करब का भ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी । दुहु प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहां न सुधि सीता कै पाई । उहां गये मारिहि कपिराई ॥
पिता बधे पर मारत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयेउ कछु संसय नाहीं ॥
अंगदबचन सुनत कपि बीरा । बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ॥
छन एक सोचमगन होइ गये । पुनि अस बचन कहत सब भये ॥
हम सीता कै सुधि लीन्हे बिना । नहिं जैहहिं युवराज प्रबीना ॥
अस कहि सबनि सिंधु तट जाई । बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जामवन्त अंगददुख देखी । कही कथा उपदेस बिसेषी ॥
तात राम कहं नर जनि मानहु । निर्गुनब्रह्म अजित अज जानहु ॥
हम सब सेवक अति बड़भागी । सन्तत सगुनब्रह्मअनुरागी ॥
दो० । निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर द्विज गो महि लागि ।
सगुन उपासक संग तहं रहहिं मोच्छ सब त्यागि । २६ ॥
चौ० । एहि बिधि कथा कही बहु भांती । गिरिकन्दरा सुनी संपाती ॥
बाहिर होइ देखि बहु कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥
आज सबहि कहं भच्छन करऊं । दिन बहु चलेउ अहार बिन मरऊं ॥
कबहु न मिल भरि उदर अहारा । आजु दीन्ह बिधि एकहि बारा ॥

कबहुं न मिल भरि उदर अहारा । आजु दीन्ह बिधि एकहि बारा ॥
डरपे गीध बचन सुनि काना । अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गीध कहं देखी । जामवंत मन सोच बिसेषी ॥
कह अंगद बिचारि मन माहीं । धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥
रामकाजकारन तनु त्यागी । हरिपुर गयेउ परम बड़ भागी ॥
सुनि खग हरष सोकयुतबानी । आवा निकट कपिन्ह भयमानी ॥
तिन्हें अभय करि पूछेसि जाई । कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥
सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति महिमा बहु बिधि बरनी ॥

दो० । मोहि लै जाहु सिंधु तट देउं तिलांजलि ताहि ।
बचन सहाय करब मैं पैहहु खोजहु जाहि । २७ ॥

चौ० । अनुजक्रिया करि सागरतीरा । कह निज कथा सुनहु कपिबीरा ॥
हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गये रबि निकट उड़ाई ॥
तेज न सहि सक सो फिरि आवा । मैं अभिमानी रबि नियरावा ॥
जरे पंख अति तेज अपारा । परे भूमि करि घोर चिकारा ॥
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखि करि मोही ॥
बहु प्रकार तेहि ज्ञान सुनावा । देहजनित अभिमान छुड़ावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरिहीं । तासु नारि निसिचरपति हरिहीं ॥
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । तिन्हें मिले तैं होब पुनीता ॥
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता । तिन्हें देखाइ दिहेसु तैं सीता ॥
मुनि कै गिरा सत्य भइ आजू । सुनि मम बचन करहु प्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहं रह रावन सहज असंका ॥
तहं असोक उपबन जहं रहई । सीता बैठि सोच रत अहई ॥

दो० । मैं देखौं तुम नाहीं गीधहि दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउं न तो करतेउं कछुक सहाय तुम्हार । २८ ॥

चौ० । जो नाघे सत योजन सागर । करै सो रामकाज मति आगर ॥
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा । रामकृपा कस भयउ सरीरा ॥
पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं । अति अपार भवसागर तरहीं ॥
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई । राम हृदय धरि करहु उपाई ॥
अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ । तिन्ह के मन अति बिस्मय भयऊ ॥
निज निज बल सब काहु भाषा । पार जाइ कै संशय राखा ॥
जरठ भयउं अब कहै रिछेसा । नहिं तनु रहा प्रथम बललेसा ॥
जबहिं त्रिबिक्रम भयउ खरारी । तब मैं तरुन रहेउं बल भारी ॥

दो० । बलि बांधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ ।
उभय घरी महं दीन्ही सप्त प्रदच्छिन धाइ । २९ ॥

चौ० । अंगद कहइ जांउ मैं पारा । जिय संसय कछु फिरती बारा ॥
जामवन्त कह तुम सब लायक । पठइय किमि सबही कर नायक ॥
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहे बलवाना ॥
पवनतनयबल पवन समाना । बुधि बिबेक बिज्ञाननिधाना ॥
कवन सो काज कठिन जगमाहीं । जो नहिं तात होइ तुम पाहीं ॥
रामकाज लगि तव अवतारा । सुनतहि भयेउ पर्वताकारा ॥
कनकबरन तनु तेज बिराजा । मानहुं अपर गिरन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा । लीलहिं नाघउं जलनिधि खारा ॥
सहित सहाय रावनहि मारी । आनउं इहां त्रिकूट उपारी ॥
जामवंत मैं पूछउं तोही । उचित सिखावन दीजहु मोही ॥
एतना करेहु तात तुम जाई । सीतहि देखि कहौ सुधि आई ॥
तब निज भुजबल राजिवनयना । कौतुक लागि संग कपिसयना ॥

छं० । कपिसेन संग संहारि निसिचर राम सीतहि आनिहैं ।
त्रयलोकपावन सुजस सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई ।
रघुबीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई । २ ॥

दो० । भवभेषजरघुनाथजस सुनहि जो नर अरु नारि ।
तिन कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि । ३० ॥

सो० । नीलोत्पल तनु स्याम काम कोटिसोभा अधिक ।
सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघखगबधिक । १ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ।
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम चतुर्थः सोपानः ॥
समाप्तः शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ * ॥

अथ सुन्दरकाण्ड ॥

श्लो०

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं गीर्वाणशान्तिप्रदम् ।
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं प्रभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिम् ।
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥
नाना स्पृहा रघुपते हृदये ऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादि दोषरहितं कुरु मानसञ्च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्
रघुपतिवरदूतं वातजातन्नमामि ॥ ३ ॥

चौ०। जामवन्त के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिखहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
जब लगि आवउं सीतहिं देखी । होइ काज मोहि हरष बिसेषी ॥
अस कहि नाइ सबन्ह कहं माथा । चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधुतीर एक सुन्दर भूधर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर संभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमन्ता । चलेउ सो गा पाताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । तेही भांति चलेउ हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत बिचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

दो०। हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
रामकाज कीन्हे बिनु मोहि कहां बिश्राम ॥ १ ॥

चौ० । जात पवनसुत देवन्ह देषा । जानै कहुं बल बुद्धि बिसेषा ॥
सुरसानाम अहिन की माता । पठइन्हि आइ कही तेहि बाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥
रामकाज करि फिरि मैं आवौं । सीता कै सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
तब तव बदन पइठिहौं आई । सत्य कहौं मोहि जान दे माई ॥
कवनहु जतन देइ नहिं जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
योजन भरि तेहि बदन पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥
सोरह योजन मुख तेहि ठयऊ । तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा बदन बढ़ावा । तासु दून कपि रूप दिखावा ॥
सत योजन तेहि आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥
बदन पैठि पुनि बाहिर आवा । मांगी बिदा ताहि सिर नावा ॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरम तोर मैं पावा ॥

दो० । रामकाज सब करिहहु तुम्ह बलबुद्धिनिधान ।
आसिष देइ गई सो हरषि चले हनुमान । २ ॥

चौ० । निसिचरि एक सिंधु महं रहई । करि माया नभ के खग गहई ॥
जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परछांहीं ॥
गहइ छांह सक सो न उड़ाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमान कहं कीन्हा । तासु कपट कपि तुरितहिं चीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहां जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधुलोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये । खगमृगवृन्द देखि मन भाये ॥
सैल बिसाल देखि एक आगे । ता पर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे ॥
उमा न कछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेखी ॥
अति उतंग जलनिधि चहुं पासा । कनककोट कर परम प्रकासा ॥

छं० । कनककोट बिचित्र मनिकृत सुंदरायतन अति घना ।
चौहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गजबाजिखच्चरनिकर पदचर रथबरूथन्हि को गनै ।
बहुरूप निसिचरयूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं ।
नरनागसुरगंधर्बकन्या देखि मुनिमन मोहहीं ॥
कहुं मालदेह बिसाल सैल समान अति बल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥

करि जतन भट कोटिन्ह बिकटतन नगर चहुं दिसि रच्छहीं ।
कहुं महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।
रघुबीरसर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही । १ ॥

दो० पुररखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पैसार । ३ ॥

चौ० । मसक समान रूप कपि धरी । लंकहिं चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निदरी ॥
जाने नाहि मरम सठ मोरा । मोर अहार लंक कर चोरा ॥
मुष्टिक एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनी ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥
जब रावनहिं ब्रह्म बर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
बिकल होसि तैं कपि के मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
तात मोर अतिपुन्य बहूता । देखेउं नयन राम कर दूता ॥

दो० । तात स्वर्गअपवर्गसुख धरिय तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग । ४ ॥

चौ० । प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदय राखि कोसलपुरराजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
गरुअ सुमेरु रेनु सम ताही । राम कृपा करि चितवहिं जाही ॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखे जहं तहं अगनित जोधा ॥
गयेउ दसाननमंदिर माहीं । अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
सयन किये देखा कपि तेही । मंदिर महं न दीख बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सोहावा । हरिमंदिर तहं भिन्न बनावा ॥
रामनामअंकित गृह सोहा । बरनि न जाइ देखि मन मोहा ॥

दो० । रामायुधअंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसी के वृन्द बहु देखि हरष कपिराइ । ५ ॥

चौ० । लंका निसिचरनिकरनिवासा । इहां कहां सज्जन कर बासा ॥
मन महं तरक करै कपि लागा । तेही समय बिभीषन जागा ॥
राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा । हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सन हठि करिहौं पहिचानी । साधु ते होइ न कारजहानी ॥
बिप्ररूप धरि बचन सुनाए । सुनत बिभीषन उठि तहं आए ॥
करि प्रनाम पूछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥

की तुम्ह हरिदासन्ह महं कोई । मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम राम दीन अनुरागी । आयेहु मोहि करन बड़ भागी ॥

दो०। तब हनुमंत कही सब रामकथा निज नाम ।
सुनत जुगल तनु पुलक मन मगन सुमिरि गुनग्राम । ६ ॥

चौ०। सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महं जीभ बिचारी ॥
तात कबहुं मोहि जानि अनाथा । करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम मोहि दरस हठि दीन्हा ॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबही बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

दो०। अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर । ७ ॥

चौ०। जानतहूं अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम गुनग्रामा । पावा अनिर्वाच्य बिस्रामा ॥
पुनि सब कथा बिभीषन कही । जेहि बिधि जनकसुता तहं रही ॥
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखा चाहौं जानकी माता ॥
युक्ति बिभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
धरि सोइ रूप गयेउ पुनि तहंवा । बन असोक सीता रह जहंवा ॥
देखि मनहिं महं कीन्ह प्रनामा । बैठेहि बीति जात निसि यामा ॥
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । जपति हृदय रघुपतिगुनस्रेनी ॥

दो०। निज पद नयन दिये मन रामचरन महं लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन । ८ ॥

चौ०। तरु पल्लव महं रहा लुकाई । करै बिचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावन तहं आवा । संग नारि बहु किये बनावा ॥
बहु बिधि खल सीतहिं समुझावा । साम दान भय भेद दिखावा ॥
कह रावन सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुं कि नलिनी करहिं बिकासा ॥
अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुपतिबान की ॥
तब सूने हरि आनेहि मोहीं । अधम निलज लाज नहिं तोहीं ॥

दो० । आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं भानु समान ।
परुष बचन सुनि काढि असि बोला अति खिसियान । ९ ॥

चौ० । सीता तैं मम कृत अपमाना । काटौं तव सिर कठिन कृपाना ॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवनहानी ॥
स्याम सरोजदाम सम सुन्दर । प्रभुभुज करिकर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रमान पन मोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परिताप । रघुपतिबिरहअनलसंताप ॥
सीतल निसि तव असि बर धारा । कह सीता हरु मम दुखभारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनया कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि त्रास देखावहु जाई ॥
मास दिवस महँ कहा न माना । तौ मैं मारबि काढि कृपाना ॥

दो० । भवन गयउ दसकंधर इहां पिसाचिनिबृन्द ।
सीतहि त्रास दिखावहीं धरहिं रूप बहु मन्द । १० ॥

चौ० । त्रिजटानाम राच्छसी एका । रामचरनरत निपुन बिबेका ॥
सबन्हि बोलि सुनायसि सपना । सीतहि सेइ करौ हित अपना ॥
सपने बानर लंका जारी । जातुधानसेना सब मारी ॥
खर आरूढ नगन दससीसा । मुण्डित सिर खंडित भुज बीसा ॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहु बिभीषन पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहौं बिचारी । होइहि सत्य गये दिन चारी ॥
तासु बचन सुनि ते सब डरी । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

दो० जहं तहं गईं सकल मिलि सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच । ११ ॥

चौ० । त्रिजटा सन बोली कर जोरी । मातु बिपतिसंगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसह बिरह अब नहिं सहि जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहु लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को स्रवन सूल सम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रतापबलसुजस सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलै न पावक मिटहि न सूला ॥
देखियत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकौ तारा ॥
पावकमय ससि स्रवत न आगी । मानहुं मोहिं जानि हत भागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि तन करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

सो० । कपि करि हृदय बिचार दीन्ह मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ । १२ ॥

चौ० । तब देखी मुद्रिका मनोहर । रामनाम अंकित अति सुंदर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष बिषाद हृदय अकुलानी ॥
जीति को सकै अजय रघुराई । माया तें असि रचो न जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना । मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचंद्रगुन बरनत लागा । सुनतहि सीता कर दुख भागा ॥
लागी सुनै स्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
स्रवनामृत जेहि कथा सुनाई । काहि सो प्रगट होत किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठी मन बिस्मय भयऊ ॥
रामदूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु म आनी । दीन्हि राम तुम कहं सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसे । कही कथा भइ संगति जैसे ॥

दो० । कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कै दास । १३ ॥

चौ० । हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी । सजल नयन रोमावलि ठाढ़ी ॥
बूड़त बिरहजलधि हनुमाना । भयेहु तात मो कहं जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउं बलिहारी । अनुज सहित सुखभवन खरारी ॥
कोमलचित कृपालु रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवकसुखदायक । कबहुंक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुं नयन मम सीतल ताता । होइहहि निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचन न आव नयन भर बारी । अहह नाथ मोहि निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सो कृपानिकेता ॥
जनि जननी मानहु जिय ऊना । तुम तें प्रेम राम के दूना ॥

दो० । रघुपति कर संदेस अब सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भये भरे बिलोचन नीर । १४ ॥

चौ० । कहेउ रामबियोग तव सीता । मो कहं सकल भयेउ बिपरीता ॥
नवतरुकिसलय मनहुं कृसानू । कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥
कुवलयबिपिन कुंतबन सरिसा । बारिद तप्त तेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहे करत तेइ पीरा । उरगस्वास सम त्रिबिध समीरा ॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सो मनु रहत सदा तोहि पाहीं । जानु प्रीति रस इतनेहि माहीं ॥

प्रभुसंदेस सुनत बैदेही । मगन प्रेम तनसुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदय धीर धरु माता । सुमिरि राम सेवकसुखदाता ॥
उर आनहु रघुपतिप्रभुताई । सुनि ममबचन तजहु कदराई ॥

दो० । निसिचरनिकर पतंग सम रघुपतिबान कृसानु ।
जननी हृदये धीर धरु जरे निसाचर जानु । १५ ॥

चौ० । जौं रघुबीर होत सुधि पाई । करते नहिं बिलंब रघुराई ॥
रामबानरबि उये जानकी । तमबरूथकहं यातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाउं लवाई । प्रभुआयसु नहिं रामदोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित ऐहैं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहिं लै जैहैं । तिहुं पुर नारदादि जस गैहैं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना । यातुधानभट अति बलवाना ॥
मोरे हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥
कनकभूधराकार सरीरा । समरभयंकर अति बलबीरा ॥
सीतामन भरोस तब भयऊ । पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ ॥

दो० । सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभुप्रताप तें गरुड़हीं खाइ परम लघु ब्याल । १६ ॥

चौ० । मनसन्तोष सुनत कपिबानी । भक्तिप्रतापतेजबलसानी ॥
आसिष दीन्ह रामप्रिय जाना । होहु तात बलसीलनिधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहु बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहु कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयेउं मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
सुनु सुत करैं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जौं तुम सुख मानहु मन माहीं ॥

दो० । देखि बुद्धिबलनिपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपतिचरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु । १७ ॥

चौ० । चला नाइ सिर पैठेउ बागा । फल खायेसि तरु तोरै लागा ॥
रहे तहां बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहि असोकबाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि पारे ॥
सुनि रावन पठये भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे । गये पुकारत कछु अधमारे ॥

पुनि पठएउ तेहि अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि बिटप गहि तरजा । ताहि निपाति महाधुनि गरजा ॥

दो० । कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलयेसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बलभूरि । १८ ॥

चौ० । सुनि सुतबध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
मारेसि जनि सुत बांधेसु ताही । देखिय कपिहि कहां कर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित योधा । बंधुनिधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गरजा अरु धावा ॥
अति बिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
रहे महा भट ता के संगा । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे युगल मानहु गजराजा ॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरछा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजनजाया ॥

दो० । ब्रह्मअस्त्र तेहि साधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्मसर मानौं महिमा मिटै अपार । १९ ॥

चौ० । ब्रह्मबान कपि कहं तेहि मारा । परतिहु बार कटक संघारा ॥
तेहि देखा कपि मुरछित भयऊ । नागपास बांधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥
तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभुकारज लगि कपिहि बंधावा ॥
कपिबंधन सुनि निसिचर धाये । कौतुक लागि सभा सब आये ॥
दसमुख सभा दीख कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता । भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
देखि प्रताप न कपिमन संका । जिमि अहिगन महं गरुड़ असंका ॥

दो० । कपिहि बिलोकि दसानन बिहंसा कहि दुर्बाद ।
सुतबध सुरति कीन्ह पुनि उपजा हृदय बिषाद । २० ॥

चौ० । कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि के बल घालेहि बन खीसा ॥
कीधौं स्रवन सुने नहिं मोहीं । देखौं अति असंक सठ तोहीं ॥
मारे निसिचर केहि अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रानकै बाधा ॥
सुनु रावन ब्रह्मांडनिकाया । पाइ जासु बल बिरचति माया ॥
जा के बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरै जो बिबिध देह सुरत्राता । तुम से सठन सिखावनदाता ॥
हरकोदंड कठिन जेहि भंजा । तेहि समेत नृपदलमद गंजा ॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलितबलसाली ॥

दो० । जा के बललवलेस तें जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि । २१ ॥

चौ० । जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जस पावा । सुनि कपिबचन बिहंसि बहरावा ॥
खायेउं फल प्रभु लागी भूखा । कपिसुभाव तें तोरेउं रूखा ॥
सब के देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारगगामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारे ॥
मोहि न कछु बांधे कर लाजा । कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करौं जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगतभयहारी ॥
जा के डर अति काल डराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
ता सों बैर कबहुं नहिं कीजै । मोरे कहे जानकी दीजै ॥

दो० । प्रनतपाल रघुनायक करुनासिंधु खरारि ।
गये सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि । २२ ॥

चौ० । रामचरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राज तुम करहू ॥
ऋषिपुलस्ति जस बिमल मयंका । तेहि ससि महं जनि होहु कलंका ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसनहीन नहिं सोह सुरारी । सबभूषनभूषित बर नारी ॥
रामबिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजलमूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दसकंठ कहौं पनरोपी । बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
संकर सहस बिस्नु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो० । मोहमूल बहुसूलप्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपासिंधु भगवान । २३ ॥

चौ० । यदपि कही कपि अति हित बानी । भक्ति बिबेक बिरति नय सानी ॥
बोला बिहंसि महा अभिमानी । मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ग्यानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोहि प्रगट मैं जाना ॥
सुनि कपिबचन बहुत खिसियाना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥
सुनत निसाचर मारन धाये । सचिवन्ह सहित बिभीषन आये ॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिय दूता ॥
आन दंड कछु करिय गुसाईं । सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहंसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइय बंदर ॥

दो० । कपि के ममता पुच्छ पर सबही कहउ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाइ । २४ ॥

चौ० । पुच्छहीन बानर तहं जाइहि । तब सठ निजनाथहिं लै आइहि ॥
जिन्ह के कीन्हेसि बहुत बड़ाई । देखौं मैं तिन्ह के प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावनबचना । लागे रचै मूढ़ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पुच्छ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहं आये पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पुच्छ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमन्ता । भयउ परम लघुरूप तुरन्ता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनकअटारी । भईं सभीत निसाचर नारी ॥

दो० । हरिप्रेरित तेहि अवसर चलेउ मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गरजा कपि बढ़ि लाग अकास । २५ ॥

चौ० । देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ि धाई ॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
तात मातु हा सुनिय पुकारा । एहि अवसर को हमहि उबारा ॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानररूप धरे सुर कोई ॥
साधुअवज्ञा कर फल ऐसा । जरै नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारा नगर निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
ताकर दूत अनल जेहि सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दो० । पुच्छ बुझाइ खोइ स्त्रम धरि लघुरूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि । २६ ॥

चौ० । मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीनदयाल बिरद संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्रसुत कथा सुनायेहु । बानप्रताप प्रभुहि समुझायेहु ॥
मासदिवस महं नाथ न आवा । तौ पुनि मोहि जियत नहिं पावा ॥
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । तुम हूं तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतल भइ छाती । पुनि मो कहं सोइ दिन सोइ राती ॥

दो० । जनकसुतहिं समुझाइ करि बहु बिधि धीरज दीन्ह ।
चरनकमल सिर नाइ कपि गवन राम पहं कीन्ह । २७ ॥

चौ० । चलत महा धुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचरनारी ॥
नांघि सिंधु एहि पारहिं आवा । सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हर्षे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तनु तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचंद्र के काजा ॥
मिले सकल अति भये सुषारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा । पूछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुबन भीतर सब आये । अंगद संमत मधु फल षाये ॥
रषवारे जब बरजैं लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

दो० । जाइ पुकारे ते सब बन उजार युवराज ।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आये प्रभुकाज । २८ ॥

चौ० । जौं न होति सीतासुधि पाई । मधुबन के फल सकहिं कि षाई ॥
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गये कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रीति कपीसा ॥
पूछी कुसल कुसल पद देषी । रामकृपा भा काज बिसेषी ॥
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना । राषे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहं चलेऊ ॥
राम कपिन्ह जब आवत देषा । किये काज मन हरष बिसेषा ॥
फटिक सिला बैठे दोउ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दो० । प्रीति सहित सब भेंटे रघुपति करुना पुंज ।
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देषि पदकंज । २९ ॥

चौ० । जामवन्त कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम दाया ॥
ताहि सदा सब कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजयी बिनयी गुनसागर । तासु सुजस त्रयलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयउ सब काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्ह जो करनी । सहसहु मुष न जाइ सो बरनी ॥
पवनतनय के चरित सुहाये । जामवंत रघुपतिहि सुनाये ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाये । पुनि हनुमान हरषि हिय लाये ॥
कहहु तात केहि भांति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥

दो० । नाम पाहरू राति दिन ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पदजंत्रित जाहिं प्रान केहि बाट । ३० ॥

चौ० । चलत मोहि चूडामनि दीन्ही । रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ युगल लोचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरना । दीनबंधु प्रनतारतिहरना ॥
मन क्रम बचन चरनअनुरागी । केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥

अवगुन एक मोर मैं माना । बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्ह कर अपराधा । निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तन तूल समीरा । स्वास जरै छनमांह सरीरा ॥
नयन स्रवहिं जल निज हित लागी । जरै न पाव देह बिरहागी ॥
सीता कैं अति बिपति बिसाला । बिनहिं कहे भल दीनदयाला ॥

दो० । निमिष निमिष करुना निधि जाहि कलपसम बीति ।
बेगि चलिय प्रभु आनिये भुजबल खलदल जीति । ३१ ॥

चौ० । सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना । भरि आये जल राजिवनयना ॥
बचन काय मन मम गति जाही । सपनेहुं बिपति कि पाइय ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥
किमिक बात प्रभु यातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुरनरमुनि तनुधारी ॥
प्रतिउपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउं करि बिचार मन माहीं ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

दो० । सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमन्त ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवन्त । ३२ ॥

चौ० । बार बार प्रभु चहै उठावा । प्रेममगन तेहि उठव न भावा ॥
प्रभुकर पंकज कपि के सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावनपालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोले बचन बिगत अभिमाना ॥
साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥
नांघि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचरगन बधि बिपिन उजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥

दो० । ता कह प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम अनुकूल ।
तव प्रताप बड़वानलहिं जारि सकै खलु तूल । ३३ ॥

चौ० । सुनत बचन प्रभु बड़ सुखमाना । मन क्रम बचन दासनिज जाना ॥
मांगु बचन सुत बर अनुकूला । देउं आजु तुम कहं सुखमूला ॥
नाथ भगति अति सुखदायिनी । देहु कृपा करि अनपायिनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम सुभाव जेहि जाना । ताहि भजन तजि भाव न आना ॥
यह संबाद जासु उर आवा । रघुपतिचरन भगति सोइ पावा ॥

सुनि प्रभुबचन कहहिं कपिबृन्दा । जय जय जय कृपाल सुखकन्दा ॥
तब रघुपति कपि पतिहिं बुलावा । कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब बिलंब केहि कारन कीजै । तुरत कपिन्ह कहं आयसु दीजै ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ ते भवन चले सुर हरषी ॥

दो० । कपिपति बेगि बुलाये आये यूथपयूथ ।
नाना बरन अतुलबल बानरभालुबरूथ । ३४ ॥

चौ० । प्रभुपदपंकज नावहिं सीसा । गरजहिं भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपिसेना । चितइ कृपा करि राजिवनयना ॥
रामकृपा बल पाइ कपिंदा । भये पच्छजुत मनहुं गिरिंदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भये सुन्दर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमयकीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभुपयान जाना बैदेही । फरकि बाम अंग जनु कहि देही ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहिं होई । असगुन भयउ रावनहिं सोई ॥
चला कटक को बरनै पारा । गरजहिं बानर भालु अपारा ॥
नखआयुध गिरिपादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं । डगमग महि दिग्गज चिक्करहीं ॥

छं० चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष दिनकर सोम सुरमुनिनागकिन्नरदुख टरे ॥
कटकटहिं मरकट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबलप्रताप कोसलनाथगुनगन गावहीं ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बारबारहि मोहई ।
गहि दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सोहावनी ।
जनु कमठखर्प्पर सर्पराज सुलिखत अबिचल पावनी ॥ १ ॥

दो० । एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागरतीर ।
जहं तहं लागे खान फल भालु बिपुल कपिबीर । ३५ ॥

चौ० । उहां निसाचर रहहिं ससंका । जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज ग्रह सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचरकुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आये पुर कवनि भलाई ॥
दूतिन्ह सन सुनि पुरजनबानी । मन्दोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसि जोरि कर पतिपद लागी । बोली बचन नीतिरसपागी ॥
कन्त कर्ष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हिय धरहू ॥
समुझत जासु दूत कै करनी । स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई । पठवहु पिय जौं चहहु भलाई ॥

तब कुम्भकर्न विषिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे ॥

दो० । रामबान अहिगन सरिस निकर निसाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतन करहु तजि टेक । ३६ ॥

चौ० । स्रवन सुनी सठ ता करि बानी । बिहँसा जगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाव नारि कर साँचा । मंगल माँह भै मन अति काँचा ॥
जौ आवै मरकटकटकाई । जियहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जा के त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
अस कहि बिहँसि ताहि उरलाई । चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
मन्दोदरी हृदय कर चिंता । भयउ कन्त पर बिधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभा खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब स्रम नाहीं । नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

दो० । सचिव बैद्य गुरु तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तनु तीनि कर होइ बेगेहिं नास । ३७ ॥

चौ० । सोइ रावन कहँ बनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि बिभीषन आवा । भ्राताचरन सीस तेहि नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौ कृपाल पूँछेहु मोहि बाता । मति अनुरूप कहौं हित ताता ॥
जो आपन चाहइ कल्याना । सुजस सुमति सुभगति सुख नाना ॥
सो परनारिलिलार गुसाईं । तजै चौथ के चंद कि नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई । भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ॥
गुनसागर नागर नर जोऊ । अलपलोभ भल कहै न कोऊ ॥

दो० । काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
तेहि परिहरि रघुबीरहिं भजहु भजहिं जेहि संत । ३८ ॥

चौ० । तात राम नहिं नरभूपाला । भुवनेस्वर कालहु के काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता । ब्यापक अजित अनादि अनन्ता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपासिन्धु मानुषतनुधारी ॥
जनरञ्जन भञ्जन खलब्राता । बेदधर्मरच्छक सुरत्राता ॥
ताहि बैर तजि नाइय माथा । प्रनतार्तिभंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गये प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्वद्रोहकृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रयतापनसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन ॥

दो० । बार बार पद लागउं बिनय करउं दससीस ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस । ३९ ॥

चौ० । माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीतिबिभूषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
रिपुउतकर्ष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहां है कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहत बिभीषन पुनि कर जोरी ॥
सुमति कुमति सब के उर रहई । नाथ पुरान निगम अस कहई ॥
जहां सुमति तहं संपति नाना । जहां कुमति तहं बिपतिनिदाना ॥
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपुप्रीता ॥
कालराति निसिचरकुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो० । तात चरन गहि मागउं राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहं अहित न होइ तुम्हार । ४० ॥

बुधपुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ।
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि मृत्यु निकट अब आई ॥
जियसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुजबल जेहि जीता मैं नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरनप्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
तुम पितु सरिस भलेहि मोहि मारा । राम भजे हित नाथ तुम्हारा ॥
उमा संत के इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो० । राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
मैं रघुबीर सरन अब जाउं देहु जनि खोरि । ४१ ॥

चौ० । अस कहि चला बिभीषन जबहीं । आयूहीन भयेउ सब तबहीं ॥
साधुअवज्ञा तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइ चरनजलजाता । अरुन मृदुल सेवकसुखदाता ॥
जे पद परसि तरी ऋषिनारी । दंडककानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये । कपटकुरंग संग धर धाये ॥
हर उरसर सरोजपद जेई । अहो भाग्य मैं देखिहौं तेई ॥

दो० । जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरत रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहौं इन नयनन्हि अब जाइ । ४२ ॥

अ

चौ०। एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आयेउ सपदि सिन्धु एहि पारा॥
कपिन्ह बिभीषन आवत देखा। जाना कोउ रिपुदूत बिसेखा॥
ताहि राखि कपीस पहिं आये। समाचार सब ताहि सुनाये॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भाई॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहै कपीस सुनहु नरनाहा॥
जानि न जाइ निसाचरमाया। कामरूप केहि कारन आया॥
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिय बाँधि मोहि अस भावा॥
सखा नीति तुम नीकि बिचारी। मम पन सरनागतभयहारी॥
सुनि प्रभुबचन हरष हनुमाना। सरनागतबच्छल भगवाना॥

दो०। सरनागत कहँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।
ते नर पावर पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि। ४३॥

चौ०। कोटि बिप्रबध लागहिं जाहू। आये सरन तजौं नहिं ताहू॥
सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्मकोटिअघ नासौं तबहीं॥
पापवन्त कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥
जो पै दुष्टहृदय सो होई। मोरे सन्मुख आव कि सोई॥
निर्मलमन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥
भेद लेन पठवा दससीसा। तबहु न कछु भय हानि कपीसा॥
जग महँ सखा निसाचर जेते। लछिमन हनहिं निमिष महँ तेते॥
जो सभीत आवा सरनाई। रखिहौं ताहि प्रान की नाई॥

दो०। उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपालु कहि कपि चले अंगद हनू समेत। ४४॥

चौ०। सादर तेहि आगे करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर॥
दूरिहि ते देखे दोउ भ्राता। नयनानन्द दान के दाता॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठठुकि एकटक पल रोकी॥
भुजप्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामलगात प्रनतभयमोचन॥
सिंहकंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदनमन मोहा॥
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता॥
नाथ दसानन कर मैं भ्राता। निसिचरबंस जनम सुरत्राता॥
सहज पापप्रिय तामस देहा। यथा उलूकहि तम पर नेहा॥

दो०। स्रवन सुयस सुनि आयेउँ प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरतिहरन सरनसुखद रघुबीर। ४५॥

चौ०। अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेखा॥
दीन बचन सुनि प्रभुमन भावा। भुज बिसाल गहि हृदय लगावा॥
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगतभयहारी॥

कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
खल मंडली बसहु दिनराती । सखा धर्म निबहै केहि भांती ॥
मैं जानौं तुम्हारि सब रीती । अतिनयनिपुन न भाव अनीती ॥
बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्टसंग जनि देइ बिधाता ॥
अब पद देखि कुसल रघुराया । जो तुम कीन्हि जानि जन दाया ॥

दो० । तब लगि कुसल न जीव कहुं सपनेहुं मन बिस्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुं सोक धाम तजि काम । ४६ ॥

चौ० । तब लगि हृदय बसत खल नाना । लोभ मोह मत्सर मद माना ॥
तब लगि उर न बसत रघुनाथा । धरे चाप सायक कटि भाथा ॥
ममता तरुन तमी अंधियारी । रागद्वेष उलूक सुखकारी ॥
तब लगि बसत जीव मन माहीं । जब लगि प्रभुप्रताप रवि नाहीं ॥
अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि रामपद कमल तुम्हारे ॥
तुम कृपालु जा पर अनुकूला । ताहि न ब्याप त्रिविधभवसूला ॥
मैं निसिचर अति अधमसुभाऊ । सुभ आचरन कीन्ह नहिं काऊ ॥
जासु रूप मुनिध्यान न आवा । सो प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा ॥

दो० । अहो भाग्य मम अमित अति राम कृपा सुखपुंज ।
देखेउं नयन बिरंचिसिव सेव्य युगलपद कंज । ४७ ॥

चौ० । सुनहु सखा निज कहउं सुभाऊ । जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥
जौं नर होइ चराचरद्रोही । आवै सभय सरन तकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छल नाना । करौं सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बंधु सुत दारा । तन धन भवन सुहृद परिवारा ॥
सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहिं बांधि बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हर्ष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे । लोभी हृदय बसै धन जैसे ॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे । धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥

दो० । सगुनउपासक परम हित निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम जिन के द्विजपद प्रेम । ४८ ॥

चौ० । सुनु लंकेस सकल गुन तोरे । तातें तुम अतिसय प्रिय मोरे ॥
रामबचन सुनि बानरयूथा । सकल कहहिं जय कृपाबरूथा ॥
सुनत बिभीषन प्रभु कै बानी । नहिं अघात स्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिंबारा । हृदय समात न प्रेम अपारा ॥
सुनहु देव सचराचरस्वामी । प्रनतपाल उरअंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभुपदप्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निजभक्ति पावनी । देहु सदा सिवमनभावनी ॥

एवमस्तु प्रभु कहि रनधीरा । मांगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
यदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरस अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमनबृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो० । रावनक्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषन राखा दीन्हेउ राज अखंड ॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्ह दिये दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ । ४९ ॥

चौ० । अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूंछ बिषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभुसुभाव कपिकुल मन भावा ॥
पुनि सरबज्ञ सर्बउरबासी । सर्बरूप सबरहित उदासी ॥
बोले बचन नीतिप्रतिपालक । कारन मनुज दनुजकुलघालक ॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिय जलधि गंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झषजाती । अति अगाध दुस्तर सब भांती ॥
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटिसिंधुसोषक तव सायक ॥
यद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिय सागर सन जाई ॥

दो० । प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहिं सकल भालुकपिधारि । ५० ॥

चौ० । सखा कही तुम नीकि उपाई । करिय दैव जौं होय सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमनमन भावा । रामबचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिय सिंधु करिय मन रोसा ॥
कादरमन कहं एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहंसि बोले रघुबीरा । ऐसइ करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि लवन सिंधु तटआई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछे रावन दूत पठाए ॥

दो० । सकल चरित तिन्ह देखेउ धरे कपटकपिदेह ।
प्रभुगुन हृदय सराहहिं सरनागत पर नेह । ५१ ॥

चौ० । प्रगट बखानहिं रामसुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बांधि कपीस पहिं आने ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
सुनि सुग्रीवबचन कपि धाये । बांधि कटक चहुं पास फिराये ॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना । ताहि कोसलाधीस कै आना ॥
सुनि लछिमन सब निकट बुलाये । दया लागि हंसि तुरत छुड़ाये ॥
रावन कर दीजेहु यह पाती । लछिमन बचन बांचु कुलघाती ॥

कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेस उदार ।
सीता देइ मिलहु न त आवा काल तुम्हार । ५२ ॥

चौ० । तुरत नाइ लछिमनपद माथा । चले दूत बरनत गुनगाथा ॥
कहत रामयस लंका आये । रावनचरन सीस तिन्ह नाये ॥
बिहँसि दसानन पूछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालुकीसकटकाई । कठिन कालप्रेरित चलि आई ॥
जिन्हके जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुलचित सिंधु बिचारा ॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्हके हृदय त्रास अति मोरी ॥

दो० । की भइ भेंट कि फिरि गये स्रवन सुयस सुनि मोर ।
कहसि न रिपुदलतेजबल बहुत चकित चित तोर । ५३ ॥

चौ० । नाथ कृपा करि पूछेहु जैसे । मानहु कहा क्रोध तजि तैसे ॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥
रावनदूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
स्रवननासिका काटन लागे । रामसपथ दीन्हे हम त्यागे ॥
पूछेहु नाथ रामकटकाई । बदन कोटिसत बरनि न जाई ॥
नाना बरन भालुकपिधारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महं तेहि बल थोरा ॥
अमित नाम भटकठिन कराला । अमित नागबल बिपुल बिसाला ॥

दो० । द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवन्त बलरासि । ५४ ॥

चौ० । ये कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनै को नाना ॥
रामकृपा अतुलित बल तिनहीं । तृनसमान त्रयलोकहि गिनहीं ॥
अस मैं स्रवन सुना दसकन्धर । पदुमअठारह यूथप बन्दर ॥
नाथ कटक महं सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहिं जीतै रन माहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
सोखहिं सिंधु सहित झषब्याला । पूरहिं न तब भरि कुधर बिसाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुं ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

दो० । सहज सूर कपिभालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन कालकोटि कहं जीति सकहिं संग्राम । ५५ ॥

चौ० । रामतेजबलबुधिबिपुलाई । सेष सहससत सकहिं न गाई ॥

अथ लंकाकाण्ड ॥

श्लोक ॥

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं ।
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ॥
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं ।
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥
शंखेन्द्वाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्म्माम्बरं ।
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियं ॥
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं ।
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशङ्करं कामहं ॥ २ ॥
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभं ।
खलानां दण्डकृद् योऽसौ शङ्करः शन्तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो० । लवनिमेष परमानजुग बरष कल्प सर चण्ड ।
भजसि न मन तेहि राम कहं काल जासु कोदण्ड । १ ॥

सो० । सिन्धु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरै कटक ॥
सुनहु भानुकुलकेतु जामवन्त कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं । १ ॥

चौ० । यह लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥
प्रभुप्रताप बड़वानल भारी । सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा । भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा ॥
सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥
जामवन्त बोले दोउ भाई । नलनीलहि सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी । सकल सुनहु बिनती इक मोरी ॥

मचरनपंकज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
नहु मर्कटबिकटबरूथा । आनहु बिटपगिरिन्ह के जूथा ॥
नि कपि भालु चले करि हूहा । जय रघुबीरप्रतापसमूहा ॥

। अति उतंग गिरि पादप लीलहि लेहिं उठाइ ।
आनि देहिं नल नीलहिं रचहिं ते सेतु बनाइ । २ ॥

। सैल बिसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥
खि सेतु अति सुंदर रचना । बिहँसि कृपानिधि बोले बचना ॥
रम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहिं बरनी ॥
रिहौं इहां संभुथापना । मोरे हृदय परम कलपना ॥
सुनि कपीस बहु दूत पठाये । मुनिबर सकल बोलि लै आये ॥
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥
सिवद्रोही मम भक्त कहावा । सो नर सपनेहु मोहि न पावा ॥
संकरबिमुख भक्ति चह मोरी । सो नारकी मूढ मति थोरी ॥

० । संकरप्रिय मम द्रोही सिवद्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महं बास । ३ ॥

० । जे रामेस्वरदरसन करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥
जो गंगाजल आनि चढाइहि । सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि । भक्ति मोरि तेहि संकर देइहि ॥
मम कृतसेतु जो दरसन करहीं । सो बिनु स्रम भवसागर तरहीं ॥
रामबचन सब के जिय भाये । मुनिबर निज निज आस्रम आये ॥
गिरिजा रघुपति कै यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥
बांधेउ सेतु नीलनल नागर । रामकृपा जस भयेउ उजागर ॥
बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई । भयेउ उपल बोहित सम तेई ॥
महिमा यह न जलधि कै बरनी । पाहन गुन न कपिन्ह कै करनी ॥

०। स्रीरघुबीरप्रताप तें सिन्धु तरे पाषान ।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन । ४ ॥

०। बांधि सेतु अति सुदृढ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ॥
चली सेन कछु बरनि न जाई । गर्जहिं मरकटभटसमुदाई ॥
सेतुबन्ध ढिग चढि रघुराई । चितव कृपाल सिन्धुबहुताई ॥
देखन कहं प्रभुकरुनाकन्दा । प्रगट भये सब जलचरबृन्दा ॥
नाना मकर नक्र झष ब्याला । सतजोजनतन परमबिसाला ॥
ऐसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । एकन्ह के डर तेपि डेराहीं ॥
प्रभुहि बिलोकत टरत न टारे । मन हरषित सब भये सुखारे ॥
तिनकी ओट न देखिय बारी । मगन भये हरिरूप निहारी ॥

चला कटक प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपिदल बिपुलाई ॥

दो० । सेतुबन्ध भइ भीर अति कपि नभपंथ उड़ाहिं ।
अपर जलचरन्ह ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं । ५ ॥

चौ० । अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई । बिहंसि चले कृपालु रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जाइ कपिजूथपभीरा ॥
सिन्धुपार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन्ह कहं आयसु दीन्हा ॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाये । सुनत भालु कपि जहं तहं धाये ॥
सब तरु फरे रामहित लागी । रितु अरु कुरितुहिं कालगति त्यागी ॥
खाहिं मधुर फल बिटप हिलावहिं । लंका सन्मुख सिखर चलावहिं ॥
जहं कहुं फिरत निसाचर पावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥
दसनन काटि नासिका काना । कहि प्रभुसुजस देहिं तब जाना ॥
जिन्ह कर नासा कान निपाता । तिन्ह रावनहिं कही सब बाता ॥
सुनत स्रवन बारिधिबंधाना । दसमुख बोलि उठा अकुलाना ॥

दो० । बांधेउ बननिधि नीरनिधि जलधि सिन्धु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपती उदधि पयोधि नदीस । ६ ॥

चौ० । व्याकुलता निज समुझि बहोरी । बिहंसि चला ग्रह करि मति भोरी ॥
मन्दोदरी सुन्यौ प्रभु आयौ । कौतुकही पाथोधि बंधायौ ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली अति बिनीतमृदु बानी ॥
चरन नाइ सिर अंचल रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
नाथ बैर कीजे ताही सों । बुधि बल सकिय जीति जाही सों ॥
तुम्हहिं रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अतिबल मधुकैटभ जिन मारे । महाबीर दितिसुत संहारे ॥
जेइ बलि बांधि सहस भुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि [illegible]रा ॥
तासु बिरोध न कीजिय नाथा । काल कर्म जिव जिन के हाथा ॥

दो० । रामहिं सौंपहु जानकिहि नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहं राज समर्पि बन भजिय जाइ रघुनाथ । ७ ॥

चौ० । नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चाहिय करन सो सब करि बीते । तुम सुर असुर चराचर जीते ॥
संत कहहिं अस नीति दसानन । चौथेपन जाइहि नृप कानन ॥
तासु भजन कीजै तहं भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
सोइ रघुबीर प्रनतअनुरागी । भजहु नाथ ममता मद त्यागी ॥
मुनिबर जतन करहिं जेहि लागी । भूप राज तजि होहिं बिरागी ॥
सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयेउ करन तोहि पर दाया ॥

जौं पिय मानहु मोर सिखावन । होइहि सुजस तिहुँ पुर पावन ॥

। अस कहि लोचन बारि भरि गहि पद कंपित गात ।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होय अहिवात । ७ ॥

चौ० । तब रावन मयसुता उठाई । कहै लागु खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥
बरुन कुबेर पवन जम काला । भुजबल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
देव दनुज किन्नर सब मोरे । कवन हेतु उपजा भय तोरे ॥
नाना बिधि तेहि कहि समुझाई । सभा बहोरि बैठु सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना । काल बिबस उपजा अभिमाना ॥
सभा आइ मंत्रिन्ह तें बूझा । करब कवनि बिधि रिपु सन जूझा ॥
कहहिं सचिव सुनु निसिचरनाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
कहहु कवनि भय करिय बिचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो० । सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति बिरोध न करिय प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि । ८ ॥

चौ० । कहहिं सचिव सब ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भांती ॥
बारिधि नांघि एक कपि आवा । तासु चरित मन महं सब गावा ॥
छुधा न रही तुमहीं तब काहू । जारत नगर कस न धरि खाहू ॥
सुनत नीक आगे दुख पावा । सचिवन्ह अस मत प्रभुहिं सुनावा ॥
जेहि बारीस बंधायउ हेला । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
सो भनु मनुज खाब हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
प्रथम बसीठ पठव सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥

दो० । नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढ़ाइय रारि ।
नाहि तो सन्मुख समर महं तात करिय हठि मारि । १० ॥

चौ० । यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजस जग तोरा ॥
सुत सन कह दसकंठ रिसाई । अस मति सठ तोहि केहि सिखाई ॥
अबहीं तें उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयेउ घमोई ॥
सुनि पितुगिरा परुष अतिघोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
हित मत तोहि न लागत कैसे । कालबिबस कहं भेषज जैसे ॥
संध्यासमय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
लंकासिखर उपर आगारा । अति बिचित्र तहं होइ अखारा ॥
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । लागे किन्नर गुनगन गावन ॥

बाजहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥

दो० । सुनासीर शतसरिस सो सन्तत करै बिलास ।
परम प्रबल रिपु सीस पर तदपि सोच नहिं चास । ११ ॥

चौ० । इहाँ सुबेलसैल रघुबीरा । उतरे सेनसहित अति भीरा ॥
सिखर एक उतंग अति देखी । परम रम्य अति सुभ्र बिसेषी ॥
तहँ तरुकिसलयसुमन सुहाये । लछिमन रचि निज हाथ डसाये ॥
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला । तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
प्रभुकृत सीस कपीस उछंगा । बाम दहिन दिसि चाप निषंगा ॥
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना । कह लंकेस मंत्र लगि काना ॥
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरनकमल चापत बिधि नाना ॥
प्रभु पाछे लछिमन बीरासन । कटि निषंग कर बान सरासन ॥

दो० । एहि बिधि कृपारूपगुनधाम राम आसीन ।
ते नर धन्य जे ध्यान एहि रहत सदा लयलीन ॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कहत सबहिं देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक । १२ ॥

चौ० । पूरब दिसि गिरिगुहा निवासी । परम प्रताप तेज बल रासी ॥
मत्तनागतम कुंभ बिदारी । ससि केसरी गगनबनचारी ॥
बिथुरे नभ मुकुताहलतारा । निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥
कह प्रभु ससि महँ मेचकताई । कहहु काह निज निज मति भाई ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । ससि महँ प्रगट भूमि कै झाँई ॥
मारेउ राहु ससिहि कह कोई । उर महँ परी स्यामता सोई ॥
कोउ कह जब बिधि रतिमुख कीन्हा । सारभाग ससि कर हरि लीन्हा ॥
छिद्र सो प्रगट इन्दुउर माहीं । तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं ॥
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा ॥
बिष संयुत कर निकर पसारी । जारत बिरहवन्त नर नारी ॥

दो० । कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास ।
तव मूरति बिधुउर बसति सोई स्यामता आभ ॥
पवनतनय के बचन सुनि बिहँसे राम सुजान ।
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान । १३ ॥

चौ० । देखु बिभीषन दच्छिन आसा । घनघमंड दामिनीबिलासा ॥
मधुर मधुर गरजत घन घोरा । होइ बृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला । होइ न तड़ित न बारिदमाला ॥
लंका सिखर उपर आगारा । तहँ दसकंधर देखु अखारा ॥

। मेघडंबरसिरधारी । सोइ जनु जलदघटा अतिकारी ॥
दोदरी स्रवनताटंका । सोइ प्रभु जनु दामिनीदमंका ॥
जहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा ॥
मुसुकान समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाइ बान संधाना ॥

। छत्र मुकुट ताटंक तब हते एकही बान ।
सब के देखत महि परे मर्म न कोऊ जान ॥
अस कौतुक करि रामसर प्रबिसे आइ निषंग ।
रावन सभा ससंक सब देखि महा रसभंग । १४ ॥

। कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा ॥
चहिं सब निज हृदय मझारी । असगुन भयउ भयंकर भारी ॥
समुख देखि सभा भय पाई । बिहंसि बचन कह जुगुति बनाई ॥
सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । मुकुट परे कस असगुन ताही ॥
यन करहु निज निज गृह जाई । गवने भवन सकल सिर नाई ॥
न्दोदरी सोच उर बसेऊ । जब तें स्रवन पूर महि खसेऊ ॥
जल नयन कह युग कर जोरी । सुनहु प्रानपति बिनती मोरी ॥
त राम बिरोध परिहरहू । जानि मनुज जनि हठ मन धरहू ॥

। बिस्वरूप रघुबंसमनि करहु बचन बिस्वासु ।
लोककल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु । १५ ॥

। पद पाताल सीस अजधामा । अपर लोक अंग अंग बिस्रामा ॥
भृकुटिबिलास भयंकर काला । नयनदिवाकर कचघनमाला ॥
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपारा ॥
स्रवन दिसा दस बेद बखानी । मारुत स्वास निगम निज बानी ॥
अधर लोभ जम दसन कराला । माया हास बाहु दिगपाला ॥
आनन अनल अंबुपति जीहा । उतपति पालन प्रलय समीहा ॥
रोम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नसजारा ॥
उदर उदधि अध गो जातना । जग मय प्रभु कहँ बहु कलपना ॥

१० । अहंकार सिवबुद्धि अजमन ससिचित्त महान ।
मनुज बास सचराचर रूपरासि भगवान ॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बैर बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीरपद मम अहिवात न जाइ । १६ ॥

१० । बिहंसा नारिबचन सुनि काना । अहो मोहमहिमा बलवाना ॥
नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ॥
साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ॥
रिपु कर रूप सकल तैं गावा । अति बिसाल भय मोहि सुनावा ॥

सो सब प्रिया सहज बस मोरे । समुझि परा प्रसाद अब तोरे ॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई । यहि बिधि कहेउ मोरि प्रभुताई ॥
तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि । समुझत सुखद सुनत भयमोचनि ॥
मन्दोदरि मन महँ अस ठयऊ । पियहि कालबस मतिभ्रम भयऊ ॥

दो० । एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।
सहज असंक लंकपति सभा गयो मदअंध । १७ ॥

सो० । फूलै फलै न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरखहृदय न चेत जौ गुरु मिलहिं बिरंचि सिव । १ ॥

चौ० । इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बुलाई ॥
कहहु बेगि का करिय उपाई । जामवंत कह पद सिर नाई ॥
सुनु सर्बज्ञ सकल उरबासी । बुधिबलतेजधर्मगुनरासी ॥
मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा । दूत पठाइय बालिकुमारा ॥
नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
बालितनय बुधिबलगुनधामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाइ तुमहि का कहऊँ । परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥
काज हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

सो० । प्रभुअज्ञा धरि सीस चरनबन्दि अंगद उठेउ ।
सोइ गुनसागरईस राम कृपा जापर करहु ॥
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदर दयउ ।
असबिचारि जुबराज तनु पुलकित हरषित हिये । २ ॥

चौ० । बंदि चरन उर धरि प्रभुताई* । अंगद चलेउ सबहि सिर नाई ॥
प्रभुप्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सोइ भइ भेंटा ॥
बातहिं बात करष बढ़ि आई । युगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥
तेहि अंगद कहँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाई ॥
निसिचरनिकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
एक एक सन मर्म न कहहीं । समुझि तासु बध चुप करि रहहीं ॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेहि जारी ॥
अब धौं काह करिहि करतारा । अति सभीत सब करहिं बिचारा ॥
बिनु पूछे मगु देहिं देखाई । जेहि बिलोकु सो जाइ सुखाई ॥

दो० । गयो सभादरबार तब सुमिरि रामपदकंज ।
सिंहठवनि इत उत चितव धीर बीर बलपुंज । १८ ॥

चौ० । तुरित निसाचर एक पठावा । समाचार रावनहिं जनावा ॥

न बिहंसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहां कर कीसा ॥
यसु पाइ दूत बहु धाये । कपि कुंजरहि बोलि लेइ आये ॥
गद दीख दसानन बैसा । सहित प्रान कज्जलगिरि जैसा ॥
जा बिटप सिर सृंग समाना । रोमावली लता जनु नाना ॥
ख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥
यउ सभा मन नेकु न मुरा । बालितनय अति बल बांकुरा ॥
ठे सभासद कपि कहं देखी । रावन उर भा क्रोध बिसेखी ॥

। जथा मत्त गजजूथ महं पंचानन चलि जाइ ।
रामप्रताप सुमिरि मन बैठ सभा सिर नाइ । १९ ॥

। कह दसकंध कवन तैं बंदर । मैं रघुबीरदूत दसकंधर ॥
म जनकहि तोहि रही मिताई । तव हितकारन आयेउं भाई ॥
त्तम कुल पुलस्त्य कर नाती । सिव बिरंचि पूजेहु बहु भांती ॥
र पायेहु कीन्हेहु सब काजा । जीतेहु लोकपाल सब राजा ॥
प अभिमान मोह बस [illegible]या । हरि आनेहु सीता जगदंबा ॥
ब सुभ कहा सुनेहु तुम मोरा । सब अपराध छमिहिं प्रभु तोरा ॥
सन गहहु तृन कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे । एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागे ॥

० । प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहिं ।
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करहिंगे तोहिं । २० ॥

० । रे कपि पोत न बोलु संभारी । मूढ़ न जानहि मोहि सुरारी ॥
कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नाते मानिए मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा । तासों कबहुं भई रहि भेंटा ॥
अंगद बचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना ॥
अंगद ताही बालि कर बालक । उपजेहु बंस अनल कुलघालक ॥
गर्भ न गयेहु ब्यर्थ तुम जायेहु । निज मुख तापसदूत कहायेहु ॥
अब कहु कुसल बालि कहं अहई । बिहंसि बचन तब अंगद कहई ॥
दिन दस गये बालि पहं जाई । बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥
राम बिरोध कुसल जस होई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥
सुनु सठ भेद होइ मन ताके । श्री रघुबीर हृदय नहि जाके ॥

दो० । हम कुलघालक सत्य तुम कुलपालक दससीस ।
अन्धौ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस । २१ ॥

चौ० । सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरन सेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुल बोरा । ऐसहु मति उर बिहर न तोरा ॥

सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी ॥
खल तव कठिन बचन सब सहऊं । नीति धर्म मैं जानत अहऊं ।
कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुं सुनी कृत परतिय चोरी ।
देखी नयन दूत रखवारी । बूड़ि न मरहु धर्मब्रतधारी ।
कान नाक बिनु भगिनि निहारी । छमा कीन्ह तुम धर्म बिचारी ।
धर्मसीलता तव जग जागी । पावा दरस हमहुं बड़भागी ।

दो० । जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि सठ बिलोकु मम बाहु ।
लोकपाल बल बिपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ॥
पुनि नभसर मम करनिकर कमलन्हि पर करि बास ।
सोभत भयेउ मराल इव सम्भु सहित कैलास । २२ ॥

चौ० । तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ॥
तव प्रभु नारिबिरह बलहीना । अनुज तासु दुख दुखित मलीना ॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥
जामवन्त मन्त्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समर अरूढ़ा ॥
सिल्पकर्म जानहिं नलनीला । है कपि एक महाबलसीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा । सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥
सत्य बचन कहु निसिचरनाहा । सांचेहुं कीस कीन्ह पुर दाहा ॥
रावननगर अल्प कपि दहई । सुनि अस बचन सत्य को कहई ॥
जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥
चलै बहुत सो बीर न होई । पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दो० । सत्य नगर कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ ।
फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहि भय रहा लुकाइ ॥
सत्य कहेउ दसकंठ सब मोहि न सुनै कछु कोह ।
कोउ न हमारे कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥
प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति असि आहि ।
जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहै कोउ ताहि ॥
जद्यपि लघुता राम कहं तोहि बधे बड़ दोष ।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्रिजाति कर रोष ॥
बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदै दहेउ रिपुकीस ।
प्रतिउत्तर संड़सिन मनहुं काढ़त भट दससीस ॥
हंसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक ।
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक । २३ ॥

चौ० । धन्य कीस जो निज प्रभुकाजा । जहं तहं नाचहिं परिहरि लाजा ॥

नाचि कूदि कै लोग रिझाई । पतिहित करै धर्म निपुनाई ॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभुगुन कस न कहसि एहि भांती ॥
मैं गुनगाहक परम सुजाना । तव कटु रटनि करौं नहिं काना ॥
कह कपि तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥
बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तेहि कछु कृत अपकारा ॥
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकन्धर मैं कीन्हि ढिठाई ॥
देखेउं आइ जो कछु कपि भाषा । तुम्हरे लाज न रोष न माषा ॥
जौं असि मति पितु खायेउ कीसा । कहि अस बचन हंसा दससीसा ॥
पितहिं खाइ खातेउं पुनि तोही । अबहीं समुझि परा कछु मोही ॥
बालि बिमल जसभाजन जानी । हतौं न तोहि अधम अभिमानी ॥
कहु रावन रावन जग केते । मैं निज स्रवन सुनेउं सुनु जेते ॥
बलिहि जितन एक गयउ पताला । राखेउ बांधि सिसुन्ह हयसाला ॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई ॥
एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जन्तु बिसेषा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छुड़ावा ॥

दो० । एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की कांख ।
इन महं रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि मांख । २४ ॥

चौ० । सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जानु जासु भुजलीला ॥
जानु उमापति जासु सुराई । पूजेउं जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
सिर सरोज निज करन्ह उतारी । पूजेउं अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुजबिक्रम जानहिं दिगपाला । सठ अजहूं जिन के उर साला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जब जब भिरेउं जाइ बरिआई ॥
जिन के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलत इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । सुनेहि न स्रवन अलीक प्रलापी ॥

दो० । तेहि रावन कहं लघु कहसि नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ज्ञान । २५ ॥

चौ० । सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु संभारि अधम अभिमानी ॥
सहसबाहुभुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ॥
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ॥
राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी काम नदी पुनि गंगा ॥
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूषा । अन्नदान अरु रस पीयूषा ॥

वैनतेय बल चहि बकबालक । जिमि अजहि पुनि चपल हयालय

सुनु मतिमंद लोक बैकुण्ठा । लाभ कि रघुपतिभगति अकुण्ठा

दो० । सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि ।

कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि । २६ ॥

चौ० । सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई

जौं खल भयेसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही

मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला । रामबैर अस होइहि हाला

तव सिरनिकर कपिन्ह के आगे । परिहहिं धरनि रामसर लागे

तव सिर कंदुक सम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना

जबहिं समर कोपहिं रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक

तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस बिचारि भजु राम उदारा

सुनत बचन रावन परजरा । जरत महानल जनु घृत परा

दो० । कुंभकरन अस बन्धु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि ।

मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउं चराचर झारि । २७ ॥

चौ० । सठ शाखामृग जोरि सहाई । बांधा सिंधु इहै प्रभुताई

लांघहिं खग अनेक बारीसा । सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा

मम भुज सागर बल जल पूरा । जहं बूड़े बहु सुर नर सूरा

बीस पयोधि अगाध अपारा । को अस बीर जो पाइहि पारा

दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूपसुजस खल मोहि सुनावा

जौं पै समर सुभट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जासु गुनगाथा

तौ बसीठ पठवत केहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा

हरगिरिमथन निरखु मम बाहू । पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू

दो० । सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहि सीस ।

हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस । २८ ॥

चौ० । जरत बिलोकेउं जबहिं कपाला । बिधि के लिखे अंक निज भाला

नर के कर आपन बध बांची । हंसेउं जानि बिधि गिरा असांची

सेउ मन समुझि त्रास नहिं मोरे । लिखा बिरंचि जरठ मतिभोरे

आन बीरबल सठ मम आगे । पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे

कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावन तोहि समान कोउ नाहीं

लाजवन्त तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसि न काऊ

सिर अरु सैल कथा चित रही । ताते बार बीस तैं कही

सो भुजबल राखेउ उर घाली । जीतेहु सहसबाहु बलि बाली

सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटे सीस कि होइअ सूरा

इंद्रजालि कहुं कहिअ न बीरा । काटै निज कर सकल सरीरा

दो० । जरहिं पतंग मोहबस भार बहहिं खरबृंद ।
ते नहिं सूर कहावहीं समुझि देखु मतिमंद । २९ ॥

चौ० । अब जनि बत बढ़ाव खल करही । सुनु मम बचन मान परिहरही ॥
दसमुख मैं न बसीठी आयेउ । अस बिचारि रघुबीर पठायेउ ॥
बार बार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु बधे सृकाला ॥
मन महं समुझि बचन प्रभु केरे । सहेउं कठोर बचन सठ तेरे ॥
नाहिं त करि मुखभंजन तोरा । लै जातेउं सीतहि बरजोरा ॥
जानेउं तव बल अधम सुरारी । सूने हरि आनेहि परनारी ॥
तैं निसिचरपति गर्ब बहूता । मैं रघुपतिसेवक कर दूता ॥
जौं न राम अपमानहि डरऊं । तोहि देखत अस कौतुक करऊं ॥

दो० । तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउं ।
तव जुबतिन सहित सठ जनकसुतहि लै जाउं । ३० ॥

चौ० । जौं अस करउं तदपि न बड़ाई । मुयेहि बधे कछु नहिं मनुसाई ॥
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥
सदा रोगबस संतत क्रोधी । बिष्नु बिमुख श्रुतिसंतबिरोधी ॥
तनुपोषक निंदक अघखानी । जीवत सव सम चौदह प्रानी ॥
अस बिचारि खल बधौं न तोही । अब जनि रिस उपजावसि मोही ॥
सुनि सकोप कह निसिचरनाथा । अधर दसन दसि मींजत हाथा ॥
रे कपि अधम मरन अब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ॥
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके । बलप्रताप बुधि तेज न ता के ॥

दो० । अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बन बास ।
सो दुख अरु जुबतीबिरह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥
जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि ऐसे मनुज अनेक ।
खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक । ३१ ॥

चौ० । जब तेहि कीन्ह राम कै निंदा । क्रोधवंत तब भयउ कपिंदा ॥
हरिहरनिंदा सुनइ जो काना । होइ पाप गोघात समाना ॥
कटकटान कपिकुंजर भारी । दोउ भुजदंड तमकि महि मारी ॥
डोलत धरनि सभासद खसे । चले भाजि भय मारुतग्रसे ॥
गिरत संभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥
कछु तेहि लै निज सिरनि संवारे । कछु अंगद प्रभु पास पबारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥
की रावन करि कोप चलाये । कुलिस चारि आवत अति धाये ॥
कह प्रभु हंसि जनि हृदय डेराहू । लूक न असनि केतु नहिं राहू ॥
ये किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ॥

दो० । तरकि पवनसुत कर गहेउ आनि धरे प्रभुपास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥
उहाँ सकोप दसानन सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ । ३१ ॥

चौ० । एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु ॥
मरकटहीन करहु महि जाई । जिअत धरहु तापस दोउ भाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ॥
मरु गर काटि निलज कुलघाती । बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती ॥
रे त्रियचोर कुमारगगामी । खलमलरासि मन्दमति कामी ॥
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा । भयेसि कालबस खल मनुजादा ॥
या को फल पावहुगे आगे । बानर भालु चपेटन्हि लागे ॥
राम मनुज बोलत अस बानी । गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥
गिरिहैं रसना संसय नाहीं । सिरन समेत समर महि माहीं ॥

सो० । सो नर क्यों दसकन्ध बालि बधेउ जेहि एक सर ।
बीसहु लोचन अन्ध धिक तव जन्म कुजाति जड़ ॥
तव सोनित की प्यास तृषित रामसायकनिकर ।
तजउं तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम । ४ ॥

चौ० । मैं तव दसन तोरिबे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥
असि रिसि होत दसौ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महं बोरौं ॥
गूलर फल समान तव लंका । बसहु मध्य तुम जन्तु असंका ॥
मैं बानर फल खात न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
जुगति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखे कहं बहुत झुठाई ॥
बालि न कबहुं गाल अस मारा । मिलि तपसिन तैं भयेसि लबारा ॥
सांचहु मैं लबार भुजबीहा । जौं न उपारौं तव दस जीहा ॥
रामप्रताप समुझि कपि कोपा । सभा मांझ पन करि पद रोपा ॥
जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहं तहं भट नाना ॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । पद न टरै बैठहिं सिर नाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती । टरै न कीस चरन एहि भांती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दो० । कोटिन्ह मेघनादसम सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहिं टरै न कपिचरन पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥

भूमि न छाड़त कपिचरन देखत रिपुमद भाग ।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग । ३३ ॥

चौ० । कपिबल देखि सकल हिय हारे । उठा आपु कपि के परचारे ॥
गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥
भयेउ तेजहत श्री सब गई । मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ॥
सिंहासन बैठेउ सिर नाई । मानहु संपति सकल गंवाई ॥
जगदातमा प्रानपति रामा । तासु बिमुख किमि लह बिस्रामा ॥
उमा राम की भृकुटिबिलासा । होइ बिस्व पुनि पावै नासा ॥
तृन तें कुलिस कुलिस तृन करई । तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । मान न ताहि काल नियराना ॥
रिपुमद मथि प्रभु सुजस सुनायो । यह कहि चल्यो बालिनृपजायो ॥
हतौं न खेत खेलाइ खेलाई । तोहि अबहिं का करौं बड़ाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । सो सुनि रावन भयो दुखारा ॥
जातुधान अंगदपन देखी । भय ब्याकुल सब भये बिसेखी ॥

दो० । रिपुबल धरषि हरषि कपि बालितनय बलपुंज ।
पुलकसरीर नयन जल गहे रामपदकंज ॥
सांझ जानि दसकंधर भवन गयो बिलखाइ ।
मंदोदरी रावनहि बहुरि कहा समुझाइ । ३४ ॥

चौ० । कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुमहि रघुपतिही ॥
रामानुज लघुरेख खचाई । सो नहिं नांघेहु असि मनुसाई ॥
पिय तुम ताहि जितब संग्रामा । जा के दूत केर यह कामा ॥
कौतुक सिन्धु नांघि तव लंका । आयउ कपि केहरी असंका ॥
रखवारे हति बिपिन उजारा । देखत तोहि अच्छ तेहि मारा ॥
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहां रहा बल गर्ब तुम्हारा ॥
अब पति मृषा गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु हृदय बिचारहु ॥
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । अगजगनाथ अतुलबल जानहु ॥
बानप्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनकसभा अगनित भुवपाला । रहेउ तुमहु बल अतुल बिसाला ॥
भंजि धनुष जानकी बिआही । तब संग्राम जितेहु किन ताही ॥
सुरपतिसुत जानै बल थोरा । राखा जियत आंखि गहि फोरा ॥
सूपनखा कै गति तुम देखी । तदपि हृदय नहिं लाज बिसेखी ॥

दो० । बधि बिराध खरदूषनहि लीला हतेउ कबंध ।
बालि एक सर मारेउ तेहि जानहु दसकंध । ३५ ॥

चौ० । जेहिं जलनाथ बंधायो हेला । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
कारुनीक दिनकर कुलकेतू । दूत पठायेउ तव हित हेतू ॥
सभा माझ जेइ तव बल मथा । करिबरूथ महं मृगपति जथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके । रनबांकुरे बीर अति बांके ॥
तेहि कहं पिय पुनि पुनि नर कहहू । मुधा मान ममता मद बहहू ॥
अहह कन्त कृत राम बिरोधा । काल बिबस मन उपज न बोधा ॥
काल दंड गहि काहु न मारा । हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साईं । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ॥

दो० । दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर अजहुं पूर पिय देहु ।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल जस लेहु । ३६ ॥

चौ० । नारिबचन सुनि बिसिख समाना । सभा गयउ उठि होत बिहाना ॥
बैठेउ जाइ सिंहासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥
इहां राम अंगदहि बुलावा । आइ चरन पंकज सिर नावा ॥
अति आदर समीप बैठारी । बोले बिहंसि कृपालु खरारी ॥
बालितनय अति कौतुक मोही । तात सत्य कहु पूछौं तोही ॥
रावन यातुधानकुलटीका । भुजबल अतुल जासु जग लीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये । कहहु तात कवनी बिधि पाये ॥
सुनु सर्बज्ञ प्रनत सुखकारी । मुकुट न होइ भूपगुन चारी ॥
साम दान अरु दंड बिभेदा । नृपउर बसहिं नाथ कह बेदा ॥
नीति धर्म के चरन सुहाये । अस जिय जानि नाथ पहं आये ॥

दो० । धर्महीन प्रभुपदबिमुख कालबिबस दससीस ।
तेहि परिहरि गुन आये सुनहु कोसलाधीस ॥
परम चतुरता स्रवन सुनि बिहंसे राम उदार ।
समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार । ३७ ॥

चौ० । रिपु के समाचार जब पाये । राम सचिव सब निकट बुलाये ॥
लंका बांके चारि दुआरा । केहि बिधि लागिय करहु बिचारा ॥
तब कपीस रिच्छेस बिभीषन । सुमिरि हृदय दिनकरकुलभूषन ॥
करि बिचार तिन मंत्र दृढ़ावा । चारि अनी कपि कटक बनावा ॥
यथाजोग सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥
प्रभुप्रताप कहि सब समुझाये । सुनि कपि सिंहनाद करि धाये ॥
हरषित रामचरन सिर नावहिं । गहि गिरिसिखर बीर सब धावहिं ॥
गरजहिं तरजहिं भालु कपीसा । जय रघुबीर कोसलाधीसा ॥

आगत परम दुर्ग अति लंका । प्रभुप्रताप कपि चले असंका ॥
घटाटोप करि चहुं दिसि घेरी । मुखहिं निसान बजावहिं भेरी ॥

दो० । जयति राम जय लछिमन जय कपीस सुग्रीव ।
गर्जहिं सिंघनाद कपि भालु महा बलसींव । ३८ ॥

चौ० । लंका भयउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहंकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई । बिहंसि निसाचरसेन बुलाई ॥
आये कीस काल के प्रेरे । छुधावन्त सब निसिचर मेरे ॥
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहु दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥
उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ॥
चले निसाचर आयसु मांगी । गहि कर भिंडिपाल बर सांगी ॥
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा । सूल कृपान परिघ गिरिखंडा ॥
जिमि अरुनोपलनिकर निहारी । धावहिं सठ खग मांसअहारी ॥
चोंच भंग दुख तिनहिं न सूझा । तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥

दो० । नानायुध सर चाप धरि यातुधान बल बीर ।
कोटकंगूरनि चढ़ि गये कोटि कोटि रनधीर । ३९ ॥

चौ० । कोटकंगूरनि सोहहिं कैसे । मेरु के सृंगनि जनु घन बैसे ॥
बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि काद्दर उर जाहिं दरारा ॥
देखिन जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अति बिसालतनु भालुसुभट्टा ॥
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । पर्बत फोरि करहिं गहि बाटा ॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं । दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं ॥
उत रावन इत रामदोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥
निसिचर सिखरसमूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ॥

छं० । धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।
झपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥
अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गये ।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहं तहं रामजस गावत भये । १ ॥

दो० । एक एक गहि निसिचर पुनि कपि चले पराइ ।
ऊपर आपु हेठ भट गिरहिं धरनि पर आइ । ४० ॥

चौ० । रामप्रताप प्रबल कपिजूथा । मर्दहिं निसिचर सुभटबरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहं तहं बानर । जय रघुबीर प्रतापदिवाकर ॥
चले निसाचरनिकर पराई । प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई ॥

हाहाकार भयो पुर भारी । रोवहिं बालक आतुर नारी ॥
सब मिलि देहिं रावनहिं गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ।
निज दल बिचल सुना तेहिं काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥
जो रन बिमुख फिरा मैं जाना । सो मैं हतब कराल कृपाना ।
सर्बसु खाइ भोग करि नाना । समरभूमि भए बल्लभ प्राना ।
उग्र बचन सुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ।
सन्मुख मरन बीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ।

दो० । बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि ।
ब्याकुल कीन्हे भालुकपि परिघ त्रिसूलन मारि । ४१ ॥

चौ० । भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिहैं आगे ।
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुबिद बलवंता ।
निज दल बिकल सुना हनुमाना । पच्छिमद्वार रहा बलवाना ।
मेघनाद तहँ करइ लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ।
पवनतनय मन भा अति क्रोधा । गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा ।
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कहँ धावा ।
भंजेउ रथ सारथी निपाता । ताहि हृदय महँ मारेसि लाता ।
दूसरे सूत बिकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत घर आना ।

दो० । अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।
रनबाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल । ४२ ॥

चौ० । जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध दोउ बंदर । रामप्रताप सुमिरि उर अंतर ।
रावनभवन चढ़े दोउ धाई । करहिं कोसलाधीस दोहाई ।
कलस सहित गहि भवन ढहावा । देखि निसाचरपति भय पावा ।
नारिबृन्द कर पीटहिं छाती । अब दुइ कपि आये उतपाती ।
कपि लीला करि तिनहिं डेरावहिं । रामचंद्र कर सुजस सुनावहिं ।
पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिय उतपात अरंभा ।
गर्जि परे रिपुकटक मझारी । लागे मर्दै भुजबल भारी ।
काहुहिं लात चपेटन्ह केहू । भजेहु न रामहिं सो फल लेहू ।

दो० । एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।
रावन आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधिकुंड । ४३ ॥

चौ० । महा महा मुखिया जे पावहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ।
कहहिं बिभीषन तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्ह हूं निज धामा ।
खल मनुजाद द्विजामिषभोगी । पावहिं गति जो जाचत जोगी ।
उमा राम मृदुचित करुनाकर । बैरभाव सुमिरत मोहि निसिचर ।
देहिं परम गति सो जिय जानी । अस कृपालु को कहहु भवानी ॥

अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी । नर मतिमंद ते परम अभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रबेसा । कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा ॥
लंका दोउ कपि सोहहिं कैसे । मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे ॥

दो० । भुजबल रिपुदल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।
कूदे जुगल बिगतश्रम आये जहं भगवंत । ४४ ॥

चौ० । प्रभुपदकमल सीस तिन्ह नाये । देखि सुभट रघुपतिमन भाये ॥
राम कृपा करि जुगल निहारे । भये बिगतश्रम परम सुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालुमर्कटभट नाना ॥
यातुधान प्रदोषबल पाई । धाये करि दससीस दुहाई ॥
निसिचरअनी देखि कपि फिरे । जहं तहं कटकटाइ भट भिरे ॥
दोउ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥
महा बीर निसिचर सब कारे । नाना बरन बलीमुख भारे ॥
सबल युगल दल सम बल योधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥
प्राविट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुं मारुत के प्रेरे ॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । बिचलत सेन कीन्ह इन्ह माया ॥
भयउ निमिष महं अति अंधियारा । वृष्टि होइ रुधिरोपल छारा ॥

दो० । देखि निबिड़ तम दसहुं दिसि कपिदल भयउ खभार ।
एकहि एक न देखहि जहं तहं करहिं पुकार । ४५ ॥

चौ० । सकल मरम रघुनायक जाना । लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये । सुनत कोपि कपिकुंजर धाये ॥
पुनि कृपालु हंसि चाप चढ़ावा । पावकसायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकास कतहुं तम नाहीं । ज्ञानउदय जिमि संसय जाहीं ॥
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाये हरषि बिगतश्रमत्रासा ॥
हनूमान अंगद रन गाजे । हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागत भट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भालु कपि अद्भुत करनी ॥
गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं ॥

दो० । कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।
गरजहिं भालु बलीमुख रिपुदलबल बिचलाइ । ४६ ॥

चौ० । निसा जानि कपि चारिउ अनी । आये जहां कोसलाधनी ॥
राम कृपा करि चितवा सबहीं । भये बिगतश्रम बानर तबहीं ॥
उहां दसानन सचिव हंकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटक कपिन संघारा । कहहु बेगि का करिय बिचारा ॥
माल्यवन्त अति जरठ निसाचर । रावनमातुपितामंत्री बर ॥
बोला बचन नीति अति पावन । सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥

जब तें तुम सीता हरि आनी । असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥
बेद पुरान जासु जस गायो । तासु बिमुख काहु न सुख पायो ॥

दो० । हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।
जेहि मारेउ सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥
कालरूप खलबनदहन गुनागार घनबोध ।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं ता सों कवन बिरोध । ४७ ॥

चौ० । परिहरि बैर देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥
ता के बचन बान सम लागे । करिया मुख करि जाहि अभागे ॥
बूढ़ भयेसि न त मरतेउँ तोही । अब जनि नयन देखावहि मोही ॥
तेहि अपने मन अस अनुमाना । बध्यौ चहत एहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा । करिहौं बहुत कहौं का थोरा ॥
सुनि सुतबचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक बैठावा ॥
करत बिचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूं दुआरा ॥
कोपि कपिन दुर्घट गढ़ घेरा । नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
बिबिधायुध धरि निसिचर धाये । गढ़ तें पर्बतसिखर ढहाये ॥

छं० । ढाहे महीधरसिखर कोटिन्ह बिबिध बिधि गोला चले ।
घहरात जिमि पबिपात गर्जत जनु प्रलय के बादले ॥
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तनु जर्जर भये ।
गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं जहं सो तहं निसिचर हये ॥

दो० । मेघनाद सुनि स्रवन अस गढ़ पुनि छेंका आइ ।
उतर्यो बीर दुर्ग तें सनमुख चलेउ बजाइ । ४८ ॥

चौ० । कहं कोसलाधीस दोउ भ्राता । धन्वी सकललोकबिख्याता ॥
कहं नल नील द्बिबिद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बलसींवा ॥
कहां बिभीषन भ्राताद्रोही । आजु सठहिं हठ मारउं ओही ॥
अस कहि कठिन बान संधाने । अतिसय क्रोध स्रवन लगि ताने ॥
सरसमूह सो छाड़ै लागा । जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा ॥
जहं तहं परत देखि अहि बानर । सनमुख होइ न सके तेहि अवसर ॥
जहं तहं भागि चले कपि रीछा । बिसरी सबहिं युद्ध कै ईछा ॥
सो कपि भालु न रन महं देखा । कीन्हेसि जेहि न प्रानअवसेषा ॥

दो० । दस दस सर सब मारेसि परे भूमि सब बीर ।
सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बलधीर । ४९ ॥

चौ० । देखि पवनसुत कटक बेहाला । क्रोधवन्त जनु धायेउ काला ॥
महा सैल एक तुरित उपारा । अति रिस मेघनाद पर डारा ॥

आवत देखि चलो सब कोई । रथ सारथी तुरग सब खोई ॥
बार बार पचार हनुमाना । निकट न आव मरम सो जाना ॥
रघुपति निकट गयउ घननादा । नाना भांति करै दुर्बादा ॥
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे । कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रताप मूढ़ खिसियाना । करै लाग माया बिधि नाना ॥
जिमि कोउ करै गरुड़ सों खेला । डरपावहि गहि स्वल्प सपेला ॥

दो० । जासु प्रबलमायाबस सिव बिरंचि बड़ छोट ।
ताहि देखावै निसिचर निजमाया मतिखोट । ५० ॥

चौ० । नभ चढ़ि बरष बिपुल अंगारा । महि तें प्रगट होइ जलधारा ॥
नाना भांति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बोलहिं नाची ॥
बिष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा । बरषै कबहुं उपल बहु छाड़ा ॥
बरषि धूरि कीन्हेसि अंधियारा । सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
कपि अकुलाने माया देखे । सब कर मरन बना एहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भये सभीत सकल कपि जाने ॥
एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिरनिकाया ॥
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । भये प्रबल रन रहहिं न रोके ॥

दो० । आयसु मांगि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध ह्वै बान सरासन हाथ । ५१ ॥

चौ० । छतजनयन उर बाहु बिसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला ॥
इहां दसानन सुभट पठाये । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाये ॥
भूधर नख बिटपायुधधारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जयइच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन्ह लातन्ह दांतन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डांटहिं ॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । सीस तोरि गहि भुजा उपारू ॥
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहं तहं रुंड प्रचंडा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुरबृन्दा । कबहुंक बिसमय कबहुं अनन्दा ॥

दो० । रुधिर गाड़ भरि भरि जमेउ ऊपर धूरि उड़ाइ ।
जनु अंगार रासिन्ह पर मृतकधूम रह्यो छाइ । ५२ ॥

चौ० । घायल बीर बिराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥
लछिमन मेघनाद दोउ जोधा । भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा ॥
एकहि एक सकै नहिं जीती । निसिचर छल बल करै अनीती ॥
क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥
नाना बिधि प्रहार कर सेषा । राच्छस भयउ प्रानअवसेषा ॥
रावनसुत निजमन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥

बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेजपुंज लछिमन उर लागी ॥
मुरछा भई सक्ति के लागे । तब चलि गयउ निकट भय त्यागे ॥

दो० । मेघनाद सम कोटिसत जोधा रहे उठाइ ।
जगदाधार सेष किमि उठइ चले खिसिआइ । ५३ ॥

चौ० । सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारै भुवन चारिदस आसू ॥
सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
यह कौतूहल जानै सोई । जापर कृपा राम कै होई ॥
संध्या भई फिरी दोउ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर ॥
तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ॥
जामवंत कह बैद सुषेना । लंका रहै को पठइअ लेना ॥
धरि लघुरूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दो० । राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन ।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन । ५४ ॥

चौ० । रामचरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भाषी ॥
उहाँ दूत एक मरम जनावा । रावन कालनेमि गृह आवा ॥
दसमुख कहा मरम तेइँ सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना ॥
देखत तुमहिं नगर जेहिं जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥
भजि रघुपतिहि करहु हित अपना । तजौ नाथ अब वृथा कलपना ॥
नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदय राखु लोचनाभिरामा ॥
अहंकार ममता मद त्यागू । महा मोह निसि सोवत जागू ॥
काल ब्याल कर भच्छक जोई । सपनेहुँ समर कि जीतिय सोई ॥

दो० । सुनि दसकंठ रिसान अति तेहि मन कीन्ह बिचार ।
रामदूतकर मरउँ बरु यह खल रत मलभार । ५५ ॥

चौ० । अस कहि चला रचेसि मग माया । सर मंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा सुभ आस्रम । मुनिहिं बूझि जल पियउँ जाइ स्रम ॥
राक्षस कपटभेष तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाइ पवनसुत नायउ माथा । लाग सो कहै रामगुनगाथा ॥
होत महारन रावन रामहि । जितिहहिं राम न संसय या महि ॥
इहाँ भये मैं देखौं भाई । ज्ञान दृष्टिबल मोहि अधिकाई ॥
माँगा जल तेहिं दीन्ह कमंडल । कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल ॥
सर मज्जन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ग्यान जेहिं पावहु ॥

दो० । सर पैठत कपिपद गहा मकरी तब अकुलान ।
मारी सो धरि दिब्य तनु चली गगन चढ़ि जान । ५६ ॥

चौ० । कपि तव दरस भएउँ निःपापा । मिटा तात मुनिबर कर सापा ॥
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहु सत्य बचन कपि मोरा ॥
अस कहि गई अपछरा जबहीं । निसिचर निकट गयो कपि तबहीं ॥
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू । पाछे हमहिं मन्त्र तुम देहू ॥
सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि मरती बारा ॥
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना । सुनि मन हरषि चले हनुमाना ॥
देखा सैल न औषधि चीन्हा । सहसा करि उपारि गिरि लीन्हा ॥
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

दो० । देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर सायक मारेउ चाप स्रवन लगि तानि । ५७ ॥

चौ० । परेउ मूर्छि महि लागत सायक । सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रियबचन भरत तब धाये । कपि समीप अति आतुर आये ॥
बिकल बिलोकि कीस उर लावा । जागत नहिं बहु भाँति जगावा ॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी । कहत बचन भरि लोचन बारी ॥
जेहि बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा । तेहि पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥
जौं मोरे मन बच अरु काया । प्रीति रामपद कमल अमाया ॥
तौ कपि होउ बिगतस्रम सूला । जौं मो पर रघुपति अनुकूला ॥
सुनत बचन उठि बैठु कपीसा । कहि जयजयति कोसलाधीसा ॥

सो० । लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तन लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुलतिलक । ५ ॥

चौ० । तात कुसल कहु सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
कपि सब चरित समास बखाने । भये दुखी मन महं पछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायेउं । प्रभु के एकौ काज न आयेउं ॥
जानि कुअवसर मन धरि धीरा । पुनि कपि सन बोले बलबीरा ॥
तात गहरु होइहि तोहि जाता । काज नसाइहि होत प्रभाता ॥
चढ़ु मम सायक सैल समेता । पठवौं तोहि जहं कृपानिकेता ॥
सुनि कपिमन उपजा अभिमाना । मोरे भार चलिहि किमि बाना ॥
रामप्रभाउ बिचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दो० । तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरन्त ।
अस कहि आयसु पाय पद बंदि चले हनुमन्त ॥
भरतबाहुबलसीलगुन प्रभुपदप्रीति अपार ।
मन महुं जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार । ५८ ॥

चौ० । इहां राम लछिमनहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥
अर्धराति गइ कपि नहिं आयो । राम उठाइ अनुज उर लायो ॥

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥
मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहेउ बिपिन हिम आतप बाता ॥
सो अनुराग कहां अब भाई । उठहु न सुनि मम बचबिकलाई ॥
जौं जनत्यौं बन बंधुबिछोहू । पितावचन मनत्यौं नहिं ओहू ॥
सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस बिचारि जिय जागहु ताता । मिलै न जगत सहोदर भ्राता ॥
यथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर करहीना ॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही । जौं जड़ दैव जियावै मोही ॥
जैहौं अवध कवन मुख लाई । नारिहेतु प्रिय भाइ गंवाई ॥
बरु अपजस सहतेउं जग माहीं । नारिहानि बिसेष छति नाहीं ॥
अब अपलोक सोक सुत तोरा । सहिहि कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रानअधारा ॥
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब बिधि सुखद परम हित जानी ॥
उतर काह दैहौं तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥
बहु बिधि सोचत सोचबिमोचन । स्रवत सलिल राजिवदललोचन ॥
उमा एक अखंड रघुराई । नरगति भगत कृपालु दिखाई ॥

सो० । प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भये बानरनिकर ।
आइ गयेउ हनुमान जिमि करुना महं बीररस ॥

चौ० । हरषि राम भेंटेउ हनुमाना । अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत बैद्य तब कीन्हि उपाई । उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥
हृदय लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता । हरषे सकल भालु कपिब्राता ॥
कपि पुनि बैद्य तहां पहुंचावा । जेहि बिधि तबहि ताहि लै आवा ॥
यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ । अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । बिबिध जतन करि ताहि जगावा ॥
जागा निसिचर देखिय कैसा । मानहुं काल देह धरि बैसा ॥
कुंभकरन बूझा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ॥
कथा कही सब तेहि अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । महा महा योधा संहारे ॥
दुरमुख सुररिपु मनुजअहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
अपर महोदर आदिक बीरा । परे समर महि सब रनधीरा ॥

दो० । सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि सठ अब चाहत कल्यान । ५९ ॥

चौ० । भल न कीन्ह तैं निसिचरनाहा । अब मोहि आइ जगायेहि काहा ॥
अजहूं तात त्यागि अभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याना ॥

ए दससीस मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक ॥
अग्य बंधु मैं कीन्हि खुटाई । प्रथमहिं मोहि न सुनाएहि आई ॥
कीन्हेउ प्रभुबिरोध तेहि देवक । सिव बिरंचि सुर जा के सेवक ॥
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । कहतेउं तोहि समय निरबहा ॥
अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई । लोचन सुफल करौं मैं जाई ॥
स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ तापत्रयमोचन ॥

दो० । राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।
रावन मांगेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक । ६० ॥

चौ० । महिष खाइ करि मदिरा पाना । गरजा बज्राघात समाना ॥
कुम्भकरन दुर्मद रन रंगा । चला दुर्ग तजि सेन न संगा ॥
देखि बिभीषन आगे आयउ । परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥
अनुज उठाइ हृदय तेहि लायो । रघुपतिभक्त जानि मन भायो ॥
तात लात रावन मोहि मारा । कहत परम हित मन्त्र बिचारा ॥
तेहि गलानि रघुपति पहिं आयेउं । देखि दीन प्रभु के मन भायेउं ॥
सुनु सुत भयेउ कालबस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन । भयेहु तात निसिचरकुलभूषन ॥
बंधुबंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभासुखसागर ॥

दो० । बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउं कालबस बीर । ६१ ॥

चौ० । बंधुबचन सुनि फिरा बिभीषन । आयउ जहं त्रैलोकबिभूषन ॥
नाथ भूधराकारसरीरा । कुम्भकरन आवत रनधीरा ॥
एतना कपिन्ह सुना जब काना । किलकिलाइ धाये बलवाना ॥
लिये उठाइ बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥
कोटि कोटि गिरिसिखरप्रहारा । करहिं भालु कपि एक एक बारा ॥
मुर्‍यौ न मन तनु टर्‍यो न टार्‍यौ । जिमि गज अर्कफलनि को मार्‍यौ ॥
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । परेउ धरनि ब्याकुल सिर धुन्यो ॥
पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमन्ता । घुर्मित भूतल परेउ तुरन्ता ॥
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहं तहं पटकि पटकि भट डारेसि ॥
चली बलीमुखसेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥

दो० । अंगदादि कपि मूर्छित करि समेत सुग्रीव ।
कांख दाबि कपिराज कहं चला अमितबलसींव । ६२ ॥

चौ० । उमा करत रघुपति नरलीला । खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीना ॥
भृकुटि भङ्ग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहै ऐसि लराई ॥
जगपावनि कीरति बिस्तरिहहिं । गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं ॥

मुरछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ॥
सुग्रीवहु कै मुरछा बीती । निबुकि गयेउ तेहि मृतक प्रतीती ॥
काटेसि दसन नासिका काना । गरजि अकास चलेउ तेहि जाना ॥
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघव उठि पुनि तेहि मारा ॥
पुनि आयेउ प्रभु पहिं बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥
नाक कान काटे जिय जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥

दो० । जय जय जय रघुबंसमनि धाये कपि दै हूह ।
एकहि बार तासु पर डारेन्हि गिरितरुजूह । ६३ ॥

चौ० । कुम्भकरन रनरंगबिरुद्धा । सनमुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीडी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मींजि मिलव महिगर्दा ॥
मुख नासा स्रवनन्हि की बाटा । निसरि पराहिं भालुकपिठाटा ॥
रनमदमत्त निसाचर दर्पा । बिस्व ग्रसिहि जनु एहि बिधि अर्पा ॥
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
कुम्भकरन कपिफौज बिडारी । सुनि धायी रजनीचरधारी ॥
देखी राम बिकल कटकाई । रिपुअनीक नाना बिधि आई ॥

दो० । सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज संभारेहु सैन ।
मैं देखौं खलबलदलहिं बोले राजिव नैन । ६४ ॥

चौ० । कर सारंग साजि कटि भाथा । अरिदलदलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा । रिपुदल बधिर भयेउ सुनि सोरा ॥
सत्यसंध छाड़े सरलच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥
जहं तहं चले बिपुल नाराचा । लगे कटन भट बिकट पिसाचा ॥
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक बीर होहिं सतखंडा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं । उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥
लागत बान जलद जिमि गाजहिं । बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ॥
रुंड प्रचंड मुण्ड बिनु धावहिं । धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं ॥

दो० । छन महं प्रभु के सायकन्हि काटे बिकटपिसाच ।
पुनि रघुबीर निषंग महं प्रबिसे सब नाराच । ६५ ॥

चौ० । कुम्भकरन मन दीख बिचारी । हति छन मांझ निसाचरधारी ॥
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । कियो मृगनायकनाद गंभीरा ॥
कोपि महीधर लेइ उपारी । डारै जहं मरकटभट भारी ॥
आवत देखि सैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रज सम करि डारे ॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाड़े अति कराल बहुसायक ॥

तनु महं प्रबिसि निसरि सर जाहीं । जिमि दामिनि घन मांझ समाहीं ॥
सोनित स्रवत सोह तन कारे । जनु कज्जलगिरि गेरुपनारे ॥
बिकल बिलोकि भालु कपि धाये । बिहंसा जबहिं निकट कपि आये ॥

दो० । महा नाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस ।
महि पटकै गजराज इव सपथ करै दससीस । ६६ ॥

चौ० । भागे भालुबलीमुखजूथा । बृक बिलोकि जिमि मेषबरूथा ॥
चले भागि कपि भालु भवानी । बिकल पुकारत आरत बानी ॥
यह निसिचर दुकाल सम अहई । कपिकुलदेस परन अब चहई ॥
कृपावारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारतिहारी ॥
सकरुन बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ॥
राम सेन निज पाछें घाली । चले सकोप महाबलसाली ॥
खैंचि धनुष सर सत संधाने । छूटे तीर सरीर समाने ॥
लागत सर धावा रिसभरा । कुधर डगमगत डोलति धरा ॥
लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी । रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी ॥
धावा बामबाहुगिरिधारी । प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी ॥
काटे भुजा सोह खल कैसा । पच्छहीन मंदरगिरि जैसा ॥
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका । ग्रसन चहत मानहुं त्रयलोका ॥

दो० । करि चिक्कार घोर अति धावा बदन पसारि ।
गगन सिद्ध सुर त्रासित हाहा हेति पुकारि । ६७ ॥

चौ० । सभय देव करुनानिधि जान्यो । स्रवन प्रजंत सरासन तान्यो ॥
बिसिखनिकर निसिचरमुख भरेऊ । तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥
सरन्हि भरा मुख सनमुख धावा । कालत्रोन सजीव जनु आवा ॥
तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा । धर तें भिन्न तासु सिर कीन्हा ॥
सो सिर परेउ दसानन आगे । बिकल भयेउ जिमि फनि मनि त्यागे ॥
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा । तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥
परेउ भूमि जिमि नभ तें भूधर । हेठ दाबि कपि भालु निसाचर ॥
तासु तेज प्रभुबदन समाना । सुर मुनि सबहि अचंभव माना ॥
सुर दुन्दुभी बजावहिं हरषहिं । अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं ॥
करि बिनती सुर सकल सिधाये । तेही समय देवरिषि आये ॥
गगनोपरि हरिगुनगन गाये । रुचिर बीररस प्रभु मन भाये ॥
बेगि हतहु खल कहि मुनि गये । राम समरमहि सोभत भये ॥

छं० । संग्रामभूमि बिराज रघुपति अतुलबल कोसलधनी ।
स्रमबिंदु मुखराजीवलोचन रुचिर तनु सोनितकनी ॥

कोपि मरुतसुत अंगद धाये । हति त्रिसूल उर धरनि गिराये ॥
प्रभु कहं छाड़ेसि सूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥
उठि बहोरि मारुति जुबराजा । हतहिं कोपि तेहि घाव न बाजा ॥
फिरे बीर रिपु मरै न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा ॥
लछिमनमन अस मंत्र दृढ़ावा । एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला । लछिमन छाड़े बिसिख कराला ॥
देखेसि आवत पबि सम बाना । तुरत भयो खल अंतरधाना ॥
बिबिध बेष धरि करै लराई । कबहुंक प्रगट कबहुं दुरिजाई ॥
देखि अजय रिपु डरपे कीसा । परम क्रुद्ध तब भयेउ अहीसा ॥
सुमिरि कोसलाधीसप्रतापा । सर संधान कीन्ह करि दापा ॥
छाड़ा बान माझ उर लागा । मरती बार कपट सब त्यागा ॥

दो० । रामानुज कहं राम कहं अस कहि छाड़ेसि प्रान ।
धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान । ७३ ॥

चौ० । बिनु प्रयास हनुमान उठायो । लंकाद्वार राखि पुनि आयो ॥
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा । चढ़ि बिमान आये नभ सर्बा ॥
बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं । श्रीरघुबीरबिमलजस गावहिं ॥
जय अनंत जय जगदाधारा । तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥
अस्तुति करि सुरसिद्ध सिधाये । लछिमन कृपासिंधु पहिं आये ॥
सुतबध सुना दसानन जबहीं । मुरछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥
मन्दोदरी रुदन कर भारी । उर ताड़ति बहु भांति पुकारी ॥
नगरलोग सब ब्याकुल सोचा । सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥

दो० । तब दसकंठ बिबिधि बिधि समुझाईं सब नारि ।
नस्वररूप जगत सब देखहु हृदय बिचारि । ७४ ॥

चौ० । तिनहि ग्यान उपदेसा रावन । आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥
पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
निसा सिरानि भयउ भिनुसारा । लगे भालु कपि चारिहुं द्वारा ॥
सुभट बुलाइ दसानन बोला । रनसनमुख जा कर मन डोला ॥
सो अबहीं बरु जाउ पराई । संजुग बिमुख भये न भलाई ॥
निज भुजबल मैं बैर बढ़ावा । देहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा ॥
अस कहि मरुतबेग रथ साजा । बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले बीर सब अतुलितबली । जनु कज्जल कै आंधी चली ॥
असगुन अमित होहिं तेहि काला । गनइ न भुजबल गर्बबिसाला ॥

छं० । अतिगर्ब गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ तें ।
भट गिरत रथ तें बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ तें ॥
गोमाय गीध कराल खररव स्वान बोलहिं अति घने ।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने । ८ ॥

दो० । ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहु मन बिस्राम ।
भूतद्रोहरत मोहबस रामबिमुख रतकाम । ७५ ॥

चौ० । चलेउ निसाचरकटक अपारा । चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥
बिबिध भाँति बाहन रथ जाना । बिपुल बरन पताक ध्वज नाना ॥
चले मत्त गजजूथ घनेरे । प्राविटजलद मरुत जनु प्रेरे ॥
बरन बरन बिरदैतनिकाया । समरसूर जानहिं बहु माया ॥
अति बिचित्र बाहनी बिराजी । बीर बसंत सेन जनु साजी ॥
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं । छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं ॥
उठी रेनु रबि गयउ छपाई । मरुत थकित बसुधा अकुलाई ॥
पनव निसान घोररव बाजहिं । प्रलयसमय के घन जनु गाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई ॥
केहरिनाद बीर सब करहीं । निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥
कहै दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई । अस कहि सनमुख फौज रेंगाई ॥
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई । धाये करि रघुबीरदुहाई ॥

छं० । धाये बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान तें ।
मानहु सपच्छ उड़ाहिं भूधरबृन्द नाना बान तें ॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।
जय राम रावन मत्तगज मृगराजसुजस बखानहीं । ९ ॥

दो० । दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।
भिरे बीर इत रामहिं उत रावनहिं बखानि । ७६ ॥

चौ० । रावन रथी बिरथ रघुबीरा । देखि बिभीषन भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा । बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नहिं तनु पदत्राना । केहि बिधि जितब बीर बलवाना ॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहि जय होइ सो स्यंदन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल बिबेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईसभजन सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । बर बिज्ञान कठिन कोदंडा ॥

अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥
कवच अभेद बिप्रगुरपूजा । एहि सम बिजयउपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके ॥

दो० । महा अजय संसार रिपु जीति सकै सो बीर ।
जा के अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनि प्रभुबचन बिभीषन हरषि गहे पदकंज ।
एहि मिसि मोहि उपदेसेउ राम कृपासुखपुंज ॥
उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ।
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभुआन । ७७ ॥

चौ० । सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रन नभ चढे बिमाना ॥
हम हूं उमा रहे तेहि संगा । देखत रामचरित रनरंगा ॥
सुभट समररस दुहुं दिसि माते । कपि जयसील राम बल ता तें ॥
एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ॥
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ॥
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं ॥
निसिचरभट महि गाडहिं भालू । ऊपर ढारि देहिं बहु बालू ॥
बीरबलीमुख जुद्धबिरुद्धे । देखियत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ॥

छं० । क्रुद्धे कृतांत समान कपितनु स्रवत सोनित राजहीं ।
मर्दहिं निसाचरकटकभट बलवंत घन जिमि गाजहीं ॥
मारहिं चपेटन्हि डाटि दांतन्हि काटि लातन्ह मीजहीं ।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं ॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अंतावरि मेलहीं ।
प्रहलादपति जनु बिबिध तनु धरि समरअंगन खेलहीं ॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
जय राम जो तृन तें कुलिस कर कुलिस तें कर तृन सही । ६ ॥

दो० । निज दल बिचलत देखेसि बीसभुजा दस चाप ।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप । ७८ ॥

चौ० । धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर । सनमुख चले हूह दै बंदर ॥
गहि कर पादप उपल पहारा । डारेन्हि ता पर एकहि बारा ॥
लागहिं सैल बज्र तनु तासू । खंड खंड होइ फूटहिं आसू ॥
चला न अचल रहा रथ रोपी । रनदुर्मद रावन अति कोपी ॥
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा । मर्दै लाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराइ भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥

पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं । यह खल खाइ काल की नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने । दसहु चाप सायक संधाने ॥

छं० । संधानि धनु सरनिकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं ॥
भयो अति कोलाहल बिकल कपिदल भालु बोलहिं आतुरे ।
रघुबीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरच्छक हरे । ७ ॥

दो० । निज दल बिकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ नाइ रामपद माथ । ७९ ॥

चौ० । रे खल का मारसि कपिभालू । मोहि बिलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती । आजु निपाति जुड़ावौं छाती ॥
अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा । लछिमन किये सकल सत खंडा ॥
कोटिन्ह आयुध रावन डारे । तिलप्रमान करि काटि निवारे ॥
पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा । स्यन्दन भंजि सारथी मारा ॥
सत सत सर मारे दसभाला । गिरिसृंगन्हि जनु प्रबिसहिं ब्याला ॥
पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनितल सुधि कछु नाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मुरछा जागी । छाड़ेसि ब्रह्म दीन्ह जो सांगी ॥

छं० । सो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनन्तउर लागी सही ।
पर्‍यौ बीर बिकल उठाव दसमुख अतुलबल महिमा रही ॥
ब्रह्मांड भुवन बिराज जाके एकसिर जिमि रजकनी ।
तेहि चह उठावन मूढ रावन जान नहिं त्रिभुवनधनी । ८ ॥

दो० । देखि पवनसुत धाएउ बोलत बचन कठोर ।
आवत कपिहिं हनेउ तेहि मुष्टिप्रहार प्रघोर । ८० ॥

चौ० । जानु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा संभारि बहुत रिस भरा ॥
मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्रप्रहारा ॥
मुरछा गई बहुरि सो जागा । कपिबल बिपुल सराहन लागा ॥
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जौं तैं जियत रहेसि सुरद्रोही ॥
अस कहि लछिमन कहँ कपि ल्यायो । देखि दसानन बिसमय पायो ॥
कह रघुबीर समुझि जिय भ्राता । तुम कृतांतभच्छक सुरत्राता ॥
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सक्ति कराला ॥
पुनि कोदंड बान गहि धाये । रिपु सन्मुख अति आतुर आये ॥

छं० । आतुर बहोरि बिभंजि स्यन्दन सूत हति ब्याकुल कियौ ।
गिर्‍यौ धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यौ हियौ ॥

सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयौ ।
रघुबीरबंधु प्रतापपुंज बहोरि प्रभुचरनन्हि नयौ । ९ ॥

दो० । उहाँ दसानन जागि करि करै लागु कछु जग्य ।
राम बिरोध बिजय चहत सठ हठबस अति अग्य । ८१ ॥

चौ० । इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥
नाथ करै रावन इक जागा । सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा ॥
पठवहु नाथ बेगि भट बंदर । करहिं बिधंस आव दसकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये । हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका । पैठे रावनभवन असंका ॥
जग्य करत जबहीं सो देखा । सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा ॥
रन तें निलज भाजि ग्रह आवा । इहाँ आइ बकध्यान लगावा ॥
अस कहि अंगद मारा लाता । चितव न सठ स्वारथ मनराता ॥

छं० । नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीं ।
धरि केस नारि निकारि बाहर तेति दीन पुकारहीं ॥
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई ।
एहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मख देखि मन महं हारई । १० ॥

दो० । जग्य बिधुंसि कुसल कपि आये रघुपति पास ।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध ह्वै त्यागि जिवन कै आस । ८२ ॥

चौ० । चलत होहिं अति असुभ भयंकर । बैठहिं गीध उड़ाइ सिरन्ह पर ॥
भयउ कालबस काहु न माना । कहेसि बजावहु जुद्ध निसाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा । बहु गज रथ पदाति असवारा ॥
प्रभुसन्मुख धाये खल कैसे । सलभसमूह अनल कहं जैसे ॥
इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही । दारुन बिपति हमहि एहि दीन्ही ॥
अब जनि राम खेलावहु एही । अतिसय दुखित होति बैदेही ॥
देवबचन सुनि प्रभु मुसुकाना । उठि रघुबीर सुधारे बाना ॥
जटाजूट दृढ़ बाँधे माथे । सोहहिं सुमन बीच बिच गाथे ॥
अरुन नयन बारिद तनु स्यामा । अखिल लोकलोचन अभिरामा ॥
कटितट परिकर कस्यो निषंगा । कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छं० । सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यौ ।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यौ ॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे । ११ ॥

दो० । सोभा देखि हरषि सुर बरषहिं सुमन अपार ।
जय जय जय करुनानिधि छबिबलगुनआगार । ८३ ॥

चौ० । एही बीच निसाचरअनी । कसमसाति आई अति घनी ॥
देखि चले सनमुख कपिभट्टा । प्रलयकाल के जनु घनघट्टा ॥
शक्ति सूल तरवारि चमकहिं । जनु दस दिसि दामिनी दमकहिं ॥
गज रथ तुरग चिकार कठोरा । गरजहिं मनहुं बलाहक घोरा ॥
कपि लंगूर बिपुल नभ छाये । मनहुं इन्द्रधनु उए सुहाये ॥
उठी धूरि मानहुं जलधारा । बानबुन्द भइ वृष्टि अपारा ॥
दुहुं दिसि पर्वत करहिं प्रहारा । बज्रपात जनु बारहिंबारा ॥
रघुपति कोपि बान झरिलाई । घायल भे निसिचरसमुदाई ॥
लागत बान बीर चिक्करहीं । घुर्मि घुर्मि जहं तहं महि परहीं ॥
स्रवहिं सैल जनु निर्झरबारी । सोनितसरि कादरभयकारी ॥

छं० । कादरभयंकर रुधिरसरिता चली परम अपावनी ।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी ॥
जलजंतु गज पदचर तुरंग खर बिबिध बाहन को गने ।
सर शक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने । १२ ॥

दो० । बीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु बह फेन ।
कादर देखि डराहिं तहं सुभटन के मन चेन । ८४ ॥

चौ० । मज्जहिं भूत पिसाच बेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे । जहं तहं मनहुं अर्द्धजल परे ॥
खैंचहिं गीध आंत तट भये । जनु बनसी खेलहिं चित दये ॥
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जिमि नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥
योगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं ॥
भट कपालकरताल बजावहिं । चामुण्डा नाना बिधि गावहिं ॥
जंबुकनिकर कटक्कट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥
कोटिन्ह रुण्ड मुण्ड बिनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥

छं० । बोल्लहिं जो जय जय मुण्ड रुण्ड प्रचण्ड सिर बिनु धावहीं ।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥
बानर निसाचरनिकर मर्दहिं रामबल दर्पित भये ।
संग्रामअंगन सुभट सोवहिं रामसरनिकरन्हि हये । १३ ॥

दो० । रावन हृदय बिचारा भा निसिचरसंघार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥

चौ० । देवन्ह प्रभुहिं पयादे देखा । उपजा उर अति छोभ बिसेषा ॥
सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥
तेजपुंज रथ दिब्य अनूपा । हरषि चढ़े कोसलपुरभूपा ॥
चंचल तुरंग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी । धाये कपि बल पाइ बिसेषी ॥
सही न जाइ कपिन्ह के मारी । तब रावन माया बिस्तारी ॥
सो माया रघुबीरहिं बांची । लछिमन कपिन्ह सो मानी सांची ॥
देखी कपिन्ह निसाचरअनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं० । बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।
जनु चित्रलिखित समेत लछिमन जहं सो तहं चितवहिं खरे ॥
निज सेन चकित बिलोकि हंसि सर चाप सजि कोसलधनी ।
माया हरी हरि निमिष महं हरषी सकल मर्कटअनी । १४ ॥

दो० । बहुरि राम सब तन चितय बोले बचन गंभीर ।
द्वंद युद्ध देखहु सकल स्रमित भये अति बीर । ८६ ॥

चौ० । अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । बिप्रचरनपंकज सिर नावा ॥
तब लंकेस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥
जीतेहु जे भट संयुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥
रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जा के बंदीखाना ॥
खर दूषन बिराध तुम्ह मारा । बधेहु ब्याध इव बालि बेचारा ॥
निसिचरनिकरसुभट संहारेहु । कुम्भकरन घननादहिं मारेहु ॥
आज बैर सब लेउं निबाही । जौं रन भूप भाजि नहिं जाही ॥
आजु करौं खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥
सुनि दुर्बचन कालबस जाना । बिहंसि बचन कह कृपानिधाना ॥
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

छं० । जनि जल्पना करि सुजस नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।
संसार महं पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा ॥
एक सुमनप्रद एक सुमनफल एक फलइ केवल लागहीं ।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं । १५ ॥

दो० । रामबचन सुनि बिहंसा मोहि सिखावत ज्ञान ।
बैर करत नहिं तब डरे अब लागे प्रिय प्रान । ८७ ॥

चौ० । कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिस समान लाग छांड़े सर ॥

नानाकार सिलीमुख धाये । दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाये ॥
पावक सर छाड़े रघुबीरा । छन महं जरे निसाचरतीरा ॥
छाड़िसि तीब्र सक्ति खिसियाई । बान संग प्रभु फेरि चलाई ॥
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पबारै । बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥
निफल होहिं रावनसर कैसे । खल के सकल मनोरथ जैसे ॥
तब सत बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध कहं पावा ॥

छं० । भय क्रुध युद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।
कोदंडधुनि अति चण्ड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे ॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हंसे । १६ ॥

दो० । तानेउ चाप स्रवन लगि छाड़े बिसिख कराल ।
राम मार्गनगन चले लहलहात जनु ब्याल । ८८ ॥

चौ० । चले बान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥
रथ बिभंजि हति केतु पताका । गर्जा अति अंतर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढ़ि खिसियाना । अस्त्र सस्त्र छाड़ेसि बिधि नाना ॥
निफल होइं सब उद्यम ता के । जिमि परद्रोहनिरत मनसा के ॥
तब रावन दस सूल चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥
तुरंग उठाइ कोपि रघुनायक । खैंचि सरासन छाड़ेउ सायक ॥
रावनसिर सरोजबनचारी । चलि रघुबीरसिलीमुखधारी ॥
दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गये चले रुधिरपनारे ॥
स्रवत रुधिर धायेउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥
तीस तीर रघुबीर पबारे । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥
राम बहोरि भुजा सिर छीने । काटतही पुनि भये नबीने ॥
प्रभु बहु बार बाहु सिर हये । कटत झटिति पुनि नूतन भये ॥
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू । मानहुं अमित केतु अरु राहू ॥

छं० । जनु राहु केतु अनेक नभपथ स्रवत सोनित धावहीं ।
रघुबीरतीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
एक एक सर सिरनिकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं ।
जनु कोपि दिनकर करनिकर जहं तहं बिधुंतुद पोहहीं । १७ ॥

दो० । जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।
सेवत बिषय बिबर्ध जिमि नित नित नूतन मार । ८९ ॥

चौ० । दसमुख देखि सिरनि कै बाढ़ी । बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी ॥
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सरासन तानी ॥
समरभूमि दसकंधर कोप्यो । बरषि बान रघुपतिरथ तोप्यो ॥
दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महं दिनकर दुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा । तब प्रभु कोपि कामुक लीन्हा ॥
सर निवारि रिपु के सिर काटे । ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे ॥
काटे सिर नभ मारग धावहिं । जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥
कहं लछिमन सुग्रीव कपीसा । कहं रघुबीर कोसलाधीसा ॥

छं० । कहं राम कहि सिरनिकर धाये देखि मर्कट भजि चले ।
संधानि धनु रघुबंसमनि हंसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥
सिरमालिका कर कालिका गहि छन्द छन्दनि बहु मिली ।
करि रुधिरसरि मज्जन मनहुं संग्रामबट पूजन चली । १८ ॥

दो० । पुनि दसकंठ क्रुद्ध ह्वै छाड़ी सक्ति प्रचंड ।
चली बिभीषन सनमुख मनहुं काल कर दंड । ९० ॥

चौ० । आवत देखि सक्ति अति घोरा । प्रनतारतिभंजन पन मोरा ॥
तुरत बिभीषन पाछे मेला । सनमुख राम सहेउ सो सेला ॥
लागि सक्ति मुर्छा कछु भई । प्रभुकृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥
देखि बिभीषन प्रभु स्रम पायउ । गहि कर गदा क्रुद्ध ह्वै धायेउ ॥
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥
सादर सिव कहं सीस चढ़ाये । एक एक के कोटिन्ह पाये ॥
तेहि कारन खल अब लगि बांच्यो । अब तव काल सीस पर नांच्यो ॥
रामबिमुख सठ चह संपदा । अस कहि हनेसि मांझ उर गदा ॥

छं० । उर मांझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महि परा ।
दसबदनसोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिसभरा ॥
दोउ भिरे अति बल मल्लयुद्ध बिरुद्ध एकहि एक हने ।
रघुबीर बल दर्पित बिभीषन घालि नहिं ता कहं गने । १८ ॥

दो० । उमा बिभीषन रावनहिं सनमुख चितव कि काउ ।
सो अब भिरत काल ज्यों श्रीरघुबीरप्रभाउ । ९१ ॥

चौ० । देखा स्रमित बिभीषन भारी । धाएउ हनूमान गिरिधारी ॥
रथतुरंग सारथी निपाता । हृदय मांझ मारेसि तेहि लाता ॥
ठाढ़ रहा अतिकंपितगाता । गयउ बिभीषन जहं जनत्राता ॥
पुनि रावन कपि हनेउ प्रचारी । चलेउ गगन कपि पुच्छ पसारी ॥
गहसि पुच्छ कपि सहित उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥

करत चकाउ पुनि कलबोला । हतहिं सकल सुभट करि कोला ॥
जोधहिं नभ जल थल बहु करनी । कलमलहिं सुनेउ बनु मरनी ॥
बुधिबल निसिचर परै न पारो । तब मारुतसुत प्रभु संभारो ॥

छं० । संभारि श्रीरघुबीर धीर पचारि कपि रावन हन्यो ।
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहँ जय जय भन्यो ॥
हनुमन्तसंकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।
रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले । ९० ॥

दो० । तब रघुबीर पचारे धाये कीस प्रचंड ।
कपिदल प्रबल देखि तिहिं कीन्ह प्रगट पाषंड । ८२ ॥

चौ० । अन्तरध्यान भयो छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥
रघुबरकटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥
भागे बानर धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा ॥
दहुँ दिसि धावहिं कोटिन रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब भाई ॥
सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बहु भये तकहु गिरिकंदर ॥
रहे बिरंचि संभु मुनि ज्ञानी । जिन जिन प्रभुमहिमा कछु जानी ॥

छं० । जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नील नल अति बल लरत रनबांकुरे ।
मर्दहिं दसानन कोटिकोटिन्ह कपटभूभट अंकुरे । ९१ ॥

दो० । सुर बानर देखे बिकल हँसेउ कोसलाधीस ।
सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस । ८३ ॥

चौ० । प्रभु छन महँ माया सब काटी । जिमि रबिउये जाहिं तम फाटी ॥
रावन एक देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे ॥
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकनि तब टेरे ॥
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये । तरल तमकि संजुग महि आये ॥
अस्तुति करत देव तेहि देखे । भयउँ एक मैं इन्ह के लेखे ॥
सठहु सदा तुम मोर मरायल । अस कहि कोपि गगन पर धायल ॥
हाहाकार करत सुर भागे । खलहु जाहु कहँ मोरे आगे ॥
देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

छं० । गहि भूमि पार्‌यो लात मार्‌यो बालिसुत प्रभु पहँ गयो ।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गरजत भयो ॥

करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई ।
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई । ९९ ॥

दो० । तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।
काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप । ८८ ॥

चौ० । सिरभुजबाढ़ि देखि रिपु केरी । भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी ॥
मरत न मूढ़ कटेहु भुज सीसा । धाये कोपि भालु भट कीसा ॥
बालितनय मारुति नल नीला । बानरराज दुबिदबलसीला ॥
बिटप महीधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा ॥
एक नखन्हि रिपु बपुष बिदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी ॥
तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गयेऊ । नखन्हि लिलार बिदारत भयेऊ ॥
रुधिर देखि बिषाद उर भारी । तिन्है धरन कहं भुजा पसारी ॥
गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु युग मधुप कमल बन चरहीं ॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे ॥
हनुमदादि मुरछित करि बंदर । पाइ प्रदोष हरष दसकंधर ॥
मुरछित देखि सकल कपि बीरा । जामवन्त धायेउ रनधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे पचारि पचारी ॥
भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । गहि पद महि पटकै भट नाना ॥
देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि मांझ उर मारेसि लाता ॥

छं० । उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा ।
गहि भालु बीसहु कर मनहुं कमलनि बसे निसि मधुकरा ॥
मुरछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत जतन करत भयो । ९ ॥

दो० । मुरछा बिगत भालु कपि सब आये प्रभु पास ।
निसिचर सकल रावनहिं घेरि रहे अति त्रास । ८९ ॥

चौ० । तेहि निसि सीता पहं जाई । त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी । सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥
होइहि कहा कहसि किन माता । केहि बिधि मरिहि बिस्वदुखदाता ॥
रघुपति सर सिर कटेहु न मरई । बिधि बिपरीत चरित सब करई ॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही । जेहिं हौं हरि पद कमल बिछोही ॥
जेहि कृत कनक कपट मृग झूठा । अजहु सो दैव मोहि पर रूठा ॥
जेहि बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । लछिमन कहं कटु बचन कहाए ॥

रघुपति बिरह सबिष सर भारी । तकि तकि मार बार बहु मारी ॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना । सोइ बिधि ताहि जियाव न आना ॥
बहु बिधि करति बिलाप जानकी । करि करि सुरति कृपानिधान की ॥
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी । उर सर लागत मरै सुरारी ॥
प्रभु तातें उर हतहि न तेही । इहि के हृदय बसति बैदेही ॥

छं० । इहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है ।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नास है ॥
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटा कहा ।
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा । १४ ॥

दो० । काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तव ध्यान ।
तब रावनहि के हृदय महं मरिहहिं राम सुजान । ८९ ॥

चौ० । अस कहि बहुत भांति समुझाई । पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई ॥
राम सुभाव सुमिरि बैदेही । उपजी बिरहब्यथा अति तेही ॥
निसिहि ससिहि निंदति बहु भांती । जुग सम भई सिराति न राती ॥
करति बिलाप मनहिं मन भारी । राम बिरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयेउ बिरह उर दाहू । फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥
सगुन बिचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा ॥
इहां अर्द्ध निसि रावन जागा । निज सारथि सन खीझन लागा ॥
सठ रनभूमि छुड़ाएसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही ॥
तेहि पद गहि बहु बिधि समुझावा । भोर भये रथ चढ़ि पुनि धावा ॥
सुनि आगमन दसानन केरा । कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहं तहं भूधर बिटप उपारी । धाये कटकटाइ भट भारी ॥

छं० । धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधरधरा ।
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवन्त कीसन घेरि पुनि रावन लियो ।
चहु दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हिं बिदारि तन ब्याकुल कियो । १५ ॥

दो० । देखि महा मरकट प्रबल रावन कीन्ह बिचार ।
अंतरहित होइ निमिष महं कृत मायाबिस्तार । ९० ॥

छन्द तोमर ।

जब कीन्ह तेंहि पाषंड । भये प्रगट जंतु प्रचंड ॥
बैताल भूत पिसाच । कर धरे धनुनाराच ॥
जोगिनि गहे करवाल । इक हाथ मनुज कपाल ॥
करि सद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं बहु गान ॥
धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पुरि धुनि चहुं ओर ॥
मुख बाइ धावहिं खान । तब लगे कीस परान ॥

जहं जाहिं मर्कट भागि । तहं बरत देखहिं आगि ॥
भये बिकल बानर भालु । पुनि लाग बरषै बालु ॥
जहं तहं थकित करि कीस । गरजेउ बहुरि दससीस ॥
लछिमन कपीस समेत । भये सकल बीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
एहि बिधि सकल बल तोरि । तेहि कीन्ह कपट बहोरि ॥
प्रगटेसि बिपुल हनुमान । धाये गहे पाषान ॥
तिन्ह रामं घेरे जाइ । चहुं दिसि बरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहिं पूंछ उठाइ ॥
दसदिसि लंगूर बिराज । तेहि मध्य कोसलराज । ९६ ॥

छं० । तेहि मध्य कोसलराज सुन्दर स्यामतन सोभा लही ।
जनु इन्द्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥
प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी ।
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महं माया हरी ॥
मायाबिगत कपि भालु हर्षे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।
सरनिकर छाड़े राम रावनबाहुसिर पुनि महि गिरे ॥
श्रीरामरावनसमरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं । ९७ ॥

दो० । ताके गुनगन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।
जिमि निज बल अनुरूप तें माछी उड़ै अकास ॥
काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस ।
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेस । ९८ ॥

चौ० । काटत बढ़हिं सीससमुदाई । जिमि प्रतिलाभ लोभअधिकाई ॥
मरै न रिपु स्रम भयउ बिसेषा । राम बिभीषनतन तब देखा ॥
उमा काल मर जाकी ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥
सुनु सर्बज्ञ चराचरनायक । प्रनतपाल सुर मुनिसुखदायक ॥
नाभिकुण्ड पियूष बस या के । नाथ जियत रावन बल ता के ॥
सुनत बिभीषनबचन कृपाला । हरषि गहे कर बान कराला ॥
असुभ होन लागे तब नाना । रोवहिं खर सृगाल बहु स्वाना ॥
बोलहिं खग जगआरतिहेतू । प्रगट भये नभ जहं तहं केतू ॥
दसदिसि दाह होन अति लागा । भयउ पर्ब बिनु रबिउपरागा ॥
मंदोदरिउर कंपति भारी । प्रतिमा स्रवहिं नयनमग बारी ॥

छं० । प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ अति बात बह डोलति मही ।
बर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही ॥

[illegible] बिलोकि [illegible] ॥
सुर [illegible] ॥

दो० । खैंचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस ।
रघुनायकसायक चले मानहुं काल फनीस । ९९ ॥

चौ० । सायक एक नाभिसर सोषा । अपर लगे सिर भुज करि रोषा ॥
लै सिर बाहु चले नाराचा । सिरभुजहीन रुंड महि नाचा ॥
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा । तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा ॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ राम रन हतौं पचारी ॥
डोली भूमि गिरत दसकंधर । छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ॥
धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई । चापि भालुमर्कटसमुदाई ॥
मंदोदरि आगे भुज सीसा । धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥
प्रबिसे सब निषंग महं जाई । देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभुआनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । जय रघुबीर प्रबलभुजदंडा ॥
बर्षहिं सुमन देवमुनिबृन्दा । जय कृपालु जय जयति मुकुन्दा ॥

छं० । जय कृपाकंद मुकुन्द द्वंदहरन सरन सुखप्रद प्रभो ।
खलदलबिदारन परमकारन कारुनीक सदा बिभो ॥
सुर सुमन बर्षहिं हरष संकुल बाज दुन्दुभि गहगही ।
संग्रामअंगन रामअंग अनंगबहुसोभा लही ॥
सिरजटामुकुट प्रसून बिचबिच अति मनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं ॥
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिरकन तन अति बने ।
जनु रायमुनी तमाल पर बैठी बिपुल सुख आपने । ३१ ॥

दो० । कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किये सुरबृन्द ।
भालु कीस सब हरषे जय सुखधाम मुकुन्द । १०० ॥

चौ० । पतिसिर देखत मंदोदरी । मुरछित बिकल धरनि खसि परी ॥
युवतिबृन्द रोवति उठि धाईं । तेहि उठाइ रावन पहिं आईं ॥
पतिगति देखि ते करहिं पुकारा । छूटे कच नहिं बपुष संभारा ॥
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना । रोवत करहिं प्रतापबखाना ॥
तव बल नाथ डोल नित धरनी । तेजहीन पावक ससि तरनी ॥
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा । सो तनु भूमि परे भरि छारा ॥
बरुन कुबेर सुरेस समीरा । रन सन्मुख धरि काहु न धीरा ॥
भुजबल जितेउ काल जम साईं । आजु परेउ अनाथ की नाईं ॥

जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई । सुत परिजन बल बरनि न जाई ॥
राम बिमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कुल कोउ रोवनिहारा ॥
तव बस बिधिप्रपंच सब नाथा । सभै दिसिप नित नावहिं माथा ॥
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं । राम बिमुख यह अनुचित नाहीं ॥
कालबिबस पति कहा न माना । अगजगनाथ मनुज करि जाना ॥

छं० । जानेहु मनुज करि दनुजकाननदहनपावक हरि स्वयं ।
जेहिं नमत शिवब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥
आजन्म तें परद्रोहरत पापौघमय तव तनु अयं ।
तुमहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं । ३२ ॥

दो० । अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन ।
योगिवृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान । १०१ ॥

चौ० । मंदोदरीबचन सुनि काना । सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥
अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिबर परमारथबादी ॥
भरि लोचन रघुपतिहिं निहारी । प्रेममगन सब भये सुखारी ॥
रुदन करत देखी सब नारी । गयेउ बिभीषन मन दुख भारी ॥
बंधुदसा बिलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहिं आयसु दीन्हा ॥
लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो । बहुरि बिभीषन प्रभु पहिं आयो ॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥
कीन्हि क्रिया प्रभुआयसु मानी । बिधिवत देसकाल जिय जानी ॥

दो० । मंदोदरी आदि सब देइ तिलाञ्जलि ताहि ।
भवन गईं रघुपति गुनगन बरनति मन माहि । १०२ ॥

चौ० । आइ बिभीषन पुनि सिर नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥
तुम कपीस अंगद नल नीला । जामवन्त मारुति नयसीला ॥
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥
पितावचन मैं नगर न आवौं । आपु सरिस कपि अनुज पठावौं ॥
तुरत चले कपि सुनि प्रभुबचना । कीन्हो जाइ तिलक की रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥
जोरि पानि सबही सिर नाये । सहित बिभीषन प्रभु पहिं आये ॥
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे ॥

छं० । किये सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारे रिपु हयो ।
पायो बिभीषन राज तिहुं पुर जस तुम्हारो नित नयो ॥
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।
संसारसिंधु अपार पार प्रयास बिन नर पाइहैं । ३३ ॥

दो० । प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपिपुंज ।
बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पदकंज । १०३ ॥

चौ० । पुनि प्रभु बोलि लियेउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम चलि आवहु ॥
तब हनुमन्त नगर महं आये । सुनि निसिचरी निसाचर धाये ॥
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता दिखाइ पुनि दीन्ही ॥
दूरिहि तें प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपतिदूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता । कुसल अनुज कपिसेन समेता ॥
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥
अबिचल राज बिभीषन पायो । सुनि कपिबचन हरष उर छायो ॥

छं० । अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।
का देउं तोहि त्रिलोक महं कपि किमपि नहिं बानी समा ॥
सुनु मातु मैं पायो अखिल जगराज आजु न संसयं ।
रन जीति रिपुदल बंधुजुत पस्यामि राम अनामयं । ३४ ॥

दो० । सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदय बसहु हनुमंत ।
सानुकूल कोसलपति रहहु समेत अनंत । १०४ ॥

चौ० । अब सोइ जतन करहु तुम ताता । देखौं नयन स्याममृदुगाता ॥
तब हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता की कुसल सुनाई ॥
सुनि संदेस भानुकुलभूषन । बोलि लिये जुबराज बिभीषन ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुता लै आवहु ॥
तुरतहि सकल गये जहं सीता । सेवहिं सब निसिचरी बिनीता ॥
बेगि बिभीषन तिन्हहिं सिखायो । तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो ॥
बहु प्रकार भूषन पहिराये । सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याये ॥
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
बेतपानि रच्छक चहुं पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥
देखन भालु कीस सब आये । रच्छक कोपि निवारन धाये ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादे आनहु ॥
देखहु कपि जननी की नाईं । बिहंसि कहा रघुनाथ गुसाईं ॥
सुनि प्रभुबचन भालु कपि हरषे । नभ तें सुरन्ह सुमन बहु बरषे ॥
सीता प्रथम अनल महं राखी । प्रगट कीन्ह चह अंतर साखी ॥

दो० । तेहि कारन करुनानिधि कहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत जातुधानी सब लागीं करन बिषाद । १०५ ॥

चौ० । प्रभु के बचन सीस धरि सीता । बोली मन क्रम बचन पुनीता ॥
लछिमन होहु धर्म के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम बेगी ॥
सुनि लछिमन सीता के बानी । बिरह बिबेक धर्मनयसानी ॥
लोचन सजल जोरि कर दोऊ । प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ ॥
देखि रामरुख लछिमन धाये । पावक प्रगट काठ बहु लाये ॥
पावक प्रबल देखि बैदेही । हृदय हरष नहिं भय कछु तेही ॥
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं । तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥
तौ कृसानु सब कै गति जाना । मो कंह होउ श्रीखंड समाना ॥

छं० । श्रीखंड सम पावक प्रबेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महं जरे ।
प्रभुचरित काहु न लखे सुर मुनि सिद्ध सब देखहिं खरे ॥
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो ।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥
सो रामबामबिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली ।
नव नील नीरज निकट मानहुं कनकपंकज की कली । २५ ॥

दो० । बरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान ।
गावहिं किन्नर सुरबधू नाचहिं चढ़ी बिमान ॥
जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार ।
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुखसार । १०६ ॥

चौ० । तब रघुपतिअनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिर नाई ॥
आये देव सदा स्वारथी । बचन कहहिं जनु परमारथी ॥
दीनबंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन पर दाया ॥
बिस्वद्रोहरत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगगामी ॥
तुम समरूप ब्रह्म अबिनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघ सक्ति करुनामय ॥
मीन कमठ सूकर नरहरी । बामन परसु रामबपु धरी ॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पायो । नाना तनु धरि तुम्हहि नसायो ॥
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । कामलोभमदरत अति कोही ॥
अधम सिरोमनि तव पद पावा । यह हमरे मन बिसमय आवा ॥
हम देवता परम अधिकारी । स्वारथरत प्रभुभक्ति बिसारी ॥
भवप्रवाह सन्तत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥

दो० । करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहं तहं कर जोरि ।
अतिसप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि । १०७ ॥

छंद ।

जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चापधरे ॥
भववारन दारन सिंह प्रभो । गुनसागर नागर नाथ बिभो ॥
तन काम अनेक अनूप छबी । गुन गावत सिद्ध मुनिन्द्र कबी ॥
जस पावन रावन नाग महा । खगनाथ यथा करि कोप गहा ॥
जनरंजन भंजन सोकभयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ॥
अवतार उदार अपारगुनं । महिभारबिभंजन ज्ञानघनं ॥
अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ॥
रघुवंस विभूषन दूषनहा । कृत भूप विभीषन दीन रहा ॥
गुनज्ञाननिधान अमान अजं । नित राम नमामि विभुं विरजं ॥
भुजदंड प्रचंड प्रतापबलं । खलवृन्दनिकंद महाकुसलं ॥
बिनु कारन दीनदयाल हितं । छबिधाम नमामि रमासहितं ॥
भवतारन कारनकाजपरं । मनसंभव दारुनदोषहरं ॥
सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुनलोचन भूपबरं ॥
सुखमंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममतासमनं ॥
अनवद्य अखंड न गोचरगो । सबरूप सदा सब होइ न गो ॥
इति वेद वदंति न दंतिकथा । रबिआतप भिन्न न भिन्न यथा ॥
कृतकृत्य बिभो सब बानर ये । निरखंति तवानन सादर ये ॥
धिक जीवन देवसरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयाल दया करिये । मति मोरि बिभेदकरी हरिये ॥
जेहि तें बिपरीत क्रिया करिये । दुख सो सुख मानि सुखी चरिये ॥
खलखंडन मंडन रम्य छमा । पदपंकजसेवित संभु उमा ॥
नृपनायक दे बरदानमिदं । चरनाम्बुज प्रेम सदा सुभदं ।२६॥

दो० । बिनय कीन्ह चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।
सोभा सिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात । १०८ ॥

चौ० । तेहि अवसर दसरथ तहं आये । तनय बिलोकि नयन जल छाये ॥
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आसिरबाद पिता तब दीन्हा ॥
तात सकल तव पुन्यप्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचरराऊ ॥
सुनि सुतबचन प्रीति अति बाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥
रघुपति पितहिं प्रेमबस जाना । चितै प्रथम दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना ॥
ता तें उमा मोच्छ नहिं पायो । दसरथ भेद भक्ति मन लायो ॥
सगुनउपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहं राम भक्ति निज देहीं ॥
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गये सुर धामा ॥

दो० । अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस ।
सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुरईस । १०९ ॥

छन्द तोमर ।

जय राम सोभाधाम । दायक प्रनत बिस्राम ॥
धृत चौन बर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ॥
यह दुष्ट मारे नाथ । भय देव सकल सनाथ ॥
जय हरन धरनीभार । महिमा उदार अपार ॥
जय रावनारि कृपाल । किये जातुधान बिहाल ॥
लंकेस अतिबल गर्व । किये बस्य सुर गंधर्व ॥
मुनि सिद्ध खग नर नाग । हठि पंथ सब के लाग ॥
पर द्रोहरत अति दुष्ट । पायो सो फल पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीनदयाल । राजीवनयनबिसाल ॥
मोहिं रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥
अब देखि प्रभुपदकंज । गतमान प्रद दुखपुंज ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अव्यक्त जेहि स्रुति गाव ॥
मोहि भाव कोसलभूप । स्रीराम सगुन सरूप ॥
बैदेहि अनुज समेत । मम हृदय करहु निकेत ॥
मोहि जानिये निजदास । दे भक्ति रमानिवास । ३७ ॥

छं० । दे भक्ति रमानिवास त्रासहरन सरनसुखदायकं ।
सुखधाम राम नमामि कामअनेकछबि रघुनायकं ॥
सुरबृन्दरंजन दंदभंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादिसंकरसेब्य राम नमामि करुनाकोमलं । ३८ ॥

दो० । अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल । ११० ॥

चौ० । सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसिचरन्ह जे मारे ॥
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना । सकल जियाउ सुरेस सुजाना ॥
सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभु सक त्रिभुवन मारि जियाई । केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधा बरषि कपि भालु जियाये । हरषि उठे सब प्रभु पहं आये ॥
सुधाबृष्टि भै दुहुं दल ऊपर । जिये भालु कपि नहिं रजनीचर ॥
रामाकार भये तिन्ह के मन । मुक्त भये छूटे भवबंधन ॥
सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा । जिये सकल रघुपति की ईछा ॥
रामसरिस को दीनहितकारी । कीन्हे मुक्त निसाचर झारी ॥
खल मलधाम कामरत रावन । गति पाई जो मुनिबर पावन ॥

सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।
देखि सुअवसर राम पहं आये संभु सुजान ॥
परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि ।
पुलकित तन गदगद गिरा बिनय करत त्रिपुरारि । १११ ॥

छन्द ।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥
मोह महाघनपटल प्रभंजन । संसय बिपिन अनल सुररंजन ॥
अगुन सगुन गुनमंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥
काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जनमन कानन ॥
बिषय मनोरथपुंज कंजबन । प्रबल तुषार उदार पारमन ॥
भव बारिधि मंदर परमं दर । बारय तारय संसृति दुस्तर ॥
स्यामगात राजीवबिलोचन । दीनबंधु प्रनतारतिमोचन ॥
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप मम उर अंतर ॥
मुनिरंजन महिमंडलमंडन । तुलसिदास प्रभु त्रासबिखंडन । १८ ॥

दो० । नाथ जबहिं कोसलपुर होइहि तिलक तुम्हार ।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार । ११२ ॥

चौ० । करि बिनती जब संभु सिधाये । तब प्रभु निकट बिभीषन आये ॥
नाइ चरन सिर कह मृदुबानी । बिनय सुनहु प्रभु सारंगपानी ॥
सकुल सदल प्रभु रावन मार्‍यो । पावन जस त्रिभुवन बिस्तार्‍यो ॥
दीन मलीन हीनमति जाती । मो पर कृपा कीन्ह बहु भांती ॥
अब जनगृह पुनीत प्रभु कीजै । मज्जन करिय समर श्रम छीजै ॥
देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपालु कपिन्ह कहं मुदा ॥
सब बिधि नाथ मोहिं अपनाइय । पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय ॥
सुनत बचन मृदु दीनदयाला । सजल भये दोउ नयन बिसाला ॥

दो० । तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात ।
भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥
तापसभेष गात कृस जपत निरंतर मोहि ।
देखौं बेगि सो जतन करु सखा निहोरौं तोहि ॥
बीतें अवधि जाउं जौं जियत न पावउं बीर ।
सुमिरत अनुजप्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥
करेहु कल्प भरि राज तुम मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।
पुनि मम धाम पाइहहु जहां संत सब जाहिं । ११३ ॥

चौ० । सुनत बिभीषन बचन राम के । हरषि गहे पद कृपाधाम के ॥
बानर भालु सकल हरषाने । प्रभुपद गहि गुन बिमल बखाने ॥
बहुरि बिभीषन भवन सिधाये । मनिगन बसन बिमान भराये ॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा । हँसि कै कृपासिंधु तब भाखा ॥
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन । गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥
नभ पर जाइ बिभीषन तबहीं । बरषि दिये मनि अंबर सबहीं ॥
जोइ जोइ मन भावै सोइ लेहीं । मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ॥
हँसे राम श्री अनुज समेता । परम कौतुकी कृपानिकेता ॥

दो० । मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद ।
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद ॥
उमा जोग जप दान तप नाना ब्रत मख नेम ।
रामकृपा नहिं करहिं तसि जस निष्केवल प्रेम । ११४ ॥

चौ० । भालु कपिन्ह पट भूषन पाये । पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आये ॥
नाना जिनिस देखि सब कीसा । पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥
चितै सबन्हि पर कीन्ही दाया । बोले मधुर बचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावन मारयो । तिलक बिभीषन कहँ पुनि सारयो ॥
निज निज गृह अब तुम सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपेहु जनि काहू ॥
सुनत बचन प्रेमाकुल बानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥
प्रभु जो कहहु तुम्हहिं सब सोहा । हमरे होत बचन सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा । तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥
सुनि प्रभुबचन लाज हम मरहीं । मसक कहूँ खगपतिहित करहीं ॥
देखि रामरुख बानर रीछा । प्रेममगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दो० । प्रभुप्रेरित कपि भालु सब रामरूप उर राखि ।
हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि ॥
कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।
सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमबस भरि भरि लोचन बारि ।
सनमुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि । ११५ ॥

चौ० । अतिसय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥
मन महँ बिप्रचरन सिर नायो । उत्तर दिसिहि बिमान चलायो ॥
चलत बिमान कोलाहल होई । जय रघुबीर कहै सब कोई ॥
सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत बैठे प्रभु ता पर ॥
राजत राम सहित भामिनी । मेरुसृंग जनु घन दामिनी ॥
रुचिर बिमान चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमनबृष्टि हरषे सुर ॥

परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी । सागर सर सरि निर्मल बारी ॥
सगुन होहिं सुंदर चहुं पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥
कह रघुबीर देखु रन सीता । लछिमन इहां हत्यो इन्द्रजीता ॥
हनूमान अंगद के मारे । रन महि परे निसाचर भारे ॥
कुम्भकरन रावन दोउ भाई । इहां हते सुरमुनिदुखदाई ॥

दो० । इहां सेतु बांध्यो अरु थाप्यो सिव सुखधाम ।
सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
जहं जहं कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम ।
सकल देखाये जानकिहि कहे सबन्हि के नाम । ११६ ॥

चौ० । तुरत बिमान तहां चलि आवा । दंडकबन जहं परम सुहावा ॥
कुम्भजादि मुनिनायक नाना । गये राम सब के अस्थाना ॥
सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा । चित्रकूट आये जगदीसा ॥
तहं करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला बिमान तहां ते चोखा ॥
बहुरि राम जानकिहि दिखाई । यमुना कलिमलहरनि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्मकोटिअघ भागा ॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरनिसोक हरिलोकनिसेनी ॥
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिबिधताप भवरोग नसावनि ॥

दो० । सीता सहित अवध कहं कीन्ह कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम ॥
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्जन कीन्ह ।
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहं दान बिबिध बिधि दीन्ह । ११७ ॥

चौ० । प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई । धरि बटुरूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिं कुसल हमार सुनायेउ । समाचार लै तुम चलि आयेउ ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्हीं । अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही ॥
मुनिपद बंदि जुगल कर जोरी । चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहां निषाद सुना प्रभु आये । नाव नाव कहं लोग बुलाये ॥
सुरसरि नांघि जान तब आयो । उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो ॥
तब सीता पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥
दीन्ह असीस हरषि मन गंगा । सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल । आये निकट परम सुखसंकुल ॥
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही । परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ॥
परम प्रीति बिलोकि रघुराई । हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

छं० । लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती ।
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती ॥
अब कुसल पदपंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेव्य जे ।
सुखधाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहबस बिसराइयो ॥
यह रावनारिचरित्र पावन रामपदरतिप्रद सदा ।
कामादिहर बिज्ञानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा । ४० ॥

दो० । समरबिजय रघुबीर के चरित सुनहिं सुजान ।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिनहिं देहिं भगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार ।
श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार । ११८ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ।
विमलज्ञानसम्पादनो नाम षष्ठः सोपानः ॥

समाप्तः ॥ * ॥



अथ उत्तरकाण्ड ॥

श्लोक ॥

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं ।
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं ।
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कमलयोनिमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥२॥
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनं ॥ ३ ॥

दो० । रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुरलोग ।
जहं तहं सोचहिं नारि नर कृशतनु रामवियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभुआगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुं फेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आयेउ प्रभु सिय अनुजयुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरतनयनभुज दच्छिन फरकत बारहिं बार ।
जानि सगुन मन हरष अति लागे करन बिचार ॥ १ ॥

चौ० । रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
कारन कवन नाथ नहिं आयेउ । जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायेउ ॥
अहह धन्य लछिमन बड़भागी । रामपदारबिन्द अनुरागी ॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ता तें नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जौं करनी समुझैं प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कलप सत कोरी ॥
जनअवगुन प्रभु मान न काऊ । दीनबन्धु अति मृदुलसुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥
बीते अवधि रहहिं जौं प्राना । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दो० । रामबिरहसागर महँ भरत मगन मन होत ।
बिप्ररूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत ॥
बैठे देखि कुसासन जटामुकुट कृस गात ।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात । १ ॥

चौ० । देखत हनूमान अति हरषे । पुलक गात लोचन जल बरषे ॥
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी । बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी ॥
जासु बिरह सोचहु दिन राती । रटहु निरन्तर गुनगनपाती ॥
रघुकुलतिलक सुजनसुखदाता । आयेउ कुसल देवमुनित्राता ॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता अनुज सहित प्रभु आवत ॥
सुनत बचन बिसरे सब दूखा । तृषावंत जिमि पाइ पियूषा ॥
को तुम तात कहाँ ते आये । मोहि परम प्रिय बचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना । नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता । नयन स्रवत जल पुलकित गाता ॥
कपि तव दरस सकल दुख बीते । मिले आजु मोहि राम पिरीते ॥
बार बार बूझी कुसलाता । तो कहँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥
यहि संदेस सरिस जग माहीं । करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं ॥
नाहिन तात उरिन मैं तोहीं । अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं ॥
तब हनुमन्त नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपतिगुनगाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपाल गुसाईं । सुमिरहिं मोहिं दास की नाईं ॥

छं० । निज दास ज्यों रघुबंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन करॺो ।
सुनि भरतबचन बिनीत अति कपि पुलक तनु चरनन्हि परॺो ॥
रघुबीर निज मुख जासु गुनगन कहत अगजगनाथ जो
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुनसिंधु सो । १ ॥

दो० । राम प्रानप्रिय नाथ तुम सत्य बचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदय समात । २ ॥

सो० । भरतचरन सिर नाइ तुरित गयो कपि राम पहँ ।
कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि । १ ॥

चौ० । हरषि भरत कोसलपुर आये । समाचार सब गुरहिं सुनाये ॥
पुनि मंदिर महँ बात जनाई । आवत नगर कुसल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठि धाईं । कहि प्रभुकुसल भरत समुझाई ॥
समाचार पुरबासिन पाये । नर अरु नारि हरषि सब धाये ॥
दधि दूर्बा रोचन फल फूला । नव तुलसीदल मंगलमूला ॥
भरि भरि हेमथार भामिनी । गावत चलीं सिंधुरगामिनी ॥

जो जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं । बाल बृद्ध कहं संग न लावहिं ॥
एक एकन्ह कहं बूझहिं भाई । तुम देखे दयाल रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल सोभा कै खानी ॥
भइ सरजू अति निर्मलनीरा । बहै सोहावनि त्रिबिध समीरा ॥

दो० । हरषित गुरु परिजन अनुज भूसुरबृंद समेत ।
चले भरत अति प्रेम मन सन्मुख कृपानिकेत ॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान ।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान ॥
राकाससि रघुपति पुरी सिंधु देखि हरषान ।
बढ़ेउ कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान । ३ ॥

चौ० । इहां भानुकुलकमलदिवाकर । कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥
सुनु कपीस अंगद लंकेसा । पावनि पुरी रुचिर यह देसा ॥
यद्यपि सब बैकुंठ बखाना । बेदपुरानबिदित जग जाना ॥
अवध पुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जाने कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि मम पुरी सोहावनि । उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप पावहिं नर बासा ॥
अति प्रिय मोहिं इहां के बासी । मम धामदा पुरी सुखरासी ॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभुबानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दो० । आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान ।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरे भूमि बिमान ॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं तुम कुबेर पहं जाउ ।
प्रेरित राम चलेउ सो हर्ष बिरह अति ताउ । ४ ॥

चौ० । आये भरत संग सब लोगा । कृसतनु श्रीरघुबीरबियोगा ॥
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥
धाइ धरे गुरुचरन सरोरुह । अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ॥
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया । हमरे कुसल तुम्हारिहि दाया ॥
सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा । धरमधुरंधर रघुकुलनाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभुपदपंकज । नमत जिन्हहिं संकर सुर मुनि अज ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये । बर करि कृपासिंधु उर लाये ॥
स्यामल गात रोम भये ठाढ़े । नवराजीवनयन जल बाढ़े ॥

छं० । राजीवलोचन स्रवत जल तनु ललित पुलकावलि बनी ।
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रिभुवनधनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह सो पहँ जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिलत बर सुखमा लही ॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं बचन बेगि न आवई ।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥
अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।
बूड़त बिरहबारीस कृपानिधान मोहिं कर गहि लियो । १ ॥

दो० । सधन चोर मग मुदितमन धनी गही जिमि फेंट ।
तिमि सुग्रीव बिभीषन प्रभुहि भरत की भेंट ॥
पुनि प्रभु हरषित सत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ ।
लछिमन भेंटे भरत पुनि प्रेम न हृदय समाइ । ६ ॥

चौ० । भरतानुज लछिमन तब भेंटे । दुसह बिरहसंभव दुख मेटे ॥
सीताचरन भरत सिर नावा । अनुज समेत परम सुख पावा ॥
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी । जनित बियोग बिपति सब नासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥
अमित रूप प्रगटे तेहि काला । यथाजोग मिलि सबहिं कृपाला ॥
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी । किए सकल नर नारि बिसोकी ॥
छन महँ सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहु न जाना ॥
एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा । आगे चले सीलगुनधामा ॥
कौसल्यादि मातु सब धाईं । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं ॥

छं० । जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं ।
दिन अंत पुररुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटीं बचन मृदु बहु बिधि कहे ।
गइ बिषम बिपति बियोगभव तिन्ह हर्ष सुख अगनित लहे । २ ॥

दो० । भेंटत तनय सुमित्रा राम चरन रति जानि ।
रामहि मिलत कैकई हृदय बहुत सकुचानि ॥
लछिमन सब मातन्ह मिले हरषे आसिष पाइ ।
कैकइ कहं पुनि पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ । ७ ॥

चौ० । सासुन सबनि मिली बैदेही । चरननि लागि हरष अति तेही ॥
देहिं असीस बूझि कुसलाता । होउ अचल तुम्हार अहिवाता ॥
सब रघुपति मुखकमल बिलोकहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहिं ॥
कनकथार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥

नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं ॥
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । चितवति कृपासिंधु रनधीरहि ॥
हृदय बिचारति बारहि बारा । कवन भाँति लंकापति मारा ॥
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे । निसिचर सुभट महाबल भारे ॥

दो० । लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मात ।
परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गात । ८ ॥

चौ० । लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥
भरत सनेह सील ब्रत नेमा । सादर सब बरनहिं अति प्रेमा ॥
देखि नगरबासिन्ह कै रीती । सकल सराहहिं प्रभुपदप्रीती ॥
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनिपद लागहु सकल सिखाए ॥
गुरु बसिष्ट कुलपूज्य हमारे । इन्ह की कृपा दनुज रन मारे ॥
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भए समर सागर कहं बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभुबचन मगन सब भए । निमिष निमिष उपजत सुख नए ॥

दो० । कौसल्या के चरनन्ह पुनि तिन्ह नायउ माथ ।
आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥
सुमनबृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगरनारि बर बृंद । ९ ॥

चौ० । कंचन कलस बिचित्र संवारे । सबहि धरे सजि निज निज द्वारे ॥
बंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ॥
बीथी सकल सुगंध सिंचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥
नाना भाँति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥
जहं तहं नारि निछावरि करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥
कंचनथार आरती नाना । जुबती सजे करहिं सुभ गाना ॥
करहिं आरती आरतिहर के । रघुकुलकमलबिपिन दिनकर के ॥
पुरसोभा संपति कल्याना । निगम सेष सारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं । उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥

दो० । नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपतिबिरह दिनेस ।
अस्त भए बिकसित भईं निरखि राम राकेस ॥
होहिं सगुन सुभ बिबिध बिधि बाजहिं गगन निसान ।
पुरनरनारि सनाथ करि भवन चले भगवान । १० ॥

चौ० । प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ॥
कृपासिंधु जब मंदिर गए । पुरनरनारि सुखी सब भए ॥
गुरु बसिष्ठ द्विज लिये बोलाई । आजु सुघरी सुदिन सुभ दाई ॥
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन । रामचंद्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि बसिष्ठ के बचन सोहाए । सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए ॥
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका । जग अभिराम राम अभिषेका ॥
अब मुनिवर बिलंब नहिं कीजै । महाराज कहं तिलक करीजै ॥

दो० । तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चले हरषाइ ।
रथ अनेक गज बाजि बहु तुरत सँवारे जाइ ॥
जहं तहं धावन पठै पुनि मंगल द्रव्य मगाइ ।
हरष समेत बसिष्ठ पद पुनि सिर नायउ आइ । ११ ॥

चौ० । अवधपुरी अति रुचिर बनाई । देवन सुमनबृष्टि झरि लाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बोलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत बचन जहं तहं जन धाए । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए ॥
पुनि करुनानिधि भरत हंकारे । निज कर राम जटा निरुवारे ॥
अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । भगतबछल कृपाल रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । सेष कोटि सत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिबराए । गुरअनुसासन मागि नहाए ॥
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे । अंग अनंग कोटि छबि लाजे ॥

दो० । सासुन्ह सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराइ ।
दिब्य बसन बर भूषन अंग अंग सजे बनाइ ॥
रामबामदिसि सोभित रमा रूपगुनखानि
देखि मातु सब हरषित जन्म सुफल करि जानि ।
सुनु खगेस तेहि औसर ब्रह्मा सिव मुनिबृंद ।
चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद । १२ ॥

चौ० । प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरतहि दिब्य सिंहासन मांगा ॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई । बैठे राम द्विजन्ह सिर नाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई । पेखि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥
बेदमंत्र तब द्विजन्ह उचारे । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥
प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा । पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥
सुत बिलोकि हरषी महतारी । बार बार आरती उतारी ॥
बिप्रन्ह दान बिबिध बिधि दीन्हे । जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं । देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं ॥

। नभ दुंदुभीं बाजहिं बिपुल गंधर्ब किंनर गावहीं ।
नाचहिं अपछरा बृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं ॥
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते ।
गहें छत्र चामर ब्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते ॥
श्री सहित दिनकरबंसभूषन काम बहु छबि सोहई ।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई ॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे ।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे । ३ ॥

दो० । वह सोभा समाज सुख कहत न बनै खगेस ।
बरनै सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस ॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम ।
बंदीबेष बेद तब आए जहं श्रीराम ॥
प्रभु सर्बग्य कीन्ह अति आदर कृपानिधान ।
लखेउ न काहू मरम कछु लगे करन गुनगान । १२ ॥

छं० । जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुजबल हने ॥
अवतार नर संसारभार बिभंजि दारुन दुख दहे ।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्तसक्ति नमामहे ॥
तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भवपंथ भ्रमत अमित दिवसनिसि काल कर्म गुननि भरे ॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिध दुख ते निर्बहे ।
भवखेदछेदनदच्छ हम कहुं रच्छ राम नमामहे ॥
जे ग्यानमान बिमत्त तव भवहरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुरदुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ॥
जे चरन सिवअजपूज्य रज सुभ परसि मुनिपतनी तरी ।
नखनिर्गता मुनिबंदिता त्रैलोकपावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंजजुत बन फिरत कंटक किन लहे ।
पदकंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥
अब्यक्त मूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट कंध साखा पंचबीस अनेक पर्न सुमन घने ॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।
पल्लवत फूलत नवल नित संसारबिटप नमामहे ॥

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं ।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुनजस नित गावहीं ॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मांगहीं ।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं । ५ ॥

दो० । सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार ।
अंतरध्यान भए पुनि गए ब्रह्मआगार ॥
बैनतेय सुनु संभु तब आए जहं रघुबीर ।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर । १४ ॥

तोटक ।

जय राम रमारमनं समनं । भवतापभयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥
दससीस बिनासन बीसभुजा । कृत दूरि महामहिभूरिरुजा ॥
रजनीचरबृंद पतंग रहे । सरपावकतेज प्रचंड दहे ॥
महिमंडलमंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ॥
मद मोह महा ममता रजनी । तमपुंज दिवाकरतेजअनी ॥
मनुजाद किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ॥
हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे । बिषयाबन पांवर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हये । भवदंघ्रिनिरादर के फल ये ॥
भवसिंधु अगाध परे नर ते । पदपंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह के पदपंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंतकथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥
नहि राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह के सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि तें तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोगभरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये । पदपंकज सेवत सुद्ध हिये ॥
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंत मही ॥
मुनिमानसपंकज भृंग भजे । रघुबीर महारनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भवरोगमहागद मानअरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं । महिपाल बिलोकय दीन जनं । १ ॥

दो० । बार बार बर मांगौं हरषि देहु श्रीरंग ।
पदसरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥
बरनि उमापति रामगुन हरषि गए कैलास ।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास । १५ ॥

चौ० । सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिबिधताप भवभयदावनी ॥
महाराज कर सुभ अभिषेका । सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका ॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख संपति नाना बिधि पावहिं ॥
सुरदुर्लभ सुख करि जग माहीं । अंतकाल रघुपतिपुर जाहीं ॥
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई । लहहिं भगति गति संपति नई ॥
खगपति रामकथा मैं बरनी । सुमतिबिलास त्रासदुखहरनी ॥
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी । मोहनदी कहँ सुंदर तरनी ॥
नित नव मंगल कौसलपुरी । हरषित रहहिं लोग सब कुरी ॥
नित नइ प्रीति रामपद पंकज । सब के जिन्हहिं नमत सिव मुनि अज ॥
मंगन बहु प्रकार पहिराए । द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए ॥

दो० । ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभुपद प्रीति ।
जात न जाने दिवस निसि गए मास षट बीति । १६ ॥

चौ० । बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं । जिमि परद्रोह संत मन माहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिर नाए ॥
परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु बचन उचारे ॥
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई ॥
ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवनसुख त्यागे ॥
अनुज राज संपति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब के प्रिय सेवक यह नीती । मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दो० । अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अति प्रेम । १७ ॥

चौ० । सुनि प्रभुबचन मगन सब भए । को हम कहाँ बिसरि तन गए ॥
एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा बिबिधि बिधि ग्यान बिसेखा ॥
प्रभुसन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरनसरोज निहारहिं ॥
तब प्रभु भूषन बसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराए । बसन भरत निज हाथ बनाए ॥
प्रभुप्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥
अंगद बैठि रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो० । जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।
हिय धरि रामरूप सब चले नाइ पद माथ ॥
तब अंगद उठि नाइ सिर सजल नयन कर जोरि ।
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेमरस बोरि । १८ ॥

चौ० । सुनु सर्बज्ञ कृपासुखसिंधो । दीनदयाकर आरतबंधो ॥
मरती बेर नाथ मोहि बाली । गयो तुम्हारेहि कोछे घाली ॥
असरनसरन बिरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगतहितकारी ॥
मोरे तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउं कहां तजि पदजलजाता ॥
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥
बालक ज्ञानबुद्धिबलहीना । राखहु सरन जानि जन दीना ॥
नीच टहल गृह कै सब करिहौं । पदपंकज बिलोकि भव तरिहौं ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दो० । अंगदबचन बिनीत सुनि रघुपति करुनासींव ।
प्रभु उठाइ उर लाएउ सजलनयनराजीव ॥
निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ ।
बिदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ । १९ ॥

चौ० । भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भगतकृतचेता ॥
अंगदहृदय प्रेम नहि थोरा । फिरि फिरि चितव राम की ओरा ॥
बार बार कर दंडप्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ॥
रामबिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हसि मिलनी ॥
प्रभुरुख देखि बिनय बहु भाषी । चलेउ हृदय पदपंकज राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुंचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ॥
तब सुग्रीव चरन गहि नाना । भांति बिनय कीन्ही हनुमाना ॥
दिन दस करि रघुपतिपदसेवा । पुनि तव चरन देखिहौं देवा ॥
पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपाआगारा ॥
अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहै सुनहु हनुमंता ॥

दो० । कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहौं कर जोरि ।
बार बार रघुनायकहिं सुरति कराएहु मोरि ॥
अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित खगेस अस राम कर समुझि परै कहु काहि । २० ॥

चौ० । पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा । दीन्हे भूषन बसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू । मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू ॥
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥
बचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥
चरननलिन उर धरि गृह आवा । प्रभुसुभाव परिजनन्हि सुनावा ॥

रघुपतिचरित देखि पुरबासी । पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी ॥
रामराज बैठे त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥
बयरु न कर काहू सन कोई । रामप्रताप बिषमता खोई ॥

दो० । बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेदपथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहिं भय सोक न रोग । २१ ॥

चौ० । दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज नहिं काहुहि ब्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्मनिरत स्रुति नीती ॥
चारिउ चरन धरम जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुं अघ नाहीं ॥
रामभगतिरत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब बिरुज सरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना ॥
सब निर्दंभ धरमरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
सब गुनग्य सब पंडित ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

दो० । रामराज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं ।
काल कर्म सुभाउ गुन कृत दुख काहुहि नाहिं । २२ ॥

चौ० । भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोसला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह बरनत हीनता घनेरी ॥
सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी । फिरि एहि चरित तिन्हहु रति मानी ॥
सोउ जाने कर फल यह लीला । कहहिं महा मुनिबर दमसीला ॥
रामराज कर सुख संपदा । बरनि न सकै फनीस सारदा ॥
सब उदार सब परउपकारी । बिप्रचरनसेवक नर नारी ॥
एक नारि ब्रतरत सब झारी । ते मन बच क्रम पतिहितकारी ॥

दो० । दंड यतिन्ह कर भेद जहं नर्तक नृत्यसमाज ।
जीतहु मनहिं सुनिय अस रामचंद्र के राज । २३ ॥

चौ० । फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहहिं एक संग गज पंचानन ॥
खग मृग सहज बैर बिसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा । अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदा । गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥
लता बिटप मांगे मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥
ससिसंपन्न सदा रह धरनी । त्रेता भइ कृतजुग कै करनी ॥
प्रगटी गिरिन्ह बिबिध मनिखानी । जगदातमा भूप जग जानी ॥
सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥

सागर निज मरजादा रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दसदिसाबिभागा ॥

दो० । बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज ।
मांगे बारिद देहिं जल रामचंद्र के राज । २४ ॥

चौ० । कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे । दान अनेक द्विजन्ह कहं दीन्हे ॥
श्रुतिपथपालक धरमधुरंधर । गुनातीत अरु भोग पुरंदर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता । सोभा खानि सुसील बिनीता ॥
जानति कृपासिंधुप्रभुताई । सेवति चरन कमल मन लाई ॥
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी । बिपुल सकल सेवाबिधि गुनी ॥
निज कर गृह परिचरजा करई । रामचंद्रआयसु अनुसरई ॥
जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ । सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ ॥
कौसल्यादि सासु गृह माहीं । सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्मादिबंदिता । जगदंबा संततमनिंदिता ॥

दो० । जासु कृपा कटाच्छ सुर चाहत चितव न सोइ ।
रामपदारबिंदरति करति सुभावहि खोइ । २५ ॥

चौ० । सेवहिं सानकूल सब भाई । रामचरनरति अति अधिकाई ॥
प्रभुमुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुं कृपाल हमहिं कछु कहहीं ॥
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भांति सिखावहिं नीती ॥
हरषित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा ॥
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं । श्रीरघुबीरचरनरति चहहीं ॥
दुइ सुत सुंदर सीता जाए । लव कुस बेद पुरानन्ह गाए ॥
दोउ बिजयी बिनयी गुनमंदिर । हरिप्रतिबिंब मनहु अति सुंदर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो० । ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।
सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार । २६ ॥

चौ० । प्रात काल सरजू करि मज्जन । बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
बेद पुरान बसिष्ठ बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥
भरत सत्रुहन दोनौ भाई । सहित पवनसुत उपबन जाई ॥
बूझहिं बैठि रामगुनगाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं ॥
सब के गृह गृह होहिं पुराना । रामचरित पावन बिधि नाना ॥
नर अरु नारि रामगुनगानहिं । करहिं दिवस निसि जात न जानहिं ॥

। अवधपुरीबासिन्ह कर सुख संपदासमाज
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहं नृप राम बिराज । २६ ॥

। नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन लागि कोसलाधीसा ॥
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं । देखि नगर बिराग बिसरावहिं ॥
जातरूपमनिरचित अटारी । नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुं पास कोट अति सुंदर । रचे कंगूरा रंग रंग बर ॥
नवग्रहनिकर अनीक बनाई । जनु घेरी अमरावति आई ॥
महि बहु रंग रचित गच कांचा । जो बिलोकि मुनिबरमन नाचा ॥
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । कलस मनहु रबिससिदुति निंदत ॥
बहु मनिरचित झरोखा भ्राजहिं । गृह गृह प्रति मनिदीप बिराजहिं ॥

छं० । मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रची ।
मनिखंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत खची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहुबज्रन्हि खचे । ६ ॥

दो० । चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ।
रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चोराइ । २७ ॥

चौ० । सुमनबाटिका सबहिं लगाई । बिबिधि भांति करि जतन बनाई ॥
लता ललित बहु जाति सुहाई । फूलहिं सदा बसंत कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर ॥
नाना खग बालकन्हि जिआए । बोलत मधुर उड़ात सोहाए ॥
मोर हंस सारस पारावत । भवननि पर सोभा अतिपावत ॥
जहं तहं देखहिं निज परिछाहीं । बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक । कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजदुआर सकल बिधि चारू । बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥

छं० । बाजार चारु न बनै बरनत बस्तु बिनु गथ पाइए ।
जहं भूप रमानिवास तहं की संपदा किमि गाइए ॥
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहु कुबेर ते ।
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे । ७ ॥

दो० । उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर ।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर । २८ ॥

चौ० । दूरि फराक रुचिर सो घाटा । जहं जल पिअहिं बाजिगजठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना । तहां न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
राजघाट सब बिधि सुंदर बर । मज्जहिं तहां बरन चारिउ नर ॥

तीर तीर देवन्ह के मंदिर । चहुं दिसि तिन्ह के उपबन सुंदर ॥
कहुं कहुं सरिता तीर उदासी । बसहिं ग्यानरत मुनि संन्यासी ॥
तीर तीर तुलसिका सुहाई । बृन्द बृन्द बहु मुनिन्ह लगाई ॥
पुरसोभा कछु बरनि न जाई । बाहेर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल अघ भागा । बन उपबन बापिका तड़ागा ॥

छं० । बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ।
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।
आराम रम्य पिकादि खगरव जनु पथिक हंकारहीं । ८ ॥

दो० । रमानाथ जहं राजा सो पुर बरनि कि जाइ ।
अनिमादिक सुख संपदा रही अवध सब छाइ । ३० ॥

चौ० । जहं तहं नर रघुपतिगुन गावहिं । बैठि परस्पर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रनतप्रतिपालक रामहिं । सोभासीलरूपगुनधामहिं ॥
जलज बिलोचन स्यामलगातहिं । पलक नयन इव सेवकत्रातहिं ॥
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहिं । संत कंज बन रवि रनधीरहिं ॥
काल कराल ब्याल खगराजहि । नमत राम अकाम ममता जहि ॥
लोभ मोह मृगजूथ किरातहिं । मनसिज करि हरिजन सुखदातहिं ॥
संसय सोक निबिड़ तम भानुहिं । दनुज गहन घन दहन कृसानुहिं ॥
जनकसुता समेत रघुबीरहिं । कस न भजहु भंजन भवभीरहिं ॥
बहुबासना मसक हिमरासिहिं । सदा एकरस अज अबिनासिहिं ॥
मुनिरंजन भंजन महिभारहिं । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहिं ॥

दो० । एहि बिधि नगरनारिनर करहिं रामगुन गान ।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान । ३१

चौ० । जब तें रामप्रताप खगेसा । उदित भयो अति प्रबल दिनेसा ॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुं लोका । बहुतेहु सुख बहुतन्ह मन सोका ॥
जिन्हहि सोक ते कहौं बखानी । प्रथम अबिद्या निसा नसानी ॥
अघ उलूक जहं तहां लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ । ये चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनर न कवनिहु ओरा ॥
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना । ये पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
सुख संतोष बिराग बिबेका । बिगत सोक ये कोक अनेका ॥

दो० । यह प्रताप रबि जा के उर जब करै प्रकास ।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास । ३२ ॥

। भ्रातन्ह सहित राम एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
दर उपबन देखन गए । सब तरु कुसुमित पल्लव नए ॥
ानि समय सनकादिक आए । तेजपुंज गुन सील सुहाए ॥
ह्मानंद सदा लयलीना । देखत बालक बहुकालीना ॥
प धरे जनु चारिउ बेदा । समदरसी मुनि बिगतबिभेदा ॥
ासा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं । रघुपतिचरित होइ तहं सुनहीं ॥
हां रहे सनकादि भवानी । जहं घटसंभव मुनिबर ग्यानी ॥
ामकथा मुनिबर बहु बरनी । ग्यानजोनि पावक जिमि अरनी ॥

० । देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह ।
स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहं दीन्ह । ३३ ॥

० । कीन्ह दंडवत तीनिउ भाई । सहित पवनसुत सुखअधिकाई ॥
मुनि रघुपतिछबि अतुल बिलोकी । भए मगन मन सके न रोकी ॥
स्यामल गात सरोरुह लोचन । सुंदरतामंदिर भवमोचन ॥
एकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं ॥
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा । स्रवत नयनजल पुलक सरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे । परम मनोहर बचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा । तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा ॥
बड़े भाग पाइब सतसंगा । बिनहि प्रयास होहिं भवभंगा ॥

ो० । संतसंग अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहिं संत कबि कोबिद स्रुति पुरान सदग्रंथ । ३४ ॥

ौ० । सुनि प्रभुबचन हरषि मुनिचारी । पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुनसागर । सुखमंदिर सुंदर अति नागर ॥
जय इंदिरारमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
ग्याननिधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान बेद बद ॥
तग्य कृतग्य अग्यताभंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्ब सर्बगत सर्बउरालय । बससि सदा हम कहुं परिपालय ॥
द्वंदबिपति भवफंद बिभंजय । हृदि बसि राम काम मद गंजय ॥

दो० । परमानंद कृपायतन मन परिपूरनकाम ।
प्रेमभगति अनपायनी देहु हमहिं श्रीराम । ३५ ॥

चौ० । देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिबिध ताप भवदापनसावनि ॥
प्रनतकाम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु ॥
भववारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत सुलभ सकलसुखदायक ॥

मनसंभव दारुन दुख दारय । दीनबंधु समता बिस्तारय ॥
आस त्रास इरषादिनिवारक । बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ॥
भूपमौलिमनि मंडनधरनी । देहि भगति संसृतिसरि तरनी ॥
मुनिमनमानसहंस निरंतर । चरनकमल बंदित अज संकर ॥
रघुकुलकेतु सेतु स्रुति रच्छक । काल कर्म सुभावगुनभच्छक ॥
तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवनभूषन ॥

दो० । बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिर नाइ ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे अति अभिष्ट बर पाइ । ३६ ॥

चौ० । सनकादिक बिधिलोक सिधाए । भ्रातन्ह रामचरन सिर नाए ॥
पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं । चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
सुनी चहहिं प्रभुमुख कै बानी । जो सुनि होइ सकलभ्रमहानी ॥
अंतरजामी प्रभु सब जाना । बूझत कहहु काह हनुमाना ॥
जोरि पानि कह तब हनुमंता । सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं । प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ॥
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहिं न अंतर काऊ ॥
सुनि प्रभुबचन भरत गहे चरना । सुनहु नाथ प्रनतारतिहरना ॥

दो० । नाथ न मोहिं संदेह कछु सपनेहु सोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंदसंदोह । ३७ ॥

चौ० । करौं कृपानिधि एक ढिठाई । मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई ॥
संतन्ह कै महिमा रघुराई । बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई ॥
स्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई । तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई ॥
सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लच्छन । कृपासिंधु गुन ग्यान बिचच्छन ॥
संत असंत भेद बिलगाई । प्रनतपाल मोहिं कहहु बुझाई ॥
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता । अगनित स्रुति पुरान बिख्याता ॥
संत असंतन्हि कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥
काटै परसु मलय सुनु भाई । निज गुन देइ सुगंध बसाई ॥

दो० । ता तें सुरसीसन्ह चढ़त जगबल्लभ स्रीखंड ।
अनल दाहि पीटत घनहिं परसुबदन यह दंड । ३८ ॥

चौ० । बिषय अलंपट सील गुनाकर । परदुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
सम अभूत रिपु बिमद बिरागी । लोभामरष हरष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीनन्ह पर दाया । मन बच क्रम मम भगति अमाया ॥
सबहिं मानप्रद आप अमानी । भरत प्रान सम मम ते प्रानी ॥
बिगतकाम मम नामपरायन । सांति बिरति बिनती मुदितायन ॥

सीतलता सरलता मयत्री । द्विजपदप्रीति धर्म जनयत्री ॥
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर । जानेहु तात संत संतत फुर ॥
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं । परुष बचन कबहूं नहिं बोलहिं ॥

दो० । निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पदकंज ।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुनमंदिर सुखपुंज । ३९ ॥

चौ० । सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । भूलेहु संगति करिय न काऊ ॥
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कपिलहि घालै हरहाई ॥
खलन्ह हृदय अति ताप बिसेखी । जरहिं सदा परसंपति देखी ॥
जहं कहुं निंदा सुनहिं पराई । हरखै मनहु परी निधि पाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
बयरु अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ॥
झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा । खाहिं महा अहि हृदय कठोरा ॥

दो० । परद्रोही परदार रत परधन पर अपवाद ।
ते नर पांवर पापमय देह धरे मनुजाद । ४० ॥

चौ० । लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । सिस्नोदरपर जमपुर त्रास न ॥
काहू कै जौं सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहू कै देखहिं बिपती । सुखी भए मानहु जग नृपती ॥
स्वारथरत परिवार बिरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥
मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥
करहिं मोहबस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥
अवगुनसिंधु मंदमति कामी । बेद बिदूषक परधनस्वामी ॥
बिप्रद्रोह सुरद्रोह बिसेखा । दंभ कपट जिय धरे सुबेखा ॥

दो० । ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं । ४१ ॥

चौ० । परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परपीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
निरनय सकल पुरान बेद कर । कहेउं तात जानहिं कोबिद नर ॥
नर सरीर धरि जे परपीरा । करहिं ते सहहिं महा भवभीरा ॥
करहिं मोहबस नर अघ नाना । स्वारथरत परलोक नसाना ॥
कालरूप तिन्ह कहं मैं भ्राता । सुभ अरु असुभ करम फलदाता ॥
अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहि संसृति दुख जाने ॥
त्यागहिं कर्म सुभासुभदायक । भजहिं मोहि सुरनरमुनिनायक ॥
संत असंतन्ह के गुन भाषे । ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥

दो० । सुनहु तात मायाकृत गुन अरु दोष अनेक ।
गुन यह उभय न देखिअहि देखिय सो अबिबेक । ४२ ॥

चौ० । श्रीमुखबचन सुनत सब भाई । हरषे प्रेम न हृदय समाई ॥
करहिं बिनय अति बारहि बारा । हनूमानहिय हरष अपारा ॥
पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि बिधि चरित करत नित नए ॥
बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत राम के गावहिं ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनि बिरंचि अतिशय सुख मानहिं । पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं ॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं । यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं ॥
सुनि गुनगान समाधि बिसारी । सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

दो० । जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।
जे हरि कथा न करहिं रति तिन्ह के हिय पाषान । ४३ ॥

चौ० । एक बार रघुनाथ बोलाए । गुरद्विज पुरबासी सब आए ॥
बैठे सभा संग द्विज सज्जन । बोले बचन भगतभयभंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहौं न कछु ममता उर आनी ॥
नहि अनीति नहि कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जौं तुम्हहि सोहाई ॥
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन मानै जोई ॥
जौं अनीति कछु भाषौं भाई । तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ॥
बड़ भाग मानुषतन पावा । सुरदुर्लभ सब ग्रंथन्ह गावा ॥
साधनधाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहि परलोक संवारा ॥

दो० । सो परत्र दुख पावै सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहिं कर्महिं ईस्वरहिं मिथ्या दोष लगाइ । ४४

चौ० । एहि तन कर फल बिषय न भाई । स्वर्गौ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
नरतनु पाइ बिषय मनु देहीं । पलटि सुधा तें सठ बिष लेहीं ॥
ताहि कबहुं भल कहै न कोई । गुंजा गहै परसमनि खोई ॥
आकर चारि लच्छ चौरासी । योनि भ्रमत यह जिव अबिनासी ॥
फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभावगुन घेरा ॥
कबहुंक करि करुना नरदेही । देत ईस बिनु हेतु सनेही ॥
नरतन भववारिधि कहं बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करनधार सद्गुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साजु सुलभ करि पावा ॥

दो० । जो न तरै भवसागर नरसमाज अस पाइ ।
सो कृतनिंदक मंदमति आत्माहनगति जाइ । ४५ ॥

चौ० । जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू ॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई । भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहं टेका ॥
करत कष्ट बहु पावै कोऊ । भक्तिहीन प्रिय मोहि न सोऊ ॥
भक्ति स्वतंत्र सकलसुखखानी । बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुन्यपुंज बिनु मिलहिं न संता । सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुन्य एक जग महुं नहिं दूजा । मन क्रम बचन बिप्रपदपूजा ॥
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । जो तजि कपट करै द्विजसेवा ॥

दो० । औरौ एक गुप्त मत सबहिं कहौं कर जोरि ।
संकरभजन बिना नर भगति न पावै मोरि । ४६ ॥

चौ० । कहहु भगतिपथ कवन प्रयासा । योग न मख जप तप उपवासा ॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । यथालाभ संतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नरआसा । करै तौ कहहु कहा बिस्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई । येहि आचरन बस्य मैं भाई ॥
बैर न बिग्रह आस न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दक्ष बिग्यानी ॥
प्रीति सदा सज्जनसंसर्गा । तृन सम बिषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्तिपच्छ हठ नहिं सठताई । दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ॥

दो० । मम गुनग्राम नामरत गत ममता मद मोह ।
ता कर सुख सोइ जानै परानंदसंदोह । ४७ ॥

चौ० । सुनत सुधा सम बचन राम के । गहे सबनि पद कृपाधाम के ॥
जननि जनक गुर बंधु हमारे । कृपानिधान प्रान तें प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी । सब बिधि तुम्ह प्रनतारतिहारी ॥
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ । मातु पिता स्वारथरत ओऊ ॥
हेतुरहित जग जुग उपकारी । तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं । सपनेहुं प्रभु परमारथ नाहीं ॥
सब के बचन प्रेमरस साने । सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने ॥
निज निज गृह गए आयसु पाई । बरनत प्रभुबतकही सुहाई ॥

दो० । उमा अवधबासी नर नारि कृतारथरूप ।
ब्रह्म सच्चिदानंदमय रघुनायक जहं भूप । ४८ ॥

चौ० । एक बार बसिष्ट मुनि आए । जहां राम सुखधाम सुहाए ॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा । पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी । कृपासिंधु बिनती कछु मोरी ॥

देखि देखि आचरन तुम्हारा । होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित बेद नहिं जाना । मैं केहि भाँति कहौं भगवाना ॥
उपरोहित्य कर्म अति मंदा । बेद पुरान सुमृति कर निंदा ॥
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही । कहा लाभ आगे सुत तोही ॥
परमातमा ब्रह्म नररूपा । होइहहिं रघुकुल भूषन भूपा ॥

दो० । तब मैं हृदय बिचारा जोग यज्ञ ब्रत दान ।
जा कहुं करिय सो पैहौं धर्म न एहि सम आन । ४८ ॥

चौ० । जप तप नियम जोग निज धर्मा । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥
ज्ञान दया दम तीरथमज्जन । जहँ लगि धरम कहत श्रुति सज्जन ॥
आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पदपंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुन्दर ॥
छूटै मल कि मलहि के धोए । घृत कि पाव कोउ बारि बिलोए ॥
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । अभि अंतर मल कबहुं न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित । सोइ गुनगृह बिज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल लक्षनयुत सोई । जा के पदसरोज रति होई ॥

दो० । नाथ एक बर मागौं राम कृपा करि देहु ।
जन्म जन्म प्रभुपदकमल कबहुं घटै जनि नेहु । ५० ॥

चौ० । अस कहि मुनि बसिष्ठगृह आए । कृपासिंधु के मन अति भाए ॥
हनुमान भरतादिक भ्राता । संग लिये सेवकसुखदाता ॥
पुनि कृपाल पुरबाहिर गए । गज रथ तुरग मगावत भए ॥
देखि कृपा करि सकल सराहे । दिये उचित जिन्ह जिन्ह जोइ चाहे ॥
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई । गए जहाँ सीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज बसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत तब मारुत करई । पुलकि बपुष लोचन जल भरई ॥
हनुमान सम नहिं बड़भागी । नहि कोउ रामचरनअनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दो० । तेहि अवसर नारद मुनि आइ करतल बीन ।
गावन लागे रामकलकीरति सदा नबीन । ५१ ॥

चौ० । मामवलोकय पंकजलोचन । कृपाबिलोकनि सोचबिमोचन ॥
नीलतामरस स्याम कामअरि । हृदयकंजमकरंद मधुप हरि ॥
जातुधानबरूथबलभंजन । मुनिसज्जनरंजन अघगंजन ॥
भूसुरससि नव बृंद बलाहक । असरनसरन दीनजनगाहक ॥
भुजबल बिपुलभार महि खंडित । खरदूषनबिराधबध पंडित ॥

रावनारि सुखरूप भूपबर । जय दसरथकुलकुमुद सुधाकर ॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम । गावत सुर मुनि संतसमागम ॥
कारुनीक ब्यलीकमदखंडन । सब बिधि कुसल कोसलामंडन ॥
कलिमलमथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

दो० । प्रेम सहित मुनि नारद बरनि रामगुनग्राम ।
सोभासिंधु हृदय धरि गए जहाँ बिधिधाम । ५१ ॥

चौ० । गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । मैं सब कही मोरि मति जथा ॥
रामचरित सतकोटि अपारा । स्रुति सारदा न बरनै पारा ॥
राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥
जलसीकर महिरज गनि जाहीं । रघुपतिचरित न बरनि सिराहीं ॥
बिमल कथा हरिपददायनी । भगति होइ सुनि अनपायनी ॥
उमा कही सब कथा सुहाई । जो भसुंडि खगपतिहि सुनाई ॥
कछुक रामगुन कहेउँ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । बोली अति बिनीत मृदु बानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ रामगुन भवभयहारी ॥

दो० । तुम्हरी कृपा कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ रामप्रताप प्रभु चिदानंदसंदोह ॥
नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुबीर ।
स्रवनपुटन्हि मन पान करि नहि अघात मतिधीर । ५२ ॥

चौ० । रामचरित जे सुनत अघाहीं । रस बिसेषि जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरिगुन सुनहिं निरंतर तेऊ ॥
भवसागर चह पार जो पावा । रामकथा ता कहँ दृढ़ नावा ॥
बिषइन्ह कहँ पुनि हरिगुनग्रामा । स्रवन सुखद अरु मनअभिरामा ॥
स्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहि न रघुपतिचरित सोहाहीं ॥
ते जड़जीव निजातमघाती । जिन्हहिं न रघुपतिकथा सोहाती ॥
हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंडि गरुड़ प्रति गाई ॥

दो० । बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ रामचरन अति नेह ।
बायसतन रघुपतिभगति मोहि परम संदेह । ५३ ॥

चौ० । नरसहस्र महँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्मब्रतधारी ॥
धर्मसील कोटिक महँ कोई । बिषयबिमुख बिरागरत होई ॥
कोटि बिरक्त मध्य स्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई ॥
ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥

तिन्ह सहस्र महं सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्मलीन बिज्ञानी ॥
धर्मशील बिरक्त अरु ज्ञानी । जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी ॥
सब तें सो दुर्लभ सुरराया । रामभक्तिरत गतमदमाया ॥
सो हरिभक्ति काग किमि पाई । बिश्वनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दो० । रामपरायन ज्ञानरत गुनागार मतिधीर ।
नाथ कहहु केहि कारन पायउ कागशरीर । ५५ ॥

चौ० । यह प्रभुचरित पवित्र सोहावा । कहहु कृपाल काग कहं पावा ॥
तुम्ह केहि भांति सुना मदनारी । कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥
गरुड़ महाज्ञानी गुनराशी । हरिसेवक अतिनिकटनिवासी ॥
तेहि केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ॥
कहहु कवन बिधि भा संबादा । दोउ हरि भक्त काग उरगादा ॥
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई । बोले शिव सादर सुख पाई ॥
धन्य सती पावन मति तोरी । रघुपतिचरन प्रीति नहिं थोरी ॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि सकल लोकभ्रम नाशा ॥
उपजै राम चरनबिश्वासा । भवनिधि तर नर बिनहि प्रयासा ॥

दो० । ऐसइ प्रश्न बिहंगपति कीन्ह काग सन जाइ ।
सो सब सादर कहिहौं सुनहु उमा मन लाइ । ५६ ॥

चौ० । मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि । सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥
प्रथम दक्षगृह तव अवतारा । सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्षयज्ञ तव भा अपमाना । तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राना ॥
मम अनुचरन्ह कीन्ह मखभंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥
तब अति सोच भयो मन मोरे । दुखी भयउं बियोग प्रिय तोरे ॥
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा । कौतुक देखत फिरौं बिरागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी । नील शैल एक सुंदर भूरी ॥
तासु कनकमय शिखर सुहाए । चारि चारु मोरे मन भाए ॥
तिन्ह पर एक एक बिटप बिशाला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनिसोपान देखि मन मोहा ॥

दो० । शीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहु रंग ।
कूजत कल रव हंसगन गुंजत मंजुल भृंग । ५७ ॥

चौ० । तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई । तासु नाश कल्पांत न होई ॥
मायाकृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अबिबेका ॥
रहे ब्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुं नहि जाहीं ॥
तहं बसि हरिहि भजै जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥

पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥
आंब छांह कर मानस पूजा । तजि हरिभजन काज नहिं दूजा ॥
बट तर कह हरिकथाप्रसंगा । आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥
रामचरित्र बिचित्र बिधाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
सुनहिं सकल मति बिमल मराला । बसहिं निरंतर जे तेहि ताला ॥
जब मैं आइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद बिसेषा ॥

दो० । तब कछु काल मरालतनु धरि तहं कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपतिगुन पुनि आएउं कैलास । ५८ ॥

चौ० । गिरिजा कहेउं सो सब इतिहासा । मैं जेहि समय गएउं खग पासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । गएउ काग पहिं खगकुलकेतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रनक्रीड़ा । समुझत चरित होत मोहि ब्रीड़ा ॥
इंद्रजीतकर आपु बंधायो । तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥
बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदय प्रचंड बिषादा ॥
प्रभुबंधन समुझत बहु भांती । करत बिचार उरगआराती ॥
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । माया मोह पार परमीसा ॥
सो अवतार सुनेउं जग माहीं । देखेउं सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो० । भवबंधन तें छूटहिं नर जपि जा कर नाम ।
खर्ब निसाचर बांधेउ नागपास सोइ राम । ५९ ॥

चौ० । नाना भांति मनहि समुझावा । प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा ॥
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयो मोहबस तुम्हरिहि नाई ॥
ब्याकुल गएउ देवरिषि पाहीं । कहेसि जो संसय निज मन माहीं ॥
सुनि नारदहि लागि अति दाया । सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई । बरिआईं बिमोह मन करई ॥
जेहि बहु बार नचावा मोही । सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही ॥
महामोह उपजा उर तोरे । मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे ॥
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

दो० । अस कहि चले देवरिषि करत रामगुन गान ।
हरिमायाबल बरनत पुनि पुनि परम सुजान । ६० ॥

चौ० । तब खगपति बिरंचि पहं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥
सुनि बिरंचि रामहिं सिर नावा । समुझि प्रताप प्रेम अति छावा ॥
मन महं करै बिचार बिधाता । माया बस कबि कोबिद ज्ञाता ॥
हरिमाया कर अमित प्रभावा । बिपुल बार जेहिं मोहि नचावा ॥
अगजगमय जग मम उपराजा । नहिं आचरज मोह खगराजा ॥

तब बोले बिधि गिरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुताई ॥
बैनतेय संकर पहिं जाहू । तात अनत पूछहु जनि काहू ॥
तहं होइहि तव संसय हानी । चलेउ बिहंग सुनत बिधिबानी ॥

दो० । परमातुर बिहंगपति आयउ तब मो पास ।
जात रहेउं कुबेरग्टह रहिहु उमा कैलास । ६१ ॥

चौ० । तेहि मम पद सादर सिर नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
सुनि ता करि बिनती मृदुबानी । प्रेम सहित मैं कहेउं भवानी ॥
मिलेहु गरुड़ मारग मह मोही । कवन भांति समुझावौं तोही ॥
तबहि होइ सब संसय भंगा । जब बहु काल करिय सतसंगा ॥
सुनिय तहां हरिकथा सुहाई । नाना भांति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहि महं आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरिकथा होति जहं भाई । पठवउं तहां सुनहु तुम्ह जाई ॥
जाइहि सुनत सकल संदेहा । रामचरन होइहि अति नेहा ॥

दो० । बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गए बिनु रामपद होइ न दृढ अनुराग । ६२ ॥

चौ० । मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । किए जोग जप ज्ञान बिरागा ॥
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहं रह काकभसुंडि सुसीला ॥
रामभगतिपथ परम प्रबीना । ज्ञानीगुनग्टह बहु कालीना ॥
रामकथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनहिं बिबिध बिहंग बर ॥
जाइ सुनहु तहं हरिगुन भूरी । होइहि मोहजनित दुख दूरी ॥
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद सिर नाई ॥
ता तें उमा न मैं समुझावा । रघुपतिकृपा मरम मैं पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुं अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहि तें पुनि मैं नहिं राखा । समुझै खग खगही कै भाषा ॥
प्रभुमाया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी ॥

दो० । ज्ञानी भगत सिरोमनि त्रिभुवन पति कर जान ।
ताहि मोह माया नर पावर करहिं गुमान ॥
सिव बिरंचि कहं मोहै को है बपुरा आन ।
अस जिय जानि भजहिं मुनि मायापति भगवान । ६३ ॥

चौ० । गयउ गरुड़ जहं बसै भसुंडा । मति अकुंठ हरिभगति अखंडा ॥
देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सब गयऊ ॥
करि तड़ाग मज्जन जलपाना । बट तर गयउ हृदय हरषाना ॥
दृद्ध दृद्ध बिहंग तहं आए । सुनै राम के चरित सोहाए ॥
कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥

आवत देखि सकल खगराजा । हरषेउ बायस सहित समाजा ॥
अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन तब बोलेउ कागा ॥

दो० । नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज ।
आयसु होइ सो करउँ अब प्रभु आयहु केहि काज ॥
सदा कृतारथ रूप तुम कह मृदु बचन खगेस ।
जेहि कै अस्तुति सादर निजमुख कीन्हि महेस । ६४ ॥

चौ० । सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अति पावनि । सदा सुखद दुखपुंजनसावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोही । बार बार बिनवौं प्रभु तोही ॥
सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता । सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुनगाहा ॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । रामचरित सर कहेसि बखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥
प्रभुअवतार कथा पुनि गाई । तब सिसुचरित कहेसि मन लाई ॥

दो० । बालचरित कहि बिबिध बिधि मन महँ परम उछाह ।
रिषिआगमन कहेसि पुनि श्रीरघुबीरबिबाह । ६५ ॥

चौ० । बहुरि रामअभिषेकप्रसंगा । पुनि नृपबचन राजरसभंगा ॥
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा । कहेसि रामलछिमनसंबादा ॥
बिपिनगवन केवटअनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
बालमीकि प्रभुमिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥
सचिवागमन नगर नृप मरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥
करि नृप क्रिया संग पुरबासी । भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ॥
भरत रहनि सुरपतिसुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

दो० । कहि बिराधबध जेहि बिधि देह तजी सरभंग ।
बरनि सुतीछनप्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग । ६६ ॥

चौ० । कहि दंडक बन पावनताई । गीधमइत्री पुनि तेहि गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटी कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥
खरदूषनबध बहुरि बखाना । जिमि सब मरम दसानन जाना ॥
दसकंधर मारीच बतकही । जेहि बिधि भई सो सब तेहि कही ॥

पुनि मायासीता कर हरना । श्रीरघुबीरबिरह कछु बरना ॥
पुनि प्रभु गीधक्रिया जिमि कीन्ही । बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही ॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा । जेहि बिधि गए सरोबरतीरा ॥

दो० । प्रभु नारदसंबाद कहि मारुतिमिलनप्रसंग ।
पुनि सुग्रीवमिताई बालिप्रान कर भंग ॥
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास ।
बरनन बरषा सरद अरु रामरोष कपित्रास । ६७ ॥

चौ० । जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए । सीताखोज सकल दिसि धाए ॥
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा । नाघत भयेउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपिप्रबेस जिमि कीन्हा । पुनि सीतहि धीरज जिमि दीन्हा ॥
बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥
आए कपि सब जहँ रघुराई । बैदेही की कुसल सुनाई ॥
सेन समेत जथा रघुबीरा । उतरे जाइ बारिनिधितीरा ॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । सागरनिग्रहकथा सुनाई ॥

दो० । सेतु बाँधि कपिसेन जिमि उतरी सागर पार ।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार ॥
निसिचर कीस लराई बरनेसि बिबिध प्रकार ।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार । ६८ ॥

चौ० । निसिचरनिकरमरन बिधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥
रावन बध मंदोदरि सोका । राज बिभीषन देव असोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहि बिधि राम नगर निज आए । बायस बिसद चरित सब गाए ॥
कहेसि बहोरि रामअभिषेका । पुरबरनन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुसुंड बखानी । जो मैं तुम्ह सन कहेउँ भवानी ॥
सुनि सब रामकथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो० । गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।
भयउ रामपदनेह तव प्रसाद बायसतिलक ॥
मोहि भयउ अति मोह प्रभुबंधन रन महँ निरखि ।
चिदानंदसंदोह राम बिकल कारन कवन । ६९ ॥

चौ० । देखि चरित अति नर अनुसारी । भयउ हृदय मम संसय भारी ॥
सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

जो अति आतपब्याकुल होई । तरुछाया सुख जानै सोई ॥
जौं नहिं होत मोह अति मोही । मिलतेउं तात कवन बिधि तोही ॥
सुनतेउ किमि हरिकथा सुहाई । अति बिचित्र बहु बिधि तुम गाई ॥
निगमागम पुरान मत एहा । कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा ॥
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही । चितवहिं रामकृपा करि जेही ॥
रामकृपा तव दरसन भयऊ । तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥

दो० । सुनि बिहंगपतिबानी सहित बिनय अनुराग ।
पुलकगात लोचन सजल मन हरषेउ अति काग ॥
स्रोता सुमति सुसील सुचि कथारसिक हरिदास ।
पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास । ६९ ॥

चौ० । बोलेउ काकभसुंडि बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुम्हहिं न संसय मोह न माया । मो पर नाथ कीन्हि तुम दाया ॥
पठइ मोहमिस खगपति तोहीं । रघुपति दीन्हि बडाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कही खगसाईं । सो नहि कछु आचरज गोसाईं ॥
नारद भव बिरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमबादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥
तिस्ना केहि न कीन्ह बौराहा । केहि कर हृदय क्रोध नहि दाहा ॥

दो० । ज्ञानी तापस सूर कबि कोबिद गुनआगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहि संसार ॥
श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनिलोचन सर को अस लाग न जाहि । ७० ॥

चौ० । गुनकृत सन्यपात नहि केही । कोउ न मान मद तजेउ निबेही ॥
जोबनज्वर केहि नहि बलकावा । ममता केहि कर जस न नसावा ॥
मत्सर काहि कलंक न लावा । काहि न सोकसमीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि को नहि खावा । को जग जाहि न ब्यापी माया ॥
कीटमनोरथ दारुसरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ॥
सुत बित लोक ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमित को बरनै पारा ॥
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो० । ब्यापि रहेउ संसार महं मायाकटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाखंड ॥
सो दासी रघुबीर कै समुझे मिथ्या सोपि ।
छूट न रामकृपा बिनु नाथ कहौं पद रोपि । ७१ ॥

चौ० । जो माया सब जगहिं नचावा । जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रूबिलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानँद घन रामा । अज बिज्ञानरूप बलधामा ॥
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोघ सक्ति भगवंता ॥
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ॥
निर्मम निराकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुखसंदोहा ॥
प्रकृति पार प्रभु सब उरबासी । ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ॥
इहाँ मोह कर कारन नाहीं । रबिसन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

दो० । भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥
जथा अनेक बेष धरि नृत्य करै नट कोइ ।
सोइ सोइ भाव देखावै आपुन होइ न सोइ । ७२ ॥

चौ० । असि रघुपतिलीला उरगारी । दनुजबिमोहनि जनसुखकारी ॥
जे मतिमलिन बिषयबस कामी । प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयनदोष जा कहं जब होई । पीतबरन ससि कहं कछु सोई ॥
जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥
नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोहबस आपुहि लेखा ॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्याबादी ॥
हरिबिषयिक अस मोह बिहंगा । सपनेहु नहिं अज्ञानप्रसंगा ॥
मायाबस मतिमंद अभागी । हृदय जमनिका बहु बिधि लागी ॥
ते सठ हठबस संसय करहीं । निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥

दो० । काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं मूढ़ परे तमकूप ॥
निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनिमन भ्रम होइ । ७३ ॥

चौ० । सुनु खगेस रघुपतिप्रभुताई । कहौं जथामति कथा सुहाई ॥
जेहि बिधि मोह भयउ प्रभु मोही । सो सब कथा सुनावौं तोही ॥
रामकृपाभाजन तुम्ह ताता । हरिगुनप्रीति मोहि सुखदाता ॥
ता तें नहिं कछु तुम्हहिं दुरावौं । परम रहस्य मनोहर गावौं ॥
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जनअभिमान न राखहिं काऊ ॥
संसृतमूल सूलप्रद नाना । सकलसोकदायक अभिमाना ॥
ता तें करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥
जिमि सिसुतन ब्रन होइ गुसाईं । मातु चिराव कठिन की नाईं ॥

सो० । जदपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर ।
ब्याधिनास हित जननी गनत न सो सिसुपीर ॥
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि ।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं कस न भजहु भ्रम त्यागि । ७४ ॥

चौ० । रामकृपा आपनि जड़ताई । कहौं खगेस सुनहु मन लाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं । बालचरित बिलोकि हरषाऊं ॥
जन्ममहोत्सव देखौं जाई । बरष पांच तहं रहौं लोभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा । सोभावपुष कोटिसत कामा ॥
निज प्रभुबदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउं उरगारी ॥
लघुबायसबपु धरि हरि संगा । देखउं बालचरित बहु रंगा ॥

दो० । लरिकाईं जहं जहं फिरहिं तहं तहं संग उड़ाउं ।
जूठनि परै अजिर महं सो उठाइ करि खाउं ॥
एकबार अतिसय सब चरित किए रघुबीर ।
सुमिरत प्रभुलीला सोइ पुलकित भएउ सरीर । ७५ ॥

चौ० । कहै भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवकसुखदायक ॥
नृपमंदिर सुंदर सब भांती । खचित कनक मनि नाना जाती ॥
बरनि न जाइ रुचिर अंगनाई । जहं खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
बालबिनोद करत रघुराई । बिचरत अजिर जननिसुखदाई ॥
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छबि बहु कामा ॥
नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससिदुतिहरना ॥
ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुररवकारी ॥
चारुपुरट मनिरचित बनाई । कटिकिंकिनि कल मुखर सुहाई ॥

दो० । रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गंभीर ।
उर आयत भ्राजत बिबिध बालबिभूषन चीर । ७६ ॥

चौ० । अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥
कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छबिसींवा ॥
कलबल बचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससिकर सम हासा ॥
नील कंज लोचन भवमोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छबि छाए ॥
पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥
रूपरासि नृपअजिरबिहारी । नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ॥

मोहि लखि करहिं बिबिध बिधि क्रीडा । बरनत मोहि होति अति ब्रीडा ॥
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं । चलौं भागि तब पूप देखावहिं ॥

दो० । आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।
जाउं समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहिं ॥
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयो मोहि मोह ।
कवन चरित करत प्रभु चिदानंदसंदोह । ७७ ॥

चौ० । एतना मन आनत खगराया । रघुपतिप्रेरित ब्यापो माया ॥
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥
नाथ इहां कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥
ग्यान अखंड एक सीताबर । मायाबस्य जीव सचराचर ॥
जौं सब के रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहिं भेद कहहु कस ॥
मायाबस्य जीव अभिमानी । ईसबस्य माया गुनखानी ॥
परबस जीव स्वबस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥
मुधा भेद यद्यपि कृत माया । बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दो० । रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पुच्छ बिषान ॥
राकापति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ ।
सकल गिरिन्ह दव लाइय बिनु रबि राति न जाइ । ७८ ॥

चौ० । ऐसेहि बिनु हरि भजन खगेसा । मिटै न जीवन्ह केर कलेसा ॥
हरिसेवकहिं न ब्याप अबिद्या । प्रभुप्रेरित ब्यापै तेहि बिद्या ॥
ता तें नास न होइ दास कर । भेदभगति बाढै बिहंगबर ॥
भ्रम तें चकित राम मोहि देखा । बिहँसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥
तेहि कौतुक कर मरम न काहू । जाना अनुज न मातु पिताहू ॥
जानुपानि धाए मोहि धरना । स्यामल गात अरुन कर चरना ॥
तब मैं भागि चलेउं उरगारी । राम गहन कहं भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरि उड़ाउं अकासा । तहं तहं भुज देखौं निज पासा ॥

दो० । ब्रह्मलोक लगि गएउं मैं चितएउं पाछ उड़ात ।
जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहिं मोहि तात ॥
सप्तावरन भेद करि जहां लगे गति मोरि ।
गएउं तहां प्रभुभुज निरखि ब्याकुल भएउं बहोरि । ७९ ॥

चौ० । मूदेउं नयन त्रसित जब भएऊं । पुनि चितवत कोसलपुर गएऊं ॥
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं । बिहँसत तुरत गएउं मुख माहीं ॥
उदर माझ सुनु अंडजराया । देखेउं बहु ब्रह्मांडनिकाया ॥

अति बिचित्र तहं लोक अनेका । रचना अधिक एक तें एका ॥
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । अगनित उडगन रबि रजनीसा ॥
अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि बिसाला ॥
सागर सरि सर बिपिन अपारा । नाना भांति सृष्टि बिस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दो० । जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूं न समाइ ।
सो सब अद्भुत देखेउं बरनि कवनि बिधि जाइ ॥
एक एक ब्रह्मांड महं रहौं बरष सत एक ।
एहि बिधि देखत फिरौं मैं अंडकटाह अनेक । ८० ॥

चौ० । लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता । भिन्न बिष्णु सिव मनु दिसित्राता ॥
नर गंधर्ब भूत बेताला । किंनर निसिचर पसु खग ब्याला ॥
देवदनुजगन नाना जाती । सकल जीव तहं आनहि भांती ॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपंच तहं आनइ आना ॥
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा । देखेउं जिनस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रति भुवननिन्यारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दसरथ कौसल्या सब माता । बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रति ब्रह्मांड रामअवतारा । देखेउं बालबिनोद अपारा ॥

दो० । भिन्न भिन्न मैं दीख सब अति बिचित्र हरिजान ।
अगनित भुवन फिरेउं प्रभु राम न देखेउं आन ॥
सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोहसमीर । ८१ ॥

चौ० । भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहुं कलप सत एका ॥
फिरत फिरत निज आश्रम आएउं । तहं पुनि रहि कछु काल गवांएउं ॥
निज प्रभुजन्म अवध सुनि पाएउं । निर्भर प्रेम हरषि उठि धाएउं ॥
देखेउं जनममहोत्सव जाई । जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
रामउदर देखेउं जग नाना । देखत बनै न जाइ बखाना ॥
तहं पुनि देखेउं राम सुजाना । मायापति कृपाल भगवाना ॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी । मोहकलिल ब्यापित मति मोरी ॥
उभय घरी महं मैं सब देखा । भएउं भ्रमित मन मोह बिसेषा ॥

दो० । देखि कृपाल बिकल मोहि बिहंसे तब रघुबीर ।
बिहंसतही मुख बाहेर आएउं सुनु मतिधीर ॥
सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम ।
कोटि भांति समुझावौं मन न लहै बिश्राम । ८२ ॥

चौ० । देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा बिसराई ॥
धरनि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा । सेवकसुखद कृपासंदोहा ॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ॥
भगतबछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति बिसेखी ॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी । कीन्हिउँ बहु बिधि बिनय बहोरी ॥

दो० । सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास ।
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥
काकभसुंडी मांगु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिक सिधि अपर निधि मोच्छ सकलसुखखानि । ८३ ॥

चौ० । ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना । सुरदुर्लभ गुन जो जग जाना ॥
आजु देउँ सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभुबचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेउँ ॥
प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥
भगतिहीन गुन सुख सब कैसे । लौन बिना बहु बिंजन जैसे ॥
भजनहीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मनभावत बर मागौं स्वामी । तुम्ह उदार उरअंतरजामी ॥

दो० । अबिरल भक्ति बिसुद्ध तव स्रुति पुरान जो गाव ।
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥
भक्तकल्पतरु प्रनतहित कृपासिंधु सुखधाम ।
सोइ निजभक्ति मोहि प्रभु देहु कृपा करि राम । ८४ ॥

चौ० । एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परमसुखदायक ॥
सुनु बायस तैं परम सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥
सबसुखखानि भगति तैं मांगी । नहि जग कोउ तोहि सम बड़भागी ॥
जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । जे जपजोगअनल तन दहहीं ॥
रीझेउं देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि अति भाई ॥
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरे ॥
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । जोगचरित्र रहस्यबिभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहि साधनखेदा ॥

दो० । मायासंभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि ।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥
मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग ।
काय बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग । ८५ ॥

चौ० । अब सुनु परम बिमल मम बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
निज सिद्धांत सुनावौं तोही । सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही ॥
मम मायासंभव संसारा । जीव चराचर बिबिध प्रकारा ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब तें अधिक मनुज मोहि भाए ॥
तिन्ह महं द्विज द्विज महं श्रुतिधारी । तिन्ह महं निगमधर्म अनुसारी ॥
तिन्ह महं प्रिय बिरक्त पुनि ज्ञानी । ज्ञानिहुं तें अतिप्रिय बिज्ञानी ॥
तिन्ह तें पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥
भक्तिहीन बिरंचि किन होई । सब जीवन सम प्रिय मोहि सोई ॥
भगतिवंत अति नीचौ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय अस मम बानी ॥

दो० । सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।
स्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग । ८६ ॥

चौ० । एक पिता के बिपुल कुमारा । होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥
कोउ पंडित कोउ तापस ज्ञाता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
कोउ सरबज्ञ धरमरत कोई । सब पर प्रीति पितहिं सम होई ॥
कोउ पितुभक्त बचन मन कर्मा । सपनेहु जान न दूसर धर्मा ॥
सो सुत प्रिय पितुप्रान समाना । जद्यपि सो सब भांति अयाना ॥
एहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल बिस्व यह मम उपजाया । सब पर मोहि बराबरि दाया ॥
तिन्ह महं जो परिहरि मद माया । भजइ मोहि मन बच अरु काया ॥

दो० । पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ । ८७ ॥

सो० । सत्य कहौं खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब । १ ॥

चौ० । कबहूं काल न ब्यापिहि तोही । सुमिरेउ भजेउ निरंतर मोही ॥
प्रभुबचनामृत सुनि न अघाऊं । तन पुलकित मन अति हरषाऊं ॥
सो सुख जानै मन अरु काना । नहि रसना पहि जाइ बखाना ॥
प्रभुसोभा सुख जानहिं नयना । कहि किमि सकहिं तिन्हहिं नहिं बयना ॥
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । लगे करन सिसुकौतुक तेई ॥

चपल गवन कछु नृप करि रूषा । गिरे मातु जागी चलि भूषा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु बचन लिये उर लाई ॥
गोद राखि कराव पय पाना । रघुपतिचरित ललित कर गाना ॥

सो० । जेहि सुख लागि पुरारि असिव बेष कृत सिव सुखद ।
अवधपुरी नरनारि तेहि सुख महं संतत मगन ॥
सोई सुखलवलेस जिन्ह बारक सपनेहुं लहेउ ।
तेहिं नहि गनहि खगेस ब्रह्मसुखहिं सज्जन सुमति । ४ ॥

चौ० । मैं पुनि अवध रहेउं कछु काला । देखेउं बालबिनोद रसाला ॥
रामप्रसाद भगतिबर पायउं । प्रभुपद बंदि निजाश्रम आयउं ॥
तब तें मोहि न ब्यापी माया । जब तें रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरिमाया जिमि मोहि नचावा ॥
निज अनुभव अब कहौं खगेसा । बिनु हरिभजन न जाहिं कलेसा ॥
रामकृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
जाने बिनु न होइ परतीती । बिन परतीति होइ नहि प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥

सो० । बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिय हरिभगति बिनु ॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव कोटिजतन पचि पचि मरिय । ५ ॥

चौ० । बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अछत सुख सपनेहुं नाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहिं कि कामा । थल बिहीन तरु कबहुं कि जामा ॥
बिनु बिज्ञान कि समता आवै । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै ॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गंध कि पावै कोई ॥
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥
सील कि मिल बिनु बुधसेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाईं ॥
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरिभजन न भवभयनासा ॥

दो० । बिनु बिस्वास भगति नहि तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
रामकृपा बिनु सपनेहुं जीव न लह बिश्राम । ८८ ॥

सो० । अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद । ६ ॥

चौ० । निज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभुप्रतापमहिमा खगराई ॥
कहेउं न कछु करि जुगुति बिसेषी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी ॥

महिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥
निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं ॥
तुम्हहिं आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥
राम काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा । नभ सत कोटि अमित अवकासा ॥

दो० । मरुत कोटि सत बिपुल बल रबि सतकोटि प्रकास ।
ससि सतकोटि सुसीतल समन सकल भवत्रास ॥
काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूमकेतु सतकोटि सम दुराधर्ष भगवंत । ८९ ॥

चौ० । प्रभु अगाध सतकोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला ॥
तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूग नसावन ॥
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ॥
कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ॥
सारद कोटि अमित चतुराई । बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ॥
बिष्नु कोटि सत पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संहर्ता ॥
धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
भार धरन सतकोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

छं० । निरुपम न उपमा आन राम समान राम निगम कहै ।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहै ॥
एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहिं बखानहीं ।
प्रभु भावगाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं । ८ ॥

दो० । राम अमित गुन सागर थाह कि पावै कोइ ।
संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ तुम्हहिं सुनायउँ सोइ । ९० ॥

सो० । भाव बस्य भगवान सुखनिधान करुनाभवन ।
तजि ममता मद मान भजिय सदा सीतारवन । ७ ॥

चौ० । सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ॥
नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥
पुनि पुनि कागचरन सिर नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ॥
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जियायउ जन सुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नसाना । रामरहस्य अनूपम जाना ॥

दो० । ताहि प्रसंसि बिबिध बिधि सीस नाइ कर जोरि ।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड बहोरि ॥
प्रभु अपने अबिबेक तें बूझौं स्वामी तोहि ।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि । ९१ ॥

चौ० । तुम्ह सरबज्ञ तज्ञ तमपारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥
ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥
कारन कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥
रामचरित सर सुंदर स्वामी । पाएहु कहाँ कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महा प्रलयहु नास तव नाहीं ॥
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई । सोउ मोरे मन संसय अहई ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जग कालकलेवा ॥
अंड कटाह अमित लयकारी । काल सदा दुरतिक्रम भारी ॥

सो० । तुम्हहिं न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन ।
मोहि सो कहहु कृपाल ज्ञानप्रभाव कि जोगबल । ८ ॥

दो० । प्रभु तव आश्रम आएउँ मोर मोह भ्रम भाग ।
कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग । ९२ ॥

चौ० । गरुडगिरा सुनि हरखेउ कागा । बोलेउ उमा परम अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी ॥
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई । बहुत जन्म कै सुधि मोहि आई ॥
सब निज कथा कहौं मैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई ॥
जप तप मख सम दम ब्रत दाना । बिरति बिबेक जोग बिज्ञाना ॥
सब कर फल रघुपतिपदप्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावै छेमा ॥
एहि तन रामभगति मैं पाई । ता तें मोहिं ममता अधिकाई ॥
जेहि तें कछु निजस्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सबकोई ॥

सो० । पन्नगारि असि नीति स्रुतिसम्मत सज्जन कहहिं ।
अति नीचहु सन प्रीति करिय जानि निज परम हित ॥
पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ।
क्रिमि पालै सबकोइ परम अपावन प्रान सम । ८ ॥

चौ० । स्वारथ साँच जीव कहँ एहा । मन क्रम बचन रामपद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा ॥
रामबिमुख लहि बिधि सम देही । कबि कोबिद न प्रसंसहिं तेही ॥
रामभगति एहि तन उर जामी । ता तें मोहि परम प्रिय स्वामी ॥
तजौं न तन निज इच्छा मरना । तन बिनु बेद भजन नहिं बरना ॥

म मोह मोहि बहुत बिगोवा । रामबिमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
ना जनम करम पुनि नाना । किये जोग जप तप मख दाना ॥
वन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं । मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥
खेउँ करि सब करम गोसाईं । सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं ॥
धि मोहि नाथ जनम बहु केरी । सिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥

। प्रथम जन्म के चरित अब कहौं सुनहु बिहगेस ।
सुनि प्रभुपदरति उपजै जा तें मिटहि कलेस ॥
पूरब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मलमूल ।
नर अरु नारि अधर्मरत सकल निगम प्रतिकूल । ८७ ॥

० । तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई । जनमत भयउँ सूद्रतनु पाई ॥
सिवसेवक मन क्रम अरु बानी । आन देवनिंदक अभिमानी ॥
धनमदमत्त परम बाचाला । उग्र बुद्धि उर दंभ बिसाला ॥
जदपि रहेउँ रघुपतिरजधानी । तदपि न कछु महिमा तब जानी ॥
अब जाना मैं अवधप्रभावा । निगमागम पुरान अस गावा ॥
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । रामपरायन सो परि होई ॥
अवधप्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहिं राम धनुपानी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी । पापपरायन सब नर नारी ॥

दो० । कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किये बहु पंथ ॥
भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।
सुनु हरियान ग्याननिधि कहौं कछुक कलिधर्म । ८८ ॥

चौ० । बरनधर्म नहि आस्रमचारी । स्रुतिबिरोधरत सब नर नारी ॥
द्विज स्रुतिबेचक भूप प्रजासन । कोउ नहि मान निगमअनुसासन ॥
मारग सोइ जा कहँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारंभ दंभरत जोई । ता कहँ संत कहै सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधनहारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥
जो कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ॥
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी । कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी ॥
जा के नख अरु जटा बिसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दो० । असुभबेष भूषन धरे भच्छाभच्छ जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं । ८९ ॥

सो० । जो अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महँ । ९० ॥

चौ० । नारिबिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मरकट की नाईं ॥
सुद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर कामलोभरत क्रोधी । देव बिप्र स्रुति संत बिरोधी ॥
गुनमंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
सौभागिनी बिभूषनहीना । बिधवन्ह के सिंगार नबीना ॥
गुर सिष बधिर अंध का लेखा । एक न सुनै एक नहिं देखा ॥
हरै सिष्यधन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महं परई ॥
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ॥

दो० । ब्रह्मग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।
कौडी लागि लोभबस करहिं बिप्रगुरघात ॥
बादहिं सुद्र द्विजन्ह सन हम तुम तें कछु घाटि ।
जानै ब्रह्म सो बिप्रबर आंखि देखावहिं डांटि । ८६ ॥

चौ० । परत्रियलंपट कपटसयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदबादी ग्यानी नर । देखा मैं चरित कलिजुग कर ॥
आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं । जे कहुं सत मारग प्रतिपालहिं ॥
कल्प कल्प भरि एक एक नरका । परहिं जे दूषहिं स्रुति करि तर्का ॥
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा । स्वपच किरात कोल कलवारा ॥
नारि मुई गृहसंपति नासी । मूंड मुडाइ होहिं संन्यासी ॥
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी । निराचार सठ बृषली स्वामी ॥
सुद्र करहिं जप तप ब्रत नाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥

दो० । भए बरनसंकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग ॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ संजुत बिरति बिबेक ।
तेहि न चलहिं नर मोहबस कल्पहिं पंथ अनेक । ८७ ॥

छन्द तोमर ।

बहु दाम संवारहिं धाम जती । बिषया हरि लीन्हि न रही बिरती ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलिकौतुक तात न जात कही ॥
कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ॥
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अबलानन दीख नहीं जब लौं ॥
ससुरारि पियारि लगी जब तें । रिपुरूप कुटुंब भए तब तें ॥
नृप पापपरायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥

धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चीन्ह जनेउ उघार तपी ॥
नहिं मान पुरान न बेदहिं जो । हरिसेवक संत सही कलि सो ॥
कबि बृंद उदार दुनी न सुनी । गुनदूषक ब्रात न कोपि गुनी ॥
कलि बारहिं बार दुकाल परै । बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै । १० ॥

। सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड ।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड ॥
तामस धर्म करहिं नर जप तप मख ब्रत दान ।
देव न बरषैं धरनी बोए न जामहिं धान । ९८ ॥

छं० । अबलाकचभूषन भूरि छुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं । अभिमान बिरोध अकारनहीं ॥
लघु जीवन संबत पंचदसा । कलपांत न नास गुमान असा ॥
कलिकाल बिहाल किये मनुजा । नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा ॥
नहिं तोष बिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मंगता ॥
इरषा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता बिगता ॥
सब लोग बियोग बिसोक हए । बरनाश्रम धर्म अचार गए ॥
दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता परबंचनताति घनी ॥
तनपोषक नारि नरा सगरे । परनिंदक जे जग मो बगरे ॥

दो० । सुनु ब्यालारि काल कलि मलअवगुनआगार ।
गुनौ बहुत कलियुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतयुग त्रेता द्वापर पूजा मख अरु जोग ।
जो गति होइ सो कलि हरिनाम तें पावहिं लोग । ९९ ॥

चौ० । कृतयुग सब जोगी बिज्ञानी । करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी ॥
त्रेता बिबिध यज्ञ नर करहीं । प्रभुहिं समर्पिं कर्म भव तरहीं ॥
द्वापर करि रघुपतिपदपूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ॥
कलियुग केवल हरिगुनगाहा । गावत नर पावहिं भवथाहा ॥
कलियुग जोग न यज्ञ न ज्ञाना । एक अधार रामगुनगाना ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं । प्रेम समेत गाव गुनग्रामहिं ॥
सोइ भव तर कछु संसय नाहीं । नामप्रताप प्रगट कलि माहीं ॥
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ॥

दो० । कलियुग सम युग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास ।
गाइ रामगुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महं एक प्रधान ।
जेन केन बिधि दीन्हे दान करै कल्यान । [illegible] ॥

चौ० । कृतयुग धर्म होहि सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे ॥
सुद्ध सत्व समता बिग्याना । कृतप्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा । सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलिप्रभाव बिरोध चहुं ओरा ॥
बुध जुगधर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
कालधर्म नहि ब्यापहि ताही । रघुपतिचरन प्रीति अति जाही ॥
नटकृत बिकट कपट खगराया । नटसेवकहि न ब्यापै माया ॥

दो० । हरिमायाकृत दोष गुन बिनु हरिभजन न जाहिं ।
भजिय राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं ॥
तेहि कलिकाल बरष बहु बसेउं अवध बिहगेस ।
परेउ दुकाल बिपतिबस तब मैं गएउं बिदेस । १०१ ॥

चौ० । गएउं उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गए काल कछु संपति पाई । तहं पुनि करौं संभुसेवकाई ॥
बिप्र एक बैदिक सिवपूजा । करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परम साधु परमारथबिंदक । संभुउपासक नहि हरिनिंदक ॥
तेहि सेवौं मैं कपट समेता । द्विज दयाल अतिनीतिनिकेता ॥
बाहिज नम्र देखि मोहि साईं । बिप्र पढाव पुत्र की नाईं ॥
संभुमंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा । सुभ उपदेस बिबिध बिधि कीन्हा ॥
जपौं मंत्र सिवमंदिर जाई । हृदय दंभ अहमिति अधिकाई ॥

दो० । मैं खल मलसंकुलमति नीचजाति बस मोह ।
हरिजन द्विज देखे जरौं करौं बिष्णु कर द्रोह । १०२ ॥

सो० । गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।
मोहि उपजै अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई । ११ ॥

चौ० । एकबार गुर लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहु भांति सिखाई ॥
सिवसेवा कर फल सुत सोई । अबिरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात सिव धाता । नर पावर कै केतिक बाता ॥
जासु चरन अज सिव अनुरागी । तासु द्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हर कहं हरिसेवक गुर कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥
अधम जाति मैं बिद्या पाए । भयउं जथा अहि दूध पिआए ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करौं दिन राती ॥

ति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥
हि तें नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ॥
म अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
ज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ॥
रुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई ॥
नु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संगा ॥
वि कोबिद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ॥
उदासीन नित रहिअ गोसाईं । खल परिहरिअ स्वान की नाईं ॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुर हित कहइ न मोहि सुहाई ॥

दो० । एकबार हरमंदिर जपत रहेउं सिवनाम ।
गुर आएउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥
सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेस ।
अति अघ गुरअपमान तें सहि नहिं सके महेस ॥ १०६ ॥

चौ० । मंदिर माझ भई नभबानी । रे हतभाग्य अग्य अभिमानी ॥
जद्यपि तव गुर के नहिं क्रोधा । अतिकृपाल चित सम्यक बोधा ॥
तदपि साप सठ दैहौं तोही । नीतिबिरोध सोहाइ न मोही ॥
जौं नहिं दंड करौं खल तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥
जे सठ गुर सन इरषा करहीं । रौरव नरक कोटि जुग परहीं ॥
त्रिजगजोनि पुनि धरहिं सरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगर इव पापी । सर्प होहि खल मलमति ब्यापी ॥
महा बिटपकोटर महँ जाई । रहु अधमाधम अधगति पाई ॥

दो० । हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिवसाप ।
कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप ॥
करि दंडवत सप्रेम द्विज सिवसन्मुख कर जोरि ।
बिनय करत गदगद गिरा समुझि घोर गति मोरि ॥ १०७ ॥

॥ छंद भुजंगप्रयात ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । बिभुं ब्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिराग्यानगोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकालकालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोहं ॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं । मनोभूतकोटि प्रभाश्रीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रं बिशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥

मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रिधा शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं । भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पांतकारी । सदा सज्जनानंददाता पुरारी ॥
चिदानंदसंदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावदुमानाथपादारविंदं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ।११॥

श्लो० । रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति । ८ ॥

दो० । सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव देखि बिप्र अनुरागु ।
पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजवर बर मांगु ॥
जौं प्रसन्न प्रभु मोपर नाथ दीन पर नेहु ।
निज पदभगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तव मायाबस जीव जड़ संतत फिरै भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु कृपासिंधु भगवान ॥
संकर दीनदयाल अब एहि पर होउ कृपाल ।
साप अनुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेही काल । १०५ ॥

चौ० । एहि कर होइ परम कल्याना । सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
बिप्रगिरा सुनि परहितसानी । एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥
जदपि कीन्ह एहि दारुन पापा । मैं पुनि दीन्ह क्रोध करि सापा ॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहौं एहि पर कृपा बिसेखी ॥
छमासील जे परउपकारी । ते द्विज मोहि प्रिय यथा खरारी ॥
मोर साप द्विज ब्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवसि यह पाइहि ॥
जनमत मरत दुसह दुख होई । एहि स्वल्पौ नहि ब्यापिहि सोई ॥
कवनेउ जन्म मिटिहि नहि ग्याना । सुनहि सूद्र मम बचन प्रमाना ॥
रघुपतिपुरी जन्म तव भयऊ । पुनि मैं मम सेवा मन दयऊ ॥
पुरीप्रभाव अनुग्रह मोरे । रामभगति उपजिहि उर तोरे ॥
सुनु मम बचन सत्य अब भाई । हरितोषन ब्रत द्विजसेवकाई ॥
अब जनि करहि बिप्र अपमाना । जानेहु संत अनंत समाना ॥
इंद्रकुलिस मम सूल बिसाला । कालदंड हरिचक्र कराला ॥
जो इन्ह कर मारा नहि मरई । बिप्रद्रोहपावक सो जरई ॥

। बिबेक राखेहु मन माहीं । तुम्ह कहं अब दुर्लभ कछु नाहीं ॥
सुनौ एक आसिषा मोरी । अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दो० । सुनि सिव बचन हरषि गुरु एवमस्तु इति भाषि ।
मोहि प्रबोधि गएउ गृह संभुचरन उर राखि ॥
प्रेरित काल बिंधिगिरि जाइ भएउं मैं ब्याल ।
पुनि प्रयास बिनु सो तन तजेउं गए कछु काल ॥
जो तन धरौं तजौं पुनि अनायास हरिजान ।
जिमि नूतन पट पहिरै नर परिहरै पुरान ॥
सिव राखी श्रुति नीति अरु मैं नहि पाव कलेस ।
एहि बिधि धरेउं बिबिध तनु ज्ञान न गएउ खगेस ।१०९ ॥

चौ० । त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊं । तहं तहं रामभजन अनुसरऊं ॥
एक सूल मोहि बिसर न काऊ । गुरु कर कोमल सील सुभाऊ ॥
चरमदेह द्विज कर मैं पाई । सुरदुर्लभ पुरान स्रुति गाई ॥
खेलौं तहूं बालकन्ह मीला । करौं सकल रघुनायकलीला ॥
प्रौढ भए मोहि पिता पढावा । समुझौं सुनौं गुनौं नहि भावा ॥
मन तें सकल बासना भागी । केवल रामचरन लय लागी ॥
कहु खगेस अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी ॥
प्रेममगन मोहिं कछु न सुहाई । हारेउ पिता पढाइ पढाई ॥
भए कालबस जब पितु माता । मैं बन गएउं भजन जनत्राता ॥
जहं जहं बिपिन मुनीस्वर पावौं । आस्रम जाइ जाइ सिर नावौं ॥
बूझौं तिन्हहिं रामगुनगाहा । कहहिं सुनौं हरषित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुनअनुवादा । अब्याहतगति संभुप्रसादा ॥
छूटी त्रिबिध ईखना गाढी । एक लालसा उर अति बाढी ॥
रामचरनबारिज जब देखौं । तब निज जन्म सुफल करि लेखौं ॥
जेहि पूछौं सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्बभूतमय अहई ॥
निर्गुन मत नहि मोहि सुहाई । सगुनब्रह्मरति मोहि अधिकाई ॥

दो० । गुरु के बचन सुरति करि रामचरन मन लाग ।
रघुपतिजस गावत फिरौं छन छन नव अनुराग ॥
मेरुसिखर बटछाया मुनि लोमस आसीन ।
देखि चरन सिर नाएउं बचन कहेउं अति दीन ॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज ।
मोहि सादर पूछत भए द्विज आएहु केहि काज ॥
तब मैं कहा कृपानिधि तुम सर्बग्य सुजान ।
सगुनब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ।११० ॥

चौ० । तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मग्यानरत मुनि बिग्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभवगम्य अखंड अनूपा ॥
मन गोतीत अमल अबिनासी । निर्बिकार निरवधि सुखरासी ॥
सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा । बारि बीचि इव गावहिं बेदा ॥
बिबिध भाँति मोहिं मुनि समुझावा । निर्गुन मत मम हृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउं नाइ पद सीसा । सगुनउपासन कहहु मुनीसा ॥
रामभगति जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना ॥
सोइ उपदेस कहहु करि दाया । निज नयनन्हि देखौं रघुराया ॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा । तब सुनिहौं निर्गुनउपदेसा ॥
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । खंडि सगुनमत अगुन निरूपा ॥
तब मैं निर्गुनमति करि दूरी । सगुन निरूपौं करि हठ भूरी ॥
उत्तर प्रति उत्तर मैं कीन्हा । मुनितन भए क्रोध के चीन्हा ॥
सुनु प्रभु बहुत अवग्या किये । उपज क्रोध ग्यानिहु के हिये ॥
अति संघरषन जौं कर कोई । अनल प्रगट चंदन तें होई ॥

दो० । बारंबार सकोप मुनि करै निरूपन ग्यान ।
मैं अपने मन बैठि तब करौं बिबिध अनुमान ॥
क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान ।
मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान । १०८ ॥

चौ० । कबहुं कि दुख सब कर हित ताके । तेहि कि दरिद्र परस मनि जा के ॥
परद्रोही कि होइ निःसंका । कामी पुनि कि रहहि अकलंका ॥
बंस कि रह द्विजअनहित कीन्हे । कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हे ॥
काहू सुमति कि खलसंग जामी । सुभ गति पाव कि परत्रियगामी ॥
भव कि परहिं परमात्माबिंदक । सुखी कि होहिं कबहु हरिनिंदक ॥
राज कि रहै नीति बिनु जाने । अघ कि रहहि हरिचरित बखाने ॥
पावन जस कि पुन्य बिनु होइ । बिनु अघ अजस कि पावै कोई ॥
लाभ कि कछु हरिभगति समाना । जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग एहि सम कछु भाई । भजिय न रामहि नर तनु पाई ॥
अघ कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दयासरिस हरियाना ॥
एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनऊं । मुनिउपदेस न सादर सुनऊं ॥
पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा । तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा ॥
मूढ परम सिख देउं न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥

बचन बिस्वास न करहीं । बायस इव सबही तें डरहीं ॥
सठ स्वपच्छ तव हृदय बिसाला । सपदि होहि पच्छी चंडाला ॥
लीन्ह श्रापमें सीस चढाई । नहि कछु भय न दीनता आई ॥

। तुरत भएउं मैं काग तब पुनि मुनि पद सिर नाइ ।
सुमिरि राम रघुबंसमनि हरषित चलेउं उडाइ ॥
उमा जे रामचरनरत बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध । १०९ ॥

। सुनु खगेस नहि कछु रिषिदूषन । उरप्रेरक रघुबंसबिभूषन ॥
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्ही प्रेमपरीछा मोरी ॥
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । मुनिमति पुनि फेरी भगवाना ॥
रिषि मम महत सीलता देखी । रामचरनबिस्वास बिसेषी ॥
अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई । सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई ॥
मम परितोष बिबिध बिधि कीन्हा । हरषित राममंत्र तब दीन्हा ॥
बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥
सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा ॥
मुनि मोहि कछुक काल तहं राखा । रामचरितमानस तब भाखा ॥
सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सोहावा । संभुप्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहि निज भक्त राम कर जानी । ता तें मैं सब कहेउं बखानी ॥
रामभगति जिन्ह के उर नाहीं । कबहुं न तात कहिय तिन्ह पाहीं ॥
मुनि मोहि बिबिध भांति समुझावा । मैं सप्रेम मुनिपद सिर नावा ॥
निज करकमल परसि मम सीसा । हरषित आसिष दीन्हि मुनीसा ॥
रामभगति अबिरल उर तोरें । बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दो० । सदा रामप्रिय होहु तुम्ह सुभगुनभवन अमान ।
कामरूप इच्छामरन ग्यान बिरागनिधान ॥
जेहि आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्रीभगवंत ।
ब्यापिहि तहं न अबिद्या जोजन एक प्रजंत । ११० ॥

चौ० । काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ ॥
रामरहस्य ललित बिधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनु श्रम तुम्ह जानब सब सोऊ । नित नव नेह रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनिआसिष सुनु मति धीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गंभीरा ॥

एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी । यह मम भगत करम मन बानी ॥
सुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । प्रेममगन मम संसय गयऊ ॥
करि बिनती मुनिआयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि सिर नाई ॥
हरष सहित एहि आस्रम आयउं । प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पायउं ॥
इहां बसत मोहि सुनु खगईसा । बीते कलप सात अरु बीसा ॥
करौं सदा रघुपतिगुनगाथा । सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा । धरहिं भगत हित मनुजसरीरा ॥
तब तब जाइ रामपुर रहऊं । सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊं ॥
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा । निज आस्रम आवौं खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुम्हहिं सुनाई । कागदेह जेहि कारन पाई ॥
कहेउं तात सब प्रस्न तुम्हारी । रामभगतिमहिमा अति भारी ॥

दो० । ता तें यह तन मोहि प्रिय भएउ रामपद नेह ।
निज प्रभुदरसन पायउं गयउ सकल संदेह ॥
भगतिपच्छ हठ करि रहेउं दीन्हि महारिषि साप ।
मुनिदुर्लभ बर पायउं देखहु भजनप्रताप । १११ ॥

चौ० । जे असि भगति जानि परिहरहीं । केवल ग्यान हेतु स्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी । खोजत आक फिरहिं पय लागी ॥
सुनु खगेस हरिभगति बिहाई । जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी । पैरि पार चाहहिं जड़ करनी ॥
सुनि भसुंडि के बचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं । संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥
सुनउं पुनीत रामगुनग्रामा । तुम्हरी कृपा लहेउं बिस्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछौं तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
कहहिं संत मुनि बेद पुराना । नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं । नहिं आदरेहु भगति की नाईं ॥
ग्यानहिं भगतिहिं अंतर केता । सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥
सुनि उरगारिबचन सुख माना । सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
भगतिहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भवसंभव खेदा ॥
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगबर ॥
ग्यान बिराग जोग बिग्याना । ये सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥
पुरुषप्रताप प्रबल सब भांती । अबला अबल सहज जड़जाती ॥

दो० । पुरुष त्यागि सक नारिहिं जो बिरक्त मतिधीर ।
न तु कामी बिषयाबिबस बिमुख जो पद रघुबीर । ११२ ॥

। सोउ मुनि ज्ञाननिधान मृगनयनीबिधुमुख निरखि ।
बिबस होइ हरियान नारि बिष्णु माया प्रगट । ११ ॥

। इहां न पच्छपात कछु राखौं । बेदपुरानसंतमत भाखौं ॥
ह न नारि नारि के रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥
ाया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ । नारिबर्ग जानै सब कोऊ ॥
नि रघुबीरहिं भगति पियारी । माया खलु नर्तकी बिचारी ॥
गतिहिं सानुकूल रघुराया । ता तें तेहि डरपति अति माया ॥
ामभगति निरुपम निरुपाधी । बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
ाहि बिलोकि माया सकुचाई । करि न सकै कछु निज प्रभुताई ॥
स बिचारि जे मुनि बिज्ञानी । जाचहिं भगति सकलसुखखानी ॥

० । यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानै कोइ ।
जो जानै रघुपतिकृपा सपनेहुं मोह न होइ ॥
औरौ ज्ञान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन ।
जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अबछीन । ११६ ॥

१० । सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बनै न जाइ बखानी ॥
ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो मायाबस भयउ गोसाईं । बंध्यौ कीर मरकट की नाईं ॥
जड चेतनहिं ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तब तें जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ॥
स्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अरुझाई ॥
जीवहृदय तम मोह बिसेखी । ग्रंथि छूटि किमि परै न देखी ॥
अस संयोग ईस जब करई । तबहु कदाचित सो निरुअरई ॥
सात्विक श्रद्धा धेनु सोहाई । जौं हरिकृपा हृदय बस आई ॥
जप तप ब्रत यम नियम अपारा । जे स्रुति कहु सुभ धर्म अचारा ॥
तेइ तृन हरित चरै जब गाई । भाव बच्छसिसु पाइ पेन्हाई ॥
नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
परम धरममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोषमरुत तब छमा जुडावै । धृति सम जावन देइ जमावै ॥
मुदिता मथै बिचारमथानी । दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥
तब मथि काढि लेइ नवनीता । बिमल बिराग सुभग सु पुनीता ॥

दो० । योगअगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ ।
बुद्धि सिरावै ज्ञानघृत ममतामल जरि जाइ ॥

तब विज्ञानरूपिनी बुद्धि विसद घृत पाइ ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़ समता दियटि बनाइ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि ।
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि । ११४ ॥

सो० । एहि बिधि लेसै दीप तेजरासि विज्ञानमय ।
जातहि जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब । १२ ॥

चौ० । सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा । दीपसिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतमअनुभव सुख सुप्रकासा । तब भवमूल भेद भ्रम नासा ॥
प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोहआदि तम मिटै अपारा ॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उजिआरा । उरगृह बैठि ग्रंथि निरुवारा ॥
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । तौ यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रंथि जानि खगराया । बिघ्न अनेक करै तब माया ॥
रिद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावै आई ॥
कल बल छल करि जाइ समीपा । अंचलबात बुझावहि दीपा ॥
होइ बुद्धि जौं परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ॥
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहि बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
इंद्रीद्वार झरोखा नाना । तहं तहं सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं बिषयबयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उरगृह जाई । तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि बिकल भइ बिषयबतासा ॥
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ज्ञान सोहाई । बिषयभोग पर प्रीति सदाई ॥
बिषयसमीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ॥

दो० । तब फिरि जीव बिबिध बिधि पावै संसृतिक्लेस ।
हरिमाया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ॥
कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।
होइ घुनाछर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक । ११५ ॥

चौ० । ज्ञानपंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहि बारा ॥
जो निरबिघ्न पंथ निरबहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ॥
राम भजत सोइ मुक्ति गोसाईं । अनइच्छित आवै बरिआईं ॥
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोच्छसुख सुनु खगराई । रहि न सकै हरिभगति बिहाई ॥
अस बिचारि हरिभगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लोभाने ॥

गति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृतिमूल अविद्या नासा ॥
जन करिय तृप्ति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ॥
सि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥

। सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि ।
भजहु रामपद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥
जो चेतन कहं जड करै जडहिं करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायकहिं भजहिं जीव ते धन्य । ११९ ॥

० । कहेउं ज्ञानसिद्धांत बुझाई । सुनहु भगतिमनि कै प्रभुताई ॥
रामभगति चिंतामनि सुंदर । बसै गरुड जा के उर अंतर ॥
परम प्रकाशरूप दिन राती । नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहि आवा । लोभ बात नहि ताहि बुझावा ॥
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभसमुदाई ॥
खल कामादि निकट नहि जाहीं । बसै भगति जा के उर माहीं ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुखपाव न कोई ॥
ब्यापहि मानसरोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥
रामभगति मनि उर बस जा के । दुखलवलेस न सपनेहु ता के ॥
चतुरसिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
सो मनि यदपि प्रगट जग अहई । रामकृपा बिनु नहि कोउ लहई ॥
सुगम उपाय पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहि भटभेरे ॥
पावन पर्वत बेद पुराना । रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ज्ञान बिराग नयन उरगारी ॥
भाव सहित खोजै जो प्रानी । पाव भगतिमनि सब सुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा । राम तें अधिक राम कर दासा ॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चंदनतरु हरि संत समीरा ॥
सब कर फल हरिभगति सोहाई । सो बिनु संत न काहू पाई ॥
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । रामभगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

दो० । ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहि ।
कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहि ॥
बिरति चर्म असि ज्ञान मद लोभ मोह रिपु मारि ।
जय पाइय सो हरिभगति देखु खगेस बिचारि । १२० ॥

चौ० । पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहि निज सेवक जानी । सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सब तें दुर्लभ कवन सरीरा ॥

बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहि कहहु बिचारी ॥
संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु ॥
कवन पुन्य श्रुतिबिदित बिसाला । कहहु कवन अघ परम कराला ॥
मानसरोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्बज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संछेप कहौं यह नीती ॥
नरतन सम नहि कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ज्ञान बिराग भगति सुभ देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर । होहिं बिषयरत मंद मंदतर ॥
कांच किरिच बदलें ते लेहीं । कर तें डारि परसमनि देहीं ॥
नहि दरिद्र सम दुख जग माहीं । संतमिलन सम सुख जग नाहीं ॥
परउपकार बचन मन काया । संत सहजसुभाउ खगराया ॥
संत सहहिं दुख परहित लागी । परदुखहेतु असंत अभागी ॥
भूर्जतरू सम संत कृपाला । परहित निति सह बिपति बिसाला ॥
सन इव खल परबंधन करई । खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई ॥
खल बिनु स्वारथ परअपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
परसंपदा बिनासि नसाहीं । जिमि ससि हति हिमउपल बिलाहीं ॥
दुष्ट उदय जगआरत हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
संतउदय संतत सुखकारी । बिस्वसुखद जिमि इंदु तमारी ॥
परम धरम श्रुतिबिदित अहिंसा । परनिंदा सम अघ न गरीसा ॥
हरिगुरुनिंदक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥
द्विजनिंदक बहु नरक भोग करि । जग जनमै बायससरीर धरि ॥
सुरस्रुतिनिंदक जे अभिमानी । रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
होहिं उलूक संतनिंदारत । मोहनिसा प्रिय ज्ञानभानु गत ॥
सब कै निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल ब्याधिन कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥
काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजै सन्यपात दुखदाई ॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब सूल नाम को जाना ॥
ममता दादु कंडु इरषाई । हरष बिषाद गरहबहुताई ॥
परसुख देखि जरनि सोइ छई । दुष्ट कुष्टता मनकुटिलई ॥
अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥
तृष्णा उदरबृद्धि अति भारी । त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी ॥
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका । कहं लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

एक ब्याधिबस नर मरहिं ये असाधि बहु ब्याधि ।
पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि ॥
नेम धर्म आचार तप ज्ञान यज्ञ जप दान ।
भेषज पुनि कोटिन्ह नहि रोग जाहिं हरिजान । ११८ ॥

। एहि बिधि सकल जीव जगरोगी । सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥
नस रोग कछुक मैं गाए । हैं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए ॥
न तें छीजहिं कछु पापी । नास न पावहिं जन परितापी ॥
षय कुपथ्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदय का नर बापुरे ॥
मजपा नासहिं सब रोगा । जौं एहि भांति बनै संयोगा ॥
द्गुरु बैद बचन बिस्वासा । संयम यह न बिषय कै आसा ॥
घुपतिभगति सजीवनमूरी । अनूपान स्रद्धामति पूरी ॥
हि बिधि भलेही रोग नसाहीं । नाहित जतन कोटि नहि जाहीं ॥
ानिय तब मन बिरुज गोसाँई । जब उर बल बिरागअधिकाई ॥
मति क्षुधा बाढ़ै नित्त नई । बिषयआस दुर्बलता गई ॥
बमल ज्ञानजल जब सो नहाई । तब रह रामभगति उर छाई ॥
सिव अज सुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्मबिचारबिसारद ॥
ाब कर मत खगनायक एहा । करिय रामपद पंकज नेहा ॥
ुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं । रघुपतिभगति बिना सुख नाहीं ॥
कमठपीठ जामहिं बरु बारा । बंध्यासुत बरु काहुहिं मारा ॥
फूलहिं नभ बरु बहु बिधि फूला । जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृगजलपाना । बरु जामहि ससखीस बिषाना ॥
अंधकार बरु रबिहि नसावै । रामबिमुख न जीव सुख पावै ॥
हिम तें अनल प्रगट बरु होई । बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥

दो० । बारि मथे घृत होइ बरु सिकता तें बरु तेल ।
बिनु हरिभजन न भव तरिय यह सिद्धांत अपेल ॥
मसकहिं करै बिरंचि प्रभु अजहिं मसक तें हीन ।
अस बिचारि तजि संसय रामहिं भजहिं प्रबीन । ११९ ॥

श्लो० । विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजंति येऽतिदुस्तरं तरंति ते । ७ ॥

चौ० । कहेउं नाथ हरिचरित अनूपा । ब्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥
श्रुतिसिद्धांत इहै उरगारी । राम भजिय सब काज बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥
तुम्ह बिज्ञानरूप नहि मोहा । नाथ कीन्ह मो पर अति छोहा ॥

पूछेहु रामकथा अति पावनि । सुक सनकादि संभुमनभावनि ॥
सतसंगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकौ बारा ॥
देखु गरुड़ निज हृदय बिचारी । मैं रघुबीरभजनअधिकारी ॥
सकुनाधम सब भांति अपावन । प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जग पावन ॥

दो० । आजु धन्य मैं धन्य अति यद्यपि सब बिधि हीन ।
निज जन जानि राम मोहि संतसमागम दीन्ह ॥
नाथ यथामति भाषेउं राखेउं नहि कछु गोइ ।
चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावै कोइ । १२० ॥

चौ० । सुमिरि राम के गुनगन नाना । पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना ॥
महिमा निगमनेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
सिवअजपूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुं सुनौं न देखौं । केहि खगेस रघुपति सम लेखौं ॥
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । कबि कोबिद कृतज्ञ संन्यासी ॥
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी । धर्मनिरत पंडित बिज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
सरन गए मो से अघरासी । होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी ॥

दो० । जासु नाम भवभेषज हरन घोर त्रय सूल ।
सो कृपाल मोहि तोहि पर सदा रहौ अनुकूल ॥
सुनि भुसुंडिके बचन सुभ देखि रामपद नेह ।
बोलेउ प्रेमसहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह । १२१ ॥

चौ० । मैं कृतकृत्य भएउं तव बानी । सुनि रघुबीरभगति रससानी ॥
रामचरन नूतन रति भई । मायाजनित बिपति सब गई ॥
मोहजलधि बोहित तुम्ह भए । मो कहं नाथ बिबिध सुख दए ॥
मो पहिं होइ न प्रतिउपकारा । बंदौ तव पद बारहिंबारा ॥
पूरनकाम रामअनुरागी । तुम्ह सम तात न कोइ बड़भागी ॥
संत बिटप सरिता गिरि धरनी । परहित हेतु सबन्ह कै करनी ॥
संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह पै कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता । परदुख द्रवहिं सुसंत पुनीता ॥
जीवन जन्म सुफल मम भएऊ । तव प्रसाद संसय सब गएऊ ॥
जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहै बिहंगबर ॥

दो० । तासु चरन सिर नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।
गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर ॥

गिरिजा संतसमागम सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरिकृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान ॥ १२२ ॥

। कहेउं परम पुनीत इतिहासा । सुनत स्रवन छूटहिं भवपासा ॥
त कल्पतरु करुनापुंजा । उपजै प्रीति रामपद कंजा ॥
न क्रम बचन जनित अघ जाई । सुनहिं जे कथा स्रवन मन लाई ॥
र्थाटन साधनसमुदाई । जोग बिराग ज्ञान निपुनाई ॥
ना कर्म धर्म ब्रत दाना । संजम दम जप तप मख नाना ॥
तदया द्विजगुरुसेवकाई । बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ॥
हं लगि साधन बेद बखानी । सब कर फल हरिभगति भवानी ॥
ो रघुनाथभगति स्रुति गाई । रामकृपा काहू एक पाई ॥

। मुनिदुर्लभ हरिभगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥ १२३ ॥

। सोइ सर्बज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता । सोइ महिमंडित पंडित दाता ॥
र्मपरायन सोइ कुलत्राता । रामचरन जा कर मन राता ॥
नीति निपुन सोइ परम सयाना । स्रुतिसिद्धांत नीक तेहि जाना ॥
सो कबि कोबिद सो रनधीरा । जो छल छाड़ि भजै रघुबीरा ॥
धन्य देस सो जहं सुरसरी । धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥
सो धन धन्य प्रथम गति जा की । धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्य जन्म द्विजभगति अभंगा ॥

० । सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीरपरायन जेहि कुल उपज बिनीत ॥ १२४ ॥

० । मतिअनुरूप कथा मैं भाखी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपतिकथा सुनाई ॥
यह न कहिय सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुनु हरिलीलहि ॥
कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि । जो न भजै सचराचरस्वामिहि ॥
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूं ॥
रामकथा के ते अधिकारी । जिन्ह के सतसंगति अति प्यारी ॥
गुरुपद प्रीति नीतिरत जेई । द्विजसेवक अधिकारी तेई ॥
ता कहं यह बिसेषि सुखदाई । जाहि प्रान प्रिय श्रीरघुराई ॥

० । रामचरनरति जो चह अथवा पद निर्बान ।
भाव सहित सो यह कथा करौ स्रवनपुट पान ॥ १२५ ॥

० । रामकथा गिरिजा मैं बरनी । कलिमलसमनि मनोमलहरनी ॥

संसृति रोग सजीवनमूरी । रामकथा गावहिं श्रुतिसूरी ॥
एहि महं रुचिर सप्त सोपाना । रघुपतिभगति केर पंथाना ॥
अतिहरिकृपा जाहि पर होई । पावं देइ एहि मारग सोई ॥
मनकामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सब कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथकृपा मम गत संदेहा । रामचरन उपजेउ नव नेहा ॥

दो० । मैं कृतकृत्य भएउं अब तव प्रसाद विश्वेश ।
उपजो रामभगति दृढ़ बीते सकल कलेश । १२९ ॥

चौ० । यह शुभ शंभुउमासंवादा । सुखसंपादन समन विषादा ॥
भवभंजन गंजनसंदेहा । जनरंजन सज्जन प्रिय एहा ॥
रामउपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाहीं ॥
रघुपतिकृपा यथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
एहि कलिकाल न साधन दूजा । योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं । संतत सुनिय रामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतितपावन बड़ बाना । गावहिं कवि श्रुति संत पुराना ॥
ताहि भजहिं मन तजि कुटिलाई । राम भजे गति केहि नहि पाई ॥

छं० । पाई न केहि गति पतित पावन राम भजि सुनु सठमना ।
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥
रघुवंशभूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जो गावहीं ।
कलिमलमनोमल धोइ बिनु श्रम रामधाम सिधावहीं ॥
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ।
दारुण अविद्या पंचजनित विकार श्रीरघुवर हरे ॥
सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्वानप्रद सम आन को ॥
जा की कृपालवलेश तें मतिमंद तुलसीदासहूं ।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं । १ ॥

दो० । मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंशमनि हरहु विषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम । १३० ॥

यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्गमं ।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्तोतु रामायणं ॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वांतस्तम:शांतये ।
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं । २ ॥
पुण्यं पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ।
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमांबुपूरं शुभं ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ।
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंति नो मानवाः । ३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ।
अविरलहरिभक्तिसंपादनो नाम सप्तमः सोपानः ॥
समाप्तः शुभमस्तु शुभं भूयात् ॥ * ॥

सन् १८६८ ई० ॥

। कठिन शब्दों का अर्थ ।

अकथ, अकथ्य, कहने के योग्य नहीं ।
अकथनीय, जो कहने के योग्य नहीं ।
अकनि, सुन करके ।
अकरन, अकारण, विना कारण ।
अकल, कलारहित, हाथ पांव आदि अंग के विना ।
अकसर, अकेला, केवल ।
अकाजेउ, १ अकाज किया २ मरना ।
अकाम, कामनाहीन, जिस को कुछ इच्छा नहीं ।
अकाल, कुसमय, विना ऋतु के ।
अकिंचन, जिस के पास कुछ नहीं, दरिद्री ।
अकुल, कुलरहित ।
अकुलाना, घबराना ।
अकंटक, शत्रु विना ।
अकुंठ, १ आवरहित २ तीक्ष्ण, चोखा ।
अक्षय, अछय, जिस का क्षय नहीं ।
अखंड, खंडरहित, जिस का नाश न हो ।
अखारा, १ गांव २ लड़ने की जगह ३ गोसांई के रहने की जगह ।
अखिल, सकल, सर्व ।
अग, पर्वत, अचल ।
अगनित, अगणित, अनगिनत ।
अगम, १ आगम, शास्त्र २ अगम्य जहां गम नहीं ।
अगरु, अगर, एक प्रकार का सुगंध ।
अग्र, आगे, मुख्य ।
अगऊड़, आगे ।
अगाध, अथाह ।
अगुन, १ अवगुण २ [illegible] भगवान ३ गुणहीन ।
अगोचर, अविषय, जो ज्ञान से परे ।
अघ, १ पाप २ दुःख ।
अघटित, १ अयोग्य २ अगम जो नहीं हुआ ।
अघात, चोट ।
अघाती, १ तृप्त होता, अघाता २ घा[illegible] विना ।
अचगरी, दुष्टता, बड़ई ।
अचल, १ पर्वत २ स्थिर, थिर ।
अचंचल, थिर ।
अछत, रहते ।
अज, १ जो जनमता नहीं २ शिवा ३ बकरा ४ ब्रह्मा ।
अज्ञ, अज्ञानी, अज्ञात, विना जाने ।
अज्ञता, मूढ़ता ।
अजर, जरारहित, बुढ़ौती विना ।
अजामिल, एक पापी ब्राह्मण का नाम ।
अजित, जो जीता नहीं गया ।
अजिन, मृगचर्म, चमड़ा ।
अजिर, आंगन ।
अजै, अजय ।
अटन, १ अटारी, २ घूमना ।
अट्टहास, ठट्ठाय के हंसना ।
अतनु, शरीर विना ।
अतर्क्य, जो तर्क के योग्य नहीं ।
अतिथि, अभ्यागत, पाहुन ।
अतिसय, बहुत, बड़ा, अतिशय ।
अतीत, रहित, बीता ।

…त, जो तौला नहीं गया, बड़े ।
यहां, इस में ।
…प्रिया, अनुसूया, अत्रि ऋषि की
…ी का नाम ।
…ई, बैठक ।
…, पूर्ण, बहुत ।
…र्यित, अपूर्व ।
…ति, देवतों की माता ।
…य, जो देने के योग्य नहीं ।
…श्य, जो देखने के योग्य नहीं, छिपा ।
…त, अपूर्व, आश्चर्ययुत, ।
…द्रि, पर्वत, पहाड़ ।
…त, भेदरहित, जिसके समान दूसरा नहीं ।
…, तरे, नीच ।
…गो, गुदेंद्रिय, मार्ग, गांड़ ।
…धर, १ लघु, छोटा २ होठ, ओठ ।
…धिकारी, अधिकार के योग्य ।
…धिप, राजा ।
…धिवास, निवास, बसने की जगह ।
…धीश, अधीश, राजा, स्वामी ।
…नध्यवसित, विध्वापन ।
…नहस, बुरा ।
…नल, १ क्रोध २ ईर्षा, दाह ।
अनघ, पापरहित ।
अनट, अन्याय ।
अनत, अन्यत्र, और जगह ।
अनपायिनी, नाशरहित, नित्य ।
अनन्य, जिस को दूसरे का भरोसा नहीं ।
अनल, आग, अग्नि ।
अनवद्य, दोष विना ।
अनयास, अनायास, बिनायत्न ।
अनहित, १ शत्रु, वैरी २ बुरा ।
अनाथ, बे मालिक ।
अनादि, जिस का आदि नहीं ।

अनामय, रोगरहित, भला चंगा ।
अनिंदित, निंदा के योग्य नहीं ।
अनिप, सेनापति ।
अनिमनि, अनमनी, उदास ।
अनिल, पवन, वायु, बयार ।
अनिर्वाच्य, जो कहने के योग्य नहीं ।
अनी, १ सेना २ समूह ।
अनीक, १ सेना २ समूह ।
अनीश, अनीश, जीव, ईश नहीं ।
अनीह, १ चेष्टारहित २ इच्छारहित ३ मत्त ।
अनु, १ आगे २ पीछे ३ थोड़ा ।
अनुकथन, बारंबार कहना ।
अनुकूल, १ प्रसन्न २ अनुसार ।
अनुग, पीछे चलनेवाला ।
अनुग्रह, दया, कृपा ।
अनुगामी, १ आज्ञाकारी २ पीछे चलने वाला ।
अनुचर, दास ।
अनुचरी, दासी ।
अनुज, छोटा भाई ।
अनुजा, छोटी बहिन ।
अनुदिन, सदा, प्रतिदिन ।
अनुपम, उपमारहित ।
अनुभव, यथार्थ ज्ञान ।
अनुमान, १ विचार २ अनुसार ३ प्रमाण, ४ अटकल ।
अनुमानी, नैयायिक ।
अनुराग, १ प्रीति २ अनुरक्ताई ।
अनुरूप, अनुसार, योग्य ।
अनुरोधू, अनुरोध १ रोक २ अनुसार ।
अनुमोदन, प्रशंसा, सराहना ।
अनुवाद, बार बार कहना ।
अनुसारी, १ अनुकूल २ करी ।
अनुभाउ, अनुभाव, महिमा ।
अनुशासन, अनुशासन, आज्ञा ।

अनुसंधान, १ कामना २ खोजना ।
अनुहर, १ अनुसार २ योग्य, अनुसार ।
अनुपम, उपमारहित ।
अन्त, झूठ ।
अनेक, कई एक, बहुत ।
अनैसे, कुदृष्टि से, बुरे ।
अनंग, १ अंगहीन, शरीर बिना, २ कामदेव का नाम ।
अन्यथा, १ झूठ २ और प्रकार से ।
अन्वहं, निरंतर, लगातार ।
अपडर, १ झूठ २ डर ३ निज डर ।
अपत, १ पापी २ बिना प्रतिष्ठा के ।
अपभय, भय, डर, अपनी डर ।
अपर, दूसरा, और ।
अपलोक, अपश्लोक, अपजस ।
अपवर्ग, मोक्ष, मुक्ति ।
अपवाद, अपजस, निंदा ।
अपहरनी, दूर करना ।
अपहारी, नाश करनेवाला, अपहरण करनेवाला ।
अपान, अपना ।
अपि, १ भी २ निश्चय ।
अपेल, अचल, ।
अप्रतिहत, जिस का रोक नहीं, अव्याहत।
अर्पा, दिया, दे दिया ।
अबला, स्त्री, मेहरारू ।
अबाधा, १ बांध, बंध २ बाधारहित, बे रोक, दुख बिना ।
अबुध, अज्ञानी ।
अभि, सब ओर से ।
अभिअंतर, भीतर ।
अभिजित, एक नक्षत्र का नाम, एक मुहूर्त ।
अभिनंदन, सराहना ।
अभिमत, वांछित, चाहा गया ।
अभिराम, १ सुंदर २ सुखद ।
अभिषेक, जल छिरकना, स्नान ।
अभीष्ट, वांछित, चाहा गया ।
अभूतरिपु, शत्रुरहित ।
अभेद, १ भेद बिना २ जो न टूटे ।
अभंग, जो न मिटे ।
अमराई, आम का बगीचा ।
अमरावती, स्वर्ग, इंद्रलोक ।
अमान, १ मानरहित २ प्रमाण से परे
अमानुष, जो मनुष्य से न हो ।
अमित, जिस का अंत नहीं ।
अमिय, अमृत, संजीवनी ।
अमोघ, सफल ।
अमंगल, अशुभ ।
अय, लोहा ।
अयन, घर, स्थान ।
अयं, यह ।
अयुत, दस हजार ।
अरगाई, १ चुप २ अलग ।
अरगानी, १ चुप २ अलग ।
अरध, अर्ध, आधा ।
अरधंग, अर्धांग, आधा शरीर, आधा अंग
अरनव, अर्णव, समुद्र ।
अरनी, आग मथने की लकड़ी ।
अरि, वैरी, शत्रु ।
अरुन, १ लाल, रक्त २ सूर्य, ३ सूर्य का सारथी ।
अरुनचूड़, मुर्गा ।
अरुनारे, लाल ।
अरुनसिखा, मुर्गा ।
अलखित, अलक्षित, जो लखा नहीं गया
अलछि, अलक्ष्मी, धनहीन ।
अलान, जंजीरा, गजबंधन ।
अलि, १ भ्रमर, भौंरा २ सखी ।
अलिनि, भ्रमरी, भौंरी ।

ता, अलीक, झूठ ।
हा, झूठ ।
झ, अनुभव करके, तरक के, समझ करके ।
ला, थिर ।
किक, जो लोक में नहीं ।
कृति, अलंकार, शोभा ।
क्षित, निश्चित ।
ति, ज्ञान ।
गाह, १ अथाह २ स्नान, नहाना ।
घट, अड़बड़ ।
वट, औचक ।
ज्ञा, अपमान ।
डेरि, १ त्याग करके २ बेचमें कसके ।
ढर, जो नीच पर भी ढरता, अर्थात् दया करता ।
तंस, माथे का गहना ।
ध, अयोध्या ।
धि, १ सीमा, सिवाना २ प्रतिज्ञा, पण ।
नि, पृथ्वी ।
निप, पृथ्वीपति, राजा ।
नीश, अवनीश, राजा ।
वर्त्त, आवर्त्त, भवंर, जलघुमर ।
वराधक, सेवक ।
वराधना, सेवना ।
वरेखो, लिखो ।
विरेब, उलट के पद को जोड़ना, कुपेच ।
वलोकय, देखो ।
वसान, नाश, अंत, ।
वसि, अवश्य, जरूर ।
वशेषित, बचा, बाकी ।
वसेरी, १ देरी २ उत्कंठा ।
वाधी, सुखरूप ।
अविकारी, विकाररहित, जन्म, आदि विकारहीन ।
अविगत, व्यापक ।
अविचल, थिर ।
अविछीन, निरंतर ।
अविद्या, अज्ञान ।
अविद्यापंच, अविद्या आदि पांच क्लेश ।
अविनय, ढिठाई ।
अविनाशी, जिस का नाश नहीं ।
अविरल, निरंतर ।
अविरोध, विनाविरोध ।
अविवेक, अज्ञान, विवेकरहित ।
अव्यक्त, १ प्रकृति २ ईश्वर ३ गुप्त ।
अव्याहत, जिस का रोक नहीं ।
अष्टादश, अठारह ।
अस, ऐसा ।
असन, अशन, भोजन, खाना ।
असनि, वज्र, अशनि ।
असमय, कुसमय, विनाऋतु ।
असमसर, कामदेव का नाम ।
असमंजस, दुबधा ।
असहाई, विना सहाय के ।
असाधी, असाध्य, जो दूर न हो ।
असि, १ तरवार २ है ३ ऐसी ।
असिव, अशिव, अमंगल ।
असुर, दैत्य, राक्षस ।
असुरसेन, नया तीर्थ ।
असेष, अशेष, संपूर्ण ।
असौच, अपवित्रता ।
असम्भावना, अनिश्चय, संभावना नहीं ।
असंमत, प्रतिकूल ।
अस्थिमाल, हाड़माल ।
अह, १ अहंकार २ कष्ट ३ दिन ।
अहह, हाय, बड़ा कष्ट है ।
अहमिति, अहंकार ।
अहि, सांप ।
अहिनी, नागिन, सांपिन ।
अहिराज, शेष नाग ।

अहिवात, सोहाग, सौभाग्य ।
अहेर, आखेट, शिकार ।
अहेरी, शिकारी ।
अहो, १ संबोधन २ आश्चर्य ३ दुःख ४ हर्ष ।
अहं, हम ।
आइ, जीवन, उमिर ।
आकर, खानि ।
आकुल १ विकल २ पूर्ण ।
आकृति, आकार, सूरत ।
आखर, अक्षर ।
आगर, १ मुख्य २ गुणखानी ३ घर ४ चतुर ।
आगरी, १ कोठरी २ नागरी ।
आगार, घर ।
आगिल, होनहार ।
आचरन, करतूति, आचार ।
आचरनी, करतूति ।
आचरहीं, करते हैं ।
आतप, घाम ।
आत्मघन, आत्मघाती ।
आतुर, १ दुःखी २ जल्दी ।
आदिकवि, वाल्मीक ।
आन, १ अन्य, और २ सौगंद ।
आनन, मुख, मुंह ।
आनवी, लाइयो ।
आपन्न, विपत्ति में पड़ा ।
आभीर, गोप, अहीर, भील ।
आमलक, आंवरा ।
आयत, विशाल, बड़ा ।
आयतन, घर ।
आयसु, आज्ञा ।
आयुध, हथियार, शस्त्र ।
आरज, १ आर्य, श्रेष्ठ २ ससुर ।
आरत, आर्त, दुःखी ।
आरति, १ आर्ति, पीड़ा २ अति प्रीति ।
आराती, आराति, वैरी, शत्रु ।

आराम, १ सुखदाता २ बगीचा ।
आरूढ़, चढ़ा ।
आरो, आरव, आहट ।
आलय, घर ।
आलवाल, थाला ।
आव, आयुष, उमिर ।
आवलि, अवली, पंक्ति ।
आवाहन, बुलाना ।
आश्रित, आश्रित, अवलंब लिया ।
आश्रमी, ब्रह्मचारी आदि ।
आसक्त, अतिलग्न ।
आसा, १ आशा, दिशा २ आसरा, भरोसा ।
आसावसन, १ नंगा २ तृष्णाहीन ।
आसीन, बैठा ।
आसु, आशु, जल्दी ।
आंक, निश्चय ।
आंकुरे, अंकुर, अंखुआ ।
इकअंग, एक पखरा, अंग ।
इच्छित, वांछित, चाहा गया ।
इत, इधर ।
इतराई, ऐंठ के चलना, इतराना ।
इदम्, यह ।
इदमित्थम्, यह ऐसा, एं हो ।
इव, जैसे, सदृश ।
इष्टदेव, पूज्य देवता ।
इह, यहां, इस लोक में ।
इन्दिरा, लक्ष्मी ।
इन्दु, चन्द्रमा ।
इन्द्रजाल, बाजीगर ।
इन्द्रजीत, मेघनाद ।
इन्द्री, इंद्रिय, नेत्रादि ।
ईति, अति वर्षा आदि ।
ईशान, ईश्वर, शिव ।
ईषना, ईच्छा, वासना ।
ईस, ईश १ ईश्वर २ शिव ३ राजा ।

…न, बजाने की लकड़ी ।
…ठि, उकठा, उकठना ।
…र्षि, ऊंचे होते हैं, उकसना ।
…, १ भयानक २ भेड ।
…रे, खुले ।
…टु, उचाटन, उचटना ।
…चत, योग्य ।
…िन, उमंग, गोटी ।
…ागर, प्रसिद्ध, उजला ।
…जैनी, एक नगर का नाम ।
…डु, तारा ।
…क्ति, वचन, कहना ।
…तकंठा, उत्कंठा, अभिलाषा ।
…तकर्ष, उत्कर्ष, बड़ाई ।
…तपात, उत्पात, उपद्रव ।
…त्सव, उछाह ।
…तंग, उत्तंग, ऊंचा ।
…दक, जल, पानी ।
…दयाद्री, १ प्रकटता २ उदयाचल की घाटी ।
…दधि, समुद्र ।
…दभव, उद्भव, उत्पत्ति ।
…दयगिरि, उदयाचल ।
…उदर, पेट ।
…उदरवृद्धि, जलोदर रोग ।
उद्वेग, उद्वेग, क्षोभ ।
उदार, १ दाता २ बड़ा ।
उदासा, बेपरवाह ।
उदासी, सन्यासी ।
उदासीन, शत्रुमित्रभावरहित ।
उपचार, उपाय ।
उपधान, तकिया ।
उपनिषद, वेद का रहस्य भाग ।
उपपातक, छोटा पाप ।
उपवन, विहार करने की वाटिका ।
उपराना, प्रगट, मगन ।
उपल, पत्थर ।
उपबरहन, तकिया ।
उपभाषा, उपवास, भूखा रहना ।
उपवीत, जनेऊ ।
उपराजा, उपजाया, उपजाना ।
उपहार, भेंट, पूजा, बकर ।
उपाटी, उखाड़के, उखाड़ना ।
उपाधी, १ समीप प्राप्ति २ माया ३ उपद्रव ।
उपाये, उत्पन्न किया ।
उपारे, उखारे, उपारना ।
उपाया, उपजाया ।
उपासा, उपवास, भूखा रहना, फाका ।
उपासक, भक्त ।
उपासना, भक्ति सेवा ।
उबरे, उबर गया, बच गया ।
उबारा, बचाया ।
उभय, दो, दोनो ।
उभौ, दो, दोनों ।
उमा, पार्वती ।
उयेउ, उदय हुआ, उगना ।
उर, छाती, हृदय ।
उरग, सांप ।
उरगाद, गरुड़ ।
उरगारी, गरुड़ ।
उरु, अधिक ।
उर्विजा, सीताजी का नाम ।
उलूक, उल्लू, घुघुआ ।
उहार, उघार, परदा ।
ऊमरि, उदुम्बर, गूलर का पेड़ ।
ऊना, ऊन, कमती ।
एक, १ एकहो २ मुख्य ३ प्रधान ।
एकरस, षड्विकाररहित अर्थात् कामादि विकार से रहित ।

एकाकिन्ह, एकाकिन, एकाकी, अकेला ।
एकाकी, अकेला ।
एतादृश, ऐसा ।
एवमस्तु, ऐसा हो ।
ऐक, अटकल ।
ओघ, समूह ।
ओडनखांडे, पटेबाज ।
ओड़िअहि, आड़ ।
ओदन, भात ।
ओधे, लगे ।
ओर, १ अंत २ तरफ ।
ओरे, ओला, बनौरी ।
अंक, १ अक्षर २ गोदी ३ चिह्न ४ एक आदि गिनती ।
अंकित, चिह्नयुत ।
अंग, १ शरीर २ मित्र ३ हस्त आदि ४ राज्य का अंग ।
अंगरी, बखतर ।
अंगवनि, सहना, अंगवना ।
अंचल, आंचर ।
अंब, अम्बा, माता, मतारी ।
अंबक, आंख ।
अंबर, १ वस्त्र २ आकाश ।
अंबरीष, अंबरीष, एक राजा का नाम ।
अंबु, जल, पानी ।
अंबुधर, मेघ, बादर ।
अंबुधि, समुद्र ।
अंबुपति, वरुण, बरुन ।
अंभोज, कमल ।
अंजि, अंजन लगा के, आंज करके ।
अंगुलि, अंगुरी ।
अंड, १ ब्रह्मांड २ अंडा ।
अंडकटाह, ब्रह्मांड ।
अंतर, १ भेद २ भीतर ।
अंतरजामी, मन का जाननेवाला ।
अंतरधान, अंतर्धान, छिपना ।
अंतरहित, अंतर्हित, छिपा, गुप्त ।
अंतावरि, अंतड़ी, आंत ।
अंवां, आवां ।
कइकइ, कैकेयी ।
कच, बार, केश, ।
कछप, कच्छप, कछुआ ।
कज्जलगिरि, अंजनपर्वत ।
कटक, १ सेना २ कड़ा, खडुआ ।
कटाह, कड़ाह ।
कटि, कमर, करिहांव ।
कटिसूत्र, करधनी ।
कटु, कडुआ ।
कडिहारू, कर्णधार, मल्लाह ।
कत, काहे, किसलिये ।
कति, केतना ।
कथनीय, कहने के योग्य ।
कदली, केला, केरा ।
कदंब, १ वृक्ष विशेष २ समूह ।
कद्रू, नागमाता ।
कनककशिपु, हिरण्यकश्यप, एक दैत्य का नाम ।
कनकलोचन, हिरण्याक्षदैत्य ।
कनी, कंद, कनिका ।
कपटभू, मायाभूमि ।
कपाट, केवाड़ी, केवाड़ ।
कपाल, खोपरी ।
कपि, बानर ।
कपिकुंजर, कपिश्रेष्ठ ।
कपिन्द्रा, कपींद्र, बानरों का राजा ।
कपिल, एक मुनि का नाम जिस ने सांख्य शास्त्र बनाया ।
कपोत, कबूतर ।
कपोल, गाल ।
कबारू, ऊसर, ताल ।

ओ, १ कबूतर करायी २ पक्षी विशेष।
ठ, कड़ुआ।
नोय, सुंदर।
ना, लक्ष्मी।
, १ कार्य, काम २ शरीर।
१ किरन २ हाथ ३ सूंड ४ मालगुजारी।
क, पीड़ा।
ज, अंगुली।
तल, हाथ पर।
तारी, हाथ की तारी।
न, १ इंद्रिय २ कान ३ साधन ४ कारन ५ करना।
नोया, करणीय, करने के योग्य।
वैर, विपदा।
षा, १ ईर्षा २ वैर ३ विष।
षि, खेंच करके करषना, कर्षण।
रारा, कराल भयंकर १ तट, किनारा।
राल, कठोर, भयंकर।
रि, हाथी।
रिनी, करिणी, हथिनी।
रीला, वृक्ष विशेष, जिसमें पत्ता नहीं।
रुई, कटु, कड़ुई।
रुन, करुणा, दया।
रुनाकरति, गुण कह करके विलाप करती।
रतव्य, कर्तव्य, करने के योग्य।
र्नधार, पतवारी।
ल, १ सुंदर २ मीठा।
लकंठ, कोइल।
लप, १ कल्प, ब्रह्मा का दिन २ प्रलय ३ मनोरथ ४ समर्थ ५ कल्पना ६ रचना।
कल्पतरु, कल्पवृक्ष।
कलपना, १ तर्क, २ आलसा ३ कष्ट ४ रचना।
कलपि, झूठ करके, कलपना बनाकेना।

कलपित, कल्पित, झूठ, झूठ तर्क।
कलबल, खट्ट गड्डी।
कलभ, हाथी का बच्चा।
कलमलै, चंचल भये, हिले, कलमलाना।
कलस, कलश, गगरी, घड़ा।
कलहंस, राजहंस।
कला, १ अंक तरजादि ६४ चंद्र, आग।
कलाप, समूह।
कलि, १ कलियुग २ कलह ३ बहेड़ा का वृक्ष।
कलिकवि, कलियुग के कवि कालिदास आदि।
कलित, १ पहिरा २ सुंदर ३ रचित।
कलिमलसरि, कर्मनाशा नदी।
कलिल, पंक, कीचड़।
कलुष, पाप।
कलेवर, शरीर, देह।
कलेस, १ क्लेश, दुःख २ अविद्यादि पांच ३ चंद्रमा।
कलंक, १ लांछन २ मिट्टूपारा।
कलोलिनी, तरंग समेत नदी।
कवल, गिरास, कवर।
कवि, काव्यकर्ता।
कवित्त, काव्य, कविता।
कबंध, १ दैत्य विशेष २ धड़।
कश्यप, कश्यप, एक ऋषि का नाम।
कसे, कसौटीपर रगड़, कषना।
कहानी, कथा।
काछ, कच्छ।
काक, कौआ, काग।
काकपच्छ, पट्टा।
काकु, व्यंग वचन।
काखासोती, दोनों कंधा से कांख तक
काछै, बनावै।
कानन, वन।

काने, संकोच, मर्य्यादा ।
काम, १ कामना २ कामदेव ३ विषय ४ धंधा ५ सुंदर ।
कामद, मनोरथदाता ।
कामदगाई, कामधेनु ।
कामना, वासना, इच्छा ।
कामरूप, इच्छाचारी, कामस्वरूप ।
कार्मुक, धनुष ।
कारक, करनेवाला ।
कारज, कार्य, पंचभूतादि ।
कारन, १ प्रयोजन २ पिता ३ निमित्त ४ प्रकृति ।
कारनकरन, महत्तत्वादि के कारण ।
कारी, काली ।
काल, १ समय २ मृत्यु, मीच ३ यम ४ काला, श्याम ५ मेम ।
कालकूट, विष ।
कालराति, प्रलय की रात ।
कालिका, देवी ।
काली, १ कालह, कल्ह २ श्याम ।
कांजी, १ सिरका २ खट्टा पानी राई का ।
कांधी, अंगीकार करके ।
किन, १ घाव २ क्यों नहीं
किन्नर, देवजाति विशेष ।
किमपि, कुछ भी ।
किम्वा, अथवा ।
किरातिन, भीलनी ।
किरिच, टुकड़ा ।
किरीट, मुकुट भेद ।
किलकिला, बानर का शब्द ।
किसलय, किशलय, नया पत्ता ।
किसु, किस का ।
किसोर, किशोर, लड़का, अवस्था भेद ।
किंकर, दास ।
किंकरी, दासी ।
किंकिनी, क्षुद्रघंटिका, करधनी, मेखला ।
किंसुक, १ पलास फूल ।
कीती, कीर्ति, जस ।
कीर, सुग्गा, तोता ।
कीरति, कीर्त्ति, यश जस ।
कील, खिरचा, चिन, खरिका ।
कु, १ भूमि २ नीच, बुरा ।
कुचाह, बुरा समाचार ।
कुञ्चित, घुघुरारे, टेढ़ा ।
कुञ्जर, हाथी ।
कुजोगी, कुयोगी, विषयी ।
कुटीर, कुटी ।
कुठारी, टांगी ।
कुठाहर, नीच जगह ।
कुतर्क, नीच विचार ।
कुदृष्टि, पापदृष्टि ।
कुधातु, लोहा ।
कुपथ, बुरी राह, कुमार्ग ।
कुपथ्य, बदपरहेजी ।
कुवलय, कमल ।
कुविहग, बाज पक्षी ।
कुम्भज, ऋषि विशेष ।
कुमार, कुवारा, बालक, बिन व्याहा ।
कुमारी, कन्या, बिन व्याही ।
कुमुद, १ कोईं, २ बानर विशेष ।
कुमुदबन्धु, चंद्रमा ।
कुररी, पक्षी विशेष, क्रूंज ।
कुराई, पांव फसने का बिल ।
कुरी, सब जाति ।
कुरुचि, नीच वासना ।
कुरंग, हरिन, मृग ।
कुल, १ वंश २ समूह ३ घर ।
कुलह, टोपी, कुलाह ।
कुलि, सब ।
कुलिस, कुलिश, १ वज्र २ हीरा ।

कुशली, सुखी ।
कुशकेतु, जनक के भाई का नाम ।
कुशल, कुशल, चतुर, कल्याण ।
कुसमउ, अनवसर, बुरा समय ।
कुसुमित, प्रफुल्लित, फूला हुआ ।
कुल्हड़, कोल्हड़ा फल ।
कुंकुम, १ केशर २ रोरी ।
कुंभ, कुम्भ, घड़ा, हाथी का माथा ।
कुंत, भाला ।
कुंवर, राजकुमार ।
कूजहिं, कूजते हैं, बोलते हैं, कूजना ।
कूट, १ पहाड़ की चोटी २ निशाई ।
कूटी, व्यंग वचन ।
कूप, कूआं ।
कूर, १ कठोर २ कपटी ३ टेढ़ा ।
कूल, तट, किनारा ।
कूड़ि, लोहे की टोपी ।
कृत, किया, कर्म, करतूति ।
कृतकृत्य, कृतार्थ ।
कृतांत, यमराज ।
कृतनिंदक, कृतघ्न ।
कृतज्ञ, उपकार माननेवाला ।
कृपानि, कृपाण, तरवार ।
कृपिन, कृपिण, सूम ।
कृमि, कीड़ा, किरौना ।
कृस, कृश, दुर्बल, दूबर ।
कृसानु, कृशानु, आग, अग्नि ।
कृषी, खेती ।
क्रियक्क, १ व्यवहार, क्रियाशब्द का-बहुवचन २ यज्ञादि ३ प्रीति ४ भक्ति ।
केकी, मोर ।
केतु, १ नौग्रह २ ध्वजा ।
केर, का, सम्बन्ध कारक का चिह्न ।
केलि, क्रीड़ा, खेल ।
केवट, कैवर्त, मल्लाह ।
केवल, मुख्य, अकेली, अकेला ।
केसरी, १ केशरी, सिंह २ हनुमान के पिता ।
केहरी, केशरी, सिंह ।
कैकय, १ राजा २ देश विशेष ।
कैटभ, दैत्य विशेष ।
कैरव, कोईं ।
कैवल्य, मोक्ष, मुक्ति ।
कोका, १ चकई चकवा २ ।
कोंछ, गोदी ।
कोटर, खोढरा ।
कोटि, १ करोड़ २ पक्ष ३ धनुष का कोर ।
कोदंड, धनुष
कोदव, कोदो, अन्न विशेष ।
कोपर, पात्र विशेष ।
कोपी, १ कोई २ क्रोधी ।
कोविद, पंडित ।
कोथ, आंख का संपूर्ण सेत ढेला ।
कोरि, खोद करके, कोरना, खुरचना ।
कोरी, करोड़ ।
कोल, शूकर, सूअर ।
कोस, १ कमल का मध्य २ घर ३ खजाना ।
कोसल, एक देश का नाम ।
कोसला, अयोध्या ।
कोसलपुरी, अयोध्या ।
कोह, क्रोध ।
कोहबर, कौतुकघर ब्याह का ।
कोहाब, रूठना, कोहाना ।
कोही, क्रोधी ।
कौ, पृथ्वी में ।
कौतुक, १ तमाशा २ चमत्कार ।
कौतूहल, कौतुक ।

कौमुदी, चांदनी ।
कौल, वाममार्गी ।
कौशिक, विश्वामित्र ।
कंक, कुही ।
कंकन, कड़ा, कंकना ।
कंचन, सोना, सुवर्ण ।
कंज, कमल ।
कंटक, १ कांटा २ शत्रु ।
कंडु, खजुली ।
कंत, पति ।
कंद, १कमल आदि की जड़ २ मेघ ३ समूह ।
कंदरा, गुफा ।
कंदुक, गेंद ।
कंधरा, गला ।
कंध, १ स्कंध, कांधा २ मोटी डार ।
कंप, कांपना ।
कंपति, समुद्र ।
कंबल, कमरा, पशमीना ।
कंबु, शंख ।
खग, पक्षी, चिड़िया ।
खग्ग, (खड्ग) तरवार ।
खगकेतु, गरुड़ ।
खगहा, गेंडा ।
खगेस, (खगेश) गरुड़ ।
खचित, जड़ाऊ ।
खची, जड़ाऊ ।
खटाहि, थिर रहना ।
खद्योत, जुगुनू ।
खनि, खोद करके ।
खप्पर, खर्पर, खोपड़ी ।
खर्पर, १ पीठ २ सिर, खोपड़ी ।
खर्ब, १ छोटा २ तुच्छ ।
खभारू, क्षोभ ।
खर, १ राक्षस [illegible] का भाई २ तीक्ष्ण
३ गदहा ४ [illegible] ।
खरभर, क्षोभ ।
खरी, गदही ।
खरो, हठ ।
खल, दुष्ट, खर[illegible] ।
खलु, निश्चय क[illegible] ।
खस, जातिविशेष
खसी, गिरी ।
खसेउ, गिरा, खसना
खांगे, कमती ।
खानिक, जो खानि में हुआ ।
खानी, (खानि) घर ।
खाले, नीचे, गड़हा ।
खिन्न, दुखिया ।
खीन, (क्षीण) दूबर, दुर्बल ।
खीस, नाश ।
खेत, (क्षेत्र) समरभूमि, अन्न बोने का
स्थान ।
खेद, दुःख ।
खेर, पुरा, गांव
खेलवार, खेलाड़ी ।
खोडस, (षोड़श) सोरह ।
खोरी, १दोष २ गली ३ चंदन की खौरी ।
खोर, लंगड़ ।
खोह, गुफा ।
खंजन, खंडरिच ।
खंड, टुकड़ा ।
गगन, आकाश ।
गज, हाथी ।
गजानन, गणेशजी ।
गत, १ गया २ प्राप्त ३ ज्ञात ४ निकृष्ट
५ बिना ६ अप्रिय ।

गति, १ मुक्ति २ रक्षा ३ चाल ४ ज्ञान ५ स्वरूप ६ दशा ७ आधार ८ उपाय ।
गथ, दाम ।
गद्गद्, आनंदयुक्त ।
गर्द, धूरि ।
गन, १ गण, शिव के प्रमथ आदि, २ विघ्न, ३ समूह ।
गनराऊ, गणेशजी ।
गनराज, गणेशजी ।
गनि, १ गन करके २ विचार के ।
गनिक, गणिक, ज्योतिषी ।
गनिका, वेश्या, कसबी ।
गनी, १ धनी २ विचार ३ गिनती ।
गनै, गिनती के ।
गनेस, १ गणेश २ आरंभ ३ रस ।
गर्वित, अभिमानी, मानयुक्त ।
गभुवारे, गर्भवाल, बालक के नये बाल ।
गम्, गमन, जाना ।
गम्य, जानने के योग्य ।
गय, हाथी ।
गयंद, हाथी ।
गरल, विष ।
गरुता, गुरुता, गरुआई, भार ।
गरह, १ ग्रह, २ गंठिआ, बात ।
गलित, गलगया, नाश ।
गर्वहिं, गर्व से ।
गवासा, कसाई ।
गहगहे, बजे, नक्कारे का शब्द ।
गहन, १ विकट २ बन ३ पकड़ना ।
गहबर, १ सघन, २ सोच के साथ ।
गहरु, देरी, विलंब ।
गाइगोठ, गोशाला ।
गाजन, नाश करनेवाला ।
गाड, गड्हा ।
गाडर, घास विशेष, ससका भेद ।
गाढा, कठिन, दृढ़ ।
गात, गात्र, शरीर, अंग ।
गाथा, कथा ।
गाथे, गूंथे ।
गादुर, चमगिदुरा ।
गाधि, एक राजा का नाम ।
गाना, कथन, कहना ।
गामी, चलनेवाला ।
गारुडी, विषहरनेवाला ।
गाल, बहुनी ।
गालव, एक ऋषि का नाम ।
गालबजाई, बकवाद करके ।
गाहा, कथा ।
गिरा, १ सरस्वती २ कविताई ३ वचन
गिरि, पहाड़ ।
गिरिजा, पार्वती ।
गिरिनाथ, महादेव ।
गिरिराज, सुमेर पर्वत ।
गिरीस, १ महादेव २ हिमाचल ।
गिरिंदा, सुमेरु पर्वत ।
गिलई, जोंकजावे ।
गीध, जटायु ।
गुञ्जा, घुंघुची ।
गुदरत, जनावत ।
गुन, गुण १ ज्ञान आदि २ डोरा, रस्सी ३ सत्वरजतम ।
गुनहु, १ विचारो २ अपराध, गुनाह ।
गुनज्ञ, गुण का जाननेवाला ।
गुनि, १ गुणी, २ विचार करके ।
गुनिय, विचारना चाहिये ।

गुरु, १ उपदेश करनेवाला २ वृहस्पति ३ बड़ा ४ भारी ।
गुरुजन, बड़े लोग ।
गुसाईं, स्वामी, सन्यासी ।
गुहा, १ गुफा २ निषाद ।
गुहारी, १ रक्षक, सहायक ।
गूढ़, गुप्त, छिपा ।
ग्रहादि, ग्रहआदि ।
ग्रही, ग्रहण ।
ग्रहीत, पकड़ा ।
गे, गये ।
गेह, घर ।
गेरू, गेरू ।
गो, १ गाय, बैल २ पृथ्वी ३ इंद्रिय ४ प्राण ।
गोई, छिपी, छिपाया ।
गोए, छिपाए ।
गोचर, विषय, जो इंद्रिय से जानाजाय ।
गोदावरी नदी विशेष ।
गोपद, गाय का खुर ।
गोप्य, छिपाने के योग्य ।
गोलक, चक्षइंद्रिय का स्थान ।
गोविंद, वेदलभ्य ।
गौतम, ऋषि विशेष ।
गौतमनारी, अहिल्या ।
गौन, गमन, जाना ।
गौर, गोरा, सफेद ।
गौरव, बड़ाई ।
गौरीस, गौरीश, शिव ।
गंजन, नाश करना ।
गंजा, नाश किया ।
गंभीर, गहिरा ।
ग्रह, सूर्य आदि ग्रह ।
ग्रहदशा, सनीचरी ।
गहे, १ पकड़े २ सूंघे ।
ग्राम, १ गवांर २ गांव ३ समूह ।
ग्राही, संग्रही, ग्रहणकरनेवाला ।
ग्रीवा, गला, कंठ ।
ग्रीषम, ग्रीष्म, गरमी की ऋतु ।
ग्रंथ, पुस्तक ।
ग्रंथि, गांठ ।
घट, १ घड़ा २ हृदय ।
घटज, कुंभजऋषि, अगस्त्य ।
घटव, करव ।
घटा, समूह ।
घटि, १ घटिया २ कमती ।
घटिहि, १ करेगी २ होगा ।
घन, १ बादल २ घना ३ लोहे का घन ४ अद्भुत ।
घमोद, १ भड़भांड़ २ बांस ।
घरनी, स्त्री, गृहस्थिनी ।
घवरि, गुच्छा ।
घाउ, चोट, घाव ।
घात, १ दांव पेच २ घाव, चोट ।
घातिनी, नाशकरनेवाली ।
घालक, नाशकरनेवाला ।
घाला, नाशकिया, घालन ।
घालि, अस्त्रमारि ।
घाली, डारी, फेंकी, घालना ।
घुनाक्षर, घुनक्षत अक्षर, लकड़ी में न्यायकरके प्रसिद्ध है ।
घुम्मरहिं, नगारेकी आवाजकी नकल ।
घूर्मिति, घूमा, घूमकरके ।
घृत, घी ।
घ्राण, घ्राण, नाक ।
चकित, आश्चर्यित ।
चक्कवै, चक्रवर्ती, चक्रवर्तीराजा ।
चक्र, १ सुदर्शनचक्र २ पहिया ।

चक्ष, चक्षु, आंख ।

चतुरंग, सेनाका चार अंग अर्थात, हाथी, घोड़ा, रथ, और पैदल ।

चतुरानन, ब्रह्मा ।

चपरि, तुरत ।

चपल, चंचल ।

चर, १ भ्रमण २ चलना ३ दूत ।

चरम, १ चर्म, चमड़ा, २ अंत ३ ढाल ।

चरफराहिं, डोलते हैं, चरफराना, तरफराहिं, विकल ।

चरनपीठ, खड़ाऊं ।

चराचर, चल अचल, चैतन्य और जड़ ।

चरित, चरित्र, हाल ।

चरू, १ खीर २ बरतन ।

चहर, चहर, चलना, बहना ।

चहुंयुग, चारोयुग अर्थात, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग ।

चाख, नीलकंठपक्षी ।

चाका, चक्र, पहिया ।

चांकी, राशिको गोठदेना, चांकना, छापना, बिजली ।

चाड़, चाह, और बिजुली ।

चाप, १ धनुष, २ दाबना ।

चापन, चापना, पगचंपी, दाबना ।

चापी, दबाई ।

चामर, चवंर ।

चामुंडा, योगिनी भेद ।

चार, १ दूत, चुगुल, लबार ।

चारिपद, धर्म के चार पांव अर्थात, सत्य, शौच, दान, दया ।

चारिअवस्था, जाग्रत स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय ।

चारिभांति, भोजन, भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, ।

चारी, १ चार ४, २ चलनेवाला ३ चुगुली ।

चारू, सुंदर ।

चालति, डोलती, चालना, डोलाना ।

चाहि, १ देखकरके २ उसकी ओर से चाहना, देखना ।

चाही, १ चाह २ देखना ।

चित, १ चेतन, ज्ञान २ मन ।

चितचेता, सावधान ।

चितव, देखता है, चितवना, देखना ।

चित्रकेतु, एक राजा का नाम ।

चिंतामनि, मणि विशेष ।

चितेरा, चित्रकार ।

चिदाकाश, चैतन्य आकाश, परमात्मा ।

चिराना, पुराना ।

चिरजीवी, मारकंडेय ऋषि ।

चीर, १ चीरना २ वस्त्र ।

चुनौती, तिरस्कार, ईर्षा, धिक्कार ।

चुंबत, चूमता, छूता ।

चूड़ाकरन, मुंडन ।

चूड़ामनि, चोटी की मनि ।

चेत, चित्त ।

चेरा, चाकर, दास ।

चेरी, दासी ।

चोखा, १ अच्छी वस्तु २ अलहदी ।

चोप, उत्साह, उछाह ।

चौतनी, चौगोशिया टोपी ।

चौथपन, बुढ़ौती ।

चौहट, चौहट्टा, चौरहा ।

चंग, गुड्डी, पतंग ।

चंचरीक, भ्रमर, भंवर ।

चंड, तेजस्वी ।

चंदिनी, चांदनी ।

चंद्रमौलि, शिव, महादेव ।

चंद्रमामुनि, (निशाकर नाम) ऋषिमुनि के पुत्र का नाम ।

चंद्रहास, तरवार ।

चन्द्रिका, चांदिनी ।
छई, रोग विशेष ।
छठें, छः ।
छत, क्षत, फोड़ा, घाव ।
छति, हानि ।
छत्र, ढपा ।
छबि, शोभा ।
छबीले, सुंदर ।
छमा, क्षमा १ पृथ्वी २ सहना ।
छमि, क्षमा करके ।
छरे, छटे ।
छत्रक, भुइंफोर ।
छत्रबंधु, क्षत्री जाति में नीच ।
छाके, मतवाला, मस्त ।
छाछी, मंठा ।
छाजा, सोहा, छाजना, सोहना ।
छाया, १ छांह २ अंश ।
छारा, राख, ।
छाला, चर्म, चमड़ा ।
छांड़ा, त्याग, छोड़ा, राखा ।
छिति, क्षिति, पृथ्वी ।
छिद्र, छेद ।
छीजहिं, घटते, छीजना, घटना ।
छीना, क्षीण, दूबर, रहित ।
छीने, काटे ।
छीर, क्षीर, दूध ।
छुद्र, क्षुद्र, छोट, तुच्छ ।
छुधित, क्षुधित, भूखा ।
छुहे, चिचित ।
छूछ, खाली ।
छेका, घेरा, रोका, छेकना ।
छेमकरी, पक्षी विशेष ।
छेमा, क्षेम, सुख ।
छेत्र, क्षेत्र, भूमि, खेत ।
छैल, बांका ।
छोनिप, क्षोणिप, राजा ।
छोभा, क्षोभ, घबड़ाहट ।
छांहा, परिछांही ।
छंद, १ गायत्री आदि २ रचना ३ स्वतंत्र ।
जग, १ जंगम २ संसार ।
जगजोनी, जगयोनि, ब्रह्मा ।
जगत, पृथ्वी ।
जगदीस, जगदीश, १ राजा २ ईश्वर ।
जगदंबा, जगत की माता ।
जजाति, ययाति, एक राजा का नाम ।
जटिल, जटाधारी ।
जठर, १ बूढ़ा २ पेट ।
जठरी, बड़ी बूढ़ी ।
जड़, १ मूढ़ २ पर्वत आदि, निर्जीव ।
जत, १ जितना २ यत्न, जतन ।
जतन, यत्न, रक्षा, उपाय ।
जती, यती, सन्यासी ।
जथा, यथा, जैसे ।
जथाथित, यथास्थित, जैसा पहिले, जैसा था ।
जथोचित, यथोचित, यथायोग्य ।
जनक, १ पिता २ सीता के पिता का नाम ।
जनकौरा, जनक, जनक सम्बंधी ।
जनयित्री, जननी, माता ।
जनि, नहीं, मत ।
जनित, उत्पन्न ।
जनेत, बरात, जनता ।
जनेस, जनेश, राजा ।
जनेषु, मनुष्यों में ।
जपंति, जपते हैं ।
जपामि, मैं जपता हूं

म, १ यम, यमराज २ अहिंसा आदि ।
मी, यमी, संयमी ।
मुन, यमुना, जमुना नदी ।
यति, जय होता है ।
येउ, जीता, विजय किया ।
यंत, जयंता, इंद्र के बेटे का नाम ।
र, जुर, ज्वर ।
रि, जड़, मूल ।
र्जर, चोरफारे, झांझर ।
लचलि, जलभौंरा ।
लकुक्कुट, जलमुर्गा, मुर्गाबी ।
लचर, मकरी आदि ।
लज, कमल ।
लजात, कमल ।
लजान, जलयान, नाव, जहाज ।
लद, मेघ, बादल ।
लधर, मेघ, बादल ।
लधि, समुद्र ।
लमल, फेन आदि ।
लरासी, जलराशि, समुद्र ।
लरुह, कमल, ।
लविहंग, जलपक्षी ।
लाशय, जलाशय, तलाव ।
लंधर, दैत्य विशेष ।
ल्पक, बोलनेवाला, बकनेवाला ।
ल्पत, बकता है ।
ल्पसि, तू बकता है, जल्पना ।
ल्पहिं, कहते हैं, जल्पना ।
वनिका, १ कनात २ भेस ।
स, १ जैसा २ यश, कीर्ति ।
सोमति, यशोमति, यशोदा, जसोदा ।
हि, जेहि, जिसको, त्यागो, छोड़ो ।

जग्यउपवीत, यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
जाई, १ बेटी २ पैदा भई ।
जाग, यज्ञ ।
जागी, जाहिर, प्रगट ।
जाचक, याचक, मंगन ।
जाचत, मांगता है ।
जाचा, मांगा, जाचना, मांगना ।
जातकर्म, लड़के के जन्मसमय की नांदी श्राद्ध आदि ।
जातना, यातना, पीड़ा, तीव्रवेदना ।
जातरूप, सोना, सुवर्ण ।
जातुधान, राक्षस ।
जान, १ ज्ञान २ जांघ ३ सवारी, यान ।
जानपनी, स्वरूपज्ञान ।
जानी, १ ज्ञानी २ स्त्री ।
जानु, घुटना ।
जापक, जपकरनेवाला ।
जाम, याम, पहर ।
जामाता, दामाद ।
जामिक, यामिक, पाहरू, पहरुवा, चौकीदार ।
जामिनि, यामिनी, रात्रि, रात ।
जाय, वृथा ।
जाया, १ स्त्री २ उत्पन्न ।
जारा, १ जलाया, जारना २ समूह ।
जाल, १ समूह २ झरोखा ३ फंदा ।
जावक, यावक, महावर ।
जाबाली, एक ऋषि का नाम ।
जिनस, जाति ।
जिमि, जैसे ।
जियाये, पाले, जियाना, पालना ।
जीव, १ जीते रहो २ जीवात्मा ।
जीवन, १ आजीविका, रोजी २ जीना ३ जल, पानी ।

जीह, जिह्वा, जीभ ।
जुग, १ युग, दो २ सत्ययुग आदि ।
जुगल, १ युगल, दो ।
जुगविधि, युगविधि शीतउष्ण दोविधि का ज्वर ।
जुझारा, लड़वैया, लड़नेवाला ।
जुटत, १ लड़ते हैं, जुटना २ लड़ना ३ एकट्ठा होना ।
जुड़ाने, शीतलभये, ठंढेभये ।
जुबती, युवति, जवान स्त्री ।
जुबराज, युवराज, कुंअर, नायब, राज्याधिकारी ।
जुबा, युवा, जवान ।
जुवान, जवानपुरुष ।
जुवारा, जुवारी ।
जूझा, लड़ाई, युद्ध ।
जूथ, यूथ, समूह ।
जूथप, यूथप, सेनापति ।
जून, १ पुराना २ समय ।
जूरी, १ समूह २ जोड़करके, जूरना, जोड़ना ।
जूहा, यूथ, समूह ।
जेईं, भोजन किया, जेवना, खाना ।
जोई, देखी, जोवना ।
जोऊ, देखना, जोवना ।
जोग, १ योग, अष्टांग २ योग्य ३ मिलाप, संबंध ।
जोगवत, परिखत, खबरदारी करना जतन करना ।
जोजन, योजन, चार कोस ।
जोड़ा, जोड़ी, दोनों ।
जोती, १ ज्योति, प्रकाश २ सूर्य ।
जोनी, १ योनि, कारण २ जाति ।
जोवा, देखा, जोवना, देखना ।
जोषिता, योषित, स्त्री ।
जोहारे, प्रणामकिया; जोहारना, प्रणाम करना ।
जोही, देखकरके, खोजकरके ।
जंगम, चलनेवाला ।
जंतु, क्षुद्रजीव ।
जंचित, यंचित ताला दे दिया ।
जंची, बंधकिया, ताला देदिया ।
जबु, जामुन ।
जंबुक, सियार, शृगाल ।
ज्याये, पाले, ज्याना, पालना ।
झगुलिया, चोलना, लड़कों का कुर्ता ।
झटति, झटिति, जलदी ।
झषकेतु, कामदेव ।
झारी, समूह ।
झाषा, झखना ।
झोटिंग, प्रेतभेद ।
झंई, तिरमिराना, आंख के आगे अंधेरा ।
झंपेउ, ढंपा, झंपना, ढपना ।
झांई, परछाहीं, तिरमिराना ।
झोटी, चोटी ।
टकोर, ध्वनि, धुनि ।
टिटिभ, टिटिहरी पक्षी ।
टेई, चोखाकिया, तीक्ष्णकिया; टेवना, चोखा करना ।
टेक, १ हठ २ अवलंब ।
टेको, १ हठकरके २ निश्चययुत ३ थापो ।
टेव, बान, आदत ।
टेर, पुकार ।
ठकुर, ठाकुर ।
ठट्ठा, समूह ।
ठठुकि, रुक करके; ठठकना, रुकना ।

…यंड, क्रिया, ठाना ।
…वनि, चाल, चटने की रीति ।
…ाठ, १ रचना २ समझ ।
…ाना, १ क्रिया २ निश्चय, ठानना ।
…ाहरू, जगह, ठहर ।
…ीका, निश्चय, ठीक ।
…ाँऊ, ठाँव, घर, जगह ।
…गी, छिलना ।
…महुआ, घुटने की गांठ में का रोग, गठिया ।
…सि, काट करके; डसना, काटना ।
…हकि, ठग करके; डहकना ठगना
…ाढा, चाम ।
…ाढ़े, अरे ।
…ाबर, गड़हा ।
…ासन, बिछौना, दसौना ।
…ासी, बिछा करके ।
…ंडिमो, एक प्रकार का बाजा ।
…ीटा, देखा, दृष्ट ।
…ीठी, दृष्टि, देखी ।
…वढ़, डेवढ़ा ।
…ोल, १ डोलना २ तलाव ३ हिंडोला ।
…ोली, गयी, डोलना ।
…री, खोजी, ढंढोरना, खोजना ।
…नमनी, लुढुक गयी, ढनमनाना लुढुकना ।
…ाबर, मैला ।
…ढग, समीप ।
…क, सारस पक्षी ।
…ोटा, बेटा ।
…ंगी, अंगूठ के पास की अंगुली ।
…स, स्वरूपज्ञाता, (तद्, वह, ज्ञ, जानने-…

तट, तीर, किनारा, निकट ।
तड़ाग, तलाव ।
तड़ित, तड़ित्, बिजुली ।
तत्त्व, १ सारवस्तु २ प्रकृति आदि ।
तथा, तैसे ।
तथापि, तौभी ।
तदपि, तौभी ।
तन, ओर ।
तनकाऊ, थोड़ा भी ।
तनय, पुत्र, बेटा ।
तनया, पुत्री बेटी ।
तनु, १ शरीर २ कृश, थोड़ा ३ विस्तार ।
तनुजा, बेटी ।
तनोतु, विस्तार करे, फैलावे ।
तनोरुह, रोम, रोवां जो शरीर में जमा ।
तपोधन, तपस्वी ।
तम, १ अज्ञान २ अंधेरा ३ तमोगुण ४ अत्यंत ।
तमकि, तरोष हो करके, तमक करके, तमकना ।
तमारि, सूर्य ।
तमाल, वृक्ष विशेष ।
तमी, रात्रि, रात ।
तमीचर, राक्षस ।
तर, १ तल, तरे २ अत्यंत ।
तरक, तर्क, विचार ।
तरकेउ, कूदा; तरकना, कूदना ।
तरफत, तड़पता; तरफना, तड़पना ।
तरफल, छिन्नकारना ।
तरजा, कूदा, तरजना, कूदना ।
तरनतारन, जो आप तरै और दूसरों को तारै ।
तरनि, १ … …

तरपहिं, तड़पते हैं ।
तरल, १ चंचल २ तीक्ष्ण, चोखा ।
तरु, वृक्ष, पेड़ ।
तरुन, तरुण, जवान ।
तरुनाई, तारुण्य, जवानी ।
तरुनी, तरुणी, जवान स्त्री ।
तरंग, लहर ।
तरंगी, बहुरंगी, इच्छाइवाले ।
तरंगिनि, तरंगिनी, नदी ।
ताग, डोरा, तागा ।
ताजी, घोड़ा विशेष ।
ताटंक, तरकी, बिरिया, करनफूल ।
ताड़त, पीटता, मारता ।
तात, १ पुत्र २ पिता ३ गरम, तप्त ४ भाई ५ सखा ६ प्रिय ।
तापस, तपस्वी ।
तापे, तपे, तापना, तपना ।
तामरस, कमल ।
तामस, तमोगुणी ।
तारक, १ मंत्र २ दैत्य विशेष ३ तारनेवाला ४ तारा, सितारा ५ पुतली, आंख का तारा ।
तारा, १ बालिकी स्त्री का नाम २ तरई ।
ताल, १ तलाव २ वृक्ष विशेष ३ ताड़ी बजाना ।
ताल, ताल वृक्ष ।
तिमिर, अंधकार ।
तिमुहानी, त्रिमुख, जहां तीन नदी मिलती हैं ।
तिय, स्त्री, मेहराऊ ।
तिरहुति, एक देश का नाम ।
तिलक, १ टीका २ श्रेष्ठ ।
तिष्ठे, रहे, तिष्ठना, रहना, (सं० स्था) ।
तिहुंलोक, तीनो लोक अर्थात् स्वर्ग, मृत्युलोक, पाताल ।
तीछे, तीक्ष्ण, चोखा, तेज ।
तीनकाल, भूत, भविष्यत, वर्तमान ।
तीरथपति, तीर्थपति, प्रयाग ।
तीरथराज, तीर्थराज, प्रयाग, इलाहाबाद ।
तीव्र, तीक्ष्ण ।
तुभ्यं, तुम्हारे लिये, तुम को ।
तुरग, घोड़ा ।
तुराइ, १ तोषक २ वेग से ३ तोड़ करके ।
तुला, तराजू ।
तुसार, तुषार, पाला ।
तुहिन, पाला ।
तूनीर, तरकश ।
तूरी, तुरुक ।
तूल, १ रूई २ तुल्य, बराबर ।
तूंबरी, तुमड़ी ।
तृजग, तिर्यञ्च्, पशु पक्षी आदि ।
तृन, तृण, तिनका ।
तृषित, प्यासा ।
ते, १ वे २ तेरा ३ तुम को ।
तेज, तेजस्, प्रताप, आंच ।
तेति, ते, अति, वे, बहुत ।
तोप्यो, तोपा, ढांपा: तोपना, ढांपना ।
तोमर, १ अस्त्र विशेष २ एक प्रकार का छंद ।
तोयावति, त्वरावती, वेगवती ।
तोष, संतोष, तृप्ति ।
तोषये, प्रसन्नता के लिये ।
त्वच, १ बोकला, त्वचा २ स्पर्शकी इंद्री ।
त्वदीय, तुम्हारा, तेरा ।
त्वदंघ्रि, तुम्हारा चरण ।

थकित, थकाहुआ ।
थल, स्थल, भूमि, स्थान ।
थलचर, स्थलचर, थलचारी मनुष्य आदि ।
थाना, स्थान, ठिकाना ।
थिति, स्थिति १ ठहराव २ पालन ।
थीरा, स्थिर, अचल, थिर ।
द, दाता, देनेवाला ।
दच्छ, दक्ष १ प्रजापति २ चतुर, निपुण ।
दच्छसुत, प्रचेता ।
दच्छसुता, सती ।
दत्त, दिया गया ।
दधि, दही ।
दधीचि, दधीच, एक ऋषि का नाम ।
दनुज, दैत्य, दानव ।
दम, इंद्रियों का रोकना ।
दमक, चमक, दमकना ।
दमनीय, १ तोड़नेवाला २ दमन के योग्य ।
दमनू, नाश, नाश करनेवाला ।
दम्पति, स्त्री पुरुष, जोड़ा ।
दर, १ शंख २ भय, डर ३ छेद
दरबार, सभा ।
दरस, १ रूप २ दर्श, दर्शन ।
दरसी, दर्शी, देखनेवाला ।
दर्पा, दर्प, अभिमान ।
दर्भ, कुश, कुशा, एक प्रकार की घास ।
दल, १ नाश २ पत्ता ३ सेना ४ भाग ।
दलकि, दरकि, फटना, कूद उठना ।
दलमले, पीसडाले, दलमलना ।
दलन, नाश ।
दलित, टूटा ।
दव, वन की आग ।
दवारि, दावानल, वन की आग ।
दसन, दशन, दांत ।
दहन, आग, अग्नि, जलानेवाला, जलाना ।
दा, देनेवाली ।
दाड़िम, अनार ।
दाता, देनेवाला ।
दातार, दाता, देनेवाला ।
दादुर, दर्दुर, मेंढक, मेढुका ।
दाप, दर्प १ बल २ गर्व, अभिमान ।
दाम, १ माला २ रस्सी ३ रुपया ।
दामिनि, दामिनी, बिजुली ।
दायक, देनेवाला ।
दारन, दारण, फाड़ना ।
दारय, नाश करो, फाड़ो ।
दारा, स्त्री ।
दारिद, दरिद्रता, दरिद्र ।
दारिका, लड़की, कन्या ।
दारु, लकड़ी, काठ ।
दारुन, दारुण, घोर ।
दारुनारि, कठपुतली ।
दावन, नाश ।
दाह, जरना, जलाना ।
दियाबे, दीपक, चिराग ।
दिगंबर, नंगा, वस्त्र हीन ।
दितिसुत, हिरण्याक्ष ।
दिनकर, सूर्य ।
दिनदानी, अति उदार, दिन दिन देनेवाला, ।
दिनमनि, दिनमणि, सूर्य ।
दिनेस, दिनेश, सूर्य ।
दिगिप, इंद्र कुबेर आदि ।
दिवस, दिन ।
दिव्यतन, दिव्यतनु, अप्सरा ।
दिव्यदृष्टि, अलौकिक ज्ञान ।

दिसि, दिशा, ओर ।
दिसिराज, इंद्र कुबेर आदि ।
दीक्षा, दीछा, मंत्रोपदेश ।
दीनता, गरीबी ।
दीसा, देखा, दीसना ।
दुकूल, वस्त्र, पट, रेशमी कपड़ा ।
दुर्ग, १ गढ़, किला २ अगम ।
दुर्गम, अजय ।
दुर्घट, अगम, कठिन ।
दुनी, दुनिया, संसार ।
दुर्वचन, दुष्टवचन, गाली ।
दुर्बाद, दुर्वाद, दुष्टवचन, गाली ।
दुर्बासा, दुर्वासस्, एक ऋषि का नाम ।
दुरंत, अन्तबिना ।
दुरतिक्रम, दुस्तर ।
दुराधर्ष जो शत्रु से नहीं दबता ।
दुराराध्य, दुःख से सेवने के योग्य ।
दुराव, छिपाना, कपट ।
दुरासा, मोच आशा ।
दुरित, १ पाप, २ छिपा ।
दुसह, दुस्सह, जो सहने के योग्य नहीं ।
दुष्ट जंतु, सर्प आदि ।
दुहाई, १ द्रोह २ सौगंद, कसम ।
दुहि, कामना ।
दुंदुभि, १ नगारा, २ एक दैत्य का नाम ।
दूत, हलकारा ।
दूना, दुगुना, द्विगुण ।
दूधमुख, बच्चा, लड़का ।
दूषन, १ एक राक्षस का नाम २ दोष ।
दृग, आंख ।
दृगंचल, पलक ।
देव, १ देओ २ देवता ३ मेघ ४ राजा ।
देवक, देव का ।
देवतरु, कल्पवृक्ष ।
देवधुनि, गंगा ।
देवरिषि, नारद ।
देवसर, मानस आदि ।
देस, देश, स्थान, मुल्क ।
दैअहिं, दैवको, भाग्य को ।
दैत, भेद मैं, तूं ।
दोष, काम क्रोध आदि ।
दंड, १ लकड़ी २ राजदंड, सजा ३ घड़ी ।
दंडक, १ राजा २ एक राजा, नाम विशेष ।
दंभ, पाखंड ।
दंभ, बनमाली ।
द्रवी, कृपा करो वा द्रवना, टपकना ।
द्रुम, पेड़, वृक्ष ।
द्रव्य, वस्तु ।
द्वंद, दो, रागद्वेषादि ।
द्वादस, बारह, १२ ।
द्विजराजू, द्विजराज, चं ।
धन, १ द्रव्य २ धन्य ।
धनद, कुबेर ।
धनिक, धनी ।
धनी, स्वामी, धनवान्, तमंद ।
धनु, धनुष् ।
धनेसा, धनेश, कुबेर ।
धन्या, नदी विशेष ।
धन्वी, धनुषधारी ।
धर्मध्वज, पाखंडी ।
धर, १ धड़ २ भूमि ।
धरनी, पृथ्वी ।
धरषि, दबा कर; धरषना, दबाना ।
धरा, पृथ्वी ।
धरासुर, विप्र, ब्राह्मण ।
धवल, स्वेत, सफेद ।
धाता, ब्रह्मा ।
धाम, १ घर २ तेज ३ तेजोराशि ।

धारि, सेना, फ़ौज ।
धारी, १ सेना, २ धरनेवाला ।
धावन, दूत हरकारा ।
धिग, धिक धिक्कार ।
धुआँ, १ मुरदा २ अन्न ३ धूप ।
धुनि, १ धुन कर के, कंपा कर के २ शब्द, आवाज ३ व्यंग; धुनना, कंपाना ।
धुर, १ बोझा २ मुख्य ।
धुरीन, बोझाधरनेवाला ।
धूति, ठग कर के, धूर्त्तता कर के; धूतना, छलना ।
धूमकेतु, धूम्रकेतु, अग्नि, आग ।
धृति, धीरता, धीरज ।
धेनु, गैया, गौ ।
धेनुमति, गोमती नदी ।
धोरी, मुख्य बैल ।
धंधक, धंधा, काम ।
धौं, कि, याकि ।
ध्रुव, १ ध्रुव, एक भक्त का नाम २ निश्चय, ३ एक तारा का नाम ।
नदि, १ नदी २ नवीन ।
नए, १ झुके, २ नवीन, नया ।
नकुल, नेउर, नेवला ।
नक्र, नाक, एक प्रकार का जलजंतु ।
नटत, नाचता है ।
नतरु, नहीं तो ।
नति, नवना, प्रणाम ।
नफीरी, सहनाई, एक प्रकारका बाजा ।
नभग, पक्षी ।
नभगेस, नभगेश, गरुड़ ।
नभचर, पक्षी आदि ।
नमत, नमति, नमस्कार करता है ।
नमामहे, हमलोग प्रणाम करते हैं ।
नमित, नवाया, नीचे किया ।
नय, झुका ।
नय, नीति, धर्म ।
नयन, आंख ।
नयनपट, पलक ।
नरहरि, १ नरहरिदास, तुलसीदास के गुरु का नाम २ नृसिंह ।
नर्तक, नट, नचनिया ।
नरतकी, नर्टिन ।
नलिन, कमल ।
नर्मद, सुखद ।
नलिनी, कुमुदिनी, कमलिनी ।
नव, नया, नूतन ।
नवजल, वर्षा का पानी ।
नवधा, नव प्रकार का ।
नवनीता, नवनीत, मक्खन ।
नवभक्ति, नौ प्रकार की भक्ति (टिप्पणी में देखो) ।
नवरस, शृंगारादि नवरस ।
नवल, १ नया २ जवान ।
नवसप्त, नव और सात अर्थात, सोलह सिंगार ।
नस, नाड़ी ।
नसाय, बिगड़े, नाश हो, नसाना, बिगड़ना ।
नसावा, नाश किया, नसावना, नाशकरना ।
नस्वर, नश्वर, विनाशी, नाश होनेवाला ।
नखत, नक्षत्र ।
नहरुआ, जांघ में खुलता रोग जो निकलता है ।
नहारु, १ मांस का टुकड़ा, २ मांस, बाघ ।
नाइ, नवाकरके, झुकके ।
नाईं, सदृश, की तरह ।

नाक, १ स्वर्ग २ नासिका ।
नाकनटी, अप्सरा ।
नाग, १ हाथी २ सांप ।
नागर, चतुर ।
नागरिपु, सिंह ।
नाठो, नष्टहुई ।
नाद, शब्द आवाज ।
नाना, अनेक ।
नानाकार, वक्रदंत, खुरप्र, अर्धचंद्रादि भेदवाले अनेक आकार के ।
नामी, नामवाला ।
नामानी, नाम का समूह ।
नायक, स्वामी, सर्दार ।
नयो, झुकाया ।
नारकी, नारकीय, नरकवासी ।
नाराच, बाण, तीर ।
नाल, डांड़ी ।
नावरि, नाव घुमाना ।
नाह, नाथ, पति, मालिक ।
निकर, समूह ।
निकाई, भलाई, शोभा ।
निकाम, १ अति, बहुत २ कामना रहित ।
निकाय, समूह ।
निकेत, घर ।
निकेतन, घर ।
निकंद, नाश ।
निकंदन, १ नाश, २ नाशकरनेवाला ।
निगम, वेद ।
निगूढ़ा, अतिगुप्त, बहुत छिपा ।
निग्रह, १ रोक २ दंड ।
निघटत, अति कमती होता ।
निज, १ अपना २ उत्कृष्ट ।
निजगति, अपनी गति ।
निजतंत्र, स्वतंत्र ।
निजधर्म, मुख्यधर्म ।
निजानंद, स्वरूपानन्द ।
निजसुख, आत्मसुख ।
निजसंधि, १ अपना छिद्र २ अवसर ।
नित, १ सदा २ निमित्त, वास्ते ।
नित्य, १ सदा २ नित्यकर्म जैसे संध्या आदि ।
निदान, १ अंत २ कारण ।
निदरि, निरादर कर के ।
निधन, मृत्यु, मौत, मरण ।
निधान, १ धन २ आधार ३ खजाना ।
निधि, १ बहुत धन, खजाना २ आधार, ३ संख्या विशेष ।
निपट, अति, बहुत ।
निपाता, नाश किया ।
निपुनाई, निपुणता, चतुराई ।
निःपापा, पाप रहित ।
निबिड़, सघन, घना ।
निबेरो, १ चुकाई २ अलग करो ।
निबही, १ निबहि, निबाह २ निरंतर ।
निबुकि, छोड़ा कर के; निबुकना, छुड़ाना ।
निवृति, निवृत्ति, संसार से छूटना ।
निभ, तुल्य, सदृश ।
निमि, एक राजा का नाम ।
निमेष, १ पलक मूंदना २ काल विशेष ।
नियराई, निकट पहुंचे; नियराना, निकट आना ।
नियोगा, नियोग, आज्ञा ।
निरत, अतिप्रीति युक्त, लगा, तत्पर ।
निरबहई, निबहै, निबहना ।
निरबहा, निबहा, बचगया ।
निरबाह, निबाह किया ।
निरखि, देख करके, निरीक्षण ।
निरस, रसबिना, सूखा, स्वादबिना ।
निरस, निरस नाश करके ।

निर्गम, निकसना ।
निर्गता, निकली ।
निर्णय, निश्चय ।
निर्झर, झरना ।
निर्लेप, बेलाग, लगाव नहीं ।
निर्विकल्प, भेदरहित ।
निर्वहा, बीत गया ।
निर्वाण, निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति ।
निर्भर, पूर्ण, पूरन, अतिशय ।
निर्मयउ, निर्माण किया, बनाया, रचा ।
निर्मूल, मूलरहित, नाश ।
निरामिष, मांस बिना ।
निरीस, निरीश, बिना मालिक ।
निरुपधि, निरुपाधि, उपाधि रहित, बिना प्रयोजन ।
निरुवारे, खोले; निरुवारना, खोलना ।
निरूपन, निरूपण, विस्तार से कहना ।
निरंकुस, निरंकुश, स्वतंत्र ।
निरंबु, जल बिना ।
निरंजन, अविद्या रहित, राग रहित ।
निवारक, दूर करनेवाला ।
निवारन, निवारण, दूर करना, हटाना ।
निवास, घर ।
निवेदित, अर्पित, निवेदन किया ।
निषाद, मल्लाह ।
निषंग, तरकश ।
निकेवल, अकेला ।
निसरी, निकली; निसरना, निकलना ।
निसागम, रात आये ।
निसाना, नगारा, निशान ।
निसि, निशा, रात्रि, रात ।
निसिचर, राक्षस ।
निसित, निशित, तीखा, चोखा ।
निसेनि, सीढ़ी ।
[illegible]

निसोत, निराला, केवल ।
निहारा, देखा, निहारना, निरीक्षण, देखना ।
निहार, कुहिरा ।
निहोर, निहोरा, १ विनती २ उपकार ।
नीक, अच्छा ।
नीच, १ गड़हा २ नीच, कमीना ।
नीड़, खोता ।
नीर, पानी ।
नीरज, कमल ।
नीरधर, बादल, मेघ ।
नील, श्यामरंग ।
नीलकंठ, मोर, मयूर ।
नीलोपल, नीलमणि ।
नेह, नेत्र ।
नेकु, थोड़ासा, थोरिक ।
नेग, पुरोहित आदि का कर ।
नेति, न इति, नहीं ऐसा ।
नेम, शौच संतोष आदि नियम ।
नैहर, स्त्री का निज घर, मातृघर ।
नोइ, गाय के पांव बांधने की रस्सी दूहने के समय ।
नौमि, मैं स्तुति करता हूं ।
नौमी, नवमी तिथि ।
नंचहि, नाचते हैं ।
नंदिनि, नंदिनी ।
नंदीमुख, श्राद्ध विशेष ।
पग, १ पांव २ खगन ।
पटल, १ समूह २ छपना ।
पटतर, उपमा, बराबर ।
पट, कपड़ा, वस्त्र ।
पटु, चतुर, सुंदर ।
पटोर, पटोर, रेशमी कपड़ा ।
पटली, पंगति ।
पढ़, पढ़ना ।

पखि, १ पक्षी २ कामसे ।
पताका, ध्वजा ।
पति, १ राजा, स्वामी २ भर्ता, खसम ३ प्रतिष्ठा ।
पतिदेवता, पतिव्रता ।
पतिनिहिं, पत्नी को ।
पतिलोक, हिमाचल ।
पतंग, १ सूर्य २ क्षुद्र जीव, फतिंगा ३ गेंद ४ लालरंग ।
पतंति, गिरते हैं ।
पत्र, १ चिट्ठी २ पत्ता ।
पथिक, राही, मुसाफिर, बटोही ।
पथ्य, गुनकारी ।
पंथ, राह, मार्ग ।
पद, १ पांव २ स्वरूप ३ अधिकार ।
पदचर, पैदल, प्यादे ।
पदज, पांव की अंगुरी ।
पदचारी, प्यादे, पैदल ।
पदत्रान, जूता ।
पदपीठा, खराऊं, पांव रखने की चौकी ।
पदाति, प्यादे, पैदल ।
पदादपि, पद से भी ।
पदारथ, पदार्थ, वस्तु, सब चीज़ ।
पदिक, जड़ाऊ चौकी ।
पदुम, पद्म, कमल ।
पदुमराग, लालमणि ।
पन, प्रण, प्रतिज्ञा, अवस्था ।
पनव, ढोल ।
पनस, कटहर ।
पनिघट, पानी भरने का घाट ।
पबारे, फेंके, डारे; पबारना, फेंकना ।
पबि, पवि, बज्र ।
पय, १ दूध २ पानी ।
पयद, १ थन २ बादल ।
पयनिधि, क्षीरसमुद्र ।
पयाना, प्रयाण, यात्रा ।
पयंधि, समुद्र ।
पयोनिधि, समुद्र ।
पर, १ और २ शत्रु ३ शिरोमणि ४ परे ५ तत्पर ६ उपरांत ।
परछिद्र, १ दूसरे का छिद्र २ पराये का दोष ।
परत्र, परलोक ।
परधाना, प्रधान, मुख्य ।
परना, पर्ण, पत्ता ।
परब, १ पर्व २ गांठ ।
परम, बड़ा, अति, उत्तम ।
परमा, बहुत शोभा ।
परमिति, अवधि, मर्यादा ।
परमान, १ यथार्थ २ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण ।
परमारथ, तत्त्ववस्तु ।
परस, १ छूना २ पारस पत्थर ।
परसि, छूकरके ।
परसु, फरसा ।
परसुधर, परसुराम ।
पराई, १ भागा २ दूसरे का ३ पराना, भागना, पलायन ।
परागा, पराग, धूलि, कमल का रज ।
पराभव, १ निरादर २ प्रलय ।
परावर, ब्रह्मादि और, मनुष्यादि ।
परि, अति, चारों ओर ।
परिकर, कमर ।
परिघ, बोंड़ा ।
परिचरजा, परिचर्या, सेवा ।
परिचारक, सेवक ।
परिचारिका, दासी, लौंडी ।
परिच्छिन्न, अव्यापक, घेरागया ।
परिताप, संताप ।
परितापी, दुखदेनेवाला ।
परितोष, प्रसन्नता, संतोष ।

परित्राता, रक्षक ।
परिधान, पहिरावा ।
परिनाम, १ अवस्था २ अंत ३ फल ।
परिपाका, अंत का फल ।
परिपाटी, परंपरा की रीति ।
परिहरि, छोड़ करके, परिहरण ।
परिहास, व्यंगवचन के साथ निंदा ।
परुष, कठोर ।
परे, परलोक में ।
परेस, परेश, परमेश्वर ।
परंतु, लेकिन, उपरांत ।
पलोटत, धीरे से पांव दाबता, पलोटना ।
पल्लव, नया पत्ता ।
पल्लवित, १ नये पत्ते के साथ २ रोमांचित ।
पवन, वायु, बतास ।
पश्यंति, देखते हैं ।
पश्यामि, मैं देखता हूं ।
पखाउज, मृदंग ।
पखारे, प्रक्षालन, धोये; पखारना, धोना ।
पखवारा, पक्ष, पंद्रह दिन ।
प्रसाउ, प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा ।
पहुनई, मेहमानी ।
पाइक, १ पियादा २ मल्ल ।
पाक, १ रसोई २ एक असुर का नाम ३ पक्क ।
पाकरिपु, इंद्र ।
पाकी, परिपक्क ।
पागे, साने, पागना ।
पाट, रेशम ।
पाटमहिषी, पटरानी ।
पाटल, १ गुलाब २ वृक्ष विशेष ।
पाटे, भरदिया; पाटना, भरदेना ।
पाठ, पढ़ना ।
पाठीन, पढ़िना मछरी ।
पातक, पाप ।
पात्र, बरतन, योग्य ।
पाथ, जल, पानी ।
पाथोज, कमल ।
पाथोद, बादल, मेघ ।
पाथोधि, समुद्र ।
पादप, वृक्ष, पेड़ ।
पान, १ पीना २ पत्ता ३ मद्यपान, शराब पीना ।
पानि, पाणि, हाथ ।
पारथिव, पार्थिव, शिव ।
पारहिं, सकते हैं, पारना, सकना
पारा, १ गिराया, पारना २ समर्थ ३ पार ।
पारावत, कबूतर ।
पारी, डारी, फेंकी; पारना, फेंकना ।
पालव, १ पल्लव, पत्ता २ शाखा, डार ।
पाले, अधीन ।
पावक, अग्नि, आग ।
पावन, पवित्र ।
पावस, वर्षा ऋतु ।
पाष, पक्ष, पंद्रह दिन ।
पाश, पाश, फांसी, फंसरी ।
पाहन, पाषाण, पत्थर ।
पांवर, पामर, नीच, मूढ़ ।
पांवरी, पादुका, खड़ाऊं ।
पांवड़े, पांव रखने का वस्त्र ।
पाहि, रक्षा करो ।
पाहीं, पास ।
पिक, कोइल ।
पिता, बाप, रक्षक ।
पिनाक, महादेव का धनुष ।
पिपीलिका, चिउंटी ।
पिरीते, प्रीत, प्रीतम, प्रीतियुत ।
पिरोजा, आसमानी रंग का रत्न ।

पिसुन, चुगुल ।
पी, प्रिय, पति ।
पीठ, आसन, पीढ़ा ।
पीन, पुष्ट, मोटा ।
पीयुष, अमृत ।
पीवर, पुष्ट, मोटा ।
पुट, दोना ।
पुटी, दोना ।
पुनी, पवित्र ।
पुनीत, पवित्र ।
पुर, १ नगर, पुरा, गांव २ दैत्य विशेष ।
पुरट, सोना, कंचन ।
पुरान, १ पुराण २ पुराना ।
पुराकृत, पहिले किया गया ।
पुरारि, शिव, महादेव ।
पुरुष, १ मनुष्य २ पुरखा ।
पुरोडास, यज्ञ का हव्य ।
पुरोधा, पुरोहित ।
पुरंदर, इन्द्र ।
पुलक, रोमांच ।
पुलस्ति, एक ऋषि का नाम ।
पुहुमि, पृथ्वी ।
पुंगव, श्रेष्ठ ।
पुंज, समूह ।
पूग, १ सोपारी २ समूह ।
पूजनीय, सेवा के योग्य ।
पूजिहि, पूर्ण होगा, पूजना, पूर्ण होना ।
पूजी, पूरी हुई ।
पूज्य, पूजने के योग्य ।
पूतरी, १ कठपुतरी २ आंख की पुतली ।
पूप, मालपुआ ।
पूय, पीब ।
पूर, १ सम्पूर्ण २ जलपूर ३ काम का बहना ।
पूरुष, पुरुष ।
पूषन, सूर्य ।
पृथक्, अलग, जुदा ।
पृथुराज, एक राजा का नाम ।
पृष्ठ, पीठ ।
पेलिहहिं, त्याग ।
पेली, त्याग ।
पेषन, प्रेक्षण, देखना, तमाशा ।
पेषिय, प्रेक्ष्य, देखने के योग्य ।
पैसार, प्रवेश, पैठाव ।
पोच, नीच, बुरा ।
पोत, १ जहाज २ बालक ।
पोतक, बालक ।
पोषत, पुष्ट करता है; पोषण, पोषना ।
पोसो, पाला; पोसना, पालना ।
पंकरुह, कमल ।
पंगु, लंगड़ा ।
पंचकवलि, पंचग्रास ।
पंचदस, पंदरह ।
पंचसबद, पांच बाजा, नगारा आदि ।
पंजर, पिंजरा ।
पंथ, रस्ता ।
प्रकार, रीति ।
प्रकासक, प्रकाशक, प्रकाशकरनेवाला ।
प्रकास्य, प्रकाश्य, प्रकाश के योग्य ।
प्रकृति, १ माया २ स्वभाव ३ संसार ।
प्रकृष्ट, श्रेष्ठ ।
प्रगल्भ, शास्त्र से विजयी ।
प्रचार, विस्तार, फैलाव ।
प्रचारी, ललकार के ।
प्रजारी, जलायी ।
प्रजारना, जलाना ।
प्रजासन, प्रजाशन, प्रजा का भोजन ।

जेश, प्रजेश, दक्षप्रजापति ।
जंत, पर्यंत, तक लों ।
ति, १ पास २ सन्मुख ३ विरुद्ध ।
तिउपकार, प्रत्युपकार, उपकार का बदला ।
तिकूला, विमुख ।
तिछांहीं, प्रतिछाया, परिछांहीं ।
तिपक्षी, प्रतिपक्षी, शत्रु ।
तिपाद्य, वर्णन के योग्य ।
तिभट, समान वीर ।
तिमा, मूर्त्ति ।
तिमूरति, प्रतिबिंब, परिछांहीं ।
तिबिंब, परिछांहीं ।
त्यूह, विघ्न ।
थम, पहिले, मुख्य ।
दमगति, दान ।
द, देनेवाला ।
देश, प्रदेश १ खंडभूमि २ परदेश ।
दोष, संध्याकाल, रात्रि का आना ।
धान, १ मुख्य २ मंत्री ।
नत, अतिनम्र, शरणागत ।
नय, प्रणय, प्रेम ।
नवौं, प्रनाम करता हूं । प्रनवना ।
पंच, १ संसार २ कपट, छल ।
बंध, १ रचना २ बंदोबस्त ।
बीन, प्रवीण, चतुर ।
बोध, उपदेश, ज्ञान ।
बोधक, जनानेवाला ।
भा, प्रकाश ।
भाऊ, प्रभाव, प्रताप ।
भु, १ स्वामी २ राजा ३ समर्थ ।
भंजन, पवन, हवा ।
मदा, स्त्री, मेहरारू ।

प्रयांति, प्राप्त होते हैं ।
प्रबंध, विशाल, बड़ा ।
प्रलाप, अर्थरहित बचन ।
प्रसन्न, १ हर्षित २ निर्मल ।
प्रसव, उत्पत्ति ।
प्रसाद, १ प्रसन्नता, कृपा २ जूठन ।
प्रमोद, प्रसन्न हो ।
प्रसूती, उत्पत्ति ।
प्रसून, फूल ।
प्रसंग, सम्बंध, कथा का चर्चा ।
प्रसंसक, प्रशंसक, स्तुति करनेवाला ।
प्रसंसा, प्रशंसा, स्तुति, सराहना ।
प्रख्याति, कीर्ति ।
प्रहार, मार, मारना ।
प्राकृत, १ अयोग्य २ माया का बिकार ३ साधारण मनुष्य ।
प्राकृतकवि, सूरदास आदि ।
प्राची, पूर्व दिशा, पूरब ।
प्रात, सवेरा, तड़का ।
प्रातकृत, स्नान संध्या आदि ।
प्रातक्रिया, स्नान संध्या आदि ।
प्राननाथ, प्राणनाथ, पति ।
प्राविट, वर्षाऋतु ।
प्रियतम, अत्यंत प्रिय ।
प्रीता, मित्र ।
प्रेत, शव, मुरदा ।
प्रेतनिवास, मसान ।
प्रेरक, आज्ञा करनेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।
प्रेरित, आज्ञा किया गया ।
प्रेरे, पठाया, भेजा, प्रेरना, भेजना ।
प्रोक्त, कहा गया, कहा ।
प्रौढ़, १ बड़ा २ मोटा ।

फटिक, स्फटिक, बिल्लौर।
फनि, फणी, सर्प।
फनिक, फणिक, सांप।
फल, १ अर्थ धर्म काम मोच २ मेवा।
फलित, फलसमेत।
फहराई, कूदते हैं, फहराते हैं।
फाबी, १ मजबूत २ फबी, फबना, सजना।
फुर, सत्य, सांच।
फुलवाई, फुलवारी, फूल का बाग।
बक, वक, बगुला।
बकता, वक्ता, कहनेवाला।
बकुल, मौलसिरी, मुरचली।
बक्र, वक्र, टेढा।
बगमेल, बागमिला के वा इला करके।
बगरे, फैले; बगरना, फैलना।
बच, वचन, बात।
बचांसि, बातें, वचन।
बच्छ, १ वत्स, बछड़ २ पुत्र।
बच्छल, वत्सल, दयायुत।
बज्र, इंद्र का शस्त्र।
बट, बट का पेड़।
बटु, ब्रह्मचारी।
बटोही, पथिक, राही।
बड़वानल, समुद्र की आग।
बत, बात, वार्ता।
बतकही, बात।
बताई बुताथी, बुझाई।
बताना, बुताना, बुझाना।
बतासा, बतास, हवा।
बतिया, छोटा फल।
बद, कही।
बदति, कहता है।
बदन, मुख।
बदर, बेर का फल।
बदरी, बेर का पेड़।
बदि, कह करके; बदना, कहना।
बधिक, व्याधा बहेलिया।
बधिर, बहिरा।
बधू, स्त्री, बहू।
बधूटी, स्त्री।
बन, १ जंगल २ पानी।
बनचर, १ बानर २ जंगली।
बनज, कमल।
बनमाला, फूल और पत्ते का माला।
बनिक, वणिक, बनिया।
बनी, मजूरी का धन।
बपु, वपुष, शरीर, देह।
बपुष, शरीर, देह।
बमत, छांटता है, रद्द करता है।
बमन, छांडना, छांट करना, रद्द।
बयस, १ वयस, अवस्था, उमिर २ वैश्य, बनिया।
बयारी, पवन, हवा।
बर, १ श्रेष्ठ २ पति ३ वरदान ४ बरना, जलना ५ जोर, बल ६ बटवृक्ष।
बरन, १ वर्ण, अक्षर २ जाति ३ वर्णन।
बरनी, कही।
बरबरनी, श्रेष्ठरंगवाली, गोरी।
बरबस, जोरावरी।
बरहि, वर्हिन, मोर।
बराई, दूर हांकना।
बराए, बचा करके।
बराह, वराह, सूअर।
बरि, बटकरके, बरना, बटना बल्करि।
बरिआर, बली, जोरावर।
बरिआं, १ वेला, समय २ बाग।
बरिबंड, बलवत, तेजस्वी, बली।
बरी, व्याही; बरना, व्याहकरना।
बरीसा, वर्ष, बरिस।

ाह, बलुक, बहुक, बल्कि ।
ाहन, वहण ।
ाहूथ, समूह, झुंड ।
ारोह, स्त्री, सुंदर जांघवाली ।
ारेखो, बरेखण बरदेखोनी, दुलहा ठहराना ।
ार्ग, वर्ग, जाति, समूह ।
ार्बर, १ अधम, नीच २ बकवादी ।
ार्म, बखतर ।
ार्य, वर्य, श्रेष्ठ ।
र्षासन, वर्षाशन, वरिसदिन का भोजन।
ल, जोर, सेना, ।
ालकल, वल्कल, बोकला ।
ाककावा, ऐंठ की बातें ।
ाक, बगुला ।
ाहक, बादर, मेघ ।
ालि, १ बखरा, हिस्सा २ पूजा ३ बलिदान ४ राजावली ५ नेछावर ।
लित, वेष्टित, घेरा गया ।
लीमुख, बानर ।
ली, सबर, लता ।
ाना, १ स्तुति २ कहा ।
सत, बसें, रहैं ।
सन, कपड़ा ।
सवर्ती, वशवर्ती, अधीन ।
सि, रहं बसता है ।
सह, बैल ।
सीठी, दूत, हरकारा ।
सुधा, पृथ्वी ।
स्य, वश्य, अधीन ।
ह, चलना, बहना ।
हरावा, मरटिआवा, सुन करके अन-...

बहरिं, उठाते हैं ।
बहना, उठाना, लेजाना ।
बहुकालोना, बहुकालीन, बहुतकाल-का ।
बहुधा, बहुत प्रकार से ।
बहुबाहु, रावण ।
बहुरहिं, फिरैं ।
बहुरि, फिर ।
बहुरे, फिरे ।
बहुरना, फिरना ।
बहू, १ बधू, स्त्री २ बहुत, बहु ।
बहोरो, १ बनाव २ फिर ।
बा, वा, अथवा, या ।
बाऊ, वायु, पवन ।
बाग, वाघ, वाणी ।
बागीसा, वागीशा, बहुवाणी ।
बागुर, फंदा, जाल ।
बाचाल, वाचाल १ पंडित २ बकवादी ।
बाछा, लड़का, लड़ाई; बाछना, चहना ।
बाजिमेध, अश्वमेध यज्ञ ।
बाजि, बाजी, घोड़ा ।
बाट, पथ, राह, रस्ता ।
बाटपरैं, रोजगार जाय ।
बाटिका, वाटिका, फुलवारी, बाग ।
बात, वात, पवन, हवा, बाई ।
बाति, बत्ती, वर्त्तिका ।
बातुल, वातुल, बौलका, बाईचढ़ी ।
बादल, बादल, मेघ ।
बादि, १ वृथा, २ वाक्य, प्रयोजन ।
बादिनि, वादिनी, बोलनेवाली ।
बादी, वादी, कहनेवाला ।
बाधक, दुःखद, विघ्न, रोकनेवाला ।
बाधा, विघ्न, रोक, दुःख ।

बान, १ बाणासुर, २ बाण, तीर ३ रंग ४ स्वभाव ५ बाना ।

बानैत, बीर, बाणफेंकनेवाला, विरदैत।

बापिका, बावली ।

बापुरो, १ चयोरोगवाला २ तुच्छ, बपुरा ।

बाम, १ वाम, स्त्री २ बायां ।

बाय, पसार करके; बाना, पसारना ।

बायन, बैना, भेवता ।

बायस, वायस, कौवा ।

बायें, बाम, बायां ।

बार, १ बारंबार २ दिन ३ समूह ४ देर ५ केश ६ काल ।

बारन, वारण, हाथी ।

बारय, दूर करो; बारना, दूर करना ।

बारहबाट, तहस नहस, मोहादि बारह रस्ता ।

बारहि, लड़कापन ।

बारि, वारि, जल ।

बारिचरकेतु, कामदेव ।

बारिज, वारिज, कमल ।

बारिद, वारिद, मेघ, बादल ।

बारिधर, बादल, मेघ ।

बारिधि, समुद्र ।

बारिस, वारीश, समुद्र ।

बारिदनाद, मेघनाद ।

बारी, १ जल, पानी २ फुलवारी ३ छोटी ४ निछावर, बारना ।

बारुनी, वारुणी, मदिरा, शराब ।

बारे, १ छोड़ करके, २ बालक ।

बाल, १ बालक २ मूर्ख ३ केश ।

बाला, बाला, स्त्री ।

बासन, १ बरतन २ सुगंध ३ निवास ।

बासर, वासर, दिन ।

बासव, वासव, इंद्र ।

बाहन, वाहन, असवारी ।

बाहिज, बाह्य, बाहरी, बाहर से ।

बाहिनी, वाहिनी, सेना ।

बिकट, १ विकट, भयंकर, टेढ़ा ।

बिकरारा, विकराल, भयंकर ।

बिकसे, फूले; बिकसना, फूलना ।

बिकार, विकार १ अवगुण, ऐगुन २ जन्मादि ३ काम, कारण ।

बिक्रम, विक्रम, पराक्रम, जोर, बल ।

बिगत, विगत, रहित, हीन ।

बिगोये, नाश किये, बिगोना, नाश करना ।

बिग्रह, विग्रह १ विरोध, झगड़ा २ शरीर, देह ३ हठ ।

बिख्यात, विख्यात, विदित, प्रसिद्ध ।

बिघटन, विघटन, तोड़ना ।

बिचरहिं, फिरते हैं, बिचरना, फिरना ।

बिचच्छण, विचक्षण, चतुर

बिचित्र, विचित्र, अनेक प्रकार का, आश्चर्य रूप ।

बिजयी, विजयी, विशेष जयवाला, विजयकरनेवाला ।

बिज्ञान, विज्ञान, अनुभव ।

बिज्ञानबिहाना, विज्ञानविहान, ज्ञान रूप भोर, ज्ञान की हानि ।

बिटप, विटप, वृक्ष, पेड़ ।

बिडरी, १ विशेषभय, छितराकरके, बिडरना, छितराना ।

बिडारी, भगायी, बिडारना, भगाना ।

बिडंब, विडंब, वचन ठगी, छल ।

बिढ़इ, कमाकरके, बिढ़वना, कमाना ।

बित्त, वित्त, धन, मकदूर ।

बितान, १ वितान, विस्तार, फैलाव २ चंदवा ३ मंडप ।

बिथकहिं, चकित होते हैं, बिथकना, चकित होना ।

बिथकि, चौंकहूनि ।

बिथुरे, फैले, बिथुरना, फैलना ।

बिद, विद, ज्ञाता, जाननेवाला ।

बिंदक, विंदक, मामथुत, पानेवाला ।

बिदरेउ, विदीर्ण, फटगया, बिदरना, फटना ।

बिदारे, विदीर्ण, फाड़े, बिदारना, फाड़ना ।

बिदारहिं, फाड़ते हैं, बिदारना, फाड़ना ।

बिदित, १ विदित, प्रसिद्ध, जनाया गया

बिदिसि, विदिश, विदिशा, दिशा का कोना ।

बिदुषन्ह, पंडितलोग, विदुष शब्द का बहुवचन ।

बिदूषक, १ विदूषक, भांड २ निंदक ।

बिदूषहिं, निंदाकरते हैं, बिदूषना, निंदाकरना ।

बिदेह, १ विदेह, राजाजनक २ देहबिना ।

बिद्यमान, विद्यमान, वर्त्तमान, है, होता ।

बिद्या, शिक्षा, इलिम ।

बिद्रुम, विद्रुम, मूंगा ।

बिधवा, विधवा, रंडा, जिस स्त्री का पति मरगया ।

बिधाता, विधाता, ब्रह्मा ।

बिधात्री, विधात्री, ब्रह्माणी ।

बिधि, १ विधि, ब्रह्मा २ कर्म, भाग्य ३ विधान, रीति ।

बिधिअंड, ब्रह्मांड ।

बिधिवत, विधिवत्, यथायोग्य, विहित

बिधुंतुद, राहु ।

बिनता, विनीता, गरुड़ जी की माता का नाम ।

बिनय, विनय १ विनती २ विशेष नीति ।

बिनयी, १ विनयी, अतिनीतिवाला, २ विनय करने वाला ।

बिनवा, विनय किया, बिनवना, विनय करना ।

बिनीत, विनीत १ विनयनीति २ नम्र, सुस्वभाव ।

बिनोद, विनोद, क्रीड़ा, खेल ।

बिपरीत, विपरीत, उलटा, प्रतिकूल

बिपिन, विपिन, बन, जंगल ।

बिपुल, विपुल, बहुत, विस्तार ।

बिप्रचरन, भृगुलता, भृगु जी ने जो भगवान की छाती में लातमारा था उसका चिन्ह ।

बिबर, विवर, बिल, छेद ।

बिबरन, विवर्ण १ बदरंग, बुरा रंग, २ जुदा, अलग ।

बिबर्द्धे, बहुत बढ़ता ।

बिबस, विवश १ विकल, व्याकुल २ विवश वश ।

बिबाकी, नाश ।

बिबिक्त, विविक्त, १ एकांत २ त्याग ।

बिबुध, १ विबुध, देवता २ पंडित ।

बिबुधबन, विबुधवन, नंदनवाटिका, स्वर्ग का बगीचा ।

बिबुधबैद, विबुधवैद्य, अश्विनीकुमार, देवता के वैद्य ।

बिबेक, १ विवेक, ज्ञान २ सत्य असत्य का विचार ।

बिभव, विभव, १ ऐश्वर्य, २ पालन ।

बिभाग, विभाग, १ जुदाई, २ बांट, बखरा ३ भाग्यहीन ४ खंड, टुकड़ा ।

बिभाती, विभाति, प्रकाशित होता है, सोहता है ।

बिभिचारी, व्यभिचारी, परतियगामी, पराई स्त्री के पास जानेवाला ।

बिभु, १ विभु, व्यापक २ समर्थ ।

बिभुन्ह, विभुशब्द का बहुवचन, विश्व तैजस प्राज्ञ ब्रह्म ।

बिभुती, १ विभूति, राख २ संपदा ३ भक्ति ।

बिभेद, विभेद, फूट, शत्रुमित्रभाव ।

बिभंजन, नाशकरनेवाला ।

बिभंजनि, विभंजनि, तोड़नेवाली ।

बिमल, विमल, निर्मल, फरचा ।

बिमात्र, विमात्र, सैंभा मतारी से जो बेटा ।

बिमुख, विमुख, विरोधी ।

बियोगी, वियोगी, अलग, जुदा ।

बिरक्त, विरक्त, वैराग्यवान, त्यागी विरागी ।

बिरचि, रचकरके, बनाकरके, बिरचना, बनाना ।

बिरज, विरज, निर्मल, फरचा, जो रज-वीर्य्य से उत्पन्न नहीं है ।

बिरत, विरत, वैराग्यवान्, मुमुक्षु ।

बिरति, विरति, १ वैराग्य, त्याग २ अति-प्रीति ।

बिरथ, विरथ, रथ के बिना ।

बिरद, १ विरद, जस २ वीरों का बाना ।

बिरव, बीरो, छोटा पेड़, पौधा ।

बिरहित, विरहित, रहित, छूटा, त्यक्त ।

बिराग, १ विराग, वैराग्य, त्याग ।

बिराजति, बिराजती है, सोहती है ।

बिराट, विराट, विश्वरूप ।

बिरुज, विरुज, नरोगी, रोगहीन ।

बिरुदैत, बानावाले बीर ।

बिरुद्ध, विरुद्ध, विरोधयुत, वैरयुत ।

बिरंचि, विरंचि, ब्रह्मा ।

बिलग, १ न्यारा, अलग २ बुरा ।

बिलपाता, पिलापकरती ।

बिलय, उदास ।

बिलषाद, बिषाद करके, बिलखाना, विषाद करना ।

बिलास, १ विलास, क्रीड़ा, खेल २ चमत्कार ३ सुख ४ कार्य, काम ५ ऊंचे नीचे करना ।

बिलासिनी, विलासिनी, स्त्री, विलास-करनेवाली ।

बिलाहीं, बिलाते हैं, नष्टजाते हैं ।

बिलोकि, विलोक्य, देख करके, बिलो-कना, देखना ।

बिलोचन, विलोचन, आंख ।

बिषम, १ विषम, शत्रुमित्रभावयुत २ भयंकर ३ पांच

बिषमता, विषमता, रागद्वेष ।

बिषय, विषय, शब्द रूप रस गंध स्पर्श ।

बिषयक, विषयक, बिषे, विषय में, बाबत ।

बिषयी, विषयी, विषयकरनेवाला, संसारी ।

बिषाद, विषाद, शोक, दुःख ।

बिषाना, विषाण, सींग ।

बिष्टा, विष्टा, मल, गूह, गलीज ।

बिसद, विशद, १ सफेद २ [illegible]

ाममय, विस्मय, अचरज ।
ामित विस्मित अचरजयुत ।
ारद, विशारद, चतुर, प्रवीण, निपुण ।
ाल, १ विशाल, बड़ा २ पीड़ा बिना ।
ािख, विशिख, तीर, बाण ।
ाउर्गति चिंता करती है । बिसूरना चिंता करना ।
ाष, १ विशेष, कोई २ अधिक ३ भेद ।
ाोक, विशोक, शोकरहित ।
ार, विस्तर, विस्तार ।
ाव, विश्व, १ संसार २ सर्व, सब ।
ारूप, विश्वरूप, संसाररूप, सर्वरूप ।
ाग, विहग, पक्षी, पखेरू ।
ागति, फटती है, बिहरना, फटना ।
ारन, विहरण, क्रीड़ा, खेल ।
ाह, फटना ।
ाइ, विहाय, छोड़ करके ।
ान, विहान, १ भोर, प्रात २ बीत जाना ।
ार, विहार, क्रीड़ा, खेल ।
ाोना, विहीन, विना, रहित, अति नीच ।
ाथी, गली ।
ार, वीर १ भाई २ वीररसयुत ।
ारभद्र, शिव के गण ।
झाई, समझा करके, बुझाना समझाना ।
ध, १ पंडित २ चंद्रपुत्र ।
ता, बल और ।
क, झुंडार ।
षकेतु, महादेव का नाम ।
ष्टि, वर्षा, बूंदसमूह ।
[illegible]

बूपली, घूटी ।
बृंदारका, देवता ।
बेत, १ वितत, आकाश २ छड़ी ।
बेद, वेद, चारो वेद ऋक् यजु आदि ।
बेदिका, वेदी पर की रेखा ।
बेदी, वेदी, कर्मकांड काम के लिये छोटा चबूतरा ।
बेध, वध, छेद ।
बेनी, वेणी १ त्रिवेणी २ चोटी ।
बेनु, वेणु, १ बांस २ मुरली ३ एक राजा का नाम ।
बेर, बेड़ा, जहाज ।
बेसर, खच्चर ।
बेहड़, विकट स्थान, बीहड़ ।
बेह, छेद ।
बैतरनी, यमपुर की नदी ।
बैदिक, वैदिक १ वेद की रीति से २ वेद पाठी ।
बैदेही, वैदेही, सीता जी का नाम ।
बैनतेय, वैनतेय, गरुड़ ।
बैना, वचन ।
बैभव, वैभव, १ ऐश्वर्य २ पालन ।
बैधानस, वाणप्रस्थ ।
बैस, वयस, अवस्था ।
बैसा, बैठा, बैसना, बैठना ।
बोहित, जहाज ।
बौड़, बबंर, लता ।
ब्योम, व्योम, आकाश ।
बंगा, लुचा ।
बंचक, वंचक, ठग ।
बंचन, वंचन, ठगना ।

बंदनीय, वंदनीय, नमस्कार के योग्य ।
बंद्य, वद्य, नमस्कार के योग्य ।
बंधु, १ भाई २ बांधना ३ संबंधी ।
बंस, वंश १ बांस २ कुल ।
ब्रजंति, जाते हैं, प्राप्त होते हैं ।
ब्रन, ब्रण, घाव, फोड़ा ।
ब्रह्मगिरा, ब्रह्मा की बानी ।
ब्रह्मधाम, ब्रह्मलोक ।
ब्रह्मभवन, ब्रह्मलोक ।
ब्रह्मानंद, स्वरूपानंद, भगवान का सुख ।
ब्रात, समूह, झुंड ।
ब्रीड़ा, लज्जा, शरम ।
ब्यग्र, व्यग्र, विकल ।
ब्यजन, व्यजन, पंखा ।
ब्यथा, व्यथा, दुख ।
ब्यलीक, व्यलीक, कपट ।
ब्यसनी, बानि, शौक, व्यसनी ।
ब्याज, १ बहाना, छल २ सूद ।
ब्याप्य, जगत ।
ब्याधि, रोग ।
ब्याध, बहेलिया, चिड़ीमार ।
ब्याल, १ सांप २ हाथी ।
ब्याली, सर्पधारी, मंतरवारी ।
ब्यास, १ विस्तार २ एक मुनि का नाम जिन्हों ने वेदांतसूत्र और पुराण आदि बनाया ।
भगवान, ईश्वर ।
भगिनी, बहिन ।
भजई, सेवै, वा, सुमिरै ।
भजन, भक्ति ।
भजामि, मैं भजता हूं ।
भजामहे, हम भजते हैं ।
भजे, मैं भजता हौं ।
भट, योद्धा, सिपाही ।
भटभेरे, धक्काखाते फिरते हैं ।
भटिहाई, चोरी, भांडा घाट के ।
भदेस, १ गवांरा, गंवरऊ २ निंदायोग्य ।
भद्र, कल्याण, भला ।
भनई, कहते हैं ।
भनित, भणित, कविता ।
भनी, कह करके ।
भनु, कहो, कहते हो ।
भन, कहै ।
भनंता, कहते हैं ।
भभरि, घबरा करके ।
भभरा, घबराया ।
भयानक, १ भयंकर २ रसविशेष ।
भयावहा, डरानेवाला ।
भरा, १ बोझा २ पोषण, पोसना ३ धारण ।
भरन, १ धारण २ पोषण ।
भरनी, १ एक नक्षत्र का नाम २ सर्पकुल, बर्णन, गीत ३ मूस जो ... देश मे प्रसिद्ध है ।
भरि, पूरन ।
भरिता, पूरन ।
भव, १ संसार २ शिव ३ जन्म ४ भया, हुआ ।
भवदंघ्रि, आप का चरण ।
भवन, घर ।
भवंत, आपकी ।
भवांबुनाथ, संसारसमुद्र ।
भवंर, १ नदी का चक्कोह २ भौरा, भ्रमर ।
भा, प्रकाश, चमक ।
भाउ, १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जन्म ।

ाजन, पात्र, बरतन ।
ाया, तरकश ।
ान, सूर्य ।
ाड़े, बरतन । भांड ।
ामा, स्त्री ।
ामिनि, १ स्त्री, क्रोधयुक्ता ।
ाइप, भाईपना ।
ाये, १ भाव २ सुंदर ।
ारती, सरस्वती ।
ाल, माथा ।
ाव, १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जनु ।
ावन, मोहात, अच्छालगता ।
ावी, होनहार ।
ाषा, कहा । भाषना, कहना ।
ाष, कहे । भाषना, कहना ।
भग्न, अलग, जुदा, फूटगया ।
ंदिपाल, ढेलवांस ।
ाती, १ भय, भीति २ दीवार ।
ीम, भयंकर ।
ीरा, १ बोझा २ भीड़ ३ डर ।
ीरु, डरपोकना ।
ुजंग, सांप ।
ुवन, ब्रह्मांड ।
ुवाल, भूपाल, राजा ।
ुवि, पृथ्वी, पृथ्वी में ।
ुवंग, भुजंग, सांप ।
ुवंगिनि, भुजंगिनी, सांपिन ।
ुजब, भोग करेगा ।
ूत, १ जीव, प्रेत ३ भया, हुआ ।
ूतल, पृथ्वी में, भूमि पर ।
ूति, १ सम्पदा, ऐश्वर्य २ मोक्ष, मुक्ति, ३ राख विभूति ।
भूप, राजा ।
भूमिभाग, पृथ्वी पर के खांप ।
भूरि, बहुत ।
भूर्जतरु, भोजपत्र वृक्ष ।
भूषित, भूषणयुक्त, शोभित ।
भूसुर, ब्राह्मण ।
भृकुटि, भौंह ।
भृगुनाथ, परशुराम ।
भे, भये, हुए ।
भेर, गीली, भिगोया, भवना, भिगोना ।
भेऊ, भेद पद को देखो ।
भेक, मेढक, मण्डुका ।
भेट, १ मिलना, मुलाकात २ नजर, भेंट पूजा ।
भेद, १ जुदाई २ फूट करना, तोड़ना ३ मर्म ।
भेरी, १ बड़ा नगारा २ बड़ा मृदंगवाला पौनर का बाजा ।
भेव, १ जुदाई २ भेद, मर्म ३ फूटकरना, तोड़ना ।
भेष, भेस ।
भेषज, औषध, दवाई ।
भोग, सुगंधादि भोग, विलास, सुख उठाना ।
भोगावति, भोगावती, सर्पनगरी ।
भोजनस्थानी, रसोई का घर ।
भोरा, दोष, भोला, सूधा ।
भोरी, भोली, सीधी ।
भोरे, भूल के भी ।
भौम, मंगल ग्रह ।
भ्रम, १ नाश २ टेढ़ाई ।
भंजन, १ नाश, २ नाश करनेवाला ।

भृंगी, महादेव का गण ।
भ्रम, भूलना, धोखा ।
भ्राजा, शोभित, । भ्राजना, शोभना ।
भ्रू, भौंह ।
मइके, नैहर, माता का घर ।
मक, बहक, बकना ।
मकर, १ दसईं राशि २ मच्छ ३ मगर ।
मकरी, मकड़ी ।
मकरंद, फूल का रस ।
मख, यज्ञ ।
मग, १ मार्ग, रस्ता, २ मगध, मगह ।
मगन, मग्न, १ डूबा, लवलीन, प्रसन्न, खुश ।
मघवा, इंद्र ।
मघवान, इंद्र ।
मज्जहिं, नहाते हैं ।
मज्जा, चरबी ।
मझारी, मध्य, भीतर, मांझ ।
मत, सलाह ।
मति, बुद्धि ।
मत्सर, ईर्षा, डाह ।
मद, १ अभिमान २ मदिरा, शराब ।
मदन, कामदेव ।
मधु, १ चैत महीना २ मकरंद, फूल का रस ३ शहद ४ जल ५ बसंत ६ एक दैत्य का नाम ।
मधुकर, भौरा, भ्रमर ।
मधुप, भ्रमर, भौंरा ।
मधुपर्क, दही शहद घी मिलाहुआ कांसे के पात्र में ।
मधुर, मीठा, सुंदर ।
मध्यगति, उदासीन ।
मध्यम, उदासीन, विचवैत ।
मनजात, मनोजात, कामदेव ।
मनमथ, मन्मथ, कामदेव ।
मनमारि, उदास ।
मनमाहिं, मन में ।
मनसा, इच्छा, मन ।
मनसिज, कामदेव ।
मनाक, मनाक्, थोड़ासा ।
मनि, मणि, सर्प के शिर में की मनि शिरोमणि ।
मनियारा, मणियुत ।
मनुज, मनुष्य, आदमी ।
मनुजाद, राक्षस ।
मनुसाई, पुरुषारथ ।
मनोज, कामदेव ।
मनोभव, कामदेव ।
मनोभूत, कामदेव ।
मनोरथ, अभिलाष, इच्छा ।
मनोरम, सुंदर ।
मम, मेरा, ममता ।
मय, १ कारज २ बहुत, प्राचुर्य ३ प्रधान ४ रूप ५ असुर विशेष ।
मयत्री, मैत्री, मित्रता ।
मयन, कामदेव ।
मयूष, किरण ।
मयंक, चंद्रमा ।
मरकत, नीलमनि ।
मरकट, मर्कट, बानर ।
मरजाद, १ मर्याद, हद २ रीति ।
मरम, १ भेद २ हृदय आदि अंग ।
मराल, हंस ।
मरु, निर्जल देश ।
मर्दन, नाश करनेवाला ।
मर्दि, मसल करके ।

मल, १ पाप २ मैल ।
मलय, चंदन ।
मलान, म्लान, मैला, उदास ।
मलिन, मैला, उदास ।
मष्ट, चुप ।
मसक, १ मच्छर २ सितार ।
मसि, स्याही, रोशनाई ।
महति, महती, बड़ी ।
महा, बड़ा ।
महागद, बड़ारोग ।
महान, बड़ा, महत्तम ।
महामनि, जहरमोहरा आदि ।
महामोह, अज्ञान ।
महिदेव, महीदेव, ब्राह्मण ।
महिपाल, महीपाल, राजा ।
महिषी, १ भैंस २ पटरानी ।
महिषस, महिषेश, १ महिषासुर २ यमराज ।
महीधर, पहाड़ ।
महीसुर, ब्राह्मण ।
महेस, महेश, महादेव ।
महोत्सव, बड़ा उत्सव, महोच्छो ।
महोष, एक प्रकार का पक्षी ।
मांजा, नये वर्षा के जल का फेन ।
माझ, मध्य, बीच ।
मातलि, इंद्र का सारथी ।
मातहि, मतवारा ।
मात्र, वहीभर, उतनाही, परिमाण ।
माधुरी, मिठाई, माधुर्य ।
मान, अहंकार, अभिमान ।
मानस, १ तलाव, सरोवर २ मन ।
मानसमल, सरजू नदी ।
मानिक, जवाहिर, लाल ।
मान्यता, पूज्यता, मान ।
मापा, व्यापा, मापना, व्यापना ।
मायी, मतवारी ।
माया, १ दया २ चित्शक्ति ३ कपट ।
मायापति, रामचंद्र ।
मायिक, मिथ्या, मायासम्बंधी ।
मार, १ कामदेव २ मारना ।
मारगन, १ मार्गण, बाण, तीर २ खोजना ।
मारीच, एक राक्षस का नाम ।
मारुत, पवन, वायु ।
मारुति, हनुमान ।
माल, १ समूह २ कुश्तीबाज ३ माला, हार ।
मालव, मलय, मालवा देश ।
माला, १ पंगति, पंक्ति २ हार, माला ।
माष, क्रोध ।
माषी, १ मक्खी २ शहद ।
मासा, मांस, गोश्त ।
माहुर, जहर, विष ।
मों, मुझ को ।
मिति, १ अंत २ मर्याद ३ सीमा ४ माप ।
मिथिला, एक नगरी का नाम ।
मिथिलेसि, जनकजी की रानी का नाम ।
मिलित, युक्त, मिला हुआ ।
मिसु, बहाना, मिस ।
मीच, मृत्यु, मौत ।
मीन, मछली ।
मीला, मिल करके ।
मुकुता, मुक्ता, मोती ।

मुकुर, दर्पण ।
मुकुंद, मुक्तिदाता ।
मुखर, १ शब्द २ बकवादी ।
मुखागर, जुबानी ।
मुठभेरी, निकट में, नगीच में ।
मुदित, हर्षित, खुश ।
मुद्रिका, मुंदरी, अंगूठी ।
मुधा, झूठ ।
मुनिपट, बोकले का कपड़ा ।
मुनिराजु, मुनिराज, वशिष्ठजी ।
मुनिवर, मुनिश्रेष्ठ, गुरुकाचार्य ।
मुनिंदा, मुनींद्र, मुनियों में प्रधान ।
मूक, गूंगा ।
मूरि, मूल, जड़ी, वा, जमा, मूल ।
मूल, १ जड़ २ कारन ३ पंजी ।
मूलक, मूली ।
मूषक, चूहा, मूसा ।
मृगपति, सिंह ।
मृगजल, मृगतृष्णा ।
मृगमद, कस्तूरी ।
मृगया, शिकार ।
मृगराज, सिंह ।
मृगाधीश, सिंह ।
मृदु, कोमल ।
मृदुल, कोमल ।
मृणाल, कमल की जड़ ।
मृषा, झूठ ।
मेकलसुता, नर्मदा नदी ।
मेघडंबर, छत्र विशेष ।
मेचक, श्याम ।
मेंडुकनि, मण्डुका ।
मेदिनी, पृथ्वी ।
मेधा, बुद्धि ।
मेरु, सुमेरु पर्वत ।
मेली, डाली, मेलना, डालना ।
मेष, भेंड़ा ।
मेखला, करधनी ।
मैना, पार्वती की [illegible] का नाम ।
मैनाक, एक पर्वत का नाम ।
मोई, मोही, मोना, मोहना ।
मोचन, छोरना ।
मोद, हर्ष, खुशी ।
मोदक, लड्डू ।
मोरपच्छ, मोर की पांख ।
मोरकृति, मेरी ओर से ।
मोह, अज्ञान ।
मोहमय, झूठा ।
मौलि, माथा ।
मंगलद्रव्य, पुष्पादि
मंच, मचान, तखत[illegible] ।
मंजिर, पांव का भू[illegible] पयजेब आदि ।
मंजुल, सुंदर ।
मंडन, भूषण, गहना
मंडल, १ घेरा २ [illegible] ।
मंडली, समूह ।
मंडलिक, मंडलेश्वर, राजा ।
मंडित, भूषित, शोभित ।
मंत्र, १ रामतारक आदि मंत्र २ सलाह, उपदेश ।
मंत्रराज, रामतारक मंत्र ।
मंद, १ नीच २ धीरे ३ अभागी ४ मूढ़ ।
मंदतर, अति नीच ।
मंदर, मंदराचल पर्वत ।
मंदाकिनी, गंगाजी ।
यहू, यह समय ।
यावत्, जबतक, जितना ।

सुधाकर, चन्द्रमा ।
सुनयना, जनक की स्त्री ।
सुनासीर, इंद्र ।
सुपास, सुख, आराम, सुबिस्ता ।
सुभ, सुबह, मङ्क ।
सुभ, १ अच्छा २ सुंदर शोभा ।
सुभग, १ सुंदर २ ऐश्वर्य्य ।
सुभगुन, ज्ञान वैराग्यादि अच्छे गुण ।
सुभाउ, १ संस्कार २ अच्छा भाव ।
सुभुज, सुबाहु दैत्य ।
सुभ्र, सफेद ।
सुमन, १ फूल २ सुंदर मन ।
सुमिरत, ध्यान करता हुआ ।
सुम्रति, स्मृतिग्रंथ धर्मशास्त्र ।
सुमंच, मंच, मचान ।
सुरभि, १ गैया २ सुगंध ।
सुरमनि, चिंतामणि ।
सुररुख, मंदार आदि पांच वृक्ष ।
सुरसर, मानसरोवर ।
सुरसरि / सुरसरिता — गंगा नदी, मंदाकिनी ।
सुरसेनप, कार्त्तिकेय ।
सुरवीथी, देवता की राह ।
सुरा, मदिरा, शराब ।
सुराई, शूरता, वीरता ।
सुरुचि, अच्छी रुचि ।
सुरंगा, १ पीत रंग २ लाल रंग ३ अच्छा रंग ।
सुलभ, सुगम ।
सुवन, सूनु, पुत्र ।
सुवास, १ सुगंध २ यश ।
सुवासिनी, सुहागिनी ।
सुवेल, १ समुद्र का किनारा २ पर्वत ३ सुंदर समय ।
सुहाई, सुंदर ।
सुकरखेत, वार.हक्षेत्र ।
सूच / सूचक / सूचत — जनाता हुआ ।
सूत, १ सारथी २ पुराण से स्तुति करने वाला ।
सूत्रधार, पुतली, नचानेवाला ।
सूनु, पुत्र ।
सूप, १ दाल २ छाज ।
सूपकारक, रसोइया रसोई करनेवाला ।
सूल, शूल, १ दुःख २ त्रिशूल ।
सेतु, १ पुल, बांध २ मर्य्यादा ।
सेनप, सेनापति ।
सेला, बरछी, भाला ।
सेवी, सेवक, सेवा करनेवाला ।
सेष, १ शेष नाग २ थोड़ा, बाकी ।
सैल, पर्वत ।
सैलजा, पार्वती, गिरिजा ।
सैलराज, हिमालय ।
सोचनीय, सोचने के योग्य ।
सोधा, शुद्ध किया ।
सोधेउ, खोजा, तलाश किया ।
सोन, १ सोनभद्र नदी २ लाल ३ सोना ।
सोनित, लोहू, रक्त ।
सोपान, सीढ़ी ।
सोपि, झूठ, भी ।
सोपी, वह भी ।
सोम, चद्रमा ।
सोर, आवाज ।
सोवत, सोता हुआ ।
सोह, शोभा ।
सोहमस्मि, वही मैं हूं ।
सौधाई, अच्छा समय ।
सौच, १ शुद्धता २ दंडकवन आदि ।

सौध, मंदिर ।
सौमित्रि, सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण ।
सौरभ, आम का पेड़ ।
सौरज, शूरता ।
सं, शं, कल्याण, भला ।
संकट, १ मुर्छा २ विपत्ति ।
संकर, १ शिव २ महादेव, मिला हुआ ।
संकाश, तुल्य, बराबर ।
संकुल, पूर्ण, भरा, बिलकुल ।
संग, १ संबंध २ राग ।
संग्रह, अंगीकार, लेना ।
संघट, संयोग ।
संघर्षन, रगर ।
संघात, १ समूह २ संबंध ।
संजम, नियम ।
संजात, उत्पन्न, पैदा हुआ ।
संजुग, युद्ध, लड़ाई ।
संजोग, उपाय, तदबीर ।
संतत, निरंतर, सर्वदा, सब दिन ।
संदोह, समूह ।
संधान, जोड़ा ।
संपन्न १ युक्त २ धनी ।
संपुट, १ हाथ जोर के २ डब्बा ।
संभव, जन्म, उत्पत्ति ।
संभावित, अति आदर वा, मान किया गया ।
संभूत, उत्पन्न, पैदा हुआ ।
संभ्रम, १ वेग, जल्दी २ भ्रम, धोखा ३ उत्साह ।
संमत, सलाह में ।
संबल, राह का खरचा ।
संबुक, घोंघा ।
संसर्ग, संगति ।
संसृति, संसार, दुनिया ।
सांति, शांति, शमन ।
सांसत, १ दंड २ पीड़ा ।
सिंगरौर, शृंगवेर पुर ।
सिंघल, उपद्वीप [illegible] ।
सिंधु, समुद्र ।
सिंधुर, हाथी ।
सिंह, १ श्रेष्ठ २ व्याघ्र, बाघ ।
सींव, हद्द, सींवा ।
सृंग, सींघ, सिखर ।
सुंदरी, स्त्री ।
स्फुरत, चमकता हुआ ।
स्मरामहे, हम ध्यान करते हैं ।
स्यामल ,काला रंग ।
स्यामा, १ एक चिड़िया २ सोलह वर्ष की स्त्री ।
स्यंदन, रथ ।
स्त्रग, फूल का माला ।
स्त्रजत, बनाता हुआ ।
स्रम, श्रम, मेहनत, थक जाना ।
स्रमबिन्दु, पसीना ।
स्रमित, श्रमित, थका ।
स्रवन, श्रवण १ कान २ सुनना ।
स्रवत, १ गिरता हुआ २ बहता हुआ ।
स्री, १ सीता २ लक्ष्मी ३ धन ४ शोभा ।
स्रीपति, श्रीपति, विष्णु ।
स्रीफल, १ नारियर २ बेल ।
स्रीवत्स, श्रीवत्स, लक्ष्मी का चिह्न ।
स्रीरंग, लक्ष्मीपति ।
स्रुति, श्रुति १ वेद २ कान ३ सुनना ।
स्रुवा, होम में का एक काठ ।
स्रेनी, श्रेणी, १ पंक्ति, पांती २ समूह ।
स्व, अपना ।

लेखति, खोदती है ।

लेखा, १ रेखा २ देवता ३ लखा देखा ४ हिसाब ।

लेस, लेश, थोड़ासा ।

लोई, लोग ।

लोक, १ जगत् २ संतानिक आदि ।

लोकप, लोकपाल इंद्रादि ।

लोगाई, स्त्री, मेहरारू ।

लोना, सुंदर ।

लोनाई, सुंदरता ।

लोयनि, आंख ।

लोला, लोल, चंचल ।

लोलुप, लंपट ।

लोवा, लोमड़ी ।

लोह, लोहा, शस्त्र ।

सई, एक नदी का नाम

सक, १ संदेह २ समर्थ ।

सकरुन, सकरुण, करुना के साथ, दीनता के साथ ।

सकल, १ सब २ कला के साथ, विद्यायुत ३ सावयव ।

सकाना, डरा, डरना ।

सकानी, सकुचानी, सकानना, सकुचाना ।

सकिलि, बटुर करके, एकट्ठा हो करके । सकिलना, बटरना ।

सकुनि, शकुनि, पक्षी, चिड़िया ।

सकृत, १ एक २ एक बार ।

सकेलि, बटोर करके, । सकेलना, बटोरना ।

सक्ती, १ शक्ति, बल २ स्त्री ३ बरछी ।

सक्र, शक्र, इंद्र ।

सखर, खर समेत राक्षस ।

सगरे, सब, सकल ।

सगर्भ, तात्पर्ययुत ।

सगलानि, १ सग्लानि, निरादर से २ ग्लानि के साथ, हर्षबिना ।

सगाई, नाता ।

सचान, सिकरा, पक्षी विशेष ।

सचिव, मंत्री ।

सची, इंद्राणी ।

सचु, सुख, आनंद ।

सचेता, सचेत, सावधान ।

सजग, सावधान, खबरदार ।

सजनी, सखी ।

सजाई, १ दंड, सजा २ साज करके, सजना ।

सजिव, सजीव १ सुख में जीना २ प्राण सहित ।

सजीवन, तयारी

सट, शठ, मूर्ख ।

सडसिन्ह, सर्पसि ।

सत, १ साधु २ अविनाशी ३ शत, सौ ४ अच्छा ।

सतपंच, सात पांच ।

सतरूपा, मनु की स्त्री का नाम ।

सतानंद, जनक जी के पुरोहित का नाम।

सति, सुधा, सीधा ।

सती, १ पतिव्रता २ दक्ष की बेटी ।

सत्यलोक, ब्रह्मलोक

सद, श्रेष्ठ, बैठनेवाला ।

सदन, घर ।

सदय, दया सहित ।

सदाचार, श्रेष्ठ आचार, अच्छा आचरण है जिस का ।

सदैव, सदाही, सदा, हमेशा ।

सद्य, जलदी, अभी काल में ।

सन, से, साथ ।
सनकादि, सनक आदि चार ब्रह्मा के बेटे ।
सनकारे, इशारा किया, सनकारना, इशारा करना ।
सनाथ, १ स्वामी सहित २ कृतार्थ ।
सनाह, १ बखतर २ सनाथ, पति के साथ ।
सपच्छ, सपक्ष, पंख सहित ।
सपथ, शपथ, सौगंद ।
सपदि, जल्दी, तुरंत ।
सपरब, सपर्व, गांठ के साथ ।
सपेला, सांप का बच्चा ।
सप्त, सात ।
सप्तावरन, प्रकृत आदि सात आवरण ।
सभीत, डर के साथ ।
सम, १ बरोबर २ वासना का त्याग ३ रागद्वेषरहित ।
समदरसी, समदर्शी, बरोबर देखनेवाला ।
समदि, पूजा करके ।
समन, १ शमन, नाश २ यमराज ।
समय, १ काल २ अच्छे दिन ।
समररस, वीररस ।
समर्पे, सौंपे, समर्पना ।
समस्त, सब ।
सम्यक, अच्छी भांति ।
समागत, सभा ।
समाज, १ सभा २ समूह ।
समाधि, १ सुख २ स्थिरता ।
समान, १ बरोबर २ प्रवेश, समाना ।
समिध, लकड़ी ।
समास, संक्षेप, थोड़ा ।
समीती, मिताई, दोस्ती ।
समीप, निकट, नियरे ।
समीर, पवन, हवा ।
समीहा, कायादिक तीन का व्यवहार ।
समुदाई, समुदाय, समूह ।
समुहानी, सन्मुख भई, समुहाना, सन्मुख होना ।
सय, सौ, १०० ।
सयन, १ सोवना २ सय्या ३ इशारा ।
सर, १ तालाव २ बाण ३ चिन्ता ।
सरद, शरद, एक ऋतु का नाम ।
सरपि, घी ।
सरल, १ सीधा २ सड़ा ।
सरवरि, बराबरी ।
सरवरी, रात्रि, रात ।
सरस, १ प्रेम सहित २ मकरंद समेत ।
सरसई, सरस्वती नदी ।
सरसीरुह, कमल (तलाव में जो पैदा हो) ।
सरासन, धनुष ।
सरासुर, बाणासुर ।
सरि, नदी ।
सरित, नदी ।
सरिस, समान, बराबर ।
सरुज, रोगी, बिमरिहा, रोगयुक्त ।
सरुष, क्रुद्ध, क्रोधसहित ।
सरेन, सरसे, बाण से ।
सरोज, पद्म, कमल ।
सरोरुह, कमल ।
सर्गी, डंड ।
सर्व, १ सब, सकल २ सबरूप ।
सर्बकाल, सबदिन ।
सर्वज्ञ, सब जाननेवाला ।
सर्वदा, सबदिन, हमेशा ।
सलभ, पतंग, फतिंगा ।
सलिल, पानी, जल ।
सलोक, यश, जस ।

ये, जो लोग, जे, वह ।
यं, जिस को ।
रघुनाथ, १ दशरथजी २ रामचंद्रजी ।
रघुराज, १ दशरथजी २ रामचंद्रजी ।
रच्छक, रक्षक, रखवार ।
रज, धूर ।
रजत, चांदी, रूपा ।
रजधानी, राजधानी, राजा के रहने की जगह ।
रजनी, रात्रि, रात ।
रजाई, आज्ञा ।
रजायस, राजाज्ञा, आज्ञा ।
रजु, रज्जु, डोरी ।
रट, बोलना ।
रतनार, लाल रंग ।
रति, १ प्रीति २ कामदेव की स्त्री ।
रथांग, चकई चकवा ।
रथी, रथयुत ।
रद, दांत ।
रदपट, होंठ, ओठ ।
रन, रण, युद्ध ।
रनिवास, १ रानी आदि २ जनाना स्थान ।
रबि, रवि, सूरज ।
रबिनंदिनि, रविनंदिनी, यमुना नदी ।
रमन, १ रमण, पति २ व्यापक ३ क्रीडा ।
रमा, लक्ष्मी ।
रम्य, सुंदर ।
रय, वेग, जल्दी ।
रये, रंगे ।
रवनी, रमणी, स्त्री ।
रवन, रमण, पति ।
रविमनि, सूर्यकांतमणि ।
रस, १ विषय २ सार ३ जल ४ मधुर आदि ५ शृंगार आदि ६ प्रेम ७ और ।
रसना, जीभ ।
रसा, पृथ्वी ।
रसाल, १ मीठा, आम का पेड़, रसालय ।
रसिक, रस का जाननेवाला ।
रहसि, १ हर्ष २ एकांत ।
रहस्य, गुप्त तत्व, भेद ।
राउत, सरदार ।
राउर, १ आपका २ राजमंदिर ।
राऊ, राजा ।
राका, पूर्णमासी ।
राकेस, राकेश, पूर्णचंद्र ।
राचा, लगा, राचना, लगना ।
राजत, सोहना, शोभना, राजना, सोहना ।
राजति, सोहती है ।
राजनय, राजनीति ।
राजी, १ राशि पंगति २ प्रसंग ३ शोभित ।
राजीव, कमल ।
राजे, प्रसन्न ।
राता, रत, प्रीतियुत ।
रामायुध, धनुष, बाण ।
राय, १ राजा २ धन ।
रायमुनि, लाल नाम पक्षी ।
रार, झगड़ा ।
रासभ, गधा ।
रासि, राशि, ढेरी, समूह ।
राहु, ग्रह विशेष ।
रिक्षस, कामवंत ।
रितुराज, ऋतुराज, वसंत ।
रिपु, वैरी ।
रिपुसूदन, शत्रुघ्न ।
रिषि, ऋषि, सूक्ष्मदर्शी ।
रिष्ट, हर्षित, खुश ।
रिषिनायक, ऋषिनायक, ऋषिऋषि ।
रिसानी, क्रोध, क्रुद्ध भई, रिसाना ।

रीतें, खाली ।
रुख, १ सम्मुख २ क्रोध ३ दयादृष्टि ।
रुज, रोग ।
रुह, उत्पन्न ।
रुंड, धड़ ।
रूंधक्ष, कांटा का खावां ।
रूरी, सुंदर ।
रेख, १ रेखा, लकीर २ गिनती ।
रेता, रेत, बालू ।
रेनु, रेणु, धूर ।
रेस, ईर्षा ।
रेंगाई, चलाई, रेंगाना, चलाना ।
रोचन, १ गोरोचन २ हरदी ।
रोदन, रोना ।
रोदिति, रोता है ।
रोमपाट, ऊनी कपड़ा ।
रोष, क्रोध ।
रोहिनि, रोहिणी, चंद्रमा की स्त्री ।
रोकू, रोकना ।
रौताई, सरदारी ।
रंक, निर्धन ।
रंगभूमि, १ धनुष यज्ञ की भूमि, रणभूमि ।
रंजनि, रंजिनी, हर्ष देनेवाली ।
रंतिदेव, एक राजा का नाम ।
रंध्र, छेद ।
लकुट, लकड़ी ।
लगि, १ वास्ते २ तक ३ अवलम्ब ।
लघु, १ हलुका २ थोड़ा ३ छोटा ।
लघुता, हलुकई ।
लघुतापस, लछिमन ।
लछ, १ निशान, लच्छन २ लक्ष्य ।
लच्छा, लछ, लाख, १००००० ।
लछि, लक्ष्मी ।
लटत, मरता है, लटना ।
लय, १ चित्त वृत्ति २ नाश ।
ललना, स्त्री ।
ललाट, माथा ।
ललाम, १ श्रेष्ठ २ रतन ।
ललित, सुंदर ।
लव, १ अंश २ अल्प ३ काल ।
लवन, लवण, नोन ।
लवनसिंधु, लवणसिंधु, खारा समुद्र ।
लवा, पक्षी विशेष ।
लवाई, १नयी बिआई गौ २लिवा करके।
लषन, १ लक्ष्मण २ देखना ।
लषहीं, देखते हैं, लखना, देखना ।
लषाऊ, १ चिह्न २ जानना ।
लषत, मोहत, लसना, मोहना ।
लाई, वास्ते, लिये ।
लाग, आधार, लाग ।
लाघव, १ शीघ्र २ हलका ।
लाजा, १ लावा २ लज्जा ।
लाटी, ताक आदि सुख ।
लालसा, इच्छा ।
लाली, दुलारी, लालना, दुलारना ।
लावक, लवा ।
लावन्य, लावण्य, शोभा ।
लाहू, लाभ ।
लाँघि, पाये ।
लिलहिं, लीला से, विना श्रम ।
लिलार, ललाट, माथा ।
लीका, १ लीक, मर्यादा २ रेखा ३ गिनती ।
लुठत, लोटना, लुठन ।
लुबुध, लुब्ध, लोभी ।
लूक, तारा, लुक ।
लेखई, लखती है, देखती है ।

सलोन, सुंदर ।
सव, शव, मुर्दा ।
सबीज, बीजाक्षर सहित ।
सस, शश, खरहा, खरगोश ।
ससक, शशक, खरहा ।
ससि, १ शशि, चंद्रमा २ रेवती ।
ससिरस, शशिरस, अमृत ।
सह, समेत, सहित ।
सहगामिनी, सती ।
सहज, स्वाभाविक, स्वभाव से पैदा हुआ ।
सहनी, दरोगा ।
सहम, १ डर २ बेफिकिर ।
सहरोसा, १ उत्साह २ रोष सहना, क्रोध सहना ।
सहस, सहस्र, हजार ।
सहसबाहु, सहस्रबाहु, सहस्रभुज राजा ।
सहसा, १ जल्दी २ हठ ३ बिना विचार के ।
सहसाखी, १ सहस्राक्षि, हजार आंख-रखनेवाला, इन्द्र २ गवाह समेत, साखी सहित ।
सहस्यानन, सेसनाग, हजार मुंह रखने-वाला ।
सहाया, १ साथ २ मददगार, सहायक ।
सहित, १ हितसमेत, मित्रसमेत २ संग समेत ।
सही, निश्चय ।
सहेली, सखी ।
सहोदर, एक पेट से जन्मा ।
साईं, स्वामी, मालिक ।
साउज, मृगा, हरिना ।
साक बनिक, १ कुंजड़ा, साग बेचनेवाला २ बिसाती ।
साखामृग, बानर ।
साखोचार, वंशावली कहना ।
सागर, समुद्र ।
साज, १ सामग्री २ बाजा ।
साड़ेसाती, शनैश्चरी दशा ।
साथरी, आसनी ।
सासा, १ श्वास २ बहुत प्रकार से विचार ।
सादर, आदर पूर्वक ।
साधक, साधन समेत, उपाय युक्त ।
साधक, उपाय, तदबीर ।
साधा, सिखाया
साधु, १ सज्जन, भला आदमी २ अच्छा ३ मोक्षपाने की इच्छा रखनेवाला ।
साधमत, शिष्टाचार, अच्छा व्यवहार ।
साध्य, साधने के योग्य ।
सान, १ धार, तेज करना २ मिलाना आदरमान ।
सानी, मिली ।
सापत, शाप देता हुआ ।
साबर, किरात के भय से शिवकृतादि मंत्र ।
सामध, समधियों का मिलना ।
सायक, शायक, बाण, तीर ।
सायुज्य, ब्रह्म में लीन ।
सारद, १ सरस्वती २ सार देनेवाला ।
सारदी, जो वस्तु शरदऋतु में होती है ।
सारस, एक चिड़िया ।
सारा, १ पाला, पोसा २ किया ।
सारी, मैना ।
सारंग, १ धनुष २ भौंरा ।
साल, १ दुख २ शोभा ३ घर ।
सालक, दुखदायी ।
साली, १ धान २ शोभायुक्त ३ संयुत ।
सावक, शावक, बच्चा, चिड़िया का बच्चा ।

सावकरन, श्यामकर्ण काला कानवाला घोड़ा ।
सावकाम, काम से छुट्टी ।
सास्वतं, अमर ।
सिकता, बालू ।
सिखा, १ शिखा २ शिष्य, चेला ।
सिख, १ चोटी २ दोया का टेम ।
सिखिनी, मोरनी ।
सित, स्वेत, सफेद ।
सिथिल, ढीला ।
सिद्ध, १ अणिमादि सिद्ध २ मुक्त ३ सिधारा ।
सिधारी, गई, सिधारना, जाना ।
सिधि, १ अणिमादि आठ सिद्धि २ काम होना ।
सिमटे, इकट्ठे, सिमटना ।
सिय, सीता ।
सियन, सीना ।
सियरे, जूड़े ।
सिरस, सरसि वृक्ष ।
सिरानी, बीती, सिराना ।
सिरावे, ठंढा करे ।
सिराहिं, बीतते हैं ।
सिरिजा, रचा, बनाया (संस्कृत) ।
सिलीमुख, १ बाण २ भ्रमर ।
सिल्प, शिल्प, कारीगरी, राजगीरी ।
सिव, शिव, १ महादेव २ कल्यान ।
सिवसैल, कैलास पर्वत ।
सिवा, शिवा, पार्वती ।
सिवि, शिवि, राजा ।
सिविका, पालकी ।
सिसिर, शिशिर ऋतु ।
सिसु, शिशु, लड़का, बच्चा ।
सिंसुपा, १ सीसो का पेड़ २ सरीफा का पेड़ ।
सिख, शिक्षा ।
सिहाहीं, १ देख के संतुष्ट होते हैं २ अभिलाष, डाह, सिहाना ।
सीकर, छींटा, बूंद ।
सीत, शीत, १ पाला २ ठंढा ।
सीदहिं, दुखी होते हैं ।
सीपी, सतुही ।
सृकाल, शृगाल, सियार ।
सृष्टि, १ संसार २ उत्पत्ति ।
सुआर, रसोई ।
सुअंजन, अच्छा अंजन, सिद्ध अंजन ।
सुक, १ सुग्गा २ सुखदेव मुनि ।
सुकर्कश, अति कठोर ।
सुकृत, पुण्य, अच्छी करनी ।
सुकृती, धर्मात्मा, अच्छा कार्य्य करने वाला ।
सुकेतु, यक्ष विशेष ।
सुकंठ, सुग्रीव ।
सुखमा, अति शोभा ।
सुखासन, सुखपाल ।
सुक्र, १ वीर्य्य २ शुक्राचार्य्य ।
सुगाइ, लगाकर के ।
सुघटित, अच्छा बना ।
सुचाई, सुधाई ।
सुचि, शुचि, पवित्र ।
सुचिंतित, अति विचारित ।
सुजन, साधु, भला आदमी ।
सुजान, चतुर ।
सुटुकि, कोड़ा मार के ।
सुठि, अति, बहुत ।
सुत, पुत्र, बेटा ।
सुदेसु, सुदेश, १ अंग २ सुंदर देश ।
सुदेस, अच्छी वस्तु देनेवाला ।
सुधा, १ अमृत २ जल ।